सन्मति साहित्य रत्नमाला का १-३५वाँ रत्न

पुस्तक :
गुलजारे-शाइरी

संयोजक :
सुरेश मुनि, शास्त्री

प्रथम प्रकाशन :
जनवरी, १९६८

प्रकाशक
सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा-२

मूल्य .
प्लास्टिक कवर सहित ३.५०
विना कवर ३.००

मुद्रक .
श्री विष्णु प्रिन्टिङ्ग प्रेस,
राजा की मण्डी आगरा-२

पेशे-नज़र—

मेरे सर के ताज,
गुरुदेव
उपाध्याय,
श्री अमरचन्द्रजी
महाराज !

"जो न मुरझाएँ कभी, वह इस चमन के फूल है !
आपकी पेशे-नजर, बागे-सखुन के फूल है !!"

—सुरेश

प्रकाशकीय

मनीषीजगत् की यह प्राय सर्वमान्य मान्यता है कि—कविता का जन्म वेदना से हुआ। समष्टि के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, प्यार और पीडा की घनीभूत अनुभूतियो को आत्म सवेदन के रस मे डुबोकर उन्हे सरस-स्निग्ध बनानेवाला कलाकार कवि होता है। कवि कर्म का यह वैशिष्ट्य विश्व की प्रत्येक भाषा के काव्य मे छलकता हुआ मिलेगा।

उर्दू-शाइरी का आत्म-सवेदन, अनुभूति की तीव्रता और अभिव्यक्ति की मार्मिकता, शब्दो की चुस्ती और शानदार गठन उसकी अपनी विशेषता है। उसकी प्रकृति मे कुछ विद्वान 'अरविस्तानी रूह' देखते है, किन्तु, जहाँ तक हमारी धारणा है—उसमे सस्कृत, हिन्दी, बँगला, गुजराती, अवधी और राजस्थानी की वही भक्ति और प्रेम की रसधारा प्रवाहित हो रही है जिसने हिन्दुस्तान के वातावरण मे उर्दू को भाषा और कविता के रूप में ढाला है।

साहित्य की विभिन्न विधाओ की मौलिक ज्ञानराशि को जनचेतना के समक्ष प्रस्तुत करने की हमारी विशुद्ध साहित्यिक परम्परा के अनुसार, 'उर्दू-शाइरी' का महत्त्वपूर्ण सकलन अपने पाठको के हाथो मे 'गुलजारे-शाइरी' के रूप मे भेंट करते हुए हम अतीव प्रसन्नता अनुभव करते है। इसका सयोजन उर्दू-शाइरी के मर्मज्ञ रसिक श्री सुरेश मुनि, शास्त्री ने किया है।

श्री सुरेश मुनि जी, उपाध्याय कविरत्न श्री अमर मुनि जी के सुयोग्य शिष्य हैं। वे कवि हृदय भी हैं, लेखक भी हैं और ओजस्वी प्रवक्ता भी। उनके द्वारा सयोजित शाइरी के माध्यम से जनचेतना को जागृति और नवजीवन का सन्देश प्राप्त होगा। पाठक, वक्ता और लेखक आदि को रसास्वाद के साथ ही आत्मिक आह्लाद भी मिलेगा इसी शुभाशा के साथ 'गुलजारे शाइरी' प्रिय पाठको की सेवा मे अर्पित है। पुस्तक को शीघ्रता के साथ मुद्रित करने मे श्री विष्णु प्रेस के मालिक श्री रामनारायण जी मेडतवाल तथा अन्य सहयोगियो को हार्दिक धन्यवाद देते है।

—मत्री

श्री सन्मति ज्ञानपीठ

भूमिका

•

भाषा का महत्व

भाषा मनुष्य के विचारो का वाहन है। मनुष्य को मनुष्य से जोडने वाली कड़ी भाषा ही तो है। यदि भाषा न होती, तो न आप मेरे लिए होते और न मैं आपके लिए होता। भाषा के माध्यम से ही मनुष्य अपनी सुख-दु:खात्मक अनुभूतियो तथा सवेदनाओ को बाहर अभिव्यक्त करता है। और जब व्यक्ति अपने सुख-दु ख की अनुभूति तथा अभाव-अभियोग की स्थिति को भाषा का रूप देता है, स्पष्टत पकट करता है, तभी तो एक-दूमरे के अन्त-हृदय मे सौजन्य-सौहार्द और सहयोग सद्भाव, करुणा-प्रेम तथा एक-दूसरे के सगी-साथी, बनने की भावना उपजती है। फलतः व्यक्ति, व्यक्ति से मिलता है। और जीवन के सारे वर्ताव-व्यवहार चलते हैं।

और भी स्पष्ट भाषा में कह दूँ, तो यदि भाषा न होती, तो हम सब पशुओ की भाँति गूँगे बनकर धरती पर इधर-उधर डोलते। भाषा के बिना मनुष्य भी पशुवत् कटा-कटा, फटा-फटा, अलग-थलग पडा रहता है, क्योकि परस्पर मे न कोई किसी से बोलता, न अपने जीवन के सुख दु खात्मक रहस्यो को एक-दूसरे के आगे खोलता और न व्यक्ति व्यक्ति से जुड पाता। परिणामत, परिवार, समाज तथा राष्ट्र का रूप सामने ही न आ पाता।

और, भाषा के अभाव मे किसी भी समाज अथवा राष्ट्र का कोई भी साहित्य अस्तित्व मे ही न आ पाता। मनुष्य के उत्थान पतन का इतिहास ही उपलब्ध नही हो पाता। किसी भी तीर्थङ्कर, अवतार, महापुरुष, ऋषि-महर्षि तथा धर्माचार्य की वाणी का प्रकाश हम तक कदापि पहुँच ही न पाता। किसी भी ग्रन्थ अथवा धार्मिक, आध्यात्मिक, नैतिक, राष्ट्रीय एवं सामाजिक परम्परा का रूप स्वरूप हमे देखने को भी न मिल पाता। क्योकि तीर्थङ्कर तथा धर्माचार्य भी तो अपने अन्तर् के भावो को भाषा के माध्यम से ही बाह्य जगती के मच पर अभिव्यक्त एवं प्रस्तुत करते हैं। उनके ज्ञान-मूलक

ाव सवेदन भी तो उभर कर भाषा के द्वारा ही व्यक्ति अथवा समाज तक हुँच पाते हैं। भाषा के वाहन पर आरूढ होकर ही तो उन महापुरुषो के आचार-पूत विचार जन-जन के मन-मन को छू पाते हैं। भाषा के प्रवल माध्यम के बल पर ही तो महापुरुष अपनी विचार-परम्परा चलाते हैं। आज के युग मे, हमे जो आध्यात्मिक, धार्मिक, नैतिक, सास्कृतिक, ऐतिहासिक साहित्य की अमूल्य थाती उपलब्ध है, भाषा के अभाव मे वह हमे कहाँ मिल पाती ? और तीर्थङ्करो तथा धर्माचार्यो की ज्ञानमयी विचार-परम्परा के प्रकाश के अभाव मे आज के इस गये बीते तथा अन्धकार पूर्ण युग मे हमारी क्या स्थिति-परिस्थिति तथा गति-मति होती—उसकी भयावह कल्पना से ही तन-मन सिहर उठते हैं। भाषा मानव-जीवन का एक दिव्य वरदान है।

भाषा तो केवल भाषा है !

तो, यह एक निर्विवाद तथ्य है कि भाषा केवल मनुष्य के विचारो की अभिव्यक्ति का माध्यम है, साधन-मात्र है, इसके अतिरिक्त वह कुछ नही। भाषा मे पवित्रता, श्रेष्ठता, उच्चता आरोपित करना—यह मानव की कोरी मति-कल्पना है, मनुष्य के मन का एक विशुद्ध भ्रम हैं, एक व्यर्थ का वितण्डावाद है। यह मिथ्याकल्पना तथा भ्रम ही भाषा-भाषा के बीच प्रतियोगिता, प्रति-द्वन्द्विता एव मेरे-तेरे के अह-भाव को जन्म देते हैं। फलत समाज तथा राष्ट्र के मच पर अखाडेबाजी और विवाद अपना सीना तानकर खडे हो जाते हैं और समाज तथा राष्ट्र का समूचा वातावरण दूषित एव विषाक्त हो जाता है।

मनुष्य की दृष्टि जब सकुचित एव सकीर्ण होती है, तो वह अपने सोचने की सीमा को भी सीमित कर लेता है और अपनी इस सकुचित मनोवृत्ति और तगदिली के मुलम्मे को वह भाषा, पन्थ तथा धर्म पर भी चढ़ाने का प्रयत्न करता है, तो वहाँ भी समता के नाम पर विषमता, अमृत के स्थान पर विष ही पनपता है। ये धर्म, ग्रन्थ, पन्थ, भाषा एव वर्गवाद के भेद-प्रभेद व्यक्ति की सकीर्ण मनोवृत्ति और तंगदिली के ही तो प्रतीक हैं। बडे-बड़े धर्माचार्य, बडे-बडे विचारक जब इस सकुचित मनोवृत्ति के शिकार हो जाते हैं तो वे भी घेराबन्दी और बाड़ाबन्दी की क्षुद्र बातें ही सोचा और बोला करते हैं। बात

तो वे प्रकृति, ईश्वर, आत्मा, परमात्मा, जीव, ब्रह्म, स्वर्ग और मोक्ष की किया करते हैं। किन्तु आचार-व्यवहार उनका कुछ और ही बोला करता है। वाणी से वे ज्ञान की ऊँची-ऊँची बातें बघारते हैं, पर व्यवहार मे भाषा, जाति-संस्कृति के नाम पर वे अपनी सकुचित मनोवृत्ति एवं क्षुद्रभावना का विष ही जन-मन को बाँटते और परोसते फिरा करते हैं, परिणामत अखण्ड मानव-समाज पन्थ, सम्प्रदाय, भाषा और जाति के छोटे-छोटे घेरो मे बँट जाता है, बन्द हो जाता है। उसकी दृष्टि अपने घेरे और दायरे तक ही सीमित हो जाती है। अपने घेरे और घरो से बाहर सच्चाई-सच्चाई को वह देख-समझ ही नही पाता है। आज भारत मे भाषा के नाम पर इसी क्षुद्र मनोवृत्ति का नगा नाच हो रहा है। फलत, मानव-समाज टूट रहा है, राष्ट्र बिखर रहा है। छिन्न-भिन्न हो रहा है। मानव के लिए भाषा की इस झूठी पवित्रता, उच्चता तथा श्रेष्ठता के चक्कर से मुक्ति पाना आवश्यक ही नही, अनिवार्य है।

तो, भाषा हमे जोडती है, तोडती नही। भाषा, प्रेम एव सद्भाव सिखाती है, द्वेष और घृणा नही। घृणा मे हम विश्वास नही करते। वैसे घृणा सर्वत्र बुरी है। परन्तु भाषा की घृणा तो प्रत्यक्षत. प्रकाश से घृणा है, अच्छाई और सच्चाई से घृणा है। भाषा का तत्त्वदर्शन तो ब्रह्मकर्म है, जिसके सम्बन्ध मे कहा गया है :—

"सर्वेषामविरोधेन, ब्रह्मकर्म समारभे"

यह तो ब्रह्मकर्म है, जो किसी के विरोध मे नही—सभी के सहयोग में प्रारम्भ हुआ है। इस तत्त्व-दर्शन में सभी भाषाएँ बहिनें हैं, न कोई छोटी, न कोई बडी।

कीजे न 'जमील' उर्दू का सिंगार, अब ईरानी तलमीहो से।
पहनेगी विदेशी गहने क्यो यह बेटी भारत माता की?
आसान लिख लिखके यह क्या तमाशा कर दिया?
'हज़रते बिस्मिल' ने तो उर्दू को भाषा कर दिया॥

अब यही तत्त्वदर्शन देश मे चलेगा। तभी तो राष्ट्र फूलेगा फलेगा। यही प्रेम और मोहब्बत के गुलाब का बगीचा अब सारे मुल्क मे महकेगा, घृणा की

चिनगारियाँ नही। इसलिए तो उर्दू का शाइर अपने शाइराना तरन्नुम में बोल रहा है, बोल क्या रहा है, अपनी जवान मे मिसरी घोल रहा है—

'हफीज़' अपनी बोली, मुहब्बत की बोली।
न हिन्दी न उर्दू न हिन्दोस्तानी।।
—'हफीज' जालन्धरी

इसी प्रेम-भावना तथा भारतीयता से अनुप्राणित उर्दू शाइरो ने क्लिष्ट एव अभारतीय शब्दो के मिश्रण को भी पसन्द नही किया।

हाँ, यह सही है कि प्रत्येक भाषा का अपना युग होता है, प्रत्येक युग की अपनी कोई भाषा होती है, जो युग का प्रतिनिधित्व करती है। एक युग था जब उर्दू का वोलवाला था। 'अँग्रेजो के जमाने मे' अँग्रेजी खूब फूली फली और चली। और उर्दू का ज़माना लद गया। अँग्रेजी भी अब रह नही सकती। उसका चमन भी उजड रहा है। इसीलिए तो उसकी डाल पर वैठे पछियो की यह चिल्ल-पो मची हुई है —

"आशियां जल गया, गुलिस्ता लुट गया।
हम कफ़स से निकल, किधर जायेगे ?"

भाषा सीचती है, लादती नही। सीचने वाली भाषा हमारे संस्कारो की भाषा है और लादने वाली भाषा पराये सस्कारो की भाषा है। वह हमें विकसित नही करती, वजन लाद-लादकर वोझिल ही वनाती है। भारत मे आज २% की अँग्रेजी भाषा को ९८% पर लादने का ही तो दुश्चक्र चल रहा है। पर, अँग्रेजो के युग मे अँग्रेजी जन-भाषा नही वन सकी तो यह आज जन-भाषा वन सकेगी—यह दुराशा मात्र ही है।

किन्तु, इस सत्य को भी हमे आँखो से ओझल नही होने देना है कि प्रत्येक भाषा की अपनी कुछ विशेषताओ, गुणो और अच्छाइयो का हमे आदर करना है, अपनी भाषा को समृद्ध बनाने के लिए उन्हे आत्मसात् करना है।

उर्दू भी एक भाषा है

भारत की विभिन्न भाषाओ की लम्बी परम्परा के इतिहास मे उर्दू भी एक भाषा है, वोली है। प्रत्येक भाषा का अपना कोई इतिहास होता है। तुर्की भाषा में 'उर्दू' लश्कर (छावनी) को कहते हैं। प्रारम्भ मे मुगल और

तुर्क बादशाह छावनी मे रहा करते थे। उनका दरवार व रणवास सब लश्करो मे वही रहता था। इस विशेपता के कारण यहाँ की मिली जुली भापा लश्करी या उर्दू जवान कहलाने लगी। फौज मे प्रत्येक प्रान्त, प्रत्येक धर्म और प्रत्येक जाति के लोग रहते थे। सद अपनी-अपनी वोली मे वोलते थे और दूसरो की वोली सुनते थे। भापा के नाम पर कुछ देते थे, कुछ लेते थे। भापा के इस पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण दूसरी भाषा के शब्द एक दूसरे की भापा की शब्दावली अनायास ही एक दूसरे की जवान पर चढ जाती थी। और इस मिली जुली लश्करी भाषा का नाम ही 'उर्दू' पड गया।

यह तो एक असन्दिग्ध तथ्य है कि शाही दरबार की कालीनो पर उर्दू का लालन-पालन ऐसी नजाकत से हुआ कि, वह अद्भुत मिठास और लालित्य से भर गयी। उर्दू भाषा मे जो माधुर्य, प्रवाह, लालित्य, सरसता और लोच है, वह उर्दू की अपनी मौलिक विशेषता है। इस भाषा मे इतनी लचक, इतना रस है कि दूसरी भाषा उसका सामना नही कर सकती। यह कहना भी कोई अत्युक्ति नही है कि उर्दू मे सीधी चोट करने की जैसी शक्ति और क्षमता है, वैसी शक्ति और क्षमता भारत की किसी और भाषा मे नही है, यद्यपि इसी कारण उर्दू मे वह गाम्भीर्य नही आ पाया, जो भारत की अन्य अनेक भाषाओ की विशेषता है।

एक ज़माना था, जव भारत मे उर्दू का दौर-दौरा था, उसकी अपनी धूम थी। बडे-बडे मुशायरे—कवि सम्मेलन होते थे, शायरी की उस मस्ती में महफिल झूम-झूम उठती थी। और उर्दू शायर छाती फुलाकर जन-मंच पर खुले आम यह उद्घोषणा किया करते थे —

"उर्दू है जिसका नाम, हमी जानते हैं 'दाग'।
हिन्दोस्ता मे धूम हमारी ज़बा की है॥" —दाग

उर्दू शाइरी का तत्व-दर्शन : आरोप और समाधान

"उर्दू-शायरी तो इश्किया शायरी है। सिवाय हुस्नो-इश्क और साकी-ओ-शराव के उसमे और क्या रखा है" ? इस प्रकार जो उर्दू-शायरी को उपेक्षा

भरी दृष्टि से देखते हैं और हिन्दी-कविता के बारे मे यू ही झूठा-सच्चा ज्ञान बघारा करते हैं, उनके बाल-सुलभ ज्ञान एव अहंकार पर मेरे मन मे हँसी भी आती है और करुणा भी उपजती है। दृष्टि के छिछलेपन और ओछेपन से किसी भी वस्तु-तत्व के मर्म को नही जाना जा सकता। समुद्र के किनारे पर छिछले पानी मे रत्न और मोती ढूँढने वालो के भाग्य मे सिवाय सीप, शख और घोघो के और हो ही क्या सकता है? क्या पानी की सतह पर तैरने वाले तिनके दरिया की गहराई और हकीकत का पता बता सकते है?

उर्दू-शायरी के तत्व दर्शन के लिए भी, हमे उसे उसकी ऐतिहासिक पृष्ठ-भूमि तथा उसके उद्भव के सदर्भ मे देखने की आवश्यकता है और इसके साथ-साथ उर्दू-शायरी के पूर्ववर्ती शाइरो से जरा आगे बढकर मध्ययुगीन और आधुनिक शाइरो की शाइरी पर एक गहरी और निष्पक्ष दृष्टि डालने की जरूरत है, तभी हम उर्दू-शाइरी की तह मे पहुँचकर उसका यथार्थ दर्शन कर सकेंगे —यह एक नग्न सत्य है।

उर्दू-शायरी का जन्म विलासिता मे डूबे मुगल बादशाहो और नवाबो के महलो में उस समय हुआ, जबकि उसकी बहनें—अरबी और फारसी हुस्नो-इश्क से आंखमिचौनी खेल रही थी। उस वातावरण मे उर्दू शाइरी ने भी अपनी बहनो का रग अपनाया और विलासी शासको तथा रगीन-मिज़ाज शाइरों के प्रयत्नो के फल-स्वरूप उर्दू शाइरी भी विलासिता के रस-रग से अछूती न रह सकी।

इसके अतिरिक्त, उर्दू शाइरी का उद्भव भी गज़लगोई से हुआ। मुगल बादशाहो और नवाबो के दरबारो में शाइर लोग विलासी शासको का दिल बहलाव ग़ज़लगोई से किया करते थे और अपनी आजीविका—रोजी रोटी का धन्धा चलाया करते थे। गजल का तो अर्थ ही है इश्कियाशाइरी, इश्क-(प्रेम) का वर्णन,—स्त्रियो का उल्लेख। अतः गजल मे विलासिता एवं मादकता का वर्णन एक स्वाभाविक-सी बात है।

मनुष्य के मन का यह एक रुझान है कि वह प्रेम, काम, शृंगार तथा विलास-सम्बन्धी कविताओ की ओर बलात् आकर्षित होता है। वह सबसे अधिक

ऐसी ही गोपनीय कृतियो को पढना और सुनना चाहता है। सस्कृत के महाकाव्यो तथा हिन्दीसाहित्य के स्वर्णकाल—रीतिकाल के हिन्दी-काव्यो मे नारी का नखशिख वर्णन, काम एव प्रेम का नग्न प्रदर्शन तथा रति का वीभत्स वर्णन और क्या अर्थ रखता है ? महाकवि कालिदास के महाकाव्य कुमार-संभव मे पार्वती का नखशिख-वर्णन, 'नैपध' मे दमयन्ती का नग्न शृंगार तथा सौन्दर्य-प्रसाधन का सन्दर्भ इस तथ्य के जीवन्त रूप हैं। हिन्दी साहित्य मे रीति-कालीन कवियो ने तो राधा-कृष्ण के माध्यम से जो रास-रग बरसाया है, मादक लीला-विलास का जो नग्न प्रदर्शन किया है, महाकवि जायसी ने 'पद्मावत' को माध्यम बनाकर शृंगार की जो रसधार बहायी है—क्या यह इश्किया-शायरी और प्रेम-काव्य नहीं है ? सस्कृत के महाकवियो, अलकार, शास्त्रियो तथा हिन्दी-काव्य के प्रणेताओ ने शृंगार-रस को 'रसराज' की उपाधि प्रदान कर क्या मानवमन की इस कामुकता, प्रेम-भावना और इश्किया रुझान का ही पोषण, सवर्धन एवं समर्थन नही किया है ? कामशास्त्र और कोक-शास्त्र के प्रणेता क्या उर्दू शाइर थे ? कौन भाषा ऐसी है, जहां ये प्रेम-रस की धाराएं अजस्र रूप मे प्रवाहित नही हुई हैं ? इश्किया शाइरी और यह कामसम्बन्धी काव्य-विलास कभी मर नही सकते। यह तो मानव मन की एक सहज-रसात्मक वृत्ति है।

और फिर, यह तो अपनी-अपनी नज़र है, अपना-अपना दृष्टिकोण है, देखने का, पीने का ढग आ जाए, तो जहर भी क्या अमृत नही बन जाता ?

जो जहर हलाहल है, अमृत भी वही, लेकिन !
मालूम नही तुझको अन्दाज ही पीने के !!

—फिराक गोरखपुरी

इन्सान के पास और है भी क्या ? ले-देके इक नजर ही तो है, उसके पास ! वह भी साफ न हो, तो बस मिट्टी का ढेर ही तो है।

और, दुनियां मे सारा नज़र का ही तो खेल है ! जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि ! एक चोर पूरी रात कोशिश करने पर भी किसी मकान मे घुस सकने में असफल रहा ! आख़िर थककर वह सड़क पर एक वृक्ष के नीचे सो गया !

एक और चोर उधर से निकला। देखकर बोला—'यह तो मेरी ही तरह कोई भाई-बन्धु है! बेचारा कामयाब न होने पर थककर सो गया है।'

इसके बाद एक शराबी वहाँ से होकर निकला। बोला—'उफ! इतनी पी गया कि तन-बदन का भी होश नही है।'

फिर, एक सन्यासी उधर से गुजरा। सोते हुए चोर को देखकर बोला—'अवश्य ही यह कोई पहुँचा हुआ महात्मा है! धन्य है यह।'

उर्दू-शाइरी मे विलासिता, अश्लीलता आदि दोष देखने वालो पर भी यह बात कैसी सटीक बैठती है?

शाइरी क्यों और किसलिए?

शाइर शौकिया या दिल-बहलाव के लिए शाइरी नही करता। और, न वह शाइरी के लिए ही शाइरी करता है। शाइर का दिल जब कुछ कहने के लिए तडप उठता है, तो दिल की उस तड़प को मिटाने के लिए ही वह अपने हाथ मे कलम उठाता है। अपनी मनोगत वेदना को वह कागज़ पर उँडेल देता है। दीन-दु खी, अत्याचार-पीडितो तथा शोषितो की दयनीय स्थिति को शाइर जब अपनी आँखो से देखता है, तो उसके तन-मन विह्वल हो उठते हैं और वह असह्य स्थिति उस घटना को 'नज्ल' करने के लिए शाइर के मन को कचोटने लगती है। और फिर, वह मन की उस कचोट को, दिल की उस तड़प को हृदयस्पर्शी शब्दो का परिधान पहना देता है :—

खूँ-भरे जाम[1] उँडेलता हूँ मैं, टीस और दर्द झेलता हूँ मैं।
तुम समझते हो शेर कहता हूँ, अपने जख्मो से खेलता हूँ मैं॥

—'अख्तर' अंसारी

दर्द को ढालते है नग्मो मे, सोज़[2] को साज[3] मे बदलते हैं।
दाद दे हमको ऐ गमे-दुनियाँ! ज़ख्म खाकर भी फूल उगलते है॥

—नरेशकुमार 'शाद'

शाइर बाह्य जगत् को देखता-निहारता है और अपने दिल के समन्दर मे गहरी डुबकी लगाता है और फिर विचारो के ऐसे चमकते-दमकते और अमूल्य

१, प्याले २ दु ख को ३ सुख मे।

मोती लाता और लुटाता है कि इस दु:ख-भरी दुनियाँ को भी खुशहाल बना देता है—

उभरते है जमाले-जिन्दगी[1] बनकर मेरे फ़न[2] मे।
ज़माने के वोह नश्तर, जो जिगर मे डूब जाते है ॥
—'साग़र' नजामी

जिन्दगी की मजिल पर आगे बढता हुआ शाइर जो भी कड़वे-मीठे और खरे-खोटे अनुभव बटोरता है, उन्ही को वह कलम की नोक पर उतार देता है। शाइर अपने व्यक्तिगत दु:ख को अपना नही समझता। वह तो जन-जन को, विश्व के दु:ख को ही अपना दु:ख अनुभव करता है। विश्व की वेदना के साथ वह एक रूप तथा एकाकार हो जाता है, विश्वात्मा बन जाता है। पर दु:ख कातर होकर शाइर की अन्तरात्मा तडप उठती है।

"किसी का ज़ख्म हो, मेरा ही वह नासूर।
किसी का चाक हो, मेरा ही चाक कहलाये ॥
—मुनव्वर, लखनवी

खजर चले किसीपे, तडपते हैं हम 'अमीर'।
सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर मे है ॥ —अमीर

शाइर कोरी कल्पना के आकाश मे नही उडता। वह तो इसी धरती तल पर विचरने वाले जन-जन के जीवनझरोखो मे झाँक कर देखता है। उनकी व्यथा-वेदना महसूस करता है। उनकी समस्याओ को सुलझाने के लिए विचारो का दिव्य प्रकाश देता है। वह मर्दानावार शोषको तथा उत्पीड़को के गढो पर प्रहार करता है —

उठो, और उठके करो सुबहे-नौका[3] इस्तकबाल[4]।
हम आफताब[5] है, दुनिया को रोशनी देगे ॥
—हरमतुलकराम

मेरे गीतो मे मुस्तकबिल[6] के सपने मुस्कराते है।
मेरी गुफ्तार[7] सुनकर अहले-दौलत काँप जाते है ॥ —मजाज

---

१ जीवन-सौन्दर्य २ कला मे ३ नव-प्रभात का ४ स्वागत, ५ सूरज ६. भविष्य के ७ वाणी, वात।

आस्मां ले करवटें, वोह इन्कलाबी राग हूँ ।
जिसने लका को जला डाला था मै वह आग हूँ ॥
—जोश, मलीहावादी

उर्दू शाइरी ने नया मोड़ बदला

यह ठीक है कि, पहले-पहल उर्दू-शाइरो का ध्यान आम जनता की ओर नही गया। उन्होने गरीबो और मजदूरो के बारे मे कुछ नही लिखा ! सामाजिक सघटन मे उर्दू-शाइरी ने कोई सहायता नही दी ! जन-जीवन के विकास एव उत्थान के लिए कोई विशेष सन्देश नही दिया। एक तरह से वे कर्तव्यशीलता से जी चुराते रहे और इश्किया-शाइरी का ही दरिया बहाते रहे। मीर, दर्द, शौदा, कायम, तबाँ, यक़ीन, मुसहफी, आतिश, नासिख, ज़ौक, मोमिन, ग़ालिब, दाग, तस्लीम, जलाल, अमीर मीनाई, शेफ्ता आदि उर्दू के पुराने और जाने-माने शाइर अपने दरियाए-कलाम से हुस्नो-इश्क के समुद्र को ही परिपूर्ण करते रहे।

किन्तु, जमाना करवट बदलता है ! उर्दू के शाइरो के दिमागो और विचारो ने भी अगडाई ली ! उन्हे भी विलासितापूर्ण शाइरी का यह पुराना रंग जँचा नही। और, उसके विरोध मे साफ-साफ उद्घोषणा की उन्होने—

यह हुस्नो-इश्क की रगीनियाँ नही दरकार !
शबे-फ़िराक[1] की बेचैनियाँ नही दरकार !!
शराबे-इश्क की मस्ती का अहतियाज[2] नही !
किसी का कुर्ब[3] मेरे शौक का इलाज नही !!
—श्रीमती गायत्री देवी

वर्तमान युग की आवश्यकताओ और युग-चेतना के स्वर को जिन उर्दू-शाइरो ने अनुभव किया, जाना-पहचाना और पुरानी डगर पर चलना नापसन्द किया, उनमे आजाद, हाली, अकबर, इक़बाल और चकबस्त प्रमुख हैं। रोषभरे स्वर मे इकबाल गर्ज उठा—

---

१. विरह-रात्रि २. आवश्यकता ३ सामीप्य ।

अगर अब भी न समझोगे तो मिट जाओगे दुनिया से।
तुम्हारी दास्ताँ[1] तक भी न होगी दास्तानों मे॥

तो उनके साथी 'चकबस्त' ने झल्लाकर शोर मचाया कि अगर अब भी न तो—

मिटेगा दीन भी और आबरू भी जाएगी।
तुम्हारे नाम से दुनिया को शर्म आएगी॥

अब शाइरी का लक्ष्य दिल-बहलाव या कला के लिए नही रहा। अब उसका प्रवाह मानव-जीवन की ओर मुड चला। मानव-जीवन का निर्माण, राष्ट्रीय चेतना का जागरण, सामाजिक स्थिति का बनाव-सुधार ही शाइरी का लक्ष्य-बिन्दु बन गया। शाइरी जब एक उत्तम कला है, तो उसका उपयोग भी किसी उच्च ध्येय के लिए—इन्सान को बेहतर बनाने के लिए होना चाहिए—यह आदर्श शाइर की आँखो और दिमाग के कैमरे के सामने झूमने लगा। और इस नयी लहर के कारण, उर्दू का शाइर अब जीवन का नव-शिल्पी, जीवन का सच्चा कलाकार, युग का प्रतिनिधि, मानव-जीवन का निर्माता बन गया। शाइर की दृष्टि ही बदल गयी। और, दृष्टि बदलते ही वस्तुत सृष्टि ही बदल गई। बोल उठी शाइर की अन्तरात्मा—

इलाही दुनिया मे और कुछ दिन, अभी कयामत न आने पाये।
तेरे बनाये हुए बशर को, अभी मैं इन्साँ बना रहा हूँ॥
—बिस्मिल सईदी

नया आदम तराशूँगा, नयी हव्वा बनाऊँगा।
नया माबूद ढालूँगा, नया बन्दा बनाऊँगा॥
—सागर नज़ामी

एक मेरा क्या ऐ फनकारो[2], वक्त का भी पैग़ाम यही है।
जीवन को हम जीवन दे दें, आज हमारा काम यही है॥
आज खुले बन्दो[3] यह दुनिया, दो तबको[4] के बीच बटी है।
चांदी-सोने के अँधियारे मे जीवन की जोत घटी है॥

---

१ कहानी २ कलाकारो, ३. सरेआम ४ वर्गों मे।

एक तरफ है अमृत सागर, एक तरफ है धारे विसके।
पूछ रही है दुनिया हमसे, बोलो अब तुम साथ हो किसके ?
क्या जनता, क्या जीवन का, ऐसे मे अपमान करे हम ?
आओ खुले बन्दो ! हम जानिबदारी का ऐलान करे हम ॥
हम साथी है मज़लूमो[1] के, हम साथी है मजबूरो के।
हम साथी है दहकानो[2] के, हम साथी है मजदूरो के ॥

—जानिसार अख्तर

शाइर मानव का नव-निर्माण करके धरती पर ही स्वर्ग उतारने की बात सोचता है—

अभी तो सोई हुई कौम को जगाना है।
वतन को जन्नते-अरज़ी बनाना है ॥

—श्रीमती गायत्री देवी

क्या खूब शाइरी है ?

आज का उर्दू शाइर पुराने उर्दू-शाइरो की तरह ज़ुल्फो-गेसू, गुलो-बुलबुल, आरिज़ो-रुखसार, हिजरो-विसाल जैसे सारहीन तथा अश्लील विचारो का पुतला-मात्र नही है। उसकी शाइरी मे जिन्दगी के जिन्दा रहने तथा सामाजिक भावनाओ का उद्दाम प्रवाह है। वह कर्तव्यशीलता का पाठ पढाता हैं, जन-जीवनकी दुखती हुई रगो पर हाथ रखता है, अध्यात्म-जीवन के लिए ज्ञान का सच्चा प्रकाश लुटाता है। 'नजीर अकबराबादी' ने अपने चारो ओर बिखरी स्थितियो-परिस्थितियो, सामाजिक रीति-रिवाजो और आवश्यकताओ पर अपनी सरल-सुबोध भाषा मे खूब जी खोलकर जो लिखा, क्या वह उर्दू-शाइरी की अपनी अलग और महत्त्वपूर्ण थाती नही है।

सक्षेप मे, उर्दू शाइरो ने रुहानियत के बारे मे लिखा, इन्सानियत के बारे मे लिखा, सुख के बारे मे लिखा, दुःख के बारे मे लिखा, नैतिकता के बारे मे बहुत-कुछ लिखा, भक्ति-ज्ञान और आचार-विचार के सम्बन्ध मे भी अपनी

१ पीड़ित, शोषितो २ किसानो के।

कलम खूब चलाई। राष्ट्रीयता एव जन-जागरण के बारे मे खूब जी खोलकर लिखा। उस सब का उद्देश्य यह बताना रहा है कि जीवन बहुत बडी चीज है, जिससे हमे कुछ करना चाहिए। जीवन स्वय जीने और दूसरो को जिलाने के लिए, अपना और दूसरो का बोझ उठाने के लिए है :—

दूसरो को जिसने दुनिया मे बनाया कामयाब।
जिन्दगी उसकी है 'दानिश', उसका जीना है सफल ॥—दानिश

अध्यात्म-वाद के सम्बन्ध मे उर्दू-शाइरो ने जो गहरी डुबकियाँ लगायी, वह उर्दू-शाइरी की अपनी बेजोड मिसाल है। जो व्यक्ति ईश्वर-परमात्मा को ही सर्व-सर्वा, कर्ता-धर्ता और अपना भाग्य-विधाता समझकर अपने आपको दीन-हीन मानते हैं, उनके मन को जगाते हुए, "व्यक्ति स्वय ही अपना जीवन-निर्माता तथा भाग्यविधाता हैं, यह दर्शाते हुए 'इकबाल' उनकी अन्तरात्मा को यो झकझोरता है :—

आह किसकी जुस्तजू[1] आवारा रखती है तुझे।
राह तू, रहरौ[2] तू, रहबर[3] भी त, मंज़िल भी तू ॥
काँपता है दिल तेरा अन्देश-ए-तूफा[4] से क्या ?
नाखुदा[5] तू, बहर[6] तू, किश्ती भी तू, साहिल भी तू ॥
ढूँढता फिरता है अय 'इक़बाल' अपने-आपको।
आप ही खोया मुसाफिर, आप ही मंजिल है तू ॥— इकबाल

उर्दू-शाइरो ने रुहानियत के जो चश्मे बहाये, उनके कुछ और भी नमूने देखिए :—

अपने मन मे डूबकर पाजा सुराग-जिन्दगी[7]।
तू अगर मेरा नही बनता, न बन, अपना तो बन ॥—इक़बाल
वोह कब देख सकता है उसकी तजल्ली[8]।
जिस इन्सान ने अपना जलवा न देखा ॥

—फ़िराक गोरखपुरी

---

१ तलाश २ यात्री ३. मार्गदर्शक ४ तूफान के डर से ५. मल्लाह ६ समुद्र ७. जीवनरहस्य ८ प्रकाश।

दूसरो से बहुत आसान है मिलना साकी।
अपनी हस्ती से मुलाकात बडी मुश्किल है॥ —अदम
इन्सान की बदबख्ती अन्दाज से बाहर है।
कम्बख्त खुदा होकर बन्दा नजर आता है॥ —आज़ाद

आज के भूले-भटके आदमी को शाइर मानव-धर्म मे दीक्षित करता है। मानवता ही दीन है, ईमान है, मानव-जीवन का सार है। 'मानवता' से श्रेष्ठ और उच्च कुछ भी नही है इस जगती तल पर, इस तथ्य-सत्य की घोषणा उद्घोषणा करता हुआ कहता है :—

फिर रहा है आदमी भूला हुआ भटका हुआ।
इक न इक लेबिल हर इक माथे पे है लटका हुआ॥
और कुछ हाजत नही है दोस्ती के वास्ते।
आदमी होता है काफ़ी आदमी के वास्ते॥
आओ वह सूरत निकालें जिसके अन्दर जान हो।
आदमीयत दीन हो, इन्सानियत ईमान हो॥
मज़हब कोई लौटा ले और उसकी जगह दे दे।
तहजीब सलीके की इन्सान करीने के॥
—फिराक गोरखपुरी

साहित्य पर देश की परस्थिति और समय का सीधा प्रभाव पड़ता है। अत. युगान्तरकारी स्थिति से उर्दू-शाइरी भी कैसे अछूती रहती। राष्ट्रीय-आन्दोलन के समय उर्दू-शाइरो ने भी करवट ली और राष्ट्र-नेताओ के नाम पर नज़्मे लिखी। पराधीनता, स्वतन्त्रता, हिन्दू-मुस्लिम-ऐक्य, विदेशी का बहिष्कार आदि विषयो पर उस समय शाइरो ने जी खोलकर कलम चलायी। आजादी के लिए उन्होंने मर मिटने का भी स्वागत करते हुए कहा:—

कुछ न हो ग़म, कुछ न हो परवाहे-बर्बादी मुझे।
खाकमे मिलकर भी गर मिल जाए आज़ादी मुझे॥

भ्रातृ-वेश में विश्वासघाती चीन ने जब सन् ६२ मे साम्राज्य-लिप्सा की दुर्भावना से भारत पर बर्बर आक्रमण किया, तो भारतीय संस्कृति के रंग-रस मे रगापगा शाइर बा-आवाज-बुलन्द बोल उठा—

"हम एक हैं
एक है अपनी जमी, एक है अपना गगन।
एक है अपना जहां, एक है अपना वतन।।
आवाज़ दो, आवाज दो, हम एक हैं, हम एक हैं।।"
—जां-निसार 'अख्तर'

साहिर लुधयानवी की अन्तरात्मा तड़प कर यूँ बोल उठी—

"वतन की आबरू ख़तरे मे है, हुशियार हो जाओ।
हमारे इम्तहाँ का व.क्त है, तैयार हो जाओ।।
न हम इस वक्त हिन्दू है, न मुस्लिम है, न ईसाई।
अगर कुछ है, तो है इस देश, इस धरती के शैदाई।।
इसी को जिन्दगी देगे, इसी से जिन्दगी पाई।
लहू के रंग से लिक्खा हुआ इकरार बन जाओ।।

आज भारत की राजनीति का आदर्श है—समाजवाद। समाजवाद की यह दिव्यभावना अपने प्रखर रूप मे उर्दू-शाइरी के सिवाय और कहाँ सुनने को मिलेगी ?

मेरे दिल की वसीअ दुनिया मे,
दर्द अपना भी है, पराया भी।
'मैं' को जब 'हम' बना दिया मैंने,
.खुद को खोया भी खुद को पाया भी।।

अपने दिल की बात

आज, भारत की राष्ट्रभाषा अथवा राजभाषा हिन्दी है और रहेगी। इस तथ्य को झुठलाया नही जा सकता। अतः प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य हो जाता है कि, वह अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करे, उसे समृद्ध एव सम्पन्न बनाने का प्रयास करे, राष्ट्र-भारती के भण्डार को भरने का भरसक प्रयत्न करे। भारत की विभिन्न भाषाओ के साहित्य की सच्चाई-अच्छाई तथा उपयोगी तत्त्वो के मिश्रण से ही तो 'भारत-भारती' समृद्ध, विकसित एव

पूर्ण हो सकती है। हमारा यह लघु प्रयास इसी दिशा की ओर सकेत करता है।

उर्दू-शाइरी के पढने और सुनने का शौक मुझे बचपन से ही रहा है। इस धरती पर अगर कोई जादू है, तो वह शाइरी है। शाइरी को मैं जीवन की अन्तरग अनुभूतियो तथा सवेदनाओ की अभिव्यंजना मानता हूँ, व्यक्ति अथवा जन-मानस की सुख-दुःखात्मक अनुभूतियो का प्रकाशन लोक-मानस को बलात् आन्दोलित-उल्लसित एव परिवर्तित कर ही देता है।

उर्दू-शाइरो ने जीवन के प्रत्येक अग और जिन्दगी के हर पहलू को छूकर विचारो के अनमोल मोती लुटाए हैं, जिन्दगी की अच्छाई-सच्चाई के दिलकश नग्मे गाए हैं, आत्मा, परमात्मा, दार्शनिकता, नैतिकता, मानवता, सुख-दुःख, अनासक्ति, सहिष्णुता आदि मानव-जीवन के उपयोगी तत्त्वो के सम्बन्ध में उर्दू-शाइरो ने ख़ूब जी खोलकर लिखा हैं, शाइरी के उसी खिलते-महकते चमन मे से कुछ रगीले चटकीले और महकते फूलो के जो हार गूथे हैं, उन्ही को यहाँ सकलित एव वर्गीकृत रूप मे प्रस्तुत किया गया है। और इन महकते फूलो को चुनने के लिए चमन-चमन घूमा हूँ, बाग-बाग की सैर को निकला हूँ, गुलशन-गुलसिता की बहार देखता फिरा हूँ। गुलजारे-शाइरी के इन रगीन गुलदस्तो को सजाने-सवारने के लिए कितने बयाबानो की खाक छानी है, इसकी भी एक लम्बी कहानी है, जिसे कुछ हेर-फेर के साथ नरेश कुमार (शादा) की जबानी दुहराना ही उपयुक्त जंचता है—

"गुलजारे-शाइरीका यह मजमूआ, उस मुसाफिर की इक कहानी है।
जिसने फूलो की आर्जू लेकर, हर बयाबा की खाक छानी है॥"

उर्दू-शाइरी के तत्त्व एव मर्म को समझना आसान बात नही, विशेषतः मेरे जैसे अल्पज्ञ के लिए। केवल दिली शौक के बूते पर ही यह प्रयत्न कर बैठा हूँ। इस प्रयत्न के पीछे, उन लेखको, सम्पादको, तथा समीक्षको की बरबस याद हो आती है, जिन्होने उर्दू-शाइरी तथा उसके इतिहास पर अपनी कलम चलायी है। पर्वतो की रानी मसूरी की 'तिलक मेमोरियल लायब्रेरी' के कर्मचारी मिस्टर अलेग्जण्डर और श्री प्रेमसिह का उदार सहयोग भी

मेरे स्मृति-पटल पर तैर रहा है जिन्होंने हमारे दो मास के मसूरी-निवास-काल में उक्त लायब्रेरी की नयी-पुरानी शाइरी की पुस्तको का उन्मुक्त उपयोग करने का हमें खुला मोका दिया, इन सब का कृतज्ञता-पूर्वक स्मरण करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

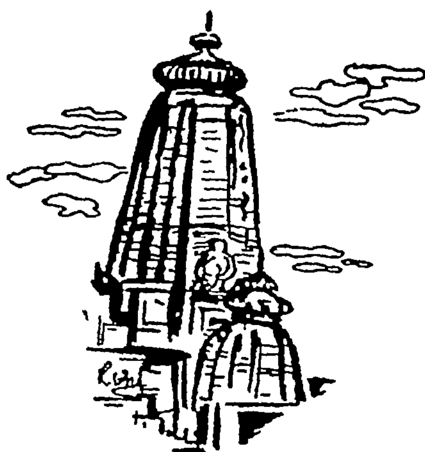
अस्तु, एक भँवरे की भांति, जहाँ से जो कुछ भी लिया—खूब लिया और सब कुछ पाठको को परोस दिया। जो कुछ बन पड़ा, वह प्रस्तुत है। क्या है, कैसा है, यह निर्णय तो प्रबुद्ध पाठकों के हाथो में है। यो ऐसा श्रम-साध्य प्रयास करने वालो की भाग्य लिपि में यही लिखा है :—

"खुलता किसीपे क्यो मेरे दिल का मुग्रामला।
शेरों के इन्तखाब ने रुसवा किया मुझे ॥" —ग़ालिब

जैन-सभा
गोबिन्दगढ़ (पंजाब)
१–१२–६७

—सुरेश मुनि

अनुक्रमणिका





गुलज़ारे-शाइरी

चुन लिये हैं बाग़े-इन्सानी से अरमानों के फूल ।
जो महकते ही रहेंगे, मैंने गूँथे हैं वो हार ॥

—सरदार जाफरी

रूहानियत का अर्श से आगे मुकाम है !



१ रूहानियत[1] का अर्श[2] से आगे मुकाम है।
रूहानियत कमाले-हकीकत[3] का नाम है॥
रूहानियत शरावे-मुहव्बत[4] का जाम[5] है।
रूहानियत मे अम्न-ओ-सुकू[6] का पयाम[7] है॥
रूहानियत वोह एक ही जामे-सुरूर[8] है।
वहदत[9] का आईना[10] है, मसर्रत[11] का नूर[12] है॥
इसकी तजल्लियो[13] मे झलकती है जिन्दगी।
इसकी लताफतो[14] से महकती है जिन्दगी॥

२ तेरी तसवीर से खाली नही है कोई महफिल भी।
मगर पहचानने वालो से पहचानी नही जाती॥

—'हसरत'

३ इन्सान की वदवख्ती[15] अन्दाज[16] से वाहर[17] है।
कम्वख्त खुदा होकर वन्दा नजर आता है॥

—आजाद

४ दूसरो से बहुत आसान है मिलना साकी।
अपनी हस्ती[18] से मुलाकात[19] वडी मुश्किल है॥

—अदम

---

१ आध्यात्मिकता का २ आकाश, भौतिकता मे ३ पूर्ण वास्तविकता पूर्ण सत्य का ४ प्रेम-मदिरा ५ प्याला ६ सुख शान्ति का ७ सन्देश ८ खुमारी (मस्ती) का प्याला ९ ईश्वरत्व का १० दर्पण ११. खुशी आनन्द का १२ प्रकाश १३ प्रकाश मे १४ महक से १५ दुर्भाग्य १६ अनुमान से १७ परे १८ अस्तित्व, अपने-आप से १९ मिलना साक्षात् करना।

५ मेरे हक मे हुँआ अच्छा मेरा हद से गुजर जाना।
खुदाई हाथ आई, तर्क[1] जब करदी खुदी मैंने ॥

—मुनव्वर

६. जब न देख सकते थे तो दरिया भी कतरा[2] था।
जब आँख खुली, कतरा भी दरिया नज़र आया ॥

—अदम

७ जब से तेरी नज़र पड़ी है झलक।
तब से लगती नही पलक-से-पलक ॥

—हातिम

८ ब-शक्ले[3] बन्दा तो रहता है उम्र-भर ऐ 'जोश'।
उठ, और चन्द[4] नफस[5] के लिए खुदा होजा ॥

—जोश

९ अपने मन मे डूब कर पा जा सुरागे-ज़िन्दगी[6]।
तू अगर मेरा नही बनता, न बन, अपना तो बन ॥

—इक़बाल

१० मै आईना हूँ तेरा, तू आईना है मेरा।
तुझ मे जहूर[7] मेरा, मुझ मे जहूर तेरा ॥

—अमीर

११ ढूँढता फिरता हूँ ऐ 'इकबाल' अपने - आपको।
आप ही गोया मुसाफिर, आप ही मजिल हूँ मैं ॥

—इक़बाल

१२ अपने ही हुस्न[8] का दीवाना बना फिरता हूँ।
मेरे आगोश[9] मे अब हसरते-आगोश[10] नही ॥

—जिगर

---

१ त्यागना, छोडना २ बिन्दु ३ सूरत मे, रूप मे ४ कुछ ५ पलो, क्षणो के ६ जीवन का पता, रहस्य ७ प्रकाश ८ सौन्दर्य का ९ गोद १० गोद की इच्छा।

१३ तेरे जल्वो[1] की हद[2] मिली कब ?
हो गई जब नजर भी ला-महदूद[3] ॥

—नज्वी

१४ चाहे तो तुमको चाहे, देखे तो तुमको देखे।
ख्वाहिश[4] दिलो की तुम हो, आँखो की आरजू[5] तुम ॥

—इक़बाल

१५ मरना-जीना एक है, जिनको जरा भी ज्ञान है।
वोह उधर का मर्तबा[6] है, यह इधर की शान है ॥

—जोश

१६ खुदा का नाम गो अक्सर जबानो पर तो आ जाता।
मगर काम इससे जब चलता कि यह दिल मे समा जाता ॥

—अकबर

१७ सरापा[7] राज[8] हूँ, मैं क्या बताऊँ, कौन हूँ, क्या हूँ ?
समझता हूँ, मगर दुनियाँ को समझाना नही आता ॥

—यगाना

१८ वोह कब देख सकता है उसकी तजल्ली[9]।
जिस इन्सान ने अपना जलवा[10] न देखा ॥

—फिराक़

१९. हुस्न के जल्वो को अपने दिल मे देख।
लनतरानी[11] दूर की आवाज है ॥

—नूर नारवी

२० अगर है जौक़े तमाशा[12], तो बन्द कर आँखें।
जहा निगाह[13] नही है, वहाँ हिजाब[14] नही ॥

— सीमाब

---

१ प्रकाश की २ सीमा ३ असीम ४ अभिलाषा ५ इच्छा ६ गौरव ७. सिर से पाँव तक ८ रहस्य ९ रोशनी १० प्रकाश ११ शेखी, डीग १२. दर्शनाभिलाषी १३ दृष्टि १४ पर्दा।

२१ खुदा के बन्दे[१] तो है हज़ारो, बनो मे फिरते है मारे-मारे।
मैं उसका बन्दा बनूँगा, जिसको– खुदा के बन्दो से प्यार होगा।

—इकबाल

२२ मिटा दो खुद को इतना कि रहे न कुछ निशाँ[२] बाकी।
अगर पाना सनम[३] को है, खुदी से हाथ धो बैठो॥

२३ फिजूल पाँव घिसाने से फायदा क्या?
अगर शौके-बयाबाँ[४] है, तो घर मे पैदा कर॥

—मुनव्वर

२४ जब से मेरी आँखो मे तेरी जलवागरी[५] है।
दुनिया मेरे नजदीक तबस्सुम[६] से भरी है॥

—जिगर

२५ फिर कोई कैद न तेरे लिए बाकी रहती,
तू अगर्चे दाम[७] से अपनी रिहा[८] हो जाता।
अपनी अजमत[९] का नही खुद तुझे गाफिल! एहसास[१०],
बन्दगी अपनी जो करता तो खुदा हो जाता॥

—मुनव्वर

२६ शेखो-बिरहमन दैरो-हरम[११] मे ढूँढते हो क्या ला-हासिल[१२]।
मूँद के आँखें देखो तो है सारी खुदाई सीने मे॥

— इक़बाल

२७ तुझको तलब[१३] है जिसकी, दोनो है उससे खाली।
दरवाजा खोल दिल का, दैरो-हरम मे क्या है?

—जिगर

---

१ उपासक, भक्त २ चिन्ह ३ प्रिय, इष्ट, प्रभु को ४. एकान्त का चाव ५ प्रकाश ६ मुस्कान मे ७ जाल से ८ मुक्त ९ गौरव का १० ज्ञान, अनुभूति ११ मन्दिर-मस्जिद मे १२ व्यर्थ १३ इच्छा, कामना।

२८ अपने ऊपर कर भरोसा, जज्बे-दिल[1] से काम ले।
यूँ न साकी[2] आएगा, उठ, बढके मीना[3] थाम ले।।

—अफसर

२९ दाने तो बेशुमार[4] है तसबीह[5] मे, मगर—
जिसमे लगन हो यार की, वो दाना[6] एक है।

—अदम

३० कह रहा है शोरे-दरिया[7] से समन्दर का सकूत[8]।
जिसका जितना जर्फ[9] है, उतना ही वह खामोश है[10]।।

—नातिक

३१ और तो हमने कुछ भी न जाना, लेकिन इतना जान गए।
दुनिया मे नादान आए, नादान रहे, नादान गए।।

—नूह

३२. जो मौका मिल गया तो खिज्र[11] से यह बात पूछेंगे।
जिसे हो जुस्तजू[12] अपनी, वोह वेचारा किधर जाए ?

—जोश

३३. शक्ले इन्सा मे खुदा था—मुझे मालूम न था।
चाँद वादल मे छिपा था—मुझे मालूम न था।।

—एक सूफी

३४ नही तेरा नशेमन[13] कसरे सुलतानी[14] के गुम्बद[15] पर।
तू शाही[16] है, बसेरा कर पहाडो की चटानो पर।।

—इक़बाल

३५. वोह सिजदा[17] क्या, रहे एहसास[18] जिसमे सर उठाने का।
इबादत[19] और ब-कैदे-होश[20], तौहीने इबादत[21] है।।

—सीमाब

---

१ मानसिक उत्साह से २ पिलाने वाला ३ प्याला ४ अनगिनत, असख्य ५ माला ६ अक्लमन्द ७ नदी के कोलाहल मे ८ खामोशी, शान्ति ९ पात्र १० चुप ११ मार्ग-दर्शक १२ तलाश १३ घोसला १४ शाही महल के १५ गुम्बज, गोल छत पर १६ बाज पछी १७ नमन १८ अनुभूति १९. वन्दगी, भक्ति २० होश की कैद के साथ २१ भक्ति का अपमान।

३६ मुझे गुलशन[1] से ऐ जोशे-जनूँ[2] सहरा[3] को अब ले चल।
यहाँ इसके सिवा क्या है—खिजाँ[4] आई, बहार[5] आई॥

—नूह

३७ खुदी[6] वो बहर[7] है, जिसका कोई किनारा नही।
तू आबज़ू[8] उसे समझा अगर तो चारा नही॥

—इक़बाल

३८ खुला यह राज[9] बज्मे-नाज[10] का पर्दा उठाने पर।
कि जिस पर तेरा धोखा था, वो इक तसवीर थी मेरी॥

—आसी

३९ बाद मुद्दत के ऐ 'दाग' समझ मे आया।
वही दाना[11] है, कहा जिसने न माना दिल का॥

—दाग़

४० आफाक[12] मे हँस-हँसकर जीना ही तो मुश्किल है।
आसान है रो-रोकर हस्ती[13] को फना[14] करना॥

—जोश

४१. जग जीतने से बढ कर है नफ्स[15] जीत लेना।
बडी मुश्किल से काबू मे दिले दीवाना[16] आता है॥

४२ इन उजडी हुई बस्तियो मे जी नही लगता।
है जी मे, वही जा बसे, वीराना[17] जहाँ हो॥

—मीर

४३ आँखे अगर्चे बन्द है तो दिन भी रात है।
इसमे कसूर क्या है भला आफताब[18] का॥

—इकबाल

---

१ बगीचे से २ पागलपन का जोश ३ जगल ४ पतझड ५ वसन्त ऋतु ६ अहभाव ७ समुद्र ८ नदी, नहर ९ भेद, रहस्य १० प्रेमी के सहवास ११ समझदार, बुद्धिमान १२ ससार १३ अस्तित्व, जीवन १४. नष्ट १५ वासना, विकार १६ पागल मन १७ जगल १८ सूर्य।

४४ हो सदाकत[1] के लिए जिस दिल मे मरने की तडप।
पहले अपने पैंकरे-ख़ाकी[2] मे जा[3] पैदा करे॥

—इक़बाल

४५, अव्वल तो इस कूचे[4] मे कोई आ नही सकता।
और आ भी जाए तो फिर कभी जा नही सकता॥

४६. खिज्रे-रहे-मकसूद[5] अगर दिल नही होता।
मंजिल का पता सैकडो मजिल नही होता॥

—अमीर

४७. नही जानते कुछ कि जाना कहाँ है?
चले जा रहे है मगर जाने वाले॥

—जिगर

४८ हम मिट गए तो सूरते-हस्ती[6] नजर पडी,
वीरा[7] जब हो गए बस्ती नजर पडी।
देखा तो ख़ाकसार[8] आली-मुक़ाम[9] है,
ज्यू-ज्यूं बुलन्द[10] हम हुए पस्ती[11] नजर पडी॥

— इकबाल

४९ जमाना[12] हम मे बसता है, बसे है हम ज़माने मे।
दो आलम[13] साफ उडते है, ज़रा आपा मिटाने मे॥

५० जो देखी हिस्टरी,[14] इस बात पर कामिल[15] यकी[16] आया।
उसे जीना नही आया जिसे मरना नही आया॥

—अकबर

---

१ सत्य २ मिट्टी के शरीर ३ शक्ति, प्राण ४ गली ५ गन्तव्य पथ का दर्शक ६ जीवन के स्वरूप की झांकी ७ बर्बाद ८ मनुष्य ९ सर्वोच्च स्थान १० उच्च ११ नीचाई १२ समार १३ ससार १४ इतिहास १५ पूर्ण १६ विश्वास।

५१　रात-दिन जेरे-जमी[1] लोग चले जाते है ।
यह न मालूम तहे-खाक[2] तमाशा क्या है ॥
—दाग़

५२　थी दुई[3] जब तक नजर आती थी लाखो सूरते ।
सब मे जब देखा उसी को तफरका[4] जाता रहा ॥
—नासिख

५३　किसको चाहे किस तरह, किसको देखे किस तरह ।
एक आलम[5] है नजर मे, एक दुनिया दिल मे है ॥
—साइल देहलवी

५४　दीदारे-यार[6] का न उठेगा[7] मजा[8] 'अमीर' ।
जब तक दुई[9] का पर्दा न उठाया जायगा ॥
— मीर

५५　जबाँ[10] चलती है गोया आज कुछ जिक्रे-खुदा[11] करले ।
अजल[12] आएगी फिर हर्गिज न देगी बात की फुर्सत[13] ॥
—हाली

५६　वोह आँखे दिल के अन्दर जो है उनको खोल ऐ गाफिल[14] ।
इन आँखो से कही तू जल्वए-हक[15] देख सकता है ॥
—कलामी

५७　निगाहे[16] कामिलो[17] पर पड ही जाती है जमाने[18] की ।
कही छुपता है 'अकबर' फूल पत्तो मे निहाँ[19] होकर ॥
—अकबर

५८　'गालिब' बुरा न मान, जो दुश्मन[20] बुरा कहे ।
ऐसा भी कोई है कि सब अच्छा कहे जिसको ॥
—ग़ालिब

---

१ पृथ्वी के नीचे　२ मिट्टी के नीचे　३ द्वैत　४ भेद-भाव　५ ससार　६ प्रभु-दर्शन　७ आएगा　८ आनन्द　९ द्वैत　१० जिह्वा　११ प्रभु-चर्चा　१२ मौत　१३ अवकाश　१४ पगले　१५ सत्य का प्रकाश　१६ नजरें　१७ पूर्ण, सज्जन　१८ दुनिया　१९ गुप्त　२० शत्रु ।

५९ अपनी नजर[1] मे हेच[2] है सारे जहाँ की सैर ।
दिल खुश न हो तो किसका तमाशा, कहाँ की सैर ?

—दाग

६० सफाईयाँ हो रही है जितनी, दिल उतने ही हो रहे है मैले ।
अंधेरा छा जायगा जहाँ मे, अगर यही रोशनी रहेगी ।।

—हाली

६१ 'अमीर' इस बाग मे रहकर करे क्या, दिल उलझता है ।
न नखवत[3] छोडते है गुल, न काटे खू[4] बदलते है ।।

—अमीर

६२ वह भी आलम[5] था कि तू ही तू था और कोई न था ।
अब यह कैफियत[6] है, मै ही मैंका है सौदा[7] मुझे ।।

—साहिर

६३ खुदी[8] से बेखुदी[9] मे आ, जो जौके-हकपरस्ती[10] है ।
जिसे तू नेस्ती[11] समझा है, ऐ गाफिल,[12] वोह हस्ती[13] है ।।

—अमीर

६४ सुकूने-कल्बकी[14] दौलत कहाँ दुनिया-ए-फानी[15] मे ।
बस इक गफलत-सी[16] आ जाती है, और वह भी जवानी मे ।।

६५ वोह[17] अगर पर्दा उठाकर सामने आ जाएगा ।
फिर भी क्या इन देखने वालो से देखा जायगा ।।

६६ दिल मुझ से पूछता है कि जाएँगे अब कहाँ ।
मै दिल से पूछता हूँ कि आए कहाँ से हम ?

—महरूम

---

१ दृष्टि २ बेकार, बेमानी ३ अभिमान ४ आदत, स्वभाव ५ अवस्था ६ हाल ७ पागलपन ८ अहभाव ९ निरहकार १० ईश-भक्ति की लगन ११ नास्तित्व १२ प्रमादी १३ अस्तित्व १४ मन की शान्ति १५ क्षण भगुर ससार मे १६ प्रमाद, बेहोशी १७ प्रिय, प्रभु, ईश्वर ।

६७ अक्ल के भटके हुओ की राह दिखलाते हुए।
हमने काटी जिन्दगी दीवाना कहलाते हुए॥

—मुल्ला

६८ पहले खुदा का छोड सहारा।
दर्से-अमल[1] आसान नही है॥

—फिराक़

६९ छानते हो खाक क्यो दुनिया के कामो के लिए।
मिट रहे हो रात-दिन क्यो झूठे दामो के लिए॥
कुछ वहाँ[2] के भी लिए या सब यही के वासते ?
दामे-दुनिया[3] मे फसे हो झूठे दामो के लिए॥

७० खुद अपनी कैद के बन्द[4] आदमी तोडे तो हम जाने।
पराई कैद से आज़ाद हो जाना तो आसा[5] है॥

—जोश

७१ जो लोग जान-बूझ कर नादान बन गए।
मेरा खयाल है कि वोह इन्सान बन गए॥

—अदम

७२ हमको मिटा सके यह जमाने मे दम[6] नही।
हम से जमाना खुद है, जमाने से हम नही॥

—जिगर

७३ दामन[7] झटक कर चल दिए वोह और यह कहते हुए।
बैठूँ कहाँ तेरे तो घर मे गैर हैं बैठे हुए॥

—इकबाल

---

१ चरित्र-पाठ, अमल की जिन्दगी २. परलोक ३ ससार के जाल मे ४ बन्धन ५ सरल ६ शक्ति ७ पल्ला।

७४ ढूँढने वाला सितारों[1] की गुजरगाहो का[2],
अपने अफकार[3] की दुनियाँ मे सफर कर न सका।
जिसने सूरज की शुआओ[4] को गिरफ्तार[5] किया,
जिन्दगी की शबे-तारीक[6] सहर[7] कर न सका॥

—इक़बाल

७५ कोई शादमा[8] कोई अन्दोहगी[9] है,
सुकू[10] की अभी कोई सूरत[11] नही है।
दिमाग आसमा पर जमी पर जबी[12] है,
इबादत यह कोई इबादत नही है॥

—अम्न लखनवी

७६ नशा पिला के गिराना तो सबको आता है।
मजा तो जब है, गिरतो को थाम ले साकी॥

—इकबाल

७७ जिन्दगी की नाव को मस्ती से खेना चाहिए।
दुनियाँ के हर ऐशो-गम[13] का साथ देना चाहिए॥

—मजर

७८ जिसको खबर नही, उसे जोशो-खरोश[14] है।
जो पा गया है राज[15] वोह गुम है[16] खमोश[17] है॥

—इन्शा

७९ आदम[18] को खुदा मत कहो, आदम खुदा नही।
लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नही॥

—अकबर

---

१ नक्षत्रो २ मार्गो ३ चिन्तन ४ किरणो को ५ नियन्त्रण ६ अँधेरी रात ७ सुबह, रौशन ८ प्रसन्न ९ शोकाकुल, दुखी १० शान्ति ११ स्थिति १२ मस्तक १३ सुख दुख १४ आवेश और आवेग १५ रहस्य १६ गायब, लापता १७ मौन १८ आदमी।

८० तालिबाने ऐश[1] से कह दूँ तो उड़ जाएँ हवास[2]।
किस कदर[3] रोया हूँ मैं इक मुस्कराने के लिए॥

—जोश

८१ बातिन[4] में बेखबर[5] है, जो जाहिर-परस्त[6] है।
'सरशार' वह हमारी नजर नजर नहीं॥

—सरशार

८२ कर गौर[7] रंगो-बूके[8] एहसास[9] से गुजर[10] के।
यह फूल और कलियाँ धोके हैं सब नजर के।

८३ जहाँ देखते हैं, जिधर देखते हैं।
तेरा हुस्न[11] पेशे-नजर[12] देखते हैं॥

८४ मैं ही अपना हिजाब[13] हूँ वरना।
तेरे मुँह पर कोई नकाब[14] नहीं॥

—फानी

८५ तू, तू को जाने तो खुदा-ही-खुदा है।
तू, तू को न जाने तो जुदा-ही-जुदा है॥

८६ दीवाने को तहकीर[15] से क्यों देख रहा है।
दीवाना मुहब्बत की खुदाई[16] का खुदा है॥

—सीमाब

८७ मक्के गया, मदीने गया, करबला गया।
जैसा गया था, वैसा ही चल फिरके आ गया॥

—मीर

---

१. सुख के अभिलाषियों से २ होश ३. तरह ४. अन्तरंग से ५. अनभिज्ञ, अनजान ६ बहिरंग (भौतिकता) का उपासक ७ ध्यान ८ रूप रंग और गन्ध के ९. अनुभूति से १० पार करके ११ सौन्दर्य १२. दृष्टि के समक्ष १३ पर्दा १४ आवरण १५ तिरस्कार से १६ सृष्टि का।

८८ ऐ रूह[1]! क्या बदन[2] मे पड़ी है, बदन को छोड।
मैला बहुत हुआ है, अब इस पैरहन[3] को छोड ॥

—अमीर मीनाई

८९ सुनता हूँ कि हर हाल मे वोह[4] दिल के करी[5] है।
जिस हाल मे हूँ अब मुझे अफसोस नही है ॥

—जिगर

९० जहाँ दिल है, वहाँ वो[6] है, जहाँ वो है, वहाँ सब-कुछ।
मगर पहले मुकामे-दिल[7] समझने की जरूरत है ॥

—सीमाब

९१ हजूमे[8] बुलबुल हुआ चमन[9] मे, किया जो गुल[10] ने जमाल[11] पैदा।
कमी नही कद्रदाँ[12] की 'अकबर' करे तो कोई कमाल पैदा ॥

—अकबर

९२ सब नक्श[13] खयाली[14] है, काबा हो या बुतखाना।
तू मुझ मे है, मैं तुझ मे हूँ ऐ जल्वए-जानाना[15] ॥
९३ जुस्तजू-ए-यार[16] मे गुम[17] खुद मेरा दिल हो गया।
यह मुसाफिर चलते-चलते आप मंजिल[18] हो गया ॥
९४ माँ, बाप, यार दोस्ते-जिगर[19] सब से हो निरास।
हरदम उसी करीम[20] की रख दिल मे अपने आस ॥

—नजीर

९५ डूबी हुई इतनी तो हकीकत[21] मे नजर हो।
इन्सान को तसवीर खुदा की नजर आये ॥

---

१. आत्मा २ शरीर ३. वस्त्र, परिधान ४ भगवान, प्रभु ५ करीब, निकट ६ प्रिय, प्रभु ७ दिल की जगह ८ भीड ९ बगीचे मे १० फूल ११ सुन्दरता १२ गुण-ग्राहक १३ चित्र १४ काल्पनिक १५ प्रिय की शोभा १६ प्यारे की खोज मे १७ विलुप्त, डूब गया १८ गन्तव्य स्थान, लक्ष्य-बिन्दु १९ जिगरी दोस्त २० दीनदयाल २१. वास्तविकता, असलियत, सच्चाई।

९६ दुनिया की बेवफाई[1] का जब से खुला है राज[2]।
हर वक्त एक दूसरी दुनिया नजर मे है॥

९७ जीना भी आ गया मुझे मरना भी आ गया।
पहचानने लगा हूँ तुम्हारी नजर को मै॥

—असगर

९८ चमक-दमक पर मिटा हुआ है, यह बागवा[3] तुझको क्या हुआ है?
फरेबे-शबनम[4] मे मुब्तिला[5] है, चमन की अब तक खबर नही है॥

—असगर

९९ मै यह कहता हूँ फना[6] को भी अता[7] कर जिन्दगी।
तू कमाले-जिन्दगी[8] कहता है मर जाने मे है॥

—असगर

१०० जो जहर हलाहल है, अमृत भी वही लेकिन।
मालूम नही तुझको अन्दाज[9] ही पीने के॥

—फिराक़

१०१ तेरे आजाद बन्दो[10] की न यह दुनिया न वह दुनिया।
यहाँ मरने की पाबन्दी[11] वहाँ जीने की पाबन्दी॥

—इक़बाल

१०२ तालीम[12] का शोर[13] इतना, तहजीब[14] का गुल[15] इतना।
बरकत[16] जो नही होती, नीयत[17] की खराबी है॥

—अकबर

१०३ मस्जिद तो बना दी शब-भर मे ईमा की हरारत[18] वालो ने।
मन वो ही पुराना पापी रहा, बरसो मे नमाजी[19] बन न सका॥

---

१ बेमुरव्वती २ भेद, रहस्य ३ माली ४ ओस का धोखा ५ सलग्न ६ क्षण-भगुरता, विनाश ७ प्रदान ८ जीवन की प्रकर्षता ९ ढग, तरीके १० सेवको ११ बन्धन, प्रतिबन्ध १२ शिक्षा १३ कोलाहल १४ सभ्यता १५ हल्ला-गुल्ला १६ विकास, प्रगति, उन्नति १७. भावना १८ गर्मी १९ पुजारी, उपासक।

इकबाल बडा उपदेशक है, मन बातो मे मोह लेता है।
गुफ्तार[1] का यह गाजी[2] तो बना, किरदार[3] का गाजी बन न सका ।।

—इक़बाल

१०४ फँस गया दिल, पर यह दुनिया इश्क[4] के काबिल न थी।
जा-ए-इबरत[5] थी, यह इशरत[6] के लिए महफिल[7] न थी ।।

१०५ यह ऐश-गह[8] नही है, या रग और कुछ है ।
हर गुल है इस चमन मे सागर[9] भरा लहूका ।।

—मीर

१०६. इस बज्मे-जहाँ[10] मे है दिल-तोड[11] कोई किसका ?
हँसती रही सब महफिल, जलता रहा परवाना ।।

१०७ जब मैं कहता हूँ कि या अल्लाह मेरा हाल देख।
हुक्म होता है कि अपना नामा-ए-ऐमाल[12] देख ।।

—अकबर

१०८ किया रफअत[13] की लज्जत[14] से न दिल को आश्ना[15] तूने।
गुजारी उम्र पस्ती[16] मे मिसाले नक्शे-पा[17] तूने ।।
फिदा[18] करता रहा दिल को हसीनो[19] की अदाओ[20] पर।
मगर देखी न इस आईने मे कुछ अपनी अदा तूने ।।

—इक़बाल

---

१ वक्तृत्व, कथन २ धर्मवीर, शूरवीर ३ कर्तृत्व, आचरण ४. प्रेम ५ बोधपाठ लेने की जगह ६ ऐश्वर्य-भोग ७ ससार रूपी सभा ८ सुख-भोग की जगह ९ पात्र, प्याला १० ससार रूपी सभा मे ११ हमदर्द, सहानुभूति रखने वाला १२ करतूतो की लिस्ट, कुकर्मों की सूची या नामावली १३ उच्चता १४ मजे से १५ अभिज्ञ, परिचित १६ पतनावस्था मे १७ पैर के निशान की तरह १८ आसक्त, कुरबान १९ सुन्दरियो की २० हाव-भावो पर ।

१०९ समाया है जब से तू आँखों में मेरी ।
जिधर देखता हूँ, उधर तू-ही-तू है ॥

— पादशाह

११० मेरा तजरुबा[1] है कि इस जिन्दगी में ।
परेशानियाँ-ही-परेशानियाँ[2] हैं ॥

— हफ़ीज़

१११ तू अपने को ढूँढ रहा है दुनिया के मामूरे[3] में ।
यह बेगाना देश है ऐ दिल ! इसमें सब बेगाने हैं ॥

—अदीब

११२ निगह[4] में अंजामे-जुस्तजू[5] है, कदम भी आगे बढ़ा रहा हूँ ।
नज़र मुकद्दर ही पर नहीं है, खुदा को भी आजमा रहा हूँ ॥

—दर्द

११३ यह फकत आँसू नहीं ऐ चश्मे-जाहिरबीन[6] दोस्त ।
अपनी पलकों पै लिये बैठे हैं इक अफसाना हम ॥

—जगन्नाथ आजाद

११४ कबूल[7] करते न हम अज़ल[8] में किसी तरह यह लिबासे-इन्सां ।
खबर जो होती कि पस्त[9] इस दर्जह[10] फितरते-आदमी[11] मिलेगी ।

— आरिफ

११५ मिटने वालों की वफा का—यह सबक याद रहे ।
बेड़ियाँ पाँवों में हों और दिल आजाद रहे ॥

११६. खुदा की याद में महवीयते-दिल[12] बादशाही है ।
मगर आसाँ नहीं है सारी दुनिया को भुला देना ॥

—अकबर

---

१ अनुभव २ दुख ही दुख है ३ बस्ती में ४ दृष्टि ५ खोज का परिणाम ६ बाह्य दृष्टि से देखने वाले ७ स्वीकार ८ कयामत या हश्र में ९ नीचा १० इस तरह ११ मानवस्वभाव १२ हृदय की तल्लीनता ।

११७ जब तक यह दिल भगवान से वासिल[1] नही होता।
फना के वाद भी लुत्फे-बका[2] हासिल नही होता॥

—हाली

११८ अगर हद्दे-खुदी-ओ-बेखुदी से मावरा[3] होता।
तो यह इन्सान फिर इन्सान क्यो होता, खुदा होता॥

—सीमाब

११९ दिमाग-ओ-रूह यकसा चाहिए इन्साने-कामिल[4] मे।
यह क्या तकसीमे-नाकिस[5] है, खुदी सर मे खुदा दिल मे॥

—सीमाब

१२० 'साइल' सवाल करके न खोना तुम आबरू[6]।
दुनिया मे एक चीज है, वस आदमी की वात॥

— साइल देहलवी

१२१ गमे-हयात[7] को दुनिया पै आशकार[8] न कर।
यह इक राज है, जिक्र इसका बार बार न कर॥
अमल की राह मे होती है मुश्किले पैदा।
किसी को अपने इरादे[9] का राज़दार[10] न कर॥

—रौनक

१२२ हाथ से कासा[11] गदाई[12] का न छूटा एक दिन।
और मुँह से ताजे-शाही[13] के है दावेदार हम॥

—जोश मलसियानी

१२३ गुनाहो[14] पर वही इन्सान को मजबूर करती है।
जो इक बेनाम-सी, फानी-सी[15] लज्जत[16] है गुनाहो मे॥

—सीमाब

---

१ मिलने वाला, साक्षात्कर्ता २ अखण्ड-स्थायी आनन्द ३ उच्च, निर्लिप्त ४ पूर्ण पुरुष ५ तुच्छ, नगण्य विभाग ६ इज्जत ७ जीवन का दुख ८ प्रकट, जाहिर ९ सकल्प १० भेदी ११ पात्र, प्याला १२ फकीरी का, मगतेपन का १३ राज-मुकुट के १४ पापो १५ क्षणिक १६ मजा।

१२४ वोह अपनी जिन्दगी मे बन्दगी क्यो लाजिमी[1] समझे ?
जो अपनी जिन्दगी को इक मुसलसल[2] बन्दगी समझे ॥
—सीमाब

१२५ निशानी चाहिए कुछ आने वाले जाने वाले की।
यह माना है बशर[3] फानी इधर आना उधर जाना ॥
१२६ खान-ए-तन[4] की खराबी का मैं करता फिक्र क्या ?
गौहरे-जाँ[5] पर फकत[6] इक खाक[7] का अबार[8] था ॥
१२७ इक मुअम्मा[9] है समझने का न समझाने का।
जिन्दगी क्या है फकत ख्वाब है दीवाने का ॥
—अख्तर

१२८ मेरे दिल को अल्लाह आबाद रक्खे।
मेरा दिल ही मस्जिद है, दिल ही शिवाला।
—नूह

१२९ कमाले-बन्दगी[10] यह है कि महवे-बन्दगी[11] हो जा।
यह आलम[12] हो न जब तक बन्दगी मानी नही जाती ॥
—बिस्मिल

१३० है दैरो-हरम[13] मे क्या रक्खा ? जिस सिम्त[14] गया टकराके फिरा,
किस पर्दे के पीछे है शोला,[15] अन्धा परवाना क्या जाने ?
सिजदो[16]-से पडा पत्थर मे गढा, लेकिन न मिटा माथे का लिखा,
करने को गरीब ने क्या न किया, तकदीर बनाना क्या जाने ?
—आरजू

---

१ जरूरी २ लगातार, निरन्तर ३ मनुष्य, ४ शरीर रूपी घर की ५ आत्मा रूपी रत्न ६. केवल ७. मिट्टी ८. ढेर ९. गुत्थी १०. पूर्ण उपासना ११. उपासना मे लीन १२. अवस्था, दशा १३. मन्दिर-मस्जिद मे १४. दिशा, ओर १५ स्फुलिंग, चिनगारी १६. नमाजो मे नतमस्तक होने से।

१३१ ऐ दिल तू कही ले चल, यह दैरो-हरम छूटे।
इन दोनो मकानो मे आता है नज़र झगड़ा ॥
—रामतीर्थ

१३२ ये तो है चन्द जलवे जो झलक आए है।
रग है और मेरे दिल के गुलिस्ताँ[1] मे अभी ॥
—सरदार जाफरी

१३३ सबका तो मुदावा[2] कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सबके तो गिरेबाँ[3] सी डाले, अपना ही गिरेबाँ भूल गए ॥
—मजाज

१३४. जहाद[4] उसको नही कहते कि होवे खून इन्सा का।
करे जो कत्ल अपने नफ्से-काफिर[5] को वह गाजी[6] है ॥
—अख्तर

१३५ आए भी लोग, बैठे भी, उठ भी खडे हुए।
मैं जा[7] ही ढूँढता तेरी महफिल मे रह गया ॥
—आतिश

१३६. कुछ नही तो कम-से-कम ख्वाबे-सहर[8] देखा तो है।
जिस तरफ देखा न था अब उस तरफ देखा तो है ॥
—मजाज

१३७ ऐ 'जौक' गर है होश तो दुनिया से दूर भाग।
इस मैकदे मे[9] काम नही होशियार का ॥
—जौक़

१३८ मुसीबत हो कि राहत[10] हो, नही लाजिम[11] गिला करना।
बशर का फर्ज[12] है हर हाल मे शुक्रे-खुदा[13] करना ॥
—ताहर

---

१ उद्यान, वाटिका मे २ इलाज ३ कपडे, दामन ४ सघर्ष ५ दुष्ट वासना, दुर्वासना ६ धर्मवीर, धर्मयोद्धा ७ स्थान, जगह ८ सुबह का सपना ९ मदिरालय मे १० सुख, आराम ११ आवश्यक १२ कर्तव्य १३ परमात्मा का धन्यवाद।

१३९ सदा राहत उसी को है, वही मकसूद बन्दा[1] है।
जो हर हालत मे 'अन्न' अपने खुदा का शुक्र करता है॥

—अन्न

१४० मैं क्या हूँ, कौन हूँ? न हुआ उम्र-भर यह इल्म[2]।
खुद अपनी मार्फ़त[3] से रहा इश्तवाह[4] मै॥

—ख़िर्द

१४१ अपनी खुदी मिटाएँ तो पाएँ रहे-विसाल[5]।
खोये जो आपको वह तेरी जुस्तजू करे॥

१४२ तुझे देखा तो अब कुछ देखने को जी नही चाहता।
किये हैं बन्द आँखे तेरी सूरत देखने वाले॥

— हनीफ

१४३ ऐ 'अमीर' अव्वल तो वह आश्ना[6] मिलता नही।
मिल गया जिसको कही, उसका पता मिलता नहीं॥

— अमीर

१४४ सब सनअ़ते[7] जहाँ की, 'आजाद' हम को आई।
पर जिससे यार मिलता, ऐसा हुनर[8] न आया॥

— आजाद

१४५ तू दिल मे तो आता है, समझ मे नही आता।
बस जान गया मैं तेरी पहचान यही है॥

—अकबर

१४६ दरे-मुहब्बत[9] का इक गदा[10] हूँ, परी का तालिब[11] न हूर का हूँ।
तुझी को तुझसे मैं चाहता हूँ— बस और मेरा सवाल क्या है?

—जलील

---

१ सच्चासेवक २ ज्ञान ३ तरफ से ४ लापरवाह, गुमराह, अपरिचित ५ मिलन-मार्ग ६. यार, प्रभु ७. शिल्प कलाएँ ८ विद्या, कला ९ प्रेम का द्वार १० फ़कीर ११ इच्छुक।

१४७ हक़ीकत[1] मे जगहे-दुनिया नही है दिल लगाने की।
वफा करती नही यह बेवफा सारे जमाने की॥

—जलील

१४८ इस ऐशे-जाहिरी[2] को छोड ऐ ख़ुदा के बन्दे।
रग-रग मे चुभ रहे है जब लाख-लाख काँटे॥

१४९ नाखुदा[3] को छोडकर जिनकी खुदा पर है निगाह[4]।
हर तरह महफ़ूज[5] किश्ती उनकी तूफानो मे है॥

१५० छोड सब की दोस्ती, कर दोस्तदारी[6] एक की।
एक हो गर यार, निभ जाएगी यारी एक की॥

—ज़फर

१५१ नादान से नही कहते, कहते है दाना[7] से।
दाना है वो जो दिल अपना फेरे है दुनिया से॥

—ज़फर

१५२ आसाँ[8] नही है दाम[9] से दुनिया के छूटना।
यह इक बडे हकीम का बाँधा तिलस्म[10] है॥

—अमीर

१५३ कोई काबे को जाता है, कोई बुतख़ाने को।
राह उस यार के मिलने की मगर और ही है॥

—ज़फर

१५४ घर मे तो अँधेरा और लेके मस्जिदो मे।
हमने जलाए घी के जाकर दिये तो फिर क्या ?

—ज़ाकिर

---

१ वास्तव मे २ बाह्य या भौतिक सुख ३ मल्लाह ४ दृष्टि ५ सुरक्षित ६ मित्रता ७ बुद्धिमान् ८ सरल ९ जाल, १० जादू।

१५५. दिल सियाह[1] है, वाल सब अपने है पीरी[2] मे सफेद।
घर के अन्दर है अँधेरा और वाहर रौशनी॥
- क़लामी

१५६. पर्दे को अँधेरे के दरे-दिल[3] से हटा दे।
खुलता है अभी पल मे तिलस्मात[4] जहाँ का ?
—सौदा

१५७ न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता।
डुवोया मुझको होने ने, न होता मै तो क्या होता ?
—ग़ालिब

१५८ 'नज़र' तेरे मुस्तकविल[5] की तामीर[6] है तेरे हाथो मे।
क्यो गोशए-राहत[7] मे छुपकर कुदरत का शिकवा करता है ?
—नज़र

१५९ घर के अन्दर बैठकर अव तक किसी ने क्या लिया ?
जिसने कोई जुस्तजू की, उसने मकसद[8] पा लिया॥

१६० जिन्दगी की लज्जतो[9] मे जिस कदर आगे वढे।
दिलकशी[10] के साथ रस्ता पुरख़तर[11] होता गया॥

१६१ जिन्दगी इक तीर है जाने न पाये रायगाँ[12]।
देखलो पहले निशाना[13], वाद मे खीचो कमाँ[14]॥

१६२ इलाही करके तय किन रफअतो[15] को मै कहाँ पहुँचा ?
कि यकसाँ[16] पड रही है अव निगाहे दोस्त दुश्मन पर॥
— अहमद सद्दीकी

---

१ काला २ वृद्धावस्था मे ३ हृदय-द्वार मे ४ जादू ५ भविष्य की ६ निर्माण, रचना ७ सुख के कोने मे ८ लक्ष्य, अर्थ ९ खुशियो मे १० आकर्षण के ११ भयकर १२ व्यर्थ १३ लक्ष्य १४ कमान, धनुष १५ ऊँचाइयो को १६ वरावर।

१६३ बडी मुश्किल से आता है मयस्सर जिन्दगी भर मे।
वोह इक लमहा[1] जिसे इन्सा गुजारे शादमा[2] होकर ॥
—शफक

१६४ जो सच पूछो तो दुनिया मे फकत रोना-ही-रोना है।
जिसे हम जिन्दगी कहते है, काँटो का बिछौना है।
—अख्तर शीरानी

१६५ मजिल मे मुहब्बत की हस्ती[3] ही रुकावट है।
कल बज्म[4] मे कहता था, जलता हुआ परवाना ॥
—माहिर

१६६ हर्गिज़ फरेबे-रगे-मसर्रत[5] न खाइए ।
यह गम का नाम है, यह हकीकी खुशी[6] नही ॥
—शौकत थानवी

१६७ हर हाल मे खुश रहना, खुश रहके अलम[7] सहना।
इक चीज जमाने मे फरहत[8] की भी हस्ती[9] है ॥
—फरहत कानपुरी

१६८ उफ रे ! यह जौके-इबादत[10] की अजाइबकारियाँ[11]।
दिल कही है, मैं कही, सजदा[12] कही है, सर कही।
अफसर मेरठी

१६९ बढा दी इतना कहकर शमा[13] ने परवानो की हिम्मत।
"है जलना काम उनका, जो हैं दिलवाले जिगरवाले ॥
—अलम मुज़फ्फरनगरी

१७० जरा दरिया की तह तक पहुँच जाने की हिम्मत कर।
तो फिर ऐ डूबने वाले किनारा ही किनारा है ॥
—माहिर

---

१ पल, क्षण २ प्रसन्न ३ जीवन ४. महफिल ५. खुशी के रग का धोखा ६ सच्चा आनन्द ७ दुख ८ कवि का उपनाम और खुशी ९ अस्तित्व १० उपासना की रुचि, लगन ११ विचित्रताएँ, आश्चर्यजनक बातें १२ नमन, मस्तक झुकाना १३ मोमबत्ती, दीपक ने।

१७१ कुछ अपना मर्तबा[1] जानो, कुछ अपनी क़द्र पहचानो।
जमी पर बसने वालो! शिकवये-हफ्त-आस्माँ[2] कब तक?
—अम्न

१७२ है कामयाब वही इस जहाने-फानी[3] मे।
जो बेनियाज़े-तमन्ना[4] है जिन्दगानी मे॥

१७३. मेरी परवाज[5] क्या आए नजर तुमको चमन वालो।
तग़व्वुर[6] मे जो उडता हो, वोह महद्दे-नजर[7] क्यो हो?
—अलम मुजफ्फरनगरी

१७४ कही बिजली, कही गुलची,[8] कही सैयाद[9] का खतरा।
फले-फूलेगी इस गुलशन मे शाखे-आशियाँ[10] क्यो कर?
—अलम „

१७५ मजिले-अर्शपै[11] दम लेने को ठहरू तो, मगर—
दम भी लेने दे मुझे लज्ज़ते-परवाज़[12] कही?
—अलम „

१७६ देख ऐ मुबइम[13] यही था मुझ मे-तुझ मे इम्तियाज़[14]॥
तेरा कब्जा[15] था जहाँ पर, मेरा कब्जा दिल पै था॥
—अलम „

१७७ तलाश-ओ-जुस्तजू[16] की सरहदें[17] अब ख़त्म होती हैं।
खु़दा मुझको नज़र आने लगा इन्साने-कामिल[18] मे॥
—अलम „

१७८ है फर्ज तुझपै बन्दए-खुदा[19] की तलाश।
ख़ुदा की फिक्र न कर, वोह मिला, मिला, न मिला॥
—अलम „

---

१ दर्जा, गौरव २ सातवें आसमान की शिकायत ३ क्षणभगुर ससार मे ४ कामना से अनभिज्ञ, अपरिचित ५ उडान ६ विचार, चिन्तन, खयाल ७. सकीर्ण दृष्टि ८ माली ९ शिकारी १० घोसले की टहनी ११ आकाश की मजिल पर १२ उडान का आनन्द १३ धनिक १४ अन्तर, भेद १५ अधिकार १६ खोज और तलाश १७ सीमाएँ १८ पूर्ण पुरुष मे १९ ईश्वर-भक्त।

१८९ खाकसारी[1] का है गाफ़िल ! बहुत ऊँचा मर्तबा।
यह जमीं वह है कि जिस पर आसमाँ कोई नहीं ॥

—अलम „

१८० कोई सोता हो जैसे डूबती किश्ती के तख्ते पर।
अगर कुछ है तो बस इतनी है इस दुनिया की राहत[2] भी ॥

—मुल्ला

१८१. यह दुनिया है ऐ 'शाद', नाहक न उलझो।
हर इक तो कुछ अपनी-सी आखिर कहेगा ॥

—शाद

१८२ पढके दो कलमे अगर कोई मुसलमा हो जाए।
फिर तो हैवान[3] भी दो रोज मे इन्साँ[4] हो जाए ॥

—यगाना

१८३ गुलो[5] पर क्या है, काँटो तक का मैं दिल से दुआ-गो[6] हूँ।
खुदावन्दा[7] ! न टूटे दिल किसी दुश्मन से दुश्मन का ॥

—शाद

१८४ फैल गई बालो में सुफेदी चौंक जरा करवट तो बदल।
शाम से गाफिल सोने वाले ! देख तो कितनी रात हुई ?

—आरजू लखनवी

१८५ शबनम[8] के आँसुओ पर क्या हँस रहे है गुंचे[9] ?
उनसे तो कोई पूछे, कब तक हँसा करेंगे ?

—आरजू

१८६ गुलो ने खारो के छेडने पर सिवा खमोशी[10] के दम न मारा।
शरीफ[11] उलझे अगर किसी से तो फिर शराफत[12] कहाँ रहेगी ?

—शाद

---

१ नम्रता २ सुख-चैन ३ पशु ४ मनुष्य ५ फूलो ६ दुआ माँगने वाला ७ हे ईश्वर, हे प्रभो ८ ओस के ९ कलियाँ १० चुप्पी ११ सज्जन १२ सज्जनता ।

१८७ दुनिया की तरक्की है, इस राज से वावस्ता[1]।
इन्सान के कब्जे मे सब कुछ है, अगर दिल है ॥

—सफी लखनवी

१८८ वो काम कर बुलन्द[2] हो जिससे मजाके-जीस्त[3]।
दिन जिन्दगी के गिनते नही माहो-साल से ॥

—असर लखनवी

१८९ कौन कहता है कि मौत अजाम[4] होना चाहिए।
ज़िन्दगी का जिन्दगी पैगाम[5] होना चाहिए ॥

—असर ,,

१९० ख़ुदा ऐसे वन्दो से क्यो फिर न जाए ?
जो बैठा हुआ माँगना जानता है ॥

—यगाना चंगेज़ी

१९१ अपना अदा शनाश[6] बन, अपना जमाल[7] भी तो देख।
तुझ मे कमी है कौन-सी, तुझ मे कमी कोई नही ॥

—अवीब

१९२ बन्दा वह, जो दम न मारे ।
प्यासा खडा हो दरिया किनारे ॥

— यगाना

१९३ हमे ख़ुदा के सिवा कुछ नजर नही आता।
निकल गए है वहुत दूर जुस्तजू से हम ॥
१९४ पैदा वोह बात कर कि तुझे रोये दूसरे।
रोना ख़ुद अपने हाल पै यह ज़ार-जार क्या ?

—अज़ीज़

---

१ आवद्ध, नत्थी २ उच्च ३ जीवन का लक्ष्य ४ परिणाम, नतीजा ५ सन्देश ६ आत्म-पारखी ७ सौन्दर्य, रूप, छवि, खूबी ।

१९५ था मुल्क जिनके ज़ेरे-नगी,[1] साफ मिट गये।
तुम इस ख़याल मे हो कि नामो-निशा रहे॥

—मीर

१९६. दुनिया से इक अफसाना[2] कहने को थे, मगर सोचा।
दुनिया है ख़ुद अफसाना, अफसाने से क्या कहिए॥

—अवधूतानन्द

१९७ राही कही है, राह कही, राहवर[3] कही।
ऐसे भी कामयाव हुआ है सफर कही॥

—भोलानाथ

१९८ तेरी गली मे आकर खोये गए है दोनो।
दिल मुझको ढूँढता है, मैं दिल को ढूँढता हूँ॥

१९९ जाहिर मे गो वैठा लोगो के दरमियाँ[4] हूँ।
पर यह खवर नही है—मैं कौन हूँ, कहाँ हूँ?

—विद्यासागर

२०० और पर क्यो जान दे, क्यो और पर क़ुरबान[5] हो।
जिस पै आशिक हो गए, हम उस पै आशिक हो गए॥

—विद्यासागर

२०१ तेरे सीने मे[6] तो नादाँ[7] बहरे-वेपाया[8] रहे।
और तू कतरे[9] के पीछे शाकी-व-नालाँ[10] रहे॥

—भोलानाथ

२०२ इक नजर का है वदलना और इस जा कुछ नही।
दरमियाने-मौजो-कतरा[11] ग़ैरे-दरिया[12] कुछ नही॥

—नाथ

---

१ शासनाधीन, मातहत २ कहानी, किस्सा ३ मार्ग-दर्शक ४ वीच मे ५ न्योछावर, ६ अन्त करण मे ७ गाफिल, मूर्ख ८ अक्षय क्षीरसागर ९ विन्दु के १० सदिग्ध, और रोता हुआ ११ वूँद और लहर के वीच मे १२ नदी के अतिरिक्त।

२०३ क्या शै[1] है कि जिसमे तेरी शान[2] नही है।
पर हक[3] तो यह है कि बन्दे को पहचान नही है।
२०४ वोह चश्म[4] कर[5] है कि नही जिसमे तेरा नूर।
तारीक[6] दिल है, जिसमे तेरी रोशनी नही॥

—शौक़

२०५ आलमे-फानी[7] की यारो! चाल देखी है अजब[8]।
इस जहाँ से जो गया, वैसा न आया फिर कोई॥

—जेम्स कार्कर

२०६ हमने राहे-उल्फत[9] मे क्या कहे कि क्या पाया?
आपको भुला बैठे, जब तेरा पता पाया॥

—फना

२०७ रह शौक से जहाँ मे, मगर यह खयाल रख।
इस घर मे कोई तुझसे भी पहले जरूर था॥

—फना

२०८ हैफ![10] जो दिल मे था उसको ही न देखा हमने।
दूर दरिया से रहे साहिले-दरिया[11] होकर॥

—फना

२०९ महवे-तलाशे-राहत[12]! तू यह भी जानता है।
कहते हैं जिसको राहत, वोह गम की इन्तहा[13] है॥

—अफ़सर

२१० तेरी हस्ती[14] से मुनकिर[15] होते जाते हैं जहाँ वाले[16]।
सँभाल अपनी खुदाई को अरे ओ आसमाँ वाले॥

—मुल्ला

---

१ वस्तु २ जल्वा, प्रकाश ३ सच ४ आँख ५ अन्धी ६ अन्धकार पूर्ण ७ क्षणभंगुर संसार की ८. निशानी ९ प्रेम-मार्ग १० अफसोस, आश्चर्य ११ नदी तट पर १२ सुख-चैन की खोज में तल्लीन १३ अति १४ अस्तित्व १५ इनकार करने वाले १६ दुनिया के लोग।

२११. तमन्नाएं[1] वर आई[2] अपनी तर्के-मुद्दआ[3] होकर ।
हुआ दिल वेतमन्ना[4] अब, रहा मतलब से क्या मतलब ?
—अमरनाथ साहिर

२१२ परदा पडा हुआ था गफलत का चश्मे-दिल[5] पर ।
आँखे खुली तो देखा आलम[6] मे तू-ही-तू है ॥

२१३ हम जग करेंगे फितरत[7] से फितरत पर काबू पाएंगे ।
और फितरत पर काबू पाकर, इक रोज अमर हो जाएंगे ॥
— रूहतशामहुसैन

२१४ चाह[8] ने अन्धा कर रखा है और नही तो देखने मे ।
आँखे-आँखे सब हे बराबर, कौन निराली आँखे है ॥
—आरजू लखनवी

२१५ हमे दुनिया के झमेलो का कोई एहसास[9] नही ।
एक कोने मे अलग सबसे जुदा वैठे हैं ॥
— बिस्मिल

२१६ तमाशा इसको समझे, खेल समझे, दिल्लगी समझे ।
बस उसकी जिन्दगी है, मौत को जो जिन्दगी समझे ॥
—विस्मिल

२१७ खुदी[10] को कर बुलन्द[11] इतना कि हर तकदीर से पहले ।
खुदा बन्दे[12] से खुद पूछे, बता तेरी रजा[13] क्या है ॥
—इक्बाल

२१८ महवे-तसबीह[14] तो सब है—मगर इदराक[15] कहाँ ?
जिन्दगी खुद ही इबादत[16] है, मगर होश नही ॥
—नातिक़

---

१ इच्छाएं २ पूर्ण हुई ३ निरिच्छ, निरीह ४ निष्काम, ५. मन की आँख ६ ससार मे ७ प्रकृति, आदत, स्वभाव पर ८ तृष्णा, इच्छा ९ अनुभूति, पता, ज्ञान १० अहभाव, अपनत्व को ११ ऊँचा १२ उपासक से १३ इच्छा, मर्जी १४ माला जपने मे लीन १५ ज्ञान, समझ १६ उपासना ।

२१९ बशर[1] ने खाक पाया, लाल पाया या गुहर[2] पाया।
मिजाज[3] अच्छा अगर पाया तो सब कुछ उसने भर पाया ।।

—दाग़

२२० उन्ही को हम जहाँ[4] मे रहरवे-कामिल[5] समझते है।
जो हस्ती[6] को सफर[7] और कब्र को मजिल[8] समझते है ।।

—वर्क

२२१ खिरदमन्दो[9] से क्या पूछूँ कि मेरी इब्तिदा[10] क्या है ?
कि मैं इस फिक्र मे रहता हूँ मेरी इन्तहा[11] क्या है ?

—इक़बाल

२२२ इश्के-सादिक[12] जिसको कहते है, वोह परवाने मे है।
जिन्दगी का लुत्फ[13] जिसको जल के मर जाने मे है ।।

२२३ देख परवाना कभी राहे-गलत[14] चलता नही।
छोड़कर दीपक को वह आग मे जलता नही ।।

२२४ तेरे जलवो ने मुझे घेर लिया है ऐ दोस्त !
अब तो तनहाई[15] के लमहे[16] भी हसी[17] होते है ।।

— सीमाब

२२५ यकी[18] पैदा कर ऐ नादा ! यकी से हाथ आती है।
वोह दरवेशी[19] कि जिसके सामने झुकती है फगफूरी[20] ।।

— इक़बाल

२२६. जमाने मे चर्चे[21] हैं दैरो-हरम[22] के।
बडी रौनको पर है दोनो दुकाने ।।

— हफ़ीज़

---

१ आदमी ने २ मोती, ३ स्वभाव ४ दुनियाँ मे ५. पूर्ण पथिक ६. जिन्दगी को ७ यात्रा ८ गन्तव्य स्थान, पडाव ९ ज्ञानियो १० आरम्भ, आदि ११ अन्त १२ सच्चा प्रेम १३ मजा, आनन्द १४ गलत मार्ग पर १५ एकान्त १६ क्षण १७ सुन्दर १८. विश्वास १९ फकीरी २०. बादशाहत २१ जिक्र २२ मन्दिर और मस्जिद ।

२२७ आबरू[1] क्या है, तमन्नाए-वफा[2] मे मरना ।
दीन[3] क्या है, किसी कामिल[4] की परस्तिश[5] करना ॥
—चकबस्त

२२८ आराम[6] अगर चाहे तो आ राम[7] की तरफ ।
फन्दे[8] मे फसा चाहे तो जा दाम[9] की तरफ ॥

२२९ नियाजे-इश्क[10] को समझा है क्या ऐ वाइजे-नादाँ[11] ।
हजारो बन गए काबे[12] जबी[13] मैंने जहाँ रख दी ॥
—असग़र

२३० आईना[14] उठा करके यूँ अक्स[15] से कहता है—
"क्यूँ बात नही करता, जो तू है वही मैं हूँ ॥"

२३१ जब अपने तसव्वुर[16] को मादूम[17] किया मैने ।
हर आईने मे तेरी तसवीर नजर आई ॥

२३२ आह किसकी जुस्तजू[18] आवारा[19] रखती है तुझे ।
राह[20] तू, रहरौ भी[21] तू, रहबर[22] भी तू, मजिल भी तू ॥

२३३ कापता है दिल तेरा अन्देश-ए-तूफा[23] से क्या ?
नाखुदा[24] तू, बहर[25] तू, किश्ती[26] भी तू, साहिल भी तू ॥

२३४ वाये-नादानी[27] कि तू मोहताजे-साकी[28] हो गया ।
मय[29] भी तू, मीना[30] भी तू, साकी[31] भी तू, महफिल भी तू ॥
—इक़बाल

---

१ प्रतिष्ठा, इज्जत २ प्रेम की अभिलाषा मे ३ धर्म ४ पूर्ण, सिद्ध, ज्ञानी ५ पूजा ६ सुख-शान्ति, ७ परमात्मा, अध्यात्म, ८ बन्धन, जाल ९ कचन, माया १० प्रेमाभिलाषा, ११ मूर्ख उपदेशक १२ मुस्लिम तीर्थ-स्थान १३ मस्तक १४ दर्पण १५ प्रतिबिम्ब १६ ध्यान को १७ नष्ट, दूर १८. तलाश १९ व्यर्थ ही इधर-उधर घूमने वाला, २० पथ २१ पथिक २२ पथप्रदर्शक २३ तूफान का डर २४ मल्लाह २५ समुद्र २६ नौका २७ अज्ञानता के कारण २८ पिलाने वाले का मोहताज २९ मदिरा ३० प्याला ३१ पिलाने वाला ।

२३५ आरजू, फिर आरजू के बाद खूने-आरजू[1]।
चार हर्फो[2] मे है सारी दास्ताने-जिन्दगी[3]॥

२३६ बहुत मुश्किल निभाना है मुहब्बत अपने दिलबरसे[4]।
उधर सूरत अमीराना, इधर हालत फकीराना॥

—अवधूतानन्द

२३७ वाये-नादानी कि वक्ते-मर्ग[5] यह साबित[6] हुआ।
ख्वाब[7] था जो-कुछ कि देखा, जो सुना अफसाना[8] था॥

२३८ हम है खुद खुदा, न वोह हमसे जुदा।
जो जाने जुदा, सो न पावे खुदा॥

२३९ दुई का पर्दा फाड कर करदे गाफिल तार-तार।
और अपने आसुओ का ले गले मे डाल हार॥

—भोलानाथ

२४० दमे-आखिर[9] हम अपनी जिन्दगी का राज क्या समझे?
यह कह कर चल दिए दुनिया से, दुनिया से खुदा समझे॥

—बिस्मिल

२४१ अगर है मजूर सरबलन्दी,[10] तो दूर नजरो से कर बलन्दी।
कि ओज[11] शम्सो-कमर[12] ने पाया है सर को अपने झुका-झुकाकर॥

—त्रिलोकचन्द

२४२ आके तमाशागाहे-जहाँ[13] मे दादे-तमाशा क्या चाहूँ?
याँ हर जर्रा[14] कहता है, मै जर्रा नही इक दुनिया हूँ॥

—फ़ानी

---

१ इच्छा का खून २ शब्दो मे ३ जीवन की कहानी ४ प्रिय ५ मृत्यु-वेला मे ६ प्रमाणित ७ सपना ८ किस्सा-कहानी ९ अन्तिम साँस मे १० उच्चता को पाना ११ ऊँचाई १२ चांद-सूरज १३ ससार का क्रीडा-गृह १४ परमाणु।

२४३ नेकने तो नेक जाना, बद ने जाना बद[1] मुझे।
हर किसी ने अपने ही रुतबे[2] मे पहचाना मुझे॥
—इक़बाल

२४४ गमके टहोके[3] कुछ हो बला से आके जगा तो जाते है।
हम हैं मगर वोह नीद के माते[4] जागते ही सो जाते हैं॥
—फानी

२४५ मंज़िले-इश्क़ पै तनहा[5] पहुँचे, कोई तमन्ना साथ न थी।
थक-थक कर इस राह मे आख़िर इक-इक साथी छूट गया॥
—फानी

२४६ मेरी नाकामयाबी[6] की कोई हद[7] हो नही सकती।
सदाकत[8] चल नही सकती, खुशामद हो नही सकती॥
—अकबर

२४७ दिल जो था ख़ास घर उसका न बनाया अफसोस।
मस्जिदो-दैर[9] बनाया करो, क्या होता है?
—आसी

२४८ रहता है इबादत[10] मे मुझे मौत का खटका[11]।
मैं यादे-खुदा करता हूँ, करले न खुदा याद॥
—दाग़

२४९ 'नसीम' अपने ही ऐमालो[12] से गर्दिश[13] है ज़माने की।
रवा[14] किश्ती पे[15] आता है नजर हर नख़्ल[16] साहिल[17] का॥
—नसीम

२५० हम फकीर अपनी फकीरी मे शबो-रोज[18] है मस्त।
तुझको ऐ शाह[19] मुबारक रहे शाही[20] तेरी॥
—अमीर

---

१ बुरा २ ढग ३ झोके, थपेडे, धक्के ४ मतवाले ५. अकेले ६ असफलता ७ सीमा ८ सच्चाई ९ मन्दिर १० उपासना मे ११ डर १२ कर्मों १३ चक्कर १४ चलता हुआ १५ नाव १६ वृक्ष, १७ किनारे १८ रात-दिन १९. बादशाह २० बादशाहत।

२५१ ऐ 'वली' रहने को दुनिया मे मुकामे-आशिक[1]।
कूचए-यार[2] है या गोशए-तनहाई[3] है।।

—वली

२५२ आलम[4] के लोगो का है तसवीर का-सा आलम[5]।
ज़ाहिर खुली है आँखे लेकिन है बेख़बर[6] सब।।

—मीर

२५३ ऐ हुब्बे-जाह[7] वालो! जो आज ताजवर[8] है।
कल उसको देखियो तुम, न ताज है न सर है।।

—मीर

२५४ न कोई पर्दा है उसके दर पर, न रूए-रौशन[9] नकाब मे है।
तू आप अपनी खुदी से ऐ दिल! हिजाब मे है, हिजाब[10] मे है।।
२५५ सब्ज[11] होती ही नही यह सरज़मी[12]।
तुख्मे-ख्वाहिश[13] इसमे तू बोता है क्या?
२५६ कोई किस दिल से मिलता है, कोई किस दिल से मिलता है।
मगर हाँ आशिके-सादिक[14] बडी मुश्किल से मिलता है।।

—बिस्मिल

२५७. न दरवेशो[15] का खिरका[16] चाहिए न ताजे-सुलताना[17]।
मुझे तो होश दे इतना, रहूँ मै तुझ पै दीवाना।।

—ज़फर

२५८ आए थे उसी की तजस्सुस[18] मे, जाते है उसी को ढूँढेगे।
इस आरजी[19] आने-जाने को फिर मरना-जीना क्या कहिए?

—अलम

---

१ प्रेमी का स्थान २ यार की गली ३ एकान्त कोना ४ ससार ५ हालत, दशा ६ बेसुध, बेहोश ७ शानो-शौकत ८ सम्राट् ९ प्रकाशमान, चेहरा १० पर्दा ११ हरी-भरी १२ भूमि १३ इच्छा का बीज १४ सच्चा प्रेमी १५ फकीरो का १६ लिबास १७ राज-मुकुट १८. तलाश, खोज मे १९. कृत्रिम।

२५९ दर पै शाहो के नही जाते फकीर अल्लाह के।
सर जहाँ रखते है सब, हम वा कदम रखते नही ॥
—नसीम

२६० दिल इबादत से चुराना और जन्नत[1] की तलब[2]।
कामचोर! इस काम पर किस मुँह से उजरत[3] की तलब?
—ज़ौक

२६१ हज़रते-दिल का देखना आलम[4], हाथ उठाए दुनिया से।
पाँव पसारे बैठे है और सर पै सफर के झगडे है॥
—ज़ौक

२६२. आँख जो-कुछ देखती है लब पै आ सकता नही।
महवे-हैरत[5] हूँ यह दुनिया, क्या से क्या हो जायगी॥
— सीमाब

२६३ सबक इबरत[6] का ले नादान! बालो की सुफेदी से।
कफन ओढा है जीते जी निगारे-जिन्दगानी[7] ने॥
नज़र[8] कर झुर्रियो से शेब[9] के सिमटे हुए रुख पर।
यह वह बिस्तर है दम तोडा है जिस पर जिन्दगानी ने॥
—जोश

२६४ हम क्या कहे अहबाब[10] क्या कारे-नुमायाँ[11] कर गए।
बी० ए० किया, नौकर हुए, पेन्शन मिली और मर गए॥
—अकबर

२६५ शौके-नज्जारा[12] था जब तक, आँख थी सूरत-परस्त[13]।
बन्द जब रहने लगी, पाए हकीकत[14] के मजे॥
—शाकिर मेरठी

---

१ स्वर्ग की २ आकाक्षा ३. पारिश्रमिक, मजदूरी की ४ स्थिति, हालत ५. विस्मय-विमुग्ध ६ शिक्षा का पाठ ७ जीवन-सौन्दर्य ने ८ दृष्टि डाल ९. मुँह १० मित्र ११ कारनामे १२ देखने का चाव ३१ रूप-पुजारिन, ऊपरी टीप-टाप देखने वाली १४ वास्तविकता, सच्चाई।

२६६. गिरे जाते है हम .खुद अपनी नजरो से सितम[1] यह है।
बदल जाते तो कुछ रहते, मिटे जाते है गम यह है॥

—अकबर

२६७ लोग कहते हैं कि है आप निहायत काबिल[2]।
मैं इसी सोच मे रहता हूँ कि किस क़ाबिल हूँ?

—अकबर

२६८ बन्दगी मे तो है वोह लुत्फ जो शाही मे नही।
दिल से कोई मगर अल्लाह का बन्दा भी तो हो॥

—अकबर

२६९. इल्मी तरक्कियो से जबाँ तो चमक गई।
लेकिन अमल[3] वही है फरेबो-दगा[4] के साथ॥

—अकबर

२७० अगर्चे आशिक बुतो का हूँ मैं, नजर .खुदा से फिरी नही है।
जो आँख रखते है जानते हैं कि आशिकी काफिरी[5] नही है॥

२७१ हकीकत[6] की तरफ अपना कदम जितना बढाता हूँ।
जिसे नजदीक समझा था, उसी को दूर पाता हूँ॥

२७२ दुनिया की महफिलो से घबरा गया हूँ यारब!
क्या लुत्फ अंजुमन[7] का, जब दिल ही बुझ गया हो?

—इक़बाल

२७३ अलग रहता हूँ मैं बज्मे-निशातो-ऐशे-दुनिया[8] से?
निगाहे-यास[9] हूँ, दर्दे-दिले-अफसुर्दगाँ[10] मै हूँ॥

—नाशाद

---

१ गजब २ अत्यन्त योग्य ३ आचरण, कर्म ४ छल-कपट के ५ नास्तिकता ६ सच्चाई ७ सभा-सोसायटी ८. ससार के भोग-विलास की प्रसन्नता की सभा से ९ निराशा की दृष्टि १०. उदास, मुरझाये हुए दिल का दुख।

२७४. खुदा की हस्ती[1] को याद रखना और अपनी हस्तीको भूल जाना।
नजर उसी पर है और बातो को मैने फिजूल[2] जाना ॥
—अकबर

२७५ रकबा[3] तुम्हारे गांव का मीलो हुआ तो क्या ?
रकबा तुम्हारे दिल का तो दो इच भी नही ॥
—अकबर

२७६ दुनिया की क्या हकीकत और हम से क्या तआल्लुक[4] ?
वो क्या है, इक झलक है, हम क्या है इक नजर हैं ॥
—अकबर

२७७ यही बहसे[5] रही सब मे, वोह कैसे है, वोह कैसे थे ?
यही सुनते हुए गुजरी वोह ऐसे है, वोह ऐसे थे ॥
अमल[6] औरो के ही देखा किये, ये नेक ये बद है।
तरक्की खुद न की कुछ, रह गए वैसे कि जैसे थे ॥

२७८ गर्चे[7] हूँ गुमराह, मंजिल[8] पर पहुँच जाऊँगा मैं।
रहरवो[9] के पाँव के चलते निशाँ[10] को देखकर ॥
—नाशाद

२७९ हजारो जीते, हजारो हारे, अजीब[11] दुनिया की कशमकश[12] है।
जो देखा 'नाशाद' वक्त बाकी, न जीत बाकी न हार बाकी।
—नाशाद

२८०. हूँ महवे-जात[13] इतना कि बेखुद हूँ, मस्त हूँ।
अब मै खुदापरस्त[14] नही, खुदपरस्त[15] हूँ ॥
—हमीदुल्ला

---

१. अस्तित्व २ बेकार ३ क्षेत्र ४ सम्बन्ध ५ वाद-विवाद ६ आचरण, व्यवहार ७ यद्यपि ८ लक्ष्य पर, ९ यात्रियो के १० चिन्ह, निशान ११. निराला १२ सघर्ष १३ अपने आप मे लीन १४ प्रभु-पुजारी १५ आत्मोपासक।

२८१ हजार साइन्स[1] रग लाए, हजार बाते हम बनाएँ।
खुदा की .कुदरत[2] यही रहेगी, हमारी हैरत[3] यही रहेगी ॥
—अकबर

२८२ आसमा के ओज[4] से अफकार[5] को वापस बुला।
यह जमी सब-कुछ है नांदा ! आसमा कुछ भी नही ॥
—कमाल

२८३ जमी से दूर तारो पर निगाहे[6] डालने वाले !
खबर[7] भी है कि यह ख़ाकी कुर्रा[8] भी इक सितारा है ?
—कमाल

२८४. जबाँ खोली है महफिल मे वाह-वाह[9] के लिए।
कभी तो बन्द कर आँखे खुदा के लिए ॥
—अकबर

२८५ मैं जिसे समझा हूँ 'मै' वह नफ्स[10] की है ख्वाहिशें[11]।
'मैं' हकीकत मे है जो, मुझसे निहायत[12] दूर है ॥
—अकबर

२८६. मै तो कहता था यही और कहूँगा यही।
बात वो खूब[13] है, जो अल्लाह से नजदीक[14] करे ॥
— अकबर

२८७ दिल के जो दुश्मन[15] हैं, उनके शौक मे रहती है आँख।
जान का मालिक जो है, उससे नजर मिलती नही ॥
— अकबर

२८८ मजा भी आता है दुनिया से दिल लगाने का।
सजा[16] भी मिलती है, दुनियाँ से दिल लगाने की ॥
—मज़र

---

१ विज्ञान २ लीला ३ आश्चर्य ४. ऊँचाई ५ चिन्तन, खयाल ६ दृष्टि ७ पता ८ जमीन का टुकडा ६ शाबाशी के लिए १०. वासना की ११ इच्छाएँ १२ बहुत १३ ठीक, सही, श्रेष्ठ १४ समीप १५ शत्रु १६ दण्ड।

२८९ यह बुलन्दी[1] और पस्ती[2] चार दिन का खेल है।
यह बडे-छोटे की हस्ती, चार दिन का खेल है॥
२९०. बस इतना फर्क[3] है, इन्सान मे और उसकी तुर्वत[4] मे।
वोह है इक ढेर मिट्टी का, यह है तसवीर मिट्टी की॥

—मज़र

२९१ हो दौलतो-जर से जिसको रगवत[5]।
क्यो कर हो उसे खुदा से उलफत[6]॥
२९२ आसमा पर पहुँचे कब उसका खयाल?
जिसको घर का भी नही मालूम हाल॥
२९३ कदमे-शौक वढे इनकी तरफ क्या 'अकबर'!
दिल से मिलते नही, यह हाथ मिलाने वाले॥

—अकबर

२९४ काफिर[7] की यह पहचान है कि आफाक[8] मे गुम[9] है।
मोमिन[10] की यह पहचान कि गुम उसमे है आफाक॥

—इक़बाल

२९५ नक्शे-बातिल[11] मै नही, जिसको मिटाये आसमा।
मै नही मिटने का जब तक, है बिनाए-आसमा[12]॥

—बर्क

२९६ सोज[13] बनकर दिल मे आया साज[14] बनकर दिल मे आ।
तेरी मजिल है, किसी सूरत[15] से इस मजिल मे आ॥

—नश्तर

---

१ ऊँचाई २ नीचाई ३ अन्तर ४ कब्र ५. आसक्ति ६ प्रेम ७ नास्तिक ८ दुनिया मे ९ डूबा हुआ, विलुप्त १० आस्तिक ११ झूठा चिन्ह, विनाशी तत्त्व १२ आकाश का अस्तित्व, आसमान की बुनियाद १३ जलन, दुःख-दर्द ४ सुख, चैन १५ तरह।

२९७. हसरते-हासिल[1] मे जो लज्जत है, कब हासिल[2] मे है ?
लुत्फ मजिल दर हकीक़त[3], दूरये-मज़िल[4] मे है ॥

—कोकब

२९८ तमन्ना दर्दे-दिल की हो तो कर खिदमत फकीरो की।
नही मिलता यह गौहर[5] बादशाहो के खज़ीनो[6] मे ॥

—जिगर

२९९ तेरी जुदा पसन्द है, मेरी जुदा पसन्द।
तुझको खुदी पसन्द है, मुझको .खुदा पसन्द ॥

३०० मंजिरे-तसवीर[7] दर्दे-दिल[8] मिटा सकता नही।
आईना पानी तो रखता है, पिला सकता नही ॥

३०१ तर्क[9] कर अपनी खुदी, तुझको खुदा मिल जाएगा।
कौन कहता है कि ढूँढे से खुदा मिलता नही ॥

—हुनर

३०२ तामीरे[10] है, खैराते[11] हैं और तीरथ-हज भी होते है।
यो खून के धब्बे दामन से यह दौलत वाले धोते है ॥

३०३ खुदा के साथ नही हो तो कुछ नही हो तुम।
खुदा के साथ अगर हो तो फिर खुदा ही हो ॥

— अकबर

३०४ इन्ही फिक्रो[12] मे अपनी ज़िन्दगी के दिन गुजरते हैं।
यह करना है, वह करना है, यह होना है, वह होना है ॥

—बिस्मिल

---

१. प्राप्ति की कामना मे २. प्राप्ति मे ३. वास्तव मे ४ गन्तव्य की दूरी मे ५ मोती ६. खजाना ७ तसवीर का नजारा ८ मन की व्यथा ९ छोड़ १० निर्माण ११ दान १२ चिन्ताओ।

३०५ दिलका तेरा शिवाला, सब मन्दिरो से आला।
देखा करूँ मैं इसमे हरदम जमाल[१] तेरा॥

—बिस्मिल

३०६. दिल के सिवा न काबे[२] मे है, वह न दैर[३] मे।
गर है तो बस यही है, नही तो कही नही॥

—दाग़

३०७ हर एक को यह दावा है कि हम भी है कोई चीज।
और हमको है यह नाज[४] कि हम कुछ भी नही हैं॥

—अकबर

३०८ दौलत हो अगर सब्र-ओ-कनाअत[५] की मुयस्सर[६]।
फिर दौलते-दुनिया[७] की जरूरत नही होती॥

३०९. अगर न हो अमल[८] तो इल्म[९] के होने से क्या हासिल ?
किताबें लादकर यूँ तो बहुत खच्चर निकलते हैं॥

—बसर्रहमान

३१० उस परिन्दे[१०] की तरह दुनियाँ मे रहना चाहिए,
चहचहाता है खुशी से जो कि नाजुक[११] शाख[१२] पर।
झूलती है शाख लेकिन कुछ ख़तर[१३] उसको नही,
गिर नही सकता कि हैं मौजूद उड जाने को पर[१४]॥

—अकबर

३११ नुक्ते[१५] के हेर-फेर से हमसे जुदा हुआ।
नुक्ता पलट दिया तो आप ही खुदा हुआ॥

---

१ प्रकाश, चमत्कार २. मुस्लिम तीर्थस्थान ३ मन्दिर ४ गर्व ५ सन्तोष ६ प्राप्त, नसीब ७ ससार का धन ८ आचरण ९ ज्ञान, विद्या १० पछी ११ कमजोर १२ टहनी १३ डर १४ पख १५ बिन्दु।

३१२ ज़िन्दगी बैठी थी अपने हुस्न[1] पर भूली हुई।
मौत ने आते ही सारा रग फीका कर दिया॥

—अख्तर

३१३ शिवाले की जानिब[2] कदम क्यो बढाऊँ ?
नजर किसलिए सूए-मस्जिद[3] करूँ मैं ?
मेरे दिल को अल्लाह आबाद रक्खे,
मेरा दिल ही मस्जिद है, दिल ही शिवाला॥

—नूहनारवी

३१४ ऐसी भी इक नजर किए जा रहा हूँ मैं,
जर्रों[4] को महर-ओ-माह[5] किए जा रहा हूँ मैं।
गुलशन-परस्त[6] हूँ मुझे गुल ही नही पसन्द,
काँटो से भी निबाह[7] किए जा रहा हूँ मैं॥

—जिगर

३१५. जमा की दौलते-दुनिया अगर दुनिया मे, क्या की ?
जो जाए साथ उकबा मे[8] तू वोह सामान पैदा कर॥
३१६ क्या जरूरत हे कि जाएँ सैरे-दुनिया[9] के लिए ?
सारे आलम[10] का तमाशा खुद हमारे दिल मे है।
ऐ मुसाफिर ! ठोकरे क्यो खा रहा मजिल मे है ?
ढूँढता फिरता है जिसको, वोह तो तेरे दिल मे है॥
३१७ महर[11] वो है, ख़ाक[12] के जर्रे[13] जो कर दे जर-निगार[14]।
ऊँची-ऊँची चोटियो पर नूर[15] बरसाने से क्या ?

—कैफी

---

१ सौन्दर्य २ तरफ ३ मस्जिद की ओर ४ परमाणुओ ५ चाँद और सूरज ६ उद्यान का पुजारी ७ निर्वाह ८ परलोक ९ दुनियाँ की सैर १० नजारा ११ सूर्य १२ मिट्टी के १३ परमाणु को १४. प्रकाशमान १५. प्रकाश ।

३१८ न हो जिसमे अदब[1] और हो किताबो से लदा।
'जफर' उस आदमी को हम तसव्वुर[2] बैल करते है॥

—जफर

३१९ सुनते है खुशी भी है, जमाने मे कोई चीज।
हम ढूँढते फिरते है, किधर है, वोह कहाँ है ?

—दाग़

३२० मसल मशहूर है यह ही जहाँ मे आज तक ऐ 'दास'।
दुबारा फिर गिनो गर गिनते-गिनते भूल जाओ तुम॥

—दास

३२१ क्या उछलता फिर रहा तू, किस नशे मे चूर है ?
कुछ खबर तुझको नही, तू खुद खुदा का नूर है॥

३२२ पाके दौलत है बशर को रहना लाजिम किस तरह।
जिस तरह झुककर रहे, वोह शाख आए जिसमे फल॥

—जौक़

३२३ मजाजी-इश्क[3] के बदले हकीकी-इश्क[4] हो जाना।
न रहती नाव चक्कर मे तो बेडा पार हो जाता॥

३२४ दारे-फानी मे हो गाफिल मौत से इक पल नही।
क्या भरोसा जिन्दगी का, आज है और कल नही॥

—जौक़

३२५ तुम्हे कहना है मुर्दा कौन, तुम जिन्दो के जिन्दा हो।
तुम्हारी खूबियाँ बाकी, तुम्हारी नेकिया बाकी॥

—जौक़

---

१ शिष्टता, सभ्यता २. खयाल ३ सासारिक प्रेम ४ अध्यात्म-प्रेम।

३२६ ऐ 'जौक' किसको नजरे-हिकारत[1] से देखिए ?
सब तो हम से है जियादह, कोई हम से कम नही ॥
—जौक

३२७ सियहकारी[2] पै आता है, जब इन्सां का दिले-गाफिल[3]।
यह बिल्कुल भूल जाता है कि कोई देखता भी है ॥
—हाली

३२८. ढूँढने वाले को 'बिस्मिल', जुस्तजू[4] की शर्त है।
उस का मिल जाना बहुत मुश्किल भी है आसान भी ॥
—बिस्मिल

३२९ हयात[5]-ओ-मौत[6] दो कड़ियाँ है इक जजीर की 'अफसर'।
कोई क्या इब्तिदा[7] समझे, कोई क्या इन्तहा[8] समझे ॥
—अफ़सर

३३० 'बर्क' उसकी जिन्दगी है, दर हकीकत जिन्दगी।
जिसको दुनिया मे सुकूने-कल्ब[9] हासिल[10] हो गया ॥
—बर्क

३३१. तवाज़ुअ[11] का चलन ऐ मुनइमो ![12] सीखो सुराही से।
कि जारी फैज़[13] भी है और झुकी जाती है गर्दन भी ॥
—हाली

३३२ खडे हुए हैं नदी-किनारे, है दम ब-लब[14] तिश्नगी[15] के मारे।
नही मिला एक बूँद पानी, हमारी किस्मत का हाल यह है ॥

३३३. कोई यहाँ ठहरा न अब तक, कोई न यहाँ ठहरेगा कभी।
दुनियाँ मे हमे दो दिन के लिए, क्या हँसना है क्या रोना है ?

---

१ घृणा की दृष्टि २ पाप-कर्म ३. पागल मन ४ तलाश ५ जीवन ६ मरण ७ आदि ८ अन्त ९ मन की शान्ति १०. प्राप्त ११. सेवा १२ धनिको १३ उदारता १४ ओठो पर १५ प्यास।

३३४ मिटा दो खुदी को इतना कि रहे न निशाँ बाकी।
अगर पाना सनम को है, खुदी से हाथ धो बैठो॥
३३५ इक अपनी बुराई तो नज़र नही आती।
हर चीज मगर इसके सिवा[1] देख रहे हैं॥
—अदीब

३३६. हसरतो[2] का सिलसिला,[3] कब खत्म होता है 'जलील'।
खिल गए जब गुल तो पैदा और कलियाँ हो गयी॥
—जलील

३३७ मेरी तमन्ना[4] वो दायरा[5] है, न जिसका अव्वल न जिसका आखिर।
कि जिन हदो[6] से गुजर चुका था, उन्ही हदो मे फिर आ रहा हूँ॥
—दिल शाहजहाँपुरी

३३८. दिल को रिया[7] से पाक रख, काम दिखावे का न कर।
जी मे अगर खुदा नही, मुँह से खुदा खुदा न कर॥
—दिल

३३९ हुई ख़िदमते खल्क[8] जिन-जिन का मजहब।
खुदा के वही बन्दे मकबूल[9] निकले॥
—असर लखनवी

३४० जज़्ब[10] करले जो तजल्ली[11] को वो दिल पैदा कर।
सहल[12] है सीने को दागो से चिरागाँ[13] करना॥
—असर

३४१ गुजारी उम्र सारी राज-हस्ती[14] के समझने मे।
परस्तिश[15] तेरी करता, इतनी फुर्सत थी कहाँ मुझको॥
—असर

---

१. अतिरिक्त २ अरमानो, इच्छाओ ३ तांता ४ इच्छा ५ क्षेत्र ६ सीमाओ ७ ईर्ष्या, द्वेप ८ ससार की सेवा ९ असली, पूरे १०. हजम, सोख ११ ज्योति, प्रकाश १२ आसान, सरल १३ रौशन, दीवाली १४ जीवन-रहस्य १५ पूजा, उपासना।

३४२. बहुत-कुछ पाँव फैलाकर भी देखा 'शाद' दुनिया मे।
मगर, आखिर जगह हमने न दो गज के सिवा पाई॥

—शाद

३४३ कतरा[1] दरिया है, अगर अपनी हकीकत[2] जाने।
खोये जाते है जो हम, आपको पा जाते है॥

—अमरनाथ साहिर

३४४ पर्दा पडा हुआ था, गफलत[3] का चश्मे-दिल पर।
आँखे खुली तो देखा, आलम मे तू-ही-तू है॥

—साहिर

३४५. आप से बाहर चले हो ढूँढने।
आह! पहला ही कदम झूठा[4] पडा॥

—यगाना चगेजी

३४६ कलमा पढूँ तो क्यो पढूँ, सब की नज़र पै क्यो चढूँ?
यादे-खुदा तो दिल से है, दिल से ज़बा तक आए क्यो?

—यगाना

३४७. क्या दर्दे-हिज्र[5] और क्या लज्जते-विसाल[6]।
उससे भी कुछ बुलन्द[7] मिली है नजर[8] मुझे॥

—असगर

३४८. मिलने की यही राह और न मिलने की यही राह।
दुनिया जिसे कहते हैं, अजब राहगुजर[9] है॥

—आसी

३४९. मुबारक जिन्दगी के वास्ते दुनिया को मर मिटना।
हमे तो मौत मे भी जिन्दगी मालूम देती है॥

—रज्म

---

१ विन्दु २ असलियत ३ अज्ञानता का ४ गलत ५ वियोग का शोक ६ सयोग का हर्ष ७ उच्च ८ दृष्टि ९ पथ, रास्ता।

३५०. हजारो नग्मए-दिलकश[१], मुझे आते हैं ऐ बुलबुल !
मगर दुनिया की हालत देखकर चुप हो गया हूँ मैं ॥

३५१ मुझे एहसास[२] कम था, वर्ना दौरे-जिन्दगानी[३] मे ।
मेरी हर साँस के हमराह[४], मुझमे इन्कलाब[५] आया ॥

३५२ हुआ एहसास[६] पैदा मेरे दिल मे तर्के-दुनिया[७] का ।
मगर, कब ? जब कि दुनिया को जरूरत ही न थी मेरी ॥

३५३. यह राज[८] है ऐ हरीसे-दुनिया[९]! तुझे कुछ इसकी खबर नही है ।
उसी का घर है तमाम दुनिया, कि जिसका दुनिया मे घर नही है ॥

—आसी

३५४ हम इश्क के बन्दे है, मजहब से नही वाकिफ़[१०] ।
गर काबा हुआ तो क्या, बुतख़ाना[११] हुआ तो क्या ?

३५५. नही कुंजे-खिलवत[१२] की उसको जरूरत ।
जो महफ़िल को खिल्वत-सरा[१३] जानता है ॥

—चकबस्त

३५६ दुश्मन से बढ के कोई नही आदमी का दोस्त ।
मजूर अपने हाल की इसलाह[१४] हो अगर ॥

—हाली

३५७ भँवर के डर से जो कापा वोह ना खुदा[१५] कैसा ।
इसी हयात के नुक्ते को बार-बार समझ ॥

३५८ यूँ मुसीबत मे रहो तब बात है ।
तुम पै गोया[१६] कुछ मुसीबत ही नहीं ॥

—नश्तर

---

१ आकर्षक राग २. ज्ञान, अनुभूति, चेतना ३ जीवन-काल मे ४. साथ ५ परिवर्तन ६ विचार अनुभूति ७. संसार-त्याग ८ भेद ९ ससार-लोलुप १० अभिज्ञ, परिचित ११ मन्दिर, मूर्ति १२ एकान्त कोने की १३ बिल्कुल एकान्त १४ शुद्धि, सशोधन, सुधार १५. कर्णधार, मल्लाह १६ माने ।

३५९ एक दिल लाखो तमन्ना, इस पै और ज्यादा हविस[1]।
फिर ठिकाना है कहाँ, इसको टिकाने के लिये ?

३६० नशेमन[2] कर संभलकर तायराने-गुलिस्ताँ[3] अपना।
कि छुप-छुपकर पत्ते-पत्ते मे यहाँ सैयाद[4] बैठे है॥

३६१ सरापा[5] आरजू[6] होने ने बन्दा[7] कर दिया हमको।
वगर्ना हम खुदा थे, गर दिले-बेमुद्दआ[8] होते॥

—मीर

३६२. ए शमअ! तेरी उम्रे-तबई[9] है एक रात।
रोकर गुजार या इसे हँसकर गुजार दे॥

—जौक

३६३. खबरदार[10] ऐ मुसाफिर! खौफ[11] की जा राहे-हस्ती[12] है।
ठगो का बैठका है, जाबजा[13] चोरो की बस्ती है॥
'अमीर' इस रास्ते से जो गुजरते है वो लुटते है।
मुहल्ला है हसीनो का कि कज्जाको[14] की बस्ती है॥

—अमीर

३६४ इस सरा मे मुसाफिर नही रहते आया।
रह गया थकके अगर आज तो कल अपना है॥

—अमीर

३६५ हकीम और वैद यकसाँ हैं, अगर तशखीस[15] अच्छी है।
हमे सेहत से मतलब है, बनफ्शा हो या तुलसी हो॥

—अकबर

---

१ तृष्णा २ घोसला ३ उद्यान के पक्षियो। ४ शिकारी ५ सिर से पैर तक, आपाद-मस्तक ६ अभिलाषी ७. सेवक, पुजारी ८ कामना-रहित हृदय ९ जीवन-काल १०. सावधान ११ भय का स्थान १२ जीवन का मार्ग १३ जगह-जगह १४ लुटेरो की १५. निदान।

३६६. धर्म के नाम पर जो हँसकर अपनी जान खोते है।
हजारो मे कही इक या कि दो इन्सान होते है॥
३६७. खिदमत[1] करूँ मैं सबकी, खिदमतगुजार[2] बन कर।
दुश्मन के भी न खटकूँ, आँखो मे खार[3] बन कर॥
३६८. खामोशी[4] मे अमन[5] है, शान्ति है और सफाई है।
यह वह दारू[6] है जो कितने ही मर्जो[7] की दवाई है॥
३६९. भागती फिरती थी दुनिया जब तलब[8] करते थे हम।
अब जो नफरत[9] हमने की, वह बेकरार[10] आने को है॥

—जफर

३७०. गुस्से से बढके कौन है इन्सान का दुश्मन।
है शान का, रुतबे का यह ईमान का दुश्मन॥
३७१. वह इसका राज समझा, वह इसका पेच समझा।
दुनिया मे रहके जिसने दुनिया को हेच[11] समझा॥

—बिस्मिल

३७२. जमाने ने मेरे आगे भी दुनिया पेश कर दी थी।
मगर मैंने तो अपना फायदा इन्कार मे देखा॥

—अकबर

३७३. मुल्के-खुदा पै कब्जा वह क्या कर सकेगे जो।
काबू मे ला सके न दिले-बेकरार[12] को॥

—कैफी

३७४. जितनी जिदें है ऐ दिल! तू शौक से किए जा।
मुझको भी ता-कयामत[13] तेरा कहा न करना॥

—जिगर

---

१ सेवा २ सेवक ३ काँटा ४ मौन मे ५ चैन ६. दवा ७ रोगो की ८ चाह, इच्छा ९ घृणा १० बेचैन ११ हेय, असार १२. अशान्त मन १३ प्रलय तक।

३७५ मौत का जब ध्यान आ जाता है मुझको हमनशीं[1] !
जिन्दगी-भर के फसाने याद कर लेता हूँ मैं ॥

३७६ सर वह सर नही है, जिसमें न हो सौदा तेरा।
दिल वह दिल नही, जिस दिल मे तेरी याद नही ॥

३७७ जीस्त[2] को सब जानते है चलती-फिरती धूप छाव ।
फिर भी दुनिया की नजर पडती है ललचाई हुई ॥

—बिस्मिल

३७८ जबा चलती है गोया आज कुछ जिक्रे-खुदा कर ले ।
अजल[3] आएगी फिर हर्गिज न देगी बात की .फुर्सत ॥

—हाली

३७९ दिल दे तो इस मिज़ाज का परवर्दिगार दे ।
जो रज की घड़ी भी खुशी मे गुजार दे ॥

—दाग़

३८०. क्या वह दुनिया, जिस मे कोशिश हो न दीं[4] के वास्ते ।
वास्ते वाँ के भी कुछ या सब यही के वास्ते ?

—ज़ौक़

३८१ हमनशी कहता है, कुछ परवाह नही ईमा गया।
मैं यह कहता हूँ कि भाई ! वह गया तो सब गया ॥

—अकबर

३८२ कभी भूल कर न करना किसी से सलूक[5] ऐसा ।
कि जो तुमसे कोई करता, तुम्हे नागवार[6] होता ॥

—इक़बाल

---

१ पडोसी, २ जीवन ३ मृत्यु ४. धर्म के लिए ५. व्यवहार, वर्ताव ६ बेमजा, नापसन्द ।

३८३. दिया हमने जो अपनी खुदी को मिटा,
वह जो पर्दा था बीच मे अब न रहा।
रहा पर्दे मे अब न वह पर्दे-नशी[1]
कोई दूसरा उसके सिवा न रहा ॥

—हाली

३८४. ज़र्फ[2] नापाक[3] है तो, हर शै[4] है उसमे ना पाक।
दिल नही साफ तो क्या खाक इबादत[5] होगी ?

३८५. मज़े[6] दुनिया के भी तुम चाहते हो, दौलते-दीं[7] भी।
तुम्हे तो चाहिये ऐ 'शोख' मीठा भी सलोना[8] भी ॥

—शोख

३८६ खान-ए-दिल[9] है सियाह[10], इसकी सियाही[11] साफ कर।
क्या सुफेदी से महल करता है तू अपना सफेद ॥

—दाग़

३८७. घर बैठे हमे हाथ लगी मंजिले-मकसूद[12]।
जब तोड के हम बैठ रहे पाँव तलब[13] के ॥

—अमीर

३८८ जहाँ की जीनतें[14] राहत-रसाँ[15] हैं चश्मे-गाफिल[16] मे।
मगर हकजू[17] के मुज्तर[18] दिल को साकिन[19] कर नही सकती।

—सोज़

३८९. जब तलक आँखें खुली हैं, दु ख-पै-दु ख देखेगे यार।
मुंद गयी जब अँखडियाँ, तब 'सोज' सब आनन्द है ॥

—सोज़

---

१. पर्दे मे रहने वाला २ पात्र ३ अपवित्र, गन्दा ४ वस्तु ५ उपासना ६ सुख, स्वाद ७ धर्म का धन, ८. नमकीन ९. मन-मन्दिर १० काला ११ कलुषता, १२ लक्ष्य-बिन्दु १३ इच्छा के १४. रगरेलियाँ १५ सुखप्रद १६ अज्ञानी की दृष्टि मे १७ सत्य-गवेषी के १८. बेचैन, १९. स्थिर, शान्त।

३९० मिली वह दर्द मे लज्जत[1], कि जख्मे-दिल[2] पै गर कोई।
छिड़कता है नमक तो हम उसे मरहम समझते है॥

३९१ खुशी के साथ आँखो मे छलक आते है आँसू भो।
कि हर राहत[3] के साथ इक माजरा-ए-गम[4] भी शामिल है॥

३९२ हकीकत मे उन्हीं को जिन्दगी का लुत्फ हासिल है।
जो अपनी जिन्दगी मे जिन्दा रहने के लिए मर लें॥

—बज्म

३९३. वोह चाल चल कि उम्र खुशी से कटे तेरी।
वोह काम कर कि याद तुझे सब किया करे॥

३९४ न कोई दोस्त है मेरा, न कोई दुश्मन है।
अगर यही दिल है, मगर दोस्त है या दुश्मन है॥

—जोश

३९५. दिलवाले हैं हरचन्द जिगर वाले हैं,
यह सच है कि आँखो मे असर वाले हैं।
जो देखने की चीज थी देखी न गई,
यूँ कहने को हम लोग नजर वाले हैं॥

३९६. रगे-इशरत[6] बागे आलम मे नजर आता नही।
गुल[7] को गुलचीं[8] का खतर[9], बुलबुल को गम सैयाद[10] का॥

—नासिख

३९७ कभी खौफे-खिजाँ[11] है और कभी सैयाद का खटका[12]।
बनाऊँ क्या समझकर आशियाना इस गुलिस्ताँ मे॥

—रिन्द

---

१ मजा, आनन्द २ मन का घाव ३. सुख ४ दुःख की कहानी ५ यद्यपि, अगरचे ६ सुख का रग ७. फूल को ८, माली का ९ डर १०. शिकारी का ११. पतझड़ का डर १२. डर।

३९८. अपने बेगानो[1] की खुलती है हकीकत[2] इससे।
खरे-खोटे की कसौटी है मुसीबत क्या है ?
३९९ जवाले-मालो-दौलत[3] मे बस इतनी बात अच्छी है।
कि दुनिया को ब खूबी[4] आदमी पहचान जाता है॥

—अकबर

४०० लिबासे-खिज्र[5] मे यॉ सैकडो रहजन[6] भी फिरते है।
अगर रहना है दुनिया मे तो कुछ पहचान पैदा कर॥
४०१ इक नया एहसास[7] इस सीने मे[8] अब पाता हूँ मै,
दुश्मनी करते है दुश्मन और शर्माता हूँ मैं।
बेकसो-मजबूर इन्सॉ को दुआ देता हूँ मे,
वार[9] करता है कोई तो मुस्करा देता हूँ मैं॥

—जोश

४०२ अमीरी मालो-दौलत मे समझना कम-निगाही[10] है,
जहाँ मिलकर रहे दो दिल वही पर बादशाही है।
अमीरो के महल से बढके टूटे घर का कोना है,
ख़ुशी की शै मुहब्बत है, न चादी है न सोना है॥
४०३. जो पार उतारे औरो को, उसकी भी नाव उतरती है।
जो गर्क[11] करे फिर उसकी भी यॉ डुबको-डुबको करती है॥

—नजर

४०४ खुदा से लौ[12] लगा हर्गिज न फँस दुनिया की उलझन मे।
लिबास[13] उजले से क्या हासिल, सफाई चाहिये दिल मे॥
४०५. चार दिन की जिन्दगी मे आपको है अख्तियार।
दोस्ती कर लीजिये या दुश्मनी कर लीजिये॥

—बिस्मिल

---

१ अपने-पराये की २ वास्तविकता ३ धन-सम्पत्ति के विनाश मे ४ भलीभाँति ५ पथ-प्रदर्शक के वेप मे ६ लुटेरे ७ चेतना का विकास ८, मन मे ९ आक्रमण १० छिछोडपन, सकीर्णता, क्षुद्रता ११ डुबोए १२. लगन १३ परिधान, पहनावा।

४०६. मिटा दरमियाँ[1] से खुदी का जो पर्दा।
हम उनके हुये वह हमारे हुए हैं ॥

४०७ लज्जते-दुनिया जो सच पूछो उसी को मिल गयी;
जिसने यह समझा कि दुनिया का मजा कुछ भी नही।
मरते मरते कह गया लुकमान-सा दाना हकीम,
दरहकीकत[2] मौत की यारो! दवा कुछ भी नही॥

४०८ जो अपनी जिन्दगी को फ़कत इक इम्तिहाँ[3] समझा।
उसी ने राहतो-तकलीफ[4] का राजे-निहाँ[5] समझा।

— अकबर

४०९. तुझको जो .खुदा से उलफत है, उसके बन्दो से उलफत कर।
क्या रक्खा मन्दिर-मस्जिद मे, कल्बे-इन्साँ[6] की जियारत[7] कर॥

—बिस्मिल

४१० अपने मजे की खातिर गुल छोड़ ही दिये जब।
रूए-जमीं[8] के गुलशन मेरे ही बन गए सब॥

—रामतीर्थ

४११ सौ बार यहाँ हम आए भी, यह बात न लेकिन जान सके।
यह आना-जाना कैसा है, क्यो आते-जाते रहते हैं?

४१२ चन्द रोज[9] है जमाने मे बहारे-जिन्दगी,[10]
फिर तो बागे-जिन्दगी है खारजारे-जिन्दगी[11]।
मौत आने पर न आये मौत, ऐसा काम कर,
छोड जा दुनिया मे कोई यादगारे-जिन्दगी[12]।

४१३ वह दिल क्या कि दिलबर की सूरत न पकडे।
वह मजनूँ नही है, जो लैला नही है॥

—आसी

---

१ बीच मे २ सचमुच, वस्तुत ३ परीक्षा ४ दुख-सुख का ५ गुप्त रहस्य ६ मानव-मन ७ तीर्थ यात्रा ८ पृथ्वी तल के ९ कुछ दिनो की १०. जीवन का वसन्त ११ जीवन का पतझड़ १२ जीवन की स्मृति

४१४. .खुशी मे भूल न जाना 'जिगर' यह राजे-हस्ती[१]।
कि जो खुशी है यहाँ, इक अमानते-गम[२] है ॥
—जिगर

४१५. न भूले से कोई दम भी, इधर कुछ ध्यान फरमाया।
कि मैं हूँ कौन, जाता हूँ किधर, किस सिम्त[३] से आया ?
—बेदिल

४१६ कहने को तो कहता हूँ कोई गैर[४] नही है।
पर दिल से मेरे अपना पराया नही जाता ॥
—बेताब

४१७ बच जाये जो दुनिया मे जवानी की हवा से।
होता है फरिश्ता[५] कोई इन्साँ नही होता ॥

४१८. जहालत[६] है इर्फा[७] पै छाई हुई।
तो दुनिया है चक्कर मे आई हुई ॥

४१९ तलाशे-यार मे जो ठोकरे खाया नही करते।
वो अपनी मजिले-मकसूद[८] को पाया नही करते ॥

४२० ढूँढा सब जहान मे, पाया पता तेरा नही।
जब पता तेरा मिला तो अब पता मेरा नही ॥

४२१. फिरते इधर-उधर हो, किसकी तलाश मे तुम ?
गुम[९] है तुम्ही मे यारो ! बागे-इरम[१०] तुम्हारा ॥

४२२. शराफत[११] इसमे नही है इन्साँ की, उसने दुनिया मे क्या कमाया ?
वले[१२] बुजुर्गी[१३] छुपी है इसमे कि उसने अपनेको क्या बनाया ?

४२३ बहारे-जिन्दगी इक ख्वाबे-गफलत[१४] का जमाना है।
खयाली[१५] चहचहे हैं और हवा-ए-आशियाना[१६] है ॥

---

१ जीवन-रहस्य २ दुःख की धरोहर ३ दिशा ४ दूसरा ५ देवता ६ अज्ञान ७ ज्ञान ८ लक्ष्य-बिन्दु ९ छुपा, गुप्त १० आत्म-शान्ति ११ बडप्पन १२ मगर १३ गौरव, महत्ता १४. अज्ञान भरा स्वप्न १५. काल्पनिक १६ घोसले की हवा।

४२४ मकसूद[1] जिन्दगीका वेदारिये-खुदी[2] है।
ऐ बेखवर! वगर्ना वेसूद[3] जिन्दगी है॥

४२५. साकी[4] के तसव्वुर[5] मे दिल साफ हुआ ऐसा।
जव सर को झुकाता हूँ, शीशा नजर आता है॥

४२६. कुछ देर फिक्र[6] आलमे-वाला[7] की छोड़ दे।
इस अंजुमन[8] का राज़ इसी अंजुमन मे है।

—असर

४२७ जो है पर्दे मे पिनहा[9] चश्मे-बीना[10] देख लेती है।
जमाने की तबीअत का तकाज़ा देख लेती है।

—इक़बाल

४२८. क्या हँसी आती है मुझको, हजरते-इन्सान पर।
फेल[11] वद[12] तो खुद करे लानत[13] करे शैतान पर॥

—इन्शा

४२९ आई सदा[14] कि तू अभी मंज़िल से दूर है।
पहुँचा जहाँ-जहाँ भी मुझे दिल लिये हुए॥

—दिल

४३०. ऐ गुलामे-ज़िन्दगी[15] इस ज़िन्दगी से फायदा?
यह तो है वेचारगी,[16] वेचारगी से फायदा?

—सबा

४३१. उस मौज[17] के मातम[18] मे रोती है भँवर की आख।
दरिया से उठी, लेकिन साहिल[19] से न टकराई॥

—इक़बाल

---

१. उद्देश्य २. आत्म-जागृति ३ व्यर्थ, वेकार ४ पिलाने वाला ५ ध्यान ६ चिन्ता ७ परलोक, स्वर्ग की ८. सभा का ९ गुप्त १०. नज़र वाली आँखें, दिव्य दृष्टि ११ कर्म १२. बुरा १३ धिक्कार १४ आवाज १५ जीवन-लोलुप १६ लाचारी १७. लहर के १८ शोक मे १९ किनारे से।

४३२. यारब[1] ! यह भेद क्या कि राहत[2] की फिक्र[3] मे ।
इन्सान को और गम[4] मे गिरफ्तार[5] कर दिया ॥

—जोश

४३३. दुनियाने हर फसाना,[6] हकीकत[7] बना दिया ।
हमने हकीकतो को भी अफसाना कर दिया ॥

—जोश

४३४. है हसूले-आरजू[8] का राज तर्के-आरजू[9] ।
मैंने दुनियाँ छोड दी तो मिल गई दुनियाँ मुझे ॥

—सीमाब

४३५. हो चुकी हर बार गो[10] ऐ शमअ ! परवानो की ख़ाक ।
ज़र्रे-ज़र्रे मे है पिनहाँ[11] इक जहाने-जिन्दगी[12] ॥

—बिल

४३६. पैकरे-ख़ाक[13] है तो चर्ख[14] पै छा मिस्ले-गुबार[15] ।
तुझको मिट्टी मे मिलाया है जबी-साई[16] ने ॥

—कैफी

४३७. यूँ सबको भुला दे कि तुझे कोई न भूले ।
दुनिया ही मे रहना है तो दुनिया से गुजर जा ॥

—फानी

४३८. अरे राज़-जहाँ[17] बताने वाले ।
इक और जहाने-राज़[18] भी है ॥

—फिराक़

---

१. या खुदा २. सुख ३. चिन्ता ४. दु ख ५ बन्धन-युक्त ६. कहानी ७. वास्तविकता ८. इच्छा-पूर्ति ९ इच्छा का त्याग १० यद्यपि ११. छिपा हुआ, गुप्त १२ जीवन-ससार १३ धूलि-तुल्य १४ आकाश पर १५. धूल की तरह १६ मत्था रगडने १७ ससार का रहस्य १८. रहस्य का ससार ।

४३९ तिनको से खेलते ही रहे आशियाँ मे हम।
आया भी और गया भी जमाना बहार[1] का॥

४४०. लंगर का आसरा[2] है न ताईदे-ना.खुदा[3]।
मेरे सुपुर्द है मेरी किश्ती .खुदा के बाद॥

४४१ जिन्दगी खुद क्या है 'फानी' यह तो क्या कहिए, मगर—
मौत कहते है जिसे वह ज़िन्दगी का होश है।

—फानी

४४२ आह, इन मस्त निगाहो[4] के इशारे[5] भी 'फिराक'।
हम समझने को बहुत समझे मगर क्या समझे?

—फिराक़

४४३ मौत वह अच्छी कि जिसके बाद मिल जाए हयात[6]।
जो सबब[7] हो मौत का वह ज़िन्दगी बेकार है॥

—साक़िब

४४४. हाय! अंजामे-तजस्सुस[8] की अजायबकारियाँ[9]।
तुम मिले और ढूँढने वाले तुम्हारे खो गए॥

—अफसर

४४५. तू कहाँ है कि तेरी राह मे यह काबा व दैर।
नक़्शे[10] बन जाते है, मज़िल[11] नही होने पाते॥

४४६ हर राह से गुज़र कर दिल की तरफ चला हूँ।
क्या हो जो उनके घर की यह राह भी न निकले॥

४४७ आया परवाना, गिरा शमअ पै, जल-जल के मरा।
तुम अभी सोच रहे हो कि मुहब्बत क्या है?

—फ़ानी

---

१. वसन्त ऋतु २ सहारा ३ मल्लाह का समर्थन ४ दृष्टि ५ सकेत ६. जिन्दगी ७. कारण ८. खोज का परिणाम ९ विचित्रताएँ १०. चित्र ११. पड़ाव, गन्तव्य स्थान।

४४८. न समझा जब हकीकत[1] को किसी ने।
.खुदा पैदा किया हर आदमी ने॥

४४९ खाली है मिरा सागर[2] तो रहे, साकी को इशारा कौन करे ?
.खुद्दारी-ए-साइल[3] भी तो है कुछ, हर बार तकाजा[4] कौन करे ?

—मुल्ला

४५० बसने दो नशेमन[5] को अपने, फिर हम भी करेंगे सैरे-चमन[6]।
जब तक कि नशेमन उजडा है, फूलो का नजारा[7] कौन करे ?

४५१ ज़माना[8] खाकसारी[9] का नही खुद्दार[10] बनकर उठ।
मिटा वह राहे-मंजिल[11] मे जो बैठा नक्शे-पा[12] होकर॥

—महरूम

४५२. अब तो घबरा के यह कहते हैं, 'कि मर जाएँगे।'
मरके भी चैन न पाया तो किधर जाएँगे ?

—ज़ौक़

४५३. दो आलम[13] से गुज़र के भी दिले-आशिक़[14] है आवारा।[15]
अभी तक यह मुसाफिर अपनी मजिल पर नही आया॥

४५४. मुश्किल राहे-अदम[16] को हम आसाँ[17] न कर सके।
जल्दी मे चल दिए, कोई सामाँ[18] न कर सके।

—नातिक़

४५५. कैस[19] के नजदीक लैला पर्दये-महमिल[20] मे है।
कौन दीवाने को समझाए कि तेरे दिल मे है॥

—असर

---

१. वास्तविकता, सच्चाई को २ प्याला ३ माँगने वाले का स्वाभिमान ४. माँग ५. घोसला ६ बाग की सैर ७ दर्शन ८ काल, समय ९. दीनता-हीनता का १० स्वात्माभिमानी ११ गन्तव्य-मार्ग १२ चरण-चिन्ह १३ ससार १४. प्रेमी का मन १५. भटकने वाला १६ परलोक के मार्ग को १७ सरल, सुगम १८ तैयारी, सामान १९ मजनूँ २० अम्वारी का पर्दा।

४५६ जो मिजाजे-दिल[1] न बदल सका, तो निजामे-दहरका[2] क्या गिला[3] ?
वही तलखिया[4] है सवाव[5] मे, वही लज्जतें[6] है गुनाह[7] मे ॥
—असग़र

४५७ शोरे-हस्ती[8] अभी जरा ठहरे ।
सुन रहा हूँ जमीर[9] को आवाज ॥
—सीमाव

४५८. यह मुद्दत[10] हस्ती[11] की आखिर,[12] यूँ भी तो गुजर ही जाएगी ।
दो दिनके लिए मैं किससे कहूँ 'आसान[13] मिरी[14] मुश्किल करदे ॥
—नातिक़

४५९. कही जेर-दस्तो[15] को राहत[16] नही है ।
न जेरे-फ़लक[17] है न जेरे-जमी[18] है ॥
—हफीज़

४६०. फितरतने[19] मुहव्वत की इस तरह विना[20] डाली ।
जो कँद[21] नजर आई इक बार उठा डाली ॥

४६१ मौतो-हयात[22] मे है सिर्फ़[23] एक कदम का फासला[24] ।
अपने को जिन्दगी वना, जल्वये-जिन्दगी[25] न देख ॥
—जिगर

४६२. तजाहिल[26] से मेरे नामो-निशा[27] को पूछने वाले !
वही रहता हूँ मैं, ढूँढा नही अव तक जहाँ तूने ॥
—आसी

---

१ मन का स्वभाव २ ससार का विधान ३ शिकायत ४ कडवाहट ५. पुण्य ६ मजे, स्वाद, रम ७ पाप ८. जीवन का कोलाहल ९. अन्तरात्मा १०. समय, काल ११. जीवन १२ अन्तत १३ सुगम १४ मेरी १५ याचको १६. शान्ति, चैन १७ आकाश के नीचे १८ धरती के नीचे १९ स्वभाव, प्रकृति ने २० नीव, वुनियाद २१ वन्धन २२ जीवन-मरण मे २३ केवल २४ दूरी २५ जीवन-प्रकाश २६ मूर्खता से २७. नाम और चिह्न को ।

४६३. दरिया[1] की जिन्दगी पर सदके[2] हजार जानें ॥
मुझको नहीं ग़वारा[3] साहिल[4] की मौत मरना ॥
—जिगर

४६४ ये सब ना-आशनाए-लज्जाते-परवाज[5] है शायद ।
असीरों[6] मे अभी तक शिकवए-सैयाद[7] होता है ॥
—असग़र

४६५ बहारो मे यह होश[8] ही कब रहा था ?
कि जलती है क्या शै[9], कहाँ आशियाँ था ?
—मदहोश

४६६ सौ बार तेरा दामन[10] हाथो मे मेरे आया ।
जब आँख खुली देखा अपना ही गरेबाँ[11] है ॥
४६७ बहुत लतीफ[12] इशारे थे चश्मे-साकी[13] के ।
न मैं हुआ कभी बे खुद[14] न होशियार[15] हुआ ॥
३६८. बारे-अलम[16] उठाया, ग़मे-निशात[17] देखा ।
आए नही हैं यूँ ही अन्दाज[18] बेहिसी[19] के ॥
—असग़र

४६९ सौदागरी[20] नही यह इबादत ख़ुदा की है ।
ऐ बेख़बर ! जजा[21] की तमन्ना भी छोड दे ॥
—इक़बाल

४७० आजाय अपनी ज़िद पर कोई दीवाना ।
ख़ुद गिर्द[22] फिरे आकर, काबा हो कि बुतख़ाना[23] ॥
—जिगर

---

१. नदी की २ कुरबान ३ सह्य, पसन्द ४ किनारे की ५ उडान के आनन्द से अपरिचित ६ बन्दियो, कैदियो ७ शिकारी की शिकायत ८ भाव ९ वस्तु १० आँचल, पल्ला ११ कुरते या कमीज के गले पर का भाग १२ सूक्ष्म, सुन्दर १३ पिलाने वाले की आँख के १४ बेहोश, मस्त १५ सचेत १६ दुखो का भार १७ सुख का रग १८ ढब, ढग १९ विषयातीत अवस्था के २०. व्यापार २१ तृप्ति की २२ चारो ओर २३ मन्दिर ।

४७१. इशरते-कतरा[1] है दरिया मे फना[2] हो जाना।
दर्द का हद से गुजरना है दवा हो जाना ॥

४७२ इस गुलशने-हस्ती मे अजब सैर है, लेकिन।
जब आँख खुली गुल की तो मौसम है खिजा का।

४७३ 'अमीर' इतनी कहाँ किस्मत कि पहुँचूँ उडके फूलो तक ?
कभी चाके-कफस[3] से झाँक लेता हूँ गुलिस्ता को ॥

४७४ चिरागे-सुबह[4] यह कहता है आफताब[5] को देख।
यह बज़्म[6] तुमको मुबारक हो, हमतो चलते है ॥

—नज़ीर

४७५. मौत जब तक नजर नही आती।
जिन्दगी राह पर नही आती ॥

—जिगर

४७६. मौत को देखा तो दुनिया से तबीयत फिर गई।
उठ गया दिल दहर[7] से, दौलत नजर से गिर गई ॥

—अकबर

४७७. दुनिया मे हूँ, दुनिया का तलबगार[8] नही हूँ।
बाजार से गुजरा हूँ, खरीदार[9] नही हूँ ॥

— गालिब

४७८. जिसको हस्ती[10] कहे हैं अहले-जहाँ[11]।
हम तो उसको अदम[12] समझते है ॥

—हातिम

---

१ बिन्दु का सुख २ विलीन ३ पिंजरे के छेद से ४ प्रात कालीन दीपक ५ सूर्य ६ महफिल, सभा ७ दुनिया से ८ इच्छुक, अभिलाषी ९ क्रेता, ख़रीदने वाला १० जीवन ११ दुनिया वाले १२ मृत्यु।

४७९ इस आलमे-असबाब[1] के जाहिर[2] पै न जाना ।
आसारे-अयाँ[3] और है, असरारे-निहा[4] और ॥

—अ० स०

४८० अगर्चे बन्दा-नवाजी[5] की तुझ मे खू[6] हो जाय ।
कसम खुदा की खुदाई मे तू-ही-तू हो जाय ॥
४८१ दावे की जरूरत है न कोई रोक सकता है ।
किसी मे फितरती जौहर[7] जो हो वह खुद चमकता है ॥

—अमीर

४८२ बशर[8] नही वह फरिश्ता[9] है हजरते-'बिस्मिल' ।
जो दोस्ती करे दुनिया मे दुश्मनो के साथ ॥

—बिस्मिल

४८३ दिन गुज़रते ही चले जाते है, लोग मरते ही चले जाते हैं ।
जानते है कि हैं यह काम बुरे, फिर भी करते ही चले जाते हैं ॥
४८४ हँस के दुनिया मे मरा कोई, कोई रोके मरा ।
जिन्दगी पाई मगर उसने जो कुछ होके मरा ॥

— अकबर

४८५ जो दिल के साफ है, बादे-फना[10] भी साफ रहते हैं ।
कभी ज़ेरे-जमी[11] उनका कफन मैला नही होता ॥

—बिस्मिल

४८६ रहा जब मुद्दतो दैरो-हरम[12] मे ।
समझ मे आई बहकाया गया हूँ ॥

—ज़ौक़

---

१ परिग्रही दुनिया २ प्रकट रूप पर ३ प्रकट लक्षण ४ गुप्त भेद ५ दीनदयालुता की ६ स्वभाव ७ स्वाभाविक गुण ८. आदमी ९ देवता १० मरने के बाद ११ जमीन के नीचे १२ मन्दिर-मस्जिद मे ।

४८७. सुनी हिकायते-हस्ती[1] तो दरमियाँ[2] से सुनी।
न इब्तिदा[3] का पता, न इन्तिहा[4] मालूम॥
—शाद

४८८. फूल बनने की ख़ुशी मे मुस्कराती थी कली।
क्या खबर थी यह तगय्युर[5] मौत का पैगाम[6] है॥
—सीराज़

४८९ फितरते-ग्रादम[7] मे थी अल्लाह! क्या नश्वोनुमा[8]।
एक मुट्ठी खाक यो फैली कि दुनिया हो गई॥
—साक़िब

४९०. भर-उम्र गदाई[9] मे भी करते रहे शाही[10]।
दुनिया मे जो ठानी थी, मियाँ हमने निबाही॥
—अमीन

४९१. जुस्तजू[11] दुनिया की मत कर ऐ 'गिरफ़्तार' इस कदर[12]।
क्या भरोसा है जहा मे उम्रे-बेबुनियाद[13] का॥
—गिरफ़्तार

४९२. करे हम किसी की पूजा और चढाएँ किसे चन्दन!
सनम[14] हम, दैर[15] हम, बुतख़ाना[16] हम, बुत[17] हम, बरहमन[18] हम।
—फैज़

४९३. दिल वह क्या दिल है, जिस दिल मे यार नही।
यार क्या यार है, जो यार कि दिलदार नही॥
—रंगी

४९४. बुलन्द[19] आवाज़ से घडियाल कहता है कि ऐ गाफिल!
कटी यह भी घड़ी तुझ उम्र से और तू नही चेता॥
—नासिख

---

१ जीवन की कहानी २ बीच मे से ३. प्रारम्भिक ४. अन्त, चरम सीमा ५. परिवर्तन ६ सन्देश ७ मानव-स्वभाव मे ८ उत्पन्न होकर बढना ९ फकीरी १० बादशाहत ११ तलाश १२. इतनी १३ निराधार जीवनका १४ प्रिय १५ मन्दिर १६ सनमखाना १७. मूर्ति १८ ब्राह्मण १९ ऊँची।

४९५ सफा कर दिल के आईने[1] को 'हातिम।'
किया चाहे अगर उसका नजारा[2]॥

—हातिम

४९६ ख़्वाब[3] मे जब तलक, था दिल मे दुनिया का ख़याल।
खुल गई आँखे तो देखा हमने सब अफसाना[4] था॥
४९७ 'हातिम' किसी मे गर्मिये-सुहबत[5] नही रही।
दिल देख-देख सर्द हुआ है जहाँ का रग॥

—हातिम

४९८ ज़िन्दगी जामे-ऐश[6] है लेकिन।
फायदा क्या, अगर मुदाम[7] नही॥

—वली

४९९ पाए-ज़मी[8] से दोगे-फलक[9] तक नशा-ही-नशा मस्ती-ही-मस्ती।
बस-बस साक़ी और न भरना, लग गए, लग गए होश ठिकाने॥

—अहसान दानिश

५०० .ख़ुद जानता हूँ मजिले मकसूद[10] का पता।
हँसता हूँ छेड-छाडके हर राहबर[11] को मैं॥

— महरूम

५०१ रियाज़त[12] चीज तो अच्छी है, लेकिन हजरते-ज़ाहिद[13]।
यह बे-मौसम-सी शै[14] मालूम देती है जवानी मे॥

—अदम

५०२ इधर भी तुम, उधर भी तुम, यहाँ भी तुम वहाँ भी तुम।
यह तुमने क्या कयामत[15] की, निगाहो से निहा[16] होकर ?

—तालिब बाग़पती

---

१ दर्पण को २ दर्शन ३ स्वप्न मे ४ कहानी ५ सत्सग का रग ६ ऐश्वर्य का प्याला ७ स्थायी, अविनश्वर ८ पृथ्वी के पाँव, नीव से ९ आसमान का कन्धा १० लक्ष्य-बिन्दु का ११ पथ-प्रदर्शक १२ तपस्या १३ सयमा महोदय! १४ चीज़ १५. प्रलय १६ गुप्त, छिपा हुआ।

५०३. .खुद आप चमकने की, जिसमे कुदरत[1] हो।
वह जर्रा[2] मुन्तज़िरे-फेजे-आफताब[3] नही॥

५०४ जमाने की मुहब्बत पर न हो ऐ हमनशी[4] नाजाँ[5]।
सुनाएँगे तुझे फुर्सत मे किस्से आशनाई[6] के॥

५०५. यह इश्के-मजाज़ी[7] भी हकीकत[8] का है जीना[9]।
रख पाव ज़रा ऐ दिले-दीवाना! संभलकर॥

५०६. तू बन्दगी पै न आयद[10] कर इतने सख्त कयूद[11]।
कि कोई कह दे, मुझे बन्दगी पसन्द नही॥

—अदम

५०७ अपने-अपने रंग मे हैं अपने-अपने हाल मे।
कोई हैराने-खिजाँ[12] कोई परेशाने-बहार[13]॥

५०८ दारे-फानी[14] मे यह क्या ढूँढ रहा है 'फानी'।
जिन्दगी भी कही मिलती है फना[15] से पहले?

५०९ मरके टूटा है कही सिलसिलये-कै़दे-हयात[16]।
हाँ, मगर इतना है—जंजीर बदल जाती है॥

—फानी

५१०. अभी तकमीले-उल्फत[17] पर न दिल मगरूर[18] हो जाए।
यह मंजिल वह है, जितनी तै हो, उतनी दूर हो जाए॥

—महर

५११. कोई नामालूम[19] मज़िल है .खुदा जाने कहाँ?
जिन्दगी जिसकी तरफ इक मुस्तकिल परवाज[20] है॥

—जयाल

---

१ स्वभाव २ कण ३. सूर्य के उपकार की प्रतीक्षा मे ४. साथी ५. गर्वीला ६ प्रेम के ७ लौकिक प्रेम ८ सत्य का ९ सोपान १० लागू ११ बन्धन, कैदें, नियम १२ पतझड से दुखी १३ वसन्त ऋतु से व्याकुल १४ नश्वर ससार मे १५ मृत्यु से १६ जीवन बन्धन का क्रम १७. प्रेम की पूर्णता १८. अहंकारी १९ अज्ञात २० स्थायी उड़ान।

५१२. होश और फिर होश की पाबन्दियो[1] का अहतराम[2]।
रश्क[3] करता हूँ मै दीवाने की दुनिया देखकर ॥
—यूसुफ़ रामपुरी

५१३ इस जगह लाई है अब तेरी तमन्ना[4] मुझको।
देख सकता हूँ मै दुनिया, न दुनिया मुझको ॥
—क़तील

५१४. मैं तो आया था 'बका' बाग मे सुन जोशे-बहार[5]।
पर यह हगामे-ख़िज़ाँ[6] था, मुझे मालूम न था ॥
—बक़ा

५१५ यकीन[7] रख कि यहाँ हर यक़ीन मे है फरेब[8]।
बक़ा[9] तो क्या है, फना[10] का भी एतबार न कर ॥
—आसी

५१६ जर्रे-ज़र्रे[11] मे है 'अहसाँ' उसके जलवे[12] आशकार[13]।
देखिए और देखकर तकमीले-ईमाँ[14] कीजिए ॥

५१७. भटका हूँ अपनी मंजिले-मकसूद से बारहा[15]।
आसान जानकर कभी, दुश्वार देखकर ॥
—अहसान दानिश

५१८. दिल की आबादी है 'अख्तर' दिल की बरबादी का नाम।
इक तआल्लुक[16] है मेरी हस्ती[17] को वीरानी[18] के साथ ॥
—अख्तर

५१९ जितनी है क़रीब मज़िले-यार।
ऐ दिल! उतनी ही दूर भी है ॥

---

१. बन्धनो २. आदर, मान्यता ३ ईर्ष्या, स्पर्धा ४ कामना ५ वसन्त का जोश ६ पतझड की धूम ७ विश्वास ८. धोखा ९ अमरता १०. मौत ११ अणु, परमाणु १२ शोभा १३ स्पष्ट, प्रकाशित १४ विश्वास की पूर्ति १५ बार-बार १६ सम्बन्ध १७ जीवन १८ बरबादी।

५२० जिन्दगी है अपने क़ब्जे मे, न अपने वस मे मौत।
आदमी मजबूर है और किस कदर मजबूर है?

५२१. अरे, सूदो-जियाँ[1] देखा नही जाता मुहब्बत मे।
यह सौदा और सौदा है, यह दुनिया और दुनिया है॥

— उम्मेद

५२२ 'बे.खुद' ने मुहब्बत को बदनाम किया आखिर।
यह जाम जो पीना था होठो को सिया होता॥

५२३ कुछ ऐसी बात मुझसे मुँह बनाकर गुल ने कह दी है।
मजा आता नही बुलबुल को अब नग्मा-सराई[2] का॥

— बेखुद

५२४. मैं क्या चाहता हूँ, बताऊँ तुम्हे क्या?
मैं खुद सोचता हूँ मै क्या चाहता हूँ?

—ताजवर

५२५. 'जलील' अच्छा नही आबाद करना घर मुहब्बत का।
यह उनका काम है जो जिन्दगी बरबाद करते है॥

—जलील

५२६ यह माना दोनो ही धोके हैं रिन्दी[3] हो कि दरवेशी[4]।
मगर यह देखना है, कौन-सा रंगीन धोका है?

—जोश

५२७. पहुँच सके न जहाँ ख्वाहिशात[5] की परवाज[6]।
न बन सका किसी ऐसी फिजा[7] मे काशाना[8]॥

— रविश

५२८. दुनिया है ख्वाब[9], हासिले-दुनिया[10] खयाल है।
इन्सान ख्वाब देख रहा है खयाल मे॥

— सीमाब

---

१. लाभ-हानि २. गाने का ३. मस्ती, मनचलापन ४. फकीरी ५. इच्छाओं ६. उड़ान ७. वातावरण ८. घर, कुटी, झोपड़ा ९. स्वप्न १०. संसार सुख की प्राप्ति।

५२६. तर्के[1] मुहब्बत करने वालो ! कौन बडा जग जीत लिया ?
इश्क़ से पहले के दिन सोचो, कौन ऐसा सुख होता था ॥
—फिराक़

५३०. सफर करते हुए मजिल-ब-मंजिल जा रहे है हम ।
मुझे यह सारी दुनिया कारवाँ मालूम होती है ॥
—मौलाना

५३१. यह नाहमवार[2] ही हमवार[3] हो जाए तो क्या कम है ?
जमी[4] से जब नही फुरसत तो फिकरे-आसमाँ[5] क्यो हो ?
'यगाना' फिकरे-हासिल[6] क्या ? तुम अपना हक[7] अदा करदो ।
बला से तल्ख़[8] गुजरे जिन्दगानी रायगा[9] क्यो हो ?
—यगाना

५३२ दीदार[10] की तलब[11] के तरीको[12] से बेखबर[13] ।
दीदार की तलब है तो पहले निगाह[14] माँग ॥
—आज़ाद

५३३. दिखावे के है सब यह दुनिया के मेले ।
भरी बज्म[15] मे हम रहे हैं अकेले ॥

५३४ मज़ाहब[16] क्या है ? राहे[17] मुख्तलिफ[18] हैं एक मजिल[19] की ।
है मजिल क्या ? जहाँ सब कुछ है, पर राहे नही होती ॥

५३५ दुनिया मे इक सकूनका[20] जरिया[21] हो जब यही ।
इन्सान तुझ से लौ[22] न लगाए तो क्या करे ?
—अफसर

५३६. हर कदम पर गिर गिरकर आदमी संभलता है ।
यानी खिज्र भी कोई साथ-साथ चलता है ॥

---

१ त्याग २ ऊबडखाबड, विषम ३ समतल, सम ४ इहलोक ५ परलोक की चिन्ता ६ फल की चिन्ता ७ कर्तव्य ८ कडवी ९ व्यर्थ १० दर्शन ११ इच्छा १२ उपाय, ढग १३ अनजान १४ दृष्टि १५ सभा १६ पन्थ, धर्म १७ रास्ते १८ विभिन्न, अलग-अलग १९ गन्तव्य स्थान की २०. शान्ति का २१ साधन २२. लगन ।

५३७. इन्सान को लाजिम[1] है रहे दूर रिया[2] से।
यह चीज जुदा करती है बन्दे को .खुदा से॥

—जिगर

५३८ खुदा की बन्दगी का 'सोज' है दावा तो खलकत[3] को।
वले[4] देखा जिसे बन्दा[5] है अपनी खुदनुमाई[6] का॥

—सोज़

५३९ अपनी हर लग़ज़िश[7] से लेता हूँ मैं इक ताजा सबक[8]।
मेरा हर अंजाम[9] मेरे वास्ते आगाज[10] है॥

—अनवर

५४० आशियाने[11] का पता क्या दें बता ख़ानाबदोश[12]।
चार तिनके रख दिए जिस शाख़ पै घर हो गया॥

—कमाल

५४१ .खुदा की .खुदाई मे क्या-क्या नही है।
हमी को मगर चश्मे-बीना[13] नही है॥

—मिज़ाज

५४२ कोनैन[14] की उन भूल-भुलैयो से गुज़र जा।
अपनी ही तरफ देख, इधर जा न उधर जा॥

—जिगर

५४३ हुस्ने-सूरत[15] के लिए, खूबिए-सीरत[16] है ज़रूर।
गुल वही जिसमे कि खुशबू भी हो रगत के सिवा॥

—आसी

५४४ दुनिया यह उसी की है, आलम[17] यह उसी का है।
जो आप ही मजनूँ है, जो आप ही लैला है॥

---

१ जरूरी २. मायाचार, कपट ३ दुनियाँ, सृष्टि ४ मगर ५ सेवक ६ अहकार, अहंमन्यता ७ पतन, भ्रष्टता ८ नया बोध-पाठ ९ परिणाम १० प्रारम्भ ११ घोसला १२ बेघरबार १३ देखने वाली आँख १४ लोक-परलोक की १५ रूप-सौन्दर्य के १६. स्वभाव की विशेषता १७ ससार।

५४५. जाहिदा[1] ! तसबीह-मुसल्ला[2] और है ।
इश्क[3] के दरिया मे गिरकर डूब जाना और है ॥
५४६ इतने ही मुझसे वोह करीब[4] हुए ।
मैंने जितनी ही आरजू[5] कम की ॥

—जिगर

५४७ अहसासे-खुदी[6] वेदार[7] है अब,
दर-दर[8] की सलामी कौन करे ?
खालिक[9] ही का सिजदा[10] मुश्किल है,
बन्दो[11] की गुलामी कौन करे ?
५४८. तू दिल मे तो आता है, समझ मे नही आता ।
मालूम हुआ बस तिरी पहचान यही है ।

—अकबर

५४९ 'जिगर' अब भी नही खाली है दुनिया बा-कमालो से[12] ।
कोई पैदा तो करले देखने वाली नजर पहले ॥

—जिगर बरेलवी

५५० दिल ही ने राहे-इश्क[13] मे धोके दिए मुझे ।
दिल ही को खिज्र-राह[14] किए जा रहा हूँ मैं ॥

—हिना

५५१ वह न था हमसे जुदा[15], हम भी जुदा उससे न थे ।
न हुई फिर जो मुलाकात[16] तो क्योकर न हुई ?
५५२. मुझे हर तरह की खुदबीनियो[17] से कर दे बेगाना[18] ।
जो आईना[19] भी मै देखूँ, नुमायाँ[20] तेरी सूरत हो ॥

—आसी

---

१ उपासक २ माला और आसन ३ प्रेम ४ निकट ५ इच्छा ६ स्वत्वाभिमान की अनुभूति ७ जाग्रत ८. द्वार-द्वार की ९ परमात्मा १०. नमन-नमस्कार ११ सेवको की १२ गुणवानो से १३ प्रेम-मार्ग मे १४ पथ-प्रदर्शक १५. पृथक १६ साक्षात्कार, भेट १७ स्वय का देखना १८. अपरिचित १९ दर्पण २०. प्रकट ।

५५३ हम फकीरो से खफा होके कोई क्या लेगा ?
एक घर वन्द हुआ, दूसरा घर देख लिया ॥
५५४ तेरा गुलशन[1] ही न बन जाए क़फ़स[2] ऐ बुलवुल !
देख महदूद[3] न कर वसअ़त-दुनियाए-वहार[4] ॥
५५५ समझाए कौन ? वुलवुले-ग़फ़लत-शआर[5] को ?
महदूद कर लिया है चमन की बहार को ॥

—जिगर

५५६ क्या ग़रज लाख .खुदाई[6] मे है दौलत वाले ।
उनका वन्दा हूँ, जो वन्दे है मुहव्वत वाले ॥

—ज़ौक

५५७ पजमुर्दगी गुल[7] पै हँसी जब कोई कली ।
आवाज दी खिज़ाँ ने कि तू भी नजर मे है ॥

—क़मर जलालावादी

५५८ उम्मीद जिसे हम कहते हैं, वो भीक का इक कासा[8] निकला ।
फिर जब देखो तब खाली है, सो उसको हमने छोड़ दिया ॥
५५९. दरिया-ए-मुहव्वत ही मे हूँ, कैफियत[9] व मस्ती है दिल मे ।
कुछ फिक्र नही है साहिल की, इस दरिया का साहिल ही नही ॥

—जिगर

५६०. मिल्लतें[10] रस्तो के हैं सब हेर-फेर ।
सब जहाजो का है लगर एक घाट ॥

—हाली

५६१. तमन्नाओ मे उलझाया गया हूँ ।
खिलौने देके वहलाया गया हूँ ॥

—शाद

---

१ वागीचा २ पिंजरा ३ सीमित ४ वहार की दुनिया की विशालता ५. प्रमादी वुलवुल ६. सृष्टि ७. फूल की मुरझाई हालत ८. पात्र ९ नशे की हालत १०. पन्थ ।

५६२ कूचए-दिल[1] मे तलाशे-यार करना चाहिए।
फिर रहा है दश्त[2] मे मजनूँ भी इक दीवाना है॥

—उस्मान

५६३. छोडा नही .खुदी[3] को, दौडे खुदा के पीछे।
आसाँ[4] को छोड बन्दे, मुश्किल[5] को ढूँढते है॥

—नाशाद

५६४. जी उठा मरने से जिसकी .खुदा पर थी नजर।
जिसने दुनिया ही को पाया, था वह सब खोके मरा॥
५६५ उस मै[6] से नही मतलब, दिल जिससे हो बेगाना[7]।
मक़सूद[8] है उस मै से, दिल ही मे जो खिचती है॥
५६६ हकीकत[9] की खबर क्या चश्मे-जाहिर-बी[10] को ऐ ज़ाहिद[11]।
नज़र आता है जो मुझको, तेरी आँखो से पिनहाँ[12] है॥
५६७ नसीहत की नही हाजत मुझे ऐ नासहे-नादाँ[13]।
मेरे दिल की सदा[14] मेरे लिए पन्दे-कदीबाँ[15] है॥
५६८ पुरसकूँ[16] तह[17] मे खज़ाना मोतियो का है निहाँ[18]।
सतह-दरिया[19] पर हुबाबे-मौज[20] का आलम[21] न देख॥

—असर

५६९ समा जाए जो नजरो मे उसे तसवीर कहते है।
कलेजे मे जो चुभ जाए, उसी को तीर कहते है॥
५७० इश्क़[22] है किस कतार[23] मे, हुस्न है किस शुमार[24] मे।
उम्र तमाम हो चुकी, अपने ही इन्तजार मे॥

---

१ दिल की गली मे २ जगल मे ३ अहकार को ४ सरल को ५ दुर्गम, अगम्य को ६ मदिरा ७ पागल, अपरिचित ८ अभिप्रेत, उद्देश्य ९. असलियत १० प्रकट-प्रत्यक्ष (स्थूल) को देखने वाली आँख, ११ उपासक १२ छिपा हुआ १३ मूर्ख उपदेशक १४ अन्तरात्मा की आवाज १५ ज्ञानियो की शिक्षा १६ शान्त १७. तल मे १८ गुप्त, छुपा हुआ १९ समुद्र की सतह पर २० बुदबुद और लहर का २१. दशा २२ प्रेम २३. पक्ति मे २४. गिनतीमे

५७१ ख़वर नही मुझे मैं क्या हूँ, आरज़ू क्या है?
किसी ने जव से यह समझा दिया कि 'तू क्या है'?

—जिगर

५७२ कितने कावे मिले रस्ते मे, कई तूर[1] मिले।
इन मुक़ामात[2] से हमको वोह कही दूर मिले॥

—रियाज़

५७३ कही बे-दहन[3] है तेरा लक़व[4], कही कमसख़ुन[5] का ख़िताव[6] है।
गरज असल वात यह खुल गई, कि सकूत[7] ही मे कलाम[8] है॥

—शाद

५७४, यह हस्ती-ओ-अदम[9] वहरे-फना के[10] दो किनारे हैं।
जो इस साहिल से डूवेगा वह उस साहिल से निकलेगा॥

५७५ कोई मुझ-सा भी न होगा राज़े-दिल[11] से वेखवर[12]।
जो मेरे दिल मे है उससे कह रहा हूँ दिल मे आ॥

—नश्तर

५७६ हजार सजदे करे रात-रात भर जाहिद[13]।
जो दिल ही साफ न हो, क्या जवी[14] मे नूर[15] आए?

—जिगर

५७७ हकीकत मे वही इस वहरे-हस्ती[16] का शिनावर[17] है।
जो मौजो का सहारा लेके फिर मौजो से वाहर है॥

—वली

५७८. लडकपन जिद[18] मे रोता था, जवानी दिल को रोती है।
न तव आराम था साक़ी, न अव आराम है साक़ी॥

---

१ तूर पर्वत २. स्थानो ३ निर्मुख ४. उपनाम ५ अल्पभाषी की ६. पदवी ७ शान्ति, मौन ८ वक्तृत्व ९ जीवन और मृत्यु १० विनाश-समुद्र ११ मन का रहस्य १२ अनभिज्ञ, प्रमत्त १३ उपासक १४ मस्तक १५ प्रकाश १६ जीवन-समुद्र का १७ जानकार १८ हठ, अड मे।

५७९ कि यह दुनिया सरासर[1] ख्वाब[2] और ख्वाबे-परीशाँ[3] है।
.खुशी आती नही सीने मे जब तक साँस चलती है॥
—जोश

५८० दिमाग आस्माँ पर जमी पर जबीं[4] है।
इबादत यह कोई इबादत नही है॥
५८१ किसी को दहर[5] मे अजाम-बी[6] नजर न मिले।
इसी मे खैर है आखिर की कुछ खबर न मिले॥
—अम्न लखनवी

५८२ मरना-जीना एक है जिनको जरा भी ज्ञान है।
वह उधर का मर्तबा है, यह इधर की शान है॥
५८३ जिन्दगी है रूह को[7] महदूद[8] कर लेने का नाम।
मौत है इन्साँ के ला-महदूद[9] हो जाने का नाम॥
५८४ जिन्दगी धुँधला-सा इक जल्वा है, और कुछ भी नही।
मौत इक वारीक-सा पर्दा है, और कुछ भी नही॥
५८५ गौर कर दिल मे कि हो जाये हकीकत[10] वे-नकाब[11]।
टूटते देखे तो होगे बार-हा[12] तूने हुबाब[13]॥
५८६ मरके भी दरिया के सीने से कही जाते नही।
रहते है दरिया ही मे, लेकिन नजर आते नही॥
५८७ यूँ ही तेरी शमए-सोजा[14] भी तेरी महफिल मे है।
मरने वाला आँख से ओझल है, लेकिन दिल मे है॥
५८८ कहते है फानी[15] जिन्हे हम वह फना[16] होते नही।
मरने वाले अस्ल मे[17] हमसे जुदा[18] होते नही॥

---

१. सर्वथा २ स्वप्न ३ दुस्वप्न, चिन्ताओं से भरा स्वप्न ४ मस्तक ५ दुनियाँ मे ६ परिणामदर्शी ७ आतमा को ८ सकुचित, सीमित ९ विस्तृत, सीमातीत १० वास्तविकता ११ अनावृत, उद्घाटित १२ वार-वार, वृहतवार १३ पानी के वुलवुले १४ प्रकाशमान दीपक १५ नश्वर १६ नष्ट १७ वस्तुत १८ पृथक्।

६०६ किसने लिक्खा है यह दीवारो पै जिन्दा की[1] 'शहीद'।
"जान देना जिसने सीखा, उसको जीना आ गया।
—शहीद वदायूनी

६०७. बे खुदी[2] देती है जब दिल को पयामे खिलवत[3]।
तू खुदा जाने उस आलम[4] मे कहाँ होता है?

६०८ कह दो अभी न करवटे बदले निजामे-दहर[5]।
मेरी जबीने-शौक[6] है, और पाए-यार[7] है॥
—सरशार सिद्दीकी

६०९ हमे पतवार अपने हाथ मे लेनी पडे शायद।
यह कैसे ना खुदा[8] है, जो भँवर तक जा नही सकते॥

६१०. तक़दीर का शिकवा बेमानी[9], जीना ही तुझे मजूर नही।
आप अपना मुक़द्दर बन न सके इतना तो कोई मजबूर[10] नही॥
—कतील

६११ वे बडे .खुशनसीब[11] इन्सॉ थे।
जिनकी किश्ती को नाखुदा[12] न मिला॥

६१२. ऐ काश[13]! टूट जाये किसी इत्तिफाक[14] से।
वे हाथ जो हदूदे-दुआ के[15] करीब हैं॥

६१३ इम्दाद[16] को मै अपनी तौहीन[17] समझता हूँ।
ऐ अहले-करम[18]! मेरी इम्दाद न फरमाओ॥

६१४. कुछ नही फिर भी मुतमईन[19] है दिल।
हाय अपनी अमीर नादारी[20]॥
— अदम

---

१ कारागार की २ वेसुधपन, सज्ञाहीनता, मस्ती ३, एकान्त का सन्देश ४. स्थिति मे ५ विश्व-व्यवस्था ६ रुचि, मस्तक की लगन ७ प्रिय-चरण ८ कर्णधार, मल्लाह ९ व्यर्थ १०. विवश ११ भाग्यशाली ११ कर्णधार १३ क्या ही अच्छा हो १४ सयोग-वश, दैवयोग से १५. दुआ मांगने के लिए उठे हुए हाथ १६ सहायता १७ अपमान, वेइज्जती १८ कृपालुओ! १९ सन्तुष्ट २० दरिद्रता।

६१५ तलवा[1] हो ज़िन्दगी की तो सकूँ-नाआश्ना[2] हो जा।
कि लफ़्जो मे[3] नही होती है इन वातो की तफसीरें[4] ।।
—आज़ाद

६१६ महसूस[5] हो रहा है कि गुम[6] हो रहा हूँ मैं।
किस सिम्त[7] आ गया, तुझे मैं ढूँढता हुआ ।।
—राज़, रामपुरी

६१७. गमे-हयातको[8] दुनिया पै आशकार[9] न कर।
यह एक राज़[10] है, जिक्र इसका बार-बार न कर ।।
—रौनक़ बक़नी

६१८. .खुदी का राजदाँ[11] होकर खुदी की दास्ताँ[12] होजा।
जहाँ से[13] क्या गरज़[14] तुझको तू आप अपना जहाँ होजा ।।

६१९ किसको दुनियाँ मे हुई राहत[15] नसीब[16] ?
कौन दुनिया मे असीरे-गम[17] नही ?
—अर्श मलसियानी

६२० अगर हो आस्ताँ से इश्क़े-दिल[18], तब बात बनती है।
फकत रब्ते-जबीनो-आस्ताँ[19] कुछ नही होता ।।

६२१. मुक़ामे-वाज़[20] कहाँ और मुक़ामे-राज़[21] कहाँ ?
मुकामे-वाज़ है मेम्बर मुक़ामे-राज़[22] है दार ।।

---

१. इच्छा, चाह २ सुख-चैन से बेपर्वाह ३ शब्दो मे ४. टीकाएँ, व्याख्याएँ ५ अनुभव ६ आत्म-विस्मृत, तल्लीन, खोया हुआ ७ तरफ़ ८ जीवन के दु ख को ९ प्रकट, व्यक्त १० रहस्य, भेद ११ 'सोऽहम्' का अभिप्राय समझकर १२ अर्थात् जीव से ब्रह्म और आत्मा से परमात्मा बनने का प्रयास कर १३ ससार से १४ प्रयोजन, मतलब १५ सुख-शान्ति, चैन १६ प्राप्त, उपलब्ध १७ दु खी, सतप्त १८ प्यारे की चौखट से दिली मुहब्बत १९ प्यारे की चौखट पर मस्तक रगडने से २०. भाषण का स्थान २१. वास्तविक सत्य का स्थान अर्थात् भाषण करने मे और सत्य कहने मे अन्तर है, कथनी एव करनी मे कितना अन्तर है २२ भाषण तो मच मे दिया जाता है, पर सत्य के लिए सूली पर चढना होता है।

५८९ कैदे-हस्ती से[1] कोई जर्रा[2] रिहा[3] होता नही।
टूट जाता है क़फ़स[4], ताइर[5] फना होता नही॥

५९० इश्क की माला का इक मोती विखर सकता नही।
इत्तिहादे-बातिनी[6] मरने से मर सकता नही॥

५९१. इश्क की शाखे किसी आँधी से झुक सकती नही।
रूह की सरगोशियाँ[7] मरने से मर सकती नही॥

५९२ जिन्दगी बेरूह आवाजो मे देती है पयाम[8]।
मौत सर्द अल्फाज को[9] ठुकराके करती है कमाल॥

—जोश

५९३ आये थे उसी की तजस्सुसमे,[10] जाते है उसी को ढूढेगे।
इस आरजी[11] आने-जाने को, फिर मरना-जीना क्या कहिए?

५९४ कुछ-न-कुछ हुआ आखिर दौरे-आस्माँ[12] अपना।
ढूँढने चले उनको, मिल गया निशा अपना॥

—बासित भोपाली

५९५. नही अपने किसी मकसद से खाली कोई भी सज्दा[13]।
ख़ुदा के नाम से करता है इन्साँ बन्दगी अपनी॥

५९६ हर बुलन्दो-पस्त को[14] इस तरह ठुकराता हूँ मैं।
कोई यह समझे कि ऐसे ठोकरे खाता हूँ मैं॥

५९७ बैठें तो किस उम्मीद पै, वैठे रहे यहाँ।
उट्ठे तो उठके जाएँ कहाँ तेरे दर से हम॥

—बिस्मिल सईदी

---

१ जीवन की कैद से २ कण, परमाणु ३ मुक्त ४ पिजरा ५ पक्षी ६ अन्तरग सम्बन्ध, आन्तरिक रिश्ता ७ कानाफूँसी ८ सन्देश ९ शब्दो को १० खोज, तलाश मे ११ कृत्रिम, वनावटी १२ आकाश का चक्र, भाग्य का चक्र १३ नमाज मे नतमस्तक होना १४ चढाव-उतार, ऊँच-नीच।

५९८ कुछ अपने एतमादे-नजरसे[1] भी काम ले।
चल कारवाँके[2] साथ, मगर राहबर[3] से दूर ॥

५९९ वही हज़ारो बहिश्ते[4] भी है खुदा-बन्दा[5]!
सिसक-सिसक के कटी जिन्दगी जहाँ मेरी ॥

६०० यह अपने-अपने जर्फे-तमन्ना[6] की बात है।
वरना चमन क़रीब[7] था, वीराना[8] घर से दूर ॥

—विहार कोटी

६०१ आप मैं अपनी निगाहो से हुआ था ओझल।
लेकर पहुँची थी कहाँ मुझको मेरी कमनजरी[9] ॥

—मख्मूर सईदी

६०२ अब तक मैं बन्दगी मे तअय्युन[10] न कर सका।
दिल है कही, जबी[11] है कही, और नजर कही ॥

—मशीर झिझानवी

६०३ तू जिसे जर्रा[12] समझकर कर रहा है पायमाल[13]।
देख उस जर्रे के सीने मे कहीं दुनिया न हो ॥

६०४ इक नयी बुनियाद[14] डालेगे तजस्सुस[15] की 'शिफा'।
हर गुबारे-कारवाँ[16] मे कारवाँ ढूँढेगे हम ॥

—शिफा ग्वालियरी

६०५ ऐ दोस्त! रफ्ता-रफ्ता[17] तुझको भी ढूँढ लूँगा।
खोया हूँ मैं अभी तो अपनी ही आगही[18] मे ॥

---

१ दृष्टि के विश्वास से २ यात्री दल ३ मार्ग-दर्शक से ४ स्वर्ग ५ हे प्रभो! ६. कामना की योग्यता, पात्रता अथवा गम्भीरता की ७ निकट ८ वन, जगल ९ सकीर्णता, सकुचित दृष्टि १० स्थिरता ११ मस्तक १२. कण, परमाणु १३ नष्ट, बर्बाद १४ नीव १५ खोज की १६ यात्री दल की धूलि १७. धीरे-धीरे १८ ज्ञान, परिचय, पहचान मे।

६२२ तेरी तलाश की मंज़िल अभी है दूर ऐ दोस्त !
अभी तो खुद मुझे अपना निशाँ नही मिलता ॥

६२३ अब हैं सरगरमे-तलाशे-मजिले-जानाँ[1] न हम।
छोड़ आये हैं हद्दे-काब-ओ-बुतखाना[2] हम ॥

—जगन्नाथ आज़ाद

६२४ तक़लीद के दीवाने[3] तक़लीद[4] गदाई[5] है।
तहक़ीक़[6] है सुलतानी[7] हम-पाय-ए-सुलताँ[8] बन ॥

—जोश

६२५ हस्ती[9] है ब-जाहिर[10] ऐ 'सागर' ! आमेजए-ख्वाबो-बेदारी[11]।
और फिर भी जीना होश नही, और फिर भी हस्ती ख्वाब नही ॥

६२६ न आस्माँ की न अर्शे-वरी की[12] बात करो।
जमी की गोद के पालो ! जमी की बात करो ॥

—साग़र

६२७ तेरे और उसके दरमियाँ तेरी .खुदी[13] हिजाब[14] है।
अपना निशान खोये जा, उसका मुकाम पाये जा ॥

—अख्तर सीरानी

६२८ हर शै को[15] मुसलसल[16] जुम्बिश[17] है,
राहतका[18] जहाँ मे नाम नही।
इस आलमे[19]-सई[20]-ओ-काविश[21] मे
इन्साँ के लिए आराम नही ॥

१, २ अपने प्यारे की खोज मे इतने लीन हैं कि कावा, काशी पीछे छूट गए हैं ३ अनुकरण करने की धुन के पागल ४ अनुकरण, नक़ल ५ भिखारीपन, मँगतापन ६ खोज ७. श्रेष्ठता ८ सर्वोपरि के समान, बादशाह के जैसा ६ अस्तित्व, जीवन १० प्रत्यक्षत ११ स्वप्न और जागृत अवस्था का सगम १२ स्वर्ग की १३ अहमन्यता १४ पर्दा १५ वस्तु अथवा पदार्थ को १६ निरन्तर, लगातार स्थायी १७ प्रकम्पन, हलन-चलन १८ सुख चैन का १६, २०, २१ ससार की आपाधापी मे (नये-नये दु.ख-शोक, शत्रुता, मनोमालिन्य आदि की खोज मे रहने से ससार मे मनुष्य को जरा भी आराम नही।)

छाई है फजा[1] पर तिश्नालबी[2] मफकूद[3] यहाँ सैराबी[4] है।
हर जिस्म मे इक बेचैनी[5] है, हर रूह[6] मे एक बेताबी[7] है॥

६२९ ऐ दोस्त! दिल मे गर्दे-कदूरत[8] न चाहिए।
अच्छे तो क्या बुरो से भी नफरत[9] न चाहिए।
कहता है कौन, फूल से रग़बत[10] न चाहिए।
काँटे से भी मगर तुझे वहशत[11] न चाहिए॥
काँटे की रग मे भी है, लहू सब्जाजार[12] का।
पाला हुआ है वह भी नसीमे-बहार[13] का॥

—जोश

६३० ख़िज़ा[14] अब आयेगी तो आयेगी ढलकर बहारो मे।
कुछ इस अन्दाज[15] से नज्मे-गुलिस्ताँ[16] कर रहा हूँ मैं॥

—शफक टोंकी

६३१ क़यामतख़ेज[17] अगर तूफाने-गम उट्ठा तो क्या परवा?
कि अब तो डूबकर पैदा किनारा कर लिया मैंने॥

६३२ मैं नादाँ नही हूँ कि घबराके ग़म से।
तेरे पास आकर तुझे दूर कर दूँ॥

—साहिर भोपाली

६३३ जवानी को सजाए-लज्जते-एहसास[18] दे देना।
मैं इस हद पर खुदा को आदमी महसूस करता हूँ॥

—क़तील शिफ़ाई

---

१ वातावरण पर २ पिपासा, प्यास ३. लुप्त, नष्ट, गायब ४ पिपासा की तृप्ति, प्यास का बुझना ५ व्याकुलता ६ आत्मा मे ७ अधीरता, बेसब्री ८ द्वेष-भाव का मैल, धूल ९ घृणा १०. स्नेह, आकर्षण ११ उपेक्षा, घृणा १२ हरियाली का १३ मृदु पवन द्वारा १४ पतझड़ १५. ढग से १६ उद्यान की व्यवस्था १७ प्रलयकर १८. अनुभूति के आनन्द का दण्ड।

६३४ मुसाफिरो[1] मे हो तजकिरा[2] क्या
'जमील' अपनी सुबुकरवी[3] का ?
न हमने रस्ते मे गर्द उड़ाई
न कोई नक़्शे-क़दम[4] बनाया ॥

६३५. मेरी नज़र मे तजल्ली[5] की हकीक़त[6] क्या है ?
तजल्लियो की हक़ीकत[7] को देखता हूँ मैं ॥

६३६. वह भी है दस्ते-हविस[8], दस्ते-दुआ[9] जिसको कहे।
इन्फिआल[10] अपनी ख़ुदी[11] का है, ख़ुदा जिसको कहे ॥

६३७ वे है अमीर, निज़ामे-जहाँ[12] बनाते है।
मैं हूँ फकीर, मिज़ाजे-जहाँ[13] बदलता हूँ ॥
यह सर बना नही ऐ दोस्त ! आस्ताँ[14] के लिए।
मैं इसके वास्ते जानू[15] तलाश करता हूँ ॥

६३८. झुकाया तूने, झुके हम, बराबरी न रही।
यह बन्दगी हुई ऐ दोस्त ! आशिकी न रही ॥

६३९. दीवार से घिरा था हरम[16] का क़सूर[17] था।
पैदा अगर हुदूद मे[18] वुसअत[19] न हो सकी ॥

६४० तलब के सहरा मे[20] चप्पे-चप्पे पे हैं मेरे नक्शे-पा के[21] मुहरे।
अगर्चे मैं इस हविसकदे[22] से गुज़र गया था मुसाफिराना ॥

---

१. जनता में, यात्रियो मे २ चर्चा, जिक्र ३. तेज़ रफ्तारी का ४. चरण चिह्न ५ ईश्वरीय चमत्कार की ६ मूल्य, कीमत ७ वास्तविकता को ८. तृष्णा का हाथ ९ जो हाथ खुदा से माँगने के लिए फैला हो १०. सकोच, लज्जा ११. अहभाव का १२ विश्व की व्यवस्था १३ संसार का मत-परिवर्तन, स्वभाव मे हेर-फेर, हृदय परिवर्तन १४ नमाज़ो मे झुकने के लिए, प्रिय की चौखट चूमने के लिए तृष्णा १५ घुटना, जघा १६. काबे का १७ अपराध, दोप १८ सीमित क्षेत्र मे १९ विशालता २० इच्छारूपी रेगिस्तान मे २१. चरण-चिन्ह २२ तृष्णागार से।

६४१ मोती बनने से क्या हासिल ? जब अपनी हकीकत[1] ही खो दी।
कतरे[2] के लिए बेहतर था यही, .कुलजुम[3] न सही दरिया होता।
६४२ .खुदा की रहमत पै[4] भूल बैठूं, यही न मानी[5] है इसके वाइज[6]।
वह अब्रका[7] मुन्तजिर[8] खडा हो, मकान जलता हो जब किसी का॥
वह लाख झुकवाले सरको मेरे, मगर यह दिल अब नही झुकेगा।
कि किब्रयाई से[9] भी जियादा, मिजाज नाजुक है बन्दगी का॥
६४३. मजनूं हैं, मगर ख्वाहिशे-लैला नही करते।
हम इश्क तो करते हैं, तमन्ना नही करते॥
—जमील मजहरी

६४४ जो जीना हो तो पहले ज़िन्दगी का मुद्दआ[10] समझे।
खुदा तौफीक[11] दे तो आदमी खुद को .खुदा समझे॥
६४५ किसे कहते है दरिया, यह खसो-खाशाक[12] क्या जानें ?
हकीकत[13] का पता शायद मिले कुछ तहनशीनो[14] से॥
—अफसर मेरठी

६४६. मै क्या था, किसलिए भेजा गया इस दौरे-हस्ती मे ?
न अब तक .खुद को पहचाना, न कुछ राजे-सफर समझा॥
६४७. खुदा से दूर हो कर के, यह दिल इतना न समझा मैं।
कि उस आलम मे क्या था और इस आलम मे क्या हूँ मैं ?
६४८ कोई हँस रहा है, कोई रो रहा है,
कोई पा रहा है, कोई खो रहा है।
इसी सोच मे तो रहता हूँ 'अकबर',
यह क्या हो रहा है, यह क्यो हो रहा है ?
— अकबर

---

१. अस्तित्व, वास्तविकता २ बूंद के लिए ३ समुद्र ४ दया पर ५ अर्थ ६. धर्मोपदेशक। ७ वर्षा की ८ प्रतीक्षा मे ९ ईश्वरत्व से १० उद्देश्य, अर्थ, तात्पर्य ११ शक्ति, सामर्थ्य, पात्रता १२ तिनके, घास १३ वास्तविकता का १४ दरिया की तह मे जाने वालो से।

६४९ एहसास[1] मे कमी थी, इदराक[2] मे थी खामी[3]।
वह भी वही थे 'अनवर' गुजरा हूँ मैं जहाँ से ॥

—अनवर

६५०. तलाशे-खिज्र[4] मे हूँ, रूगनासे-खिज्र[5] नही।
मुझे यह दिल से गिला[6] है कि रहनुमा[7] न मिला ॥

—फानी

६५१ पहलू मे गुल[8] के खार[9] भी है वेसवव[10] नही।
यह हुस्न[11] तौलने का है काँटा लगा हुआ ॥

६५२. उलझी थी कभी आदम के हाथो।
वह गुत्थी[12] आज तक सुलझा रहा हूँ ॥

—फिराक

६५३ हज़ार मर्तवा[13] वेहतर[14] है वादशाही से।
अगर नसीव[15] तेरे कूचे की गदाई[16] हो ॥

—मीर

६५४ होते हैं वडे किस्मत के धनी, जो यह सदमे[17] सह जाते है।
तूफाने-हवादिस[18] मे वर्ना अच्छे अच्छे वह जाते है ॥

—अज़ीज़



---

१. अनुभूति २ ज्ञान मे ३ न्यूनता, कच्चापन ४ पथ-प्रदर्शक की तलाश मे ५ पथ-प्रदर्शक के रूप का पारखी ६. शिकायत ७ पथ-प्रदर्शक ८ फूल की वगल मे ९. काँटा १० निष्कारण ११, सौन्दर्य १२ समस्या, उलझन, गाँठ १३. वार १४ अच्छा १५ प्राप्त, उपलव्ध १६ भिक्षा-वृत्ति, भीख माँगने का काम १७ चोट, दु.ख, तकलीफ़ १८. मुसीवतो के तूफान मे।

अपनी खुदी ही पर्दा है दीदार के लिए



१. अपनी खुदी[1] ही पर्दा है दीदार[2] के लिए।
वर्ना[3] कोई नकाब[4] नही यार[5] के लिए ॥

२ थी दुई[6] जब तक, नज़र आती थी लाखो सूरतें।
सब मे जब देखा उसी को तफ़का[7] जाता रहा ॥

३ खुदी की इब्तिदा[8] यह थी कि अपने-आप मे गुम[9] था।
खुदी की इन्तिहा[10] यह है खुदा को याद करता हूँ ॥

—अख्तर

४. तर्क[11] कर अपनी खुदी तुझको खुदा मिल जाएगा।
कौन कहता है कि ढूँढे से .खुदा मिलता नही ॥

—हुनर

५ दिया हमने जो अपनी खुदी को मिटा,
वह जो पर्दा था बीच मे अब न रहा।
रहा पर्दे मे अब न वह पर्दे-नशी,[12]
कोई दूसरा उसके सिवा[13] न रहा ॥

—हाली

---

१ अहवाद, यह भाव कि 'बस हम ही हम हैं' २ दर्शन के लिए ३ अन्यथा, नही तो ४ पर्दा, ओट ५ मित्र, प्रेमपात्र के ६ द्वैत, यह भाव कि मैं अलग हूँ, वह अलग है ७ भेद, पृथकता, जुदाई ८ आदि, शुरूआत ९ खोया हुआ, आत्मविस्मृत १० अन्त ११ छोडना, त्याग देना १२ पर्दे मे बैठने वाला १३ अतिरिक्त।

६. मिटा दरमियां[1] से खुदी का जो पर्दा।
हम उनके हुए, वह हमारे हुए है॥

७ अपनी खुदी मिटाएँ तो पाएँ रहे-विसाल[2]।
खोएँ जो आपको, वह तेरी जुस्तजू[3] करे॥

—मस्ती

८ .खुदी से बे.खुदी[4] म आ, जो ज़ौके-हकपरस्ती[5] है।
जिसे तू नेस्ती[6] समझा है ऐ ग़ाफिल! हक-परस्ती[7] है॥

—अमीर

९ मिटा दो .खुद को इतना कि रहे न निशाँ बाकी।
अगर पाना सनम[8] को है, .खुदी से हाथ धो बैठो॥

१० बे.खुदी मे इस कदर महवे-जमाले-यार[9] हूँ।
जिस तरफ मैं देखता हूँ यार की तस्वीर है॥

—एहसान दानिश

११. न था कुछ, तो तू था, कुछ न होता तो .खुदा होता।
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता?

—ग़ालिब

१२. झगडे से जब दुई के फरागत[10] हुई हमे।
कस्रत से[11] सैरे-आलमे-वहदत[12] हुई हमे॥

—सलीम

---

१. बीच मे से २. मिलन का मार्ग ३. खोज, तलाश ४ मस्ती, बेखबरी, तल्लीनता ५ ईश्वर भक्ति की लगन ६ ध्वस, बरबादी, विनाश, तबाही ७ सत्यनिष्ठता, सत्य की पूजा, धर्म परायणता ८. प्रिय, इष्ट मित्र ९ प्रिय के सौन्दर्य मे तन्मय १० मुक्ति, छुट्टी, छुटकारा ११. खूब अच्छी तरह से १२ अद्वैत या एकत्व की स्थिति की सैर।

१३ वफ़ूरे-बे.खुदी[1] ने मर्हले[2] तय कर दिये सारे।
कि अपना ही मकाँ अब हो गया है लामकाँ[3] मुझको॥

१४ जादए-राहे-बक़ा[4] ग़ैर-अज-फना[5] मिलता नही।
है खुदी जब तक कि इन्साँ मे .खुदा मिलता नही॥

१५ मिट गई सारी .खुदी, जाती रही दिल से दुई।
सब मे उसको जब से देखा, तफ़ऱ्क़ा[6] जाता रहा॥

१६ कोई भी दुश्मन नजर आता नही अब ग़ैर दोस्त!
क़िस्सा ऐ 'नासिख़' दुई का था सो यकसू[7] हो गया॥

—नासिख़

१७. बे.खुदी बेसबब[8] नही 'गालिब'।
कुछ तो है, जिसकी पर्दादारी[9] है॥

१८. उसे कौन देख सकता कि यगाना[10] है वह यकता[11]।
जो दुई की बू[12] भी होती, तो कही दो-चार होता॥

—ग़ालिब

१९ दुई मे यकदिली[13] का रग पैदा हो नही सकता।
शनासा[14] ग़ैर का[15], तेरा शनासा हो नही सकता॥

२० खोकर .खुदी को पाया खोये हुए को हमने।
सब-कुछ अयाँ[16] हुआ है, जो था निहाँ[17] नज़र से॥

---

१. मस्ती की स्थिति मे २ समस्याएँ, प्रश्न, कठिन काम ३ वह स्थान जो घर न हो, ईश्वर ४ अमर पथ पर मुक्ति-पथ का पाथेय ५. नष्ट हुए विना, अपने आपको मिटाये विना ६ भेद, जुदाई ७ एक ओर, निश्चिन्त, एकाग्रचित्त ८ अकारण ९ पर्दा करना १०. अद्वितीय, लाजवाब, एकाकी ११ अद्वितीय, अनुपम, वेमिसाल १२ गन्ध १३. एकत्व, एकता १४. परिचित, पहचानने वाला, जानकार १५. अन्य का १६ प्रकट, प्रत्यक्ष १७. लुप्त, छुपा हुआ, ओझल।

२१. जो ख़ुदी का पर्दा उठा दिया तो विसाले-यार[1] का ढब[2] बना।
वह हमारे सामने आ गया कि शहूद[3] जिसका मुहाल[4] था ॥
२२. ता दुई है दरमियाँ,[5] हर्फ़[6] आश्नाई[7] का गलत।
आश्ना[8] उससे है, जो आपसे बेगाना[9] है ॥
२३ हमने ख़ुदी को खोया, तो बेख़ुदी को पाया।
खोया हुआ न पाया, पाया हुआ न भूले ॥
२४ हाय पहुँचा न गया क़ैदे-ख़ुदी से उस तक।
अपने ही दाम[10] से छुटना उसे दुशवार[11] हुआ ॥

—सौदा

२५. हिजाबे-रुख़े-यार[12] थे आप ही हम।
खुली आँख जब, कोई पर्दा न देखा ॥

—दर्द

२६. बेख़ुदी दिखलाती है जल्वे मुझे हरदम नये।
है अजब आलम[13] कि हर आलम[14] मे हैं आलम[15] नये ॥
२७. बज़ाहिर[16] है दुई, पर असल[17] मे वहदत[18]-ही-वहदत है।
न जाना एक तूने हाय! गाफिल! दो को दो जाना ॥

—अमीर

२८. ख़ुदी जब तक रहे इन्सान मे, उसको नही पाता।
यह पर्दा उठ गया दिल से, तो वह पर्दानशी पाया ॥

—सादिक़

---

१ प्रिय का २. ढग, उपाय ३. प्रत्यक्ष, प्रकटीकरण ४. असम्भव ५. द्वैत-भाव के बीच मे रहने तक, जब तक द्वैत की स्थिति है तब तक ६ शब्द ७ मित्रता, यारी ८. मित्र, दोस्त ९. अपरिचित, अजान १०. जाल ११ कठिन १२ प्रिय की आकृति का पर्दा १३. स्थिति १४. अवस्था १५ ससार, दशा १६ प्रकटत प्रत्यक्ष रूप से, स्थूल दृष्टि से १७ वस्तुत १८ एकत्व, अद्वैत।

२९. किया है बेख़ुदी ने नेको-बद से बेख़बर ऐसा ।
कि शिकवा दोस्त का करता हूँ मैं जा-जाके दुश्मन से ॥

—ऐजाज़

३० ग़ैर से क्या मामला, आप है अपने दाम[1] मे ।
क़ैदे-ख़ुदी अगर न हो, तो फिर अजब फ़राग़[2] है ॥

—दर्द

३१. उठ गया दीदा[3] व दिल से दुई का पर्दा ।
एक ही नूर[4] हुआ अर्जो-समा[5] से पैदा ॥

—सब्र

३२ हो वस्ल[6], पर दुई की कही इसमे बू न हो ।
तू हो तो मैं न हूँ, अगर हूँ तो, तू न हो ;

—अमीर

३३ मिला है हमको यह मजमूने-रौशन[7] चश्मबीना[8] से ।
कि छोडी जिसने ख़ुदबीनी[9], उसे सब-कुछ नजर आया ॥

३४ पहुँचा दिया कहाँ-से-कहाँ बेख़ुदी ने आज ।
पर्दा जो उठ गया, तो न मैं था, न राज[10] था ॥

३५ ख़ुदी को इतना मिटा, कि तू न रहे ।
और तुझ मे दुई की बू[11] न रहे ॥



---

१. जाल मे, २ मुक्ति, छुटकारा, नजात, सुख, आराम, सन्तोष ३ आँख और मन से ४. प्रकाश, ज्योति ५. पृथ्वी और आकाश से ६ मिलन ७. प्रकाशपूर्ण लेख, प्रकाशित सीख, ज्योतिर्मय सन्देश ८. देखने वाली आँख से ९. अपने को सब-कुछ समझना, अहभाव, अहकार १०. रहस्य, भेद ११. गन्ध ।

हम मिट गए तो सूरते-हस्ती नजर पड़ी ।



१. हम मिट गए तो सूरते-हस्ती[1] नजर पडी ।
वीरान[2] जब आप हो गए बस्ती नज़र पडी ॥

—बिस्मिल

२ मिटा दे आपको मजूर अगर है नामवर[3] होना ।
निशाँ[4] से जो गुज़र जाते है, वही नाम करते है ॥

—रिन्द

३ उठा ले जिन्दगी से हाथ, अगर है वस्ल[5] का तालिब[6] ।
कि बे सर देने के[7] यह किला[8] सर[9] मुश्किल से होता है ॥

—सहर

४ कुछ लज्जते-विसाल[10] उस को हुई नसीब[11] ।
जो नामुराद[12] खेल गया अपनी जान पर ॥

—बेबाक

५ गर तू मर जाये तो जीने का मज़ा[13] आये तुझे ।
ज़हर गर पीवे तो अमृत का मजा आये तुझे ॥
६ निशा पाते हैं, पहले जो निशा अपना मिटाते है ।
ख़ुद अपना नाश करके बीज फिर फल-फूल पाते हैं ॥

---

१ जीवन का उपाय, जीवन का रूप २. खण्डहर, ध्वस्त ३ प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त, यशस्वी ४ चिन्ह, खोज ५ मिलन का ६. इच्छुक ७ विना सिर की बाजी लगाये ८ दुर्ग ९ विजित, जीतना १०. मिलन का आनन्द ११ प्राप्त १२. निस्पृह, नि.सग १३ आनन्द ।

७ न दाना ख़ाक[1] मे मिलता, न पाता औजे-सर सब्जी[2]।
उभरते है वही इक दिन, जो अपने को दबाते है॥

—सफी

८ मुयस्सर[3] क्यो न फिर उसको, हयाते-जाविदानी[4] हो।
फना[5] जो हो मुहब्बत मे कही वह मर भी सकता है?

९. मर चुके जीते जी खुशा-किस्मत[6]।
इससे अच्छी तो जिन्दगी ही नही॥

—इस्माईल

१० जब हुए बर्बाद, ऐ 'आबाद' तब पाया पता।
बेनिशाँ[7] होकर मिला हमको निशाने-कूए-दोस्त[8]॥

—आबाद

११ दिल जलाकर रुखे-महबूब[9] का जल्वा[10] देखा।
हमने घर फूँक के क्या खूब तमाशा देखा?

१२ हुआ तहक़ीक़[11] उन लोगो से जो है आप से बाहर।
पता मिलता है जब जोया[12] तेरे, सरसे गुजरते है॥

—रिन्द

१३. रौशन[13] हुआ यह महफिले-आलम[14] मे शमअ[15] से।
परवाए-सर[16] नही जिसे, वह सर-फराज[17] है॥

---

१. मिट्टी या धूल मे २ हरेभरेपन की समृद्धि, सफलता की उच्चता ३ उपलब्ध, प्राप्त ४ अमरता का जीवन, शाश्वत जीवन, अमरत्व ५ नष्ट, ध्वस्त ६, क्या खूब, क्या अच्छी किस्मत है ७ जिसका कोई अता-पता ही न हो, नष्ट, ध्वस्त ८ मित्र की गली का पता ९. प्रेम पात्र का १० दृश्य, नजारा ११. ज्ञात, विदित १२ खोजी, ढूँढने वाले १३. प्रकाशित, प्रकट १४ ससार गोष्ठी मे १५ मोमबत्ती से १६. सिर देने मे भी जो हिचकता नही, जी-जान की बाजी लगा देने वाला १७. सर्वोपरि, सर्वोच्च।

१४ मरना तेरे फिराक[1] मे जीने की है दलील[2]।
मैं गुम[3] हुआ तो तेरा पता मुझको मिल गया॥

—महशर

१५ हमको लगा है हाथ यह मजमूं[4] चिराग[5] से।
रौशन हो नाम उसका, जो अपना जलाये दिल॥

१६ मिल गया महबूब[6] से, जो आपसे बाहर हुआ।
ऐसी अज़-ख़ुद-रफ्तगी[7] क्या है अजीमत[8] दूरकी॥

१७ हुबाब-आसा[9] मुहीते-इश्क[10] से जो पार उतरते है।
गुजर जाते है पहले सर से, पीछे पांव धरते है॥

१८ आपको खोया मगर जोया[11] ख़ुदा का हो गया।
राज जिस पर मुनक सिफ़[12] फक़्रो-फना[13] का हो गया॥

—रिन्द

१९ नामर्द[14] ऐसी वादी मे रखेगा क्या क़दम ?
सर[15] हो मुहिम्मे-इश्क़[16] न बेसर दिये हुए॥

२०. बरगे-शमअ़[17] दिल जिसने जलाया तेरी दूरी मे।
तो उसने मंज़िले-मक़सूद[18] को जेरे-कदम[19] पाया॥

—आतिश

२१ क्यो कर हुबाब[20] हो सके दर्याए-बेकरां[21] ?
दर्यासे ज़ब तलक न मिले टूट फूटके॥

---

१ वियोग मे २. युक्ति ३ खोया हुआ ४ लेख ५ दीपक से ६ प्रेमपात्र से ७ अपने आप से मिट जाना ८. सकल्प, निश्चय, इरादा ९ बुलबुले के समान १० प्रेम की नदी से ११. खोजी १२. स्पष्ट, उद्घाटित १३ मिट जाने का १४. भीरु, क्लीव १५ विजित १६ प्रेम-युद्ध १७. मोमबत्ती की तरह १८. लक्ष्य-बिन्दु को १९ पैर के नीचे २० बुलबुला २१. अपार, अथाह, असीम नदी, सागर।

२२ मरने पै अपने मत जा, सालिक[1] तलब[2] मे उसके।
गो[3] सर को खो रहेगा, फिर उसको पा रहेगा॥

२३ देखा जो बादे-मर्ग,[4] तो मरना जियाँ[5] न था।
बदले फना[6] के मुल्के-बका[7] कुछ गिराँ[8] न था॥

२४. है अज्मे-तर्के-हस्ती[9] वजहे-मुदामे-हस्ती[10]।
जीते ही जी फना हो, गर हो बका[11] की ख्वाहिश[12]॥

—रासिख

२५ जब तलक हस्त[13] थी, दुश्वार था पाना तेरा।
मिट गये हम तो मिला हमको ठिकाना तेरा॥

—अमीर

२६ आपसे गुज़रे जो गोया, पहूँचे कूए-यार[14] तक।
बेख़बर जब हो गए, पाई ख़बर तब यार की॥

—गोया

२७ आ रही है यह शहीदो के मज़ारो[15] से सदा[16]।
ऊम्र-जावेद[17] मिली है हमे बेदम होकर॥

—फसाहत

२८. सच पूछिए तो नेस्ती[18] हस्ती का राज[19] है।
जो सर चढा है दार[20] पर, वह सर-फराज़[21] है॥

---

१ पथिक, बटोही, गृहस्थ-साधक २ चाह मे ३. यद्यपि ४ मरने के बाद ५. हानि, टोटा, घाटा ६. मृत्यु के ७. अमरलोक, ८ मँहगा ९ जीवन-त्याग का सकल्प १० शाश्वत जीवन का कारण ११ अनश्वरता, नित्यता की १२ इच्छा १३ अस्तित्व, वजूद १४ मित्र या प्रिय की गली १५ कब्रो से १६ आवाज १७ शाश्वत जीवन, अमरत्व १८ ध्वस, बरबादी, अपने आपको मिटा देना १९ जीवन-रहस्य २० सूली पर २१. सर्वोच्च सर्वोत्कृष्ट, सर्वोपरि।

२९. उसे पाया नही आसाँ[1] कि हमने ।
न जब तक आपको खोया, न पाया ॥

—जफर

३० सालिक[2] को यही जादा[3] से आवाज है आती ।
पामाल[4] जो हो, राह वह मंजिल की निकाल ॥

३१ किस क़दर सीमाव[5] है बेताव[6] मरने के लिए ?
शौक है अक्सीर[7] कहलाऊँगा मर जाने के बाद ॥

३२ दुरे-मक्सद[8] की ख्वाहिश और गमे-जाँकी[9] हिमाक़त[10] है ।
किसी को हाथ आये है, कही मोती भी साहिल[11] से ॥

३३ पर्दए-राजे-फना[12] है ऐन[13] आसारे-फ़ना[14] ।
बेनिशाँ होते हुए, नामो-निशाँ देखा किये ॥

—ग़ालिब

३४. जादए-राहे-बका[15] ग़ैर-अज-फ़ना[16] मिलता नही ।
है ख़ुदी जब तक कि इन्साँ पै ख़ुदा मिलता नही ॥



---

१. सरल, सुगम, सुलभ २. पथिक, बटोही, साधक को ३. पथ, मार्ग ४ विनष्ट, बर्बाद, ध्वस्त ५ पारद, पारा ६ बेचैन, उतावला ७ कीमियाँ रसायन ८ उद्देश्य के मुक्ता की, इच्छा के मोती की ९. प्राण-संकट की १०. चिन्ता फिक्र ११ तट से १२. मृत्यु-रहस्य का पर्दा १३ यथार्थ, वास्तविक, वाकई १४ मृत्यु का लक्षण, मृत्यु का चिह्न १५ मुक्ति-पथ का पाथेय, १६ मरने के अतिरिक्त, अपने आपको मिटाने के बिना ।

दिल के आईने में है तस्वीरे-यार !



१ दिल के आईने मे है तसवीरे-यार।
जब जरा गर्दन झुकाई देखली ॥
२ न देखा वह कही जल्वा[1], जो देखा ख़ानए-दिल[2] मे ।
बहुत मस्जिद मे सर मारा, बहुत-सा ढूँढा बुतखाना[3] ॥

—जफर

३ 'अमीर' उस बेनिशाँ को दिल मे पाया ।
जिसे ढूँढा किये थे चारसू[4] हम ॥

—अमीर

४ खुल गया जब यह कि दिल भी जल्वागाहे-यार[5] है ।
कौन चक्कर खाये फिर दैरो-हरम[6] की राह का ?
५. न आवारा[7] हो, दिल मे ढूँढ उसे जोया[8] है तू जिसका ।
यही वीराना है जिसमे कि वह गंजे-निहानी[9] है ॥

— सलीम

६ कही तुझको न पाया, गर्चे हमने इक जहाँ ढूँढा ।
फिर आख़िर दिल ही मे देखा, बग़ल[10] ही मे से तू निकला ॥

—ज़ौक़

---

१. दृश्य २ हृद् देश मे, मन मन्दिर मे ३ मन्दिर ४ चारो ओर, सर्वत्र ५ मित्र का दृश्य देखने का स्थान ६ मन्दिर-मस्जिद की ७. बेकार घूमने वाला ८ खोजी ९ आन्तरिक निधि, भीतरी खजाना १० पहलू ।

७ .खुदा को हमने जब ढूँढा, तो पाया खानए-दिल मे।
परेशाँ जुस्तजू[1] मे उसकी फिर ख़ल्के-.खुदा[2] क्यो है?

—रक़ीब

८ है वह दिल ही मे तुम्हारे, तुम अगर ढूँढो उसे।
फिरते हो नाहक[3] भटकते, ऐ 'ज़फर' चारो तरफ ॥

—ज़फर

९ दिल मे आती है नजर अपने मुझे तस्वीरे-यार।
क्या तमाशा है कि कावे मे सनम पैदा हुआ ॥

—रम्ज़

१०. देख गर देखना है 'ज़ौक' कि वह पर्दा-नशी[4]।
दीदए-रोजने-दिल[5] से है दिखाई देता ॥

—ज़ौक़

११ दिल खानए-.खुदा, जो सुना तो यकी[6] हुआ।
वह घर बना कि हो गया मेमार[7] को पसन्द ॥

१२. .खुदा का घर बनाना है, तो नक्शा ले किसी दिल का।
यह दीवारो की क्या तजवीज़[8] है, जाहिद[9] यह छत कैसी?

१३. खुदा का घर है बुतखाना हमारा दिल नही 'आतिश'।
मुक़ामे-आश्ना[10] है याँ नही बेगाना[11] आता है ॥

—आतिश

१४. पूछा है आरिफो[12] से जो हमने मकाने-यार।
आँखो को बन्द करके है दिल का पता दिया ॥

---

१ खोज मे, तलाश मे २ परमात्मा की सृष्टि ३ व्यर्थ ४. पर्दे मे बैठने वाला, अन्तर्यामी ५. मन के विवर या छिद्र की आँख से ६ विश्वास ७. निर्माता को ८ प्रबन्ध, योजना, उपाय, प्रयत्न ९ सयमी, जितेन्द्रिय, विरक्त १० प्रिय, मित्र का स्थान ११ पराया, अपरिचित १२ जानने वालो से, ब्रह्मज्ञानियो से।

१५. निशाँ मिलता नही, लेकिन तेरा नाम ।
अजल[1] से नक्श[2] है दिल के नगीं[3] पर ॥

—ज़का

१६. हमारे दिल की वुसअत[4] का पता क्या कोई पाएगा ?
यह वह घर है खुदा भी जिसके अन्दर आके बसता है ॥

१७. तरन्नुम-सज[5] है कोई, न कोई खानए-दिल मे ।
जो नग्मा[6] दिल के पर्दे मे मेरे हर आन[7] होता है ॥

१८ दिल के आईने मे जब पाता हूँ तुझको जल्वागर ।
काबे से मुझको क्या गरज[8], फिर बुतकदा[9] क्या चीज है ?

१९. दिल के आगे क्यो बढा, तू ऐ तलबगारे-विसाल[10] ।
फिर उधर ही जा, वही घर जल्वागाहे-यार था ॥

२०. अर्जो-समा[11] कहाँ तेरी वुसअत[12] को पा सके ।
मेरा ही दिल है वोह कि जहाँ तू समा सके ॥

२१ निहाँ[13] आँखो से रहने वाले जल्वा भी दिखा देना ।
अज़ल[14] से तू समझता है, मेरे दिल को मकाँ अपना ॥

—क़ैसर

२२. खानए-दिल मे किसी पर्दानशी की आरजू[15] ।
आरजू क्या है दुलहन बैठी है शर्माई हुई ॥

२३. खुदा से जब तक न हो शनासा[16] हरीमे-दिल[17] का है शौक[18] बेजा[19]
मका का तब पता मिलेगा कि कुछ पता याद हो मकी[20] का ॥

---

१ अनादि काल से २ अंकित, खुदा हुआ ३ नग पर, अँगूठी का वह नग, जिस पर नाम खुदा रहता है ४. लम्बाई, विशालता ५. स्वर-माधुर्य को तोलने वाला ६. गाना ७ प्रतिक्षण ८ प्रयोजन, मतलब ९ मन्दिर १० मिलन का आकाक्षी ११ पृथ्वी और आकाश १२ विशालता १३ गुप्त, ओझल, १४ अनादि काल से १५ इच्छा, अभिलाषा १६, जानने पहचानने वाला, परिचित, अभिज्ञ १७ मन-मन्दिर का १८ लगन १९ अनुचित, नामुनासिब २०. मकान मे रहने वाला, निवासी ।

२४ मै यह कहता हूँ मेरे खानए-दिल[1] मे है मकी।
लोग कहते है कि काबे मे .खुदा मिलता है॥

२५ आईने की तरह गाफिल! खोल छाती के किवाड़।
देख तो है कौन बारे[2] तेरे काशाने[3] के बीच?

२६ आती है दिल मे और ही सूरत मुझे नज़र।
शायद यह आईना भी किसी के हुजूर[4] है॥

—दर्द

२७ तलाश उसकी थी काबे मे, मिला वह ख़ानए-दिल मे।
'फसीह' इस बात का हमको न था वहमो-गुमॉं[5] हर्गिज॥

—फसीह

२८. ढूँढना है उसको, ऐ जाहिद[6]! तू अपने दिल मे ढूँढ।
छत मे काबे की न वह काबे की दीवारो मे है॥

२९ दैरो-काबे मे रहे शेख़ो-बिरहमन जोया[7]।
हमने घरबार तेरा ढूँढ निकाला दिल मे॥

३०. शेख़ काबे मे है सरगर्दा[8] बिरहमन दैर[9] मे।
जिसको दोनो ढूँढते है, वह हमारे दिल मे है॥

३१ हरम[10] क्या, बुतकदा[11] क्या, मैं उसे घर-घर पुकार आया।
यही अब जी मे आता है कि दस्तक[12] दूँ दरे-दिल[13] पर॥

—अमीर

३२ काबे से कम नही है हमारा हरीमे-दिल[14]।
इसमे भी है खुदी हुई तसवीर यार की॥

— ासिख



१ मन-मन्दिर २ अन्तत., आखिरकार ३, छोटा-सा घर, झोपडी, यानी दिल ४. साक्षात् उपस्थित, हाजिर ५ भ्रम, आशका ६ सयमी, जितेन्द्रिय ७ खोजी, ढूँढने वाला ८ उद्विग्न, हैरान, परेशान, राह भूला हुआ ९. मन्दिर मे १० काबा, ख़ुदा का घर ११ मन्दिर, मूर्तिगृह १२ खटखटाना १३ हृदय द्वार पर १४ मन-मन्दिर, हृदय-रूपी घर।

साफ़ दिल हो तो जल्वागर हो यार !

१. साफदिल[1] हो तो जल्वागर[2] हो यार।
आईना हो साफ तो लो तमाशा लूट ॥

—आतिश

२. किसी से बुग्ज[3] है, रश्को-कदूरत[4] है न कीना[5] है।
दिल अपना साफ है सब से हमे याराना[6] है ॥

—हासिब

३. क्या अहले-जहाँ करते हैं ज़ाहिर की सफाई ?
बातिन[7] को उजला क्यो नही करते ॥

४ तूने ऐ गाफिल ! अगर सारा बदन[8] धोया तो क्या ?
धो सके गर मैले-दुनिया दिल के तू अन्दर से धो ॥

—जफर

५ दूर कर दिल की कदूरत[9], महव[10] हो दीदार[11] का।
आईने को बस सफाई ने दिखाया रूए-दोस्त[12] ॥

—आतिश

६ दिल सियाह[13] है बाल सब अपने है पीरी[14] मे सफेद।
घर के अन्दर है अंधेरा और बाहर चाँदनी ॥

—नासिख

---

१ पवित्र हृदय २ उपस्थित, प्रस्तुत, प्रत्यक्ष ३ जलन, हसद, दूसरो की उन्नति को देखकर जलने की वृत्ति ४ ईर्ष्या, स्पर्धा ५ द्वेष, खुन्स ६ मित्रता, प्रेम-भाव ७ अन्तरग, भीतर को ८ शरीर ९. मन का द्वेष १० तन्मय, तल्लीन ११ दर्शन १२ मित्र की मुखाकृति, प्रिय का मुख १३ काला १४ बुढापा।

७. ज़र्फ[1] नापाक[2] है तो उसमे है हर शै[3] नापाक[4]।
दिल नही साफ तो क्या खाक इबादत[5] होगी ?
—महर

८. अपने ऐबो[6] पर नज़र कर, अपने दिल को पाक कर।
क्या हुआ गर खल्क[7] मे तू पारसा[8] मशहूर है॥

९. दिल से वो काफिर सनम निकले तो सब-कुछ हो कबूल।
जाके मस्जिद मे इबादत मैं करूँ तो क्या करूँ ?
—दाग़

१०. दिल अगर है साफ कुछ मुश्किल नही दीदारे-यार।
देख लो आईना सूरत-आश्ना[9] क्यो कर हुआ ?
—अमीर

११. करके साफ आईन-ए-दिल[10] इसमे तू देख आपको।
बख्शेगा ऐ यार! तेरा ही तुझे दीदारे-फ़ैज[11]॥
—सौदा

१२. लाख सूरत[12] से बनाएँ, आईनागर[13] आईना[14]।
दिल से हर्गिज़ हो सफाई मे न बढकर आईना॥

१३. दिल मे कभी न ग़र्दे-कदूरत[15] को राह दे।
इस आईने मे काम नही है ग़ुबार[16] का॥
—आबाद

१४. पैदा जो आईने मे भी होती सफाई-ए-दिल।
सीने मे अपने रखता सिकन्दर बजाये-दिल[17]॥

---

१. पात्र, वर्तन २ अपवित्र, मैला, गन्दा ३ वस्तु, चीज ४ अपवित्र, खराब, गन्दी ५ भक्ति ६ दोषो, बुराइयो ७ ससार मे ८. सयमी, जितेन्द्रिय ९ जो केवल सूरत पहचानता हो, नाम आदि और कुछ न जानता हो १० हृदय-दर्पण ११ दर्शन का लाभ १२ उपाय, ढग, तदवीर १३. दर्पणकार, शीशा बनाने वाला १४ दर्पण १५ द्वेष की धूलि को १६ धूलि, रज, मनोमालिन्य, दिल का मैल १७. मन के अतिरिक्त।

१५. चारो तरफ से सूरते-जाना[1] हो जल्वागर[2]।
दिल साफ हो तेरा तो आईनाखाना[3] क्या ?
—आतिश

१६. दिल के आईने को तू साफ तो कर, देख जरा।
उसकी सूरत तुझे आवेगी आप-से-आप नजर ॥
१७ आईना दिल का रियाज़त[4] से अगर हो जाए साफ।
फिर तमाशा है वही मुमकिन[5] जो जामे-जम[6] मे है ॥
१८. आईने को दोस्त रखते हैं जहाँ के खूबो-ज़िश्त[7] !
दिल हुआ जब साफ बस आलम[8] से झगडा पाक है ॥
—नासिख

१९ दिखला रही है दिल की सफाई दो जहाँ की सैर।
क्या आईना लगा हुआ अपने मकाँ मे है ॥
—आतिश

२० अक्स-रुखे-दिलदार[9] वही होवे नुमायाँ[10]।
जूँ आईना[11] कुछ दिल मे अगर अपने सफा[12] हो ॥
—जफर

२१. ख़ुदा को दिल ही मे ढूँढो, इधर उधर न फिरो।
नही किताब का मतलब किताब से बाहर ॥
—अमीर

२२ ख़याल इन्सान को हरदम रहे दिल की सफाई का।
नजर आता है इस आईने मे नक्शा[13] खुदाई का ॥

---

१ प्रेमपात्र या प्रेयसी की मुखाकृति, प्रिय का रूप २ प्रत्यक्ष, उपस्थित ३ दर्पण-गृह ४ तपस्या, जप-तप, इबादत ५ सभव ६ प्रसिद्ध है कि ईरान के शासक जमशेद ने एक प्याला बनाया था जिससे ससार का हाल ज्ञात होता था, जामे-जमशेद ७ सुन्दर और निकृष्ट, स्वच्छ और खराब, अच्छा और बुरा ८. दुनिया ९ प्रिय की मुखाकृति, प्रेमपात्र का चेहरा १० स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट, जाहिर ११ दर्पण की भाँति १२ साफ, स्वच्छ, निर्मल १३ चित्र, आकृति।

२३. न देखा आईने की शक्ल[1] मे सूफी[2] ने वह हर्गिज़[3]।
तमाशा हमने जो दिल करके अपना बासफा[4] देखा ॥
—ज़फ़र

२४. ऐ 'दर्द' कर टुक आईनए-दिल को साफ तू।
फिर हर तरफ नजार-ए-हुस्नो-जमाल[5] तू ॥
—दर्द

२५. ऐ खयाले-यार करता हूँ रियाजत[6] से सफा[7]।
खानए-दिल मे है करनी तेरी महमानी[8] मुझे ॥
—आतिश

२६ सफाईयाँ हो रही है जितनी, दिल उतने ही हो रहे हैं मैले।
अँधेरा छा जाएगा जहाँ मे, अगर यही रोशनी रहेगी ॥
—जोश

२७ दिल पाक न हो जब तक, दुनिया की तमन्ना से।
क्या काम निकलता है तसबीह[9] व मुसल्ला[10] से ॥

२८ दिल को किस शक्ल से[11] अपने न मुसफ़्फा[12] रक्खूँ।
जल्वागर यार की सूरत है इस आईने मे ॥

२९. मिसाले-आईना[13] तू साफ रह कि ऐ 'आबाद'।
दिले-हबीब[14] मे दाखिल कभी .गुबार[15] न हो ॥
—आबाद

३०. खाक आईने से है नामे-सिकन्दर रोशन।
रोशनी देखता, गर दिल की सफाई करता ॥

---

१. आकृति मे २ ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मवादी ३ कदापि, कभी भी ४. पवित्र, निर्मल, स्वच्छ ५ रूप सौन्दर्य का दृश्य ६ तपस्या से, जप-तप से ७ पवित्र ८ आतिथ्य, अतिथि-सत्कार ९ माला, जपमाला १० नमाज़ पढने की चटाई अथवा दरी ११ किस तरह से, कैसे १२ साफ किया हुआ, शुद्ध, उज्ज्वल १३ दर्पण की भाँति १४. मित्र, प्रिय, प्रेमपात्र या माशूक़ के दिल मे १५ धूल, रज, मैल, मलिनता।

३१. है अगर शौके-जमाल[1] उसका तो इसको साफ़ कर ।
यह जो है दिल का पुर-अज-.जगे-कदूरत[2] आईना ॥

३२. चाहे कि अक्से[3]-दोस्त रहे तुझ मे जल्वागर ।
आईनावार[4] दिल को रख अपने सफा-परस्त[5] ॥

३३ हर सिम्त[6] से हो साया-फिगन[7] यार[8] की सूरत[9] ।
आईनए-खातिर[10] मे अगर कुछ भी सफा[11] हो ॥

—अनवर



१. रूप दर्शन की रुचि २ ईर्ष्या द्वेष के मैल से भरा हुआ ३ मित्र या प्रेमपात्र का प्रतिविम्व ४. दर्पण के समान ५ स्वच्छ, पवित्र, निर्मल ६ प्रत्येक दिशा से, सब ओर से ७ प्रतिविम्ब डालने वाला, प्रतिविम्बित, प्रकट होने वाला, प्रत्यक्ष होने वाला ८ प्रेमपात्र, प्रिय ९ आकृति, छवि, रूप १०. मनके दर्पण मे ११ स्वच्छता, पवित्रता, सफ़ाई ।

चश्मे-बीना चाहिए, तो जल्वागर है हर तरफ़ !



१ चश्मे-बीना[1] चाहिए तो जल्वागर है हर तरफ।
पर्दा है ऐ शमग्र[2] रूपर्दा[3] तेरा फ़ानूस[4] का ॥

—ग्रातिश

२. चश्मे-बीना चाहिए उस दर से इर्फा[5] के लिए।
हर वरक[6] पर दफ्तरे-हस्ती[7] के तेरा नाम है ॥

— महशर

३ चश्मे-बीना एक भी ग्राई न ग्रालम मे नज़र।
जूस्तजू मे गर्चे दौडी हर तरफ़ बीनाईयाँ[8] ॥

४ वह ग्राँखे दिल के ग्रन्दर जो हैं उनको खोल ऐ गाफिल !
इन ग्राँखो से कही तू जल्वए-हक[9] देख सकता है ॥

—कलामी

५. वह ग्रन्धे है, जो कहते हैं, हम-ही-हम हैं।
जो ग्राँखें हो रौशन तो फिर तू-ही-तू है ॥

६ बज्मे-कस्रत नूरे-वहदत[12] से कभी खाली नही।
चश्मे-बीना हो तो यूसुफ़[11] सैकडो बाजार है ॥

—ग्रमीर

---

१ देखने वाली आँख, स्वस्थ आँख २ मोमबत्ती ३ मुखावरण ४ कंडील, लैम्प की चिमनी का ५ परिचय, ज्ञान, बोध ६ पृष्ठ, पन्ने पर ७ जीवन कार्यालय के ८ दृष्टियाँ, नजरें ९ सत्य का दृश्य, सत्यदर्शन १० एकत्व का प्रकाश, अद्वैत ११ एक पैगम्बर, जो अत्यन्त सुन्दर थे ।

७. ज़र्रे-ज़र्रे[1] मे निहाँ इक जल्वये-गुलफ़ाम[2] है !
शर्त यह है होके सरशारे-मुहब्बत[3] देखिए ॥

—असर

८. ज़र्रे-ज़र्रे मे है यहाँ ख़ाक[4] के पैदा ख़ुर्शीद[5] ।
लेकिन आया तुझे गफलत से नजर ख़ाक[6] नही ॥

—ज़फर

९ यह वह आँखे है, जो हैं नाआशनाए-रूए-ग़ैर[7] ।
आँख खोली जब से मैंने, तू नजर आया मुझे ॥

१० मिटे अगर दिल से रगे-गफलत, खुले अगर दीदए-हकीकत[8] ।
तो ख़ाके-दिल[9] का हरएक जर्रा, करेगा सौ आफ़ताब[10] पैदा ॥

—जिगर

११. हर चीज मे है जल्वा, हर शै मे तमाशा है ।
आँखे है मेरी लेकिन बीनाई[11] का पर्दा है ॥

—इशरत

१२. जल्वे तेरी वहदत[12] के कस्रत[13] से नजर आए ।
जब चश्मे-हकीकत-बी[14] मसरूफ़ तमाशा[15] हो ॥

१३ नजर आया हर इक ज़र्रे मे जल्वा शाने-वहदत का[16] ।
जो आँखे खोलकर देखे तमाशा तेरी क़ुदरत का ॥

—ख़ंजर

---

१ अणु-अणु मे २. पुष्पागी, पुष्पागना का दृश्य ३ परिपूर्ण प्रेमी ४ धूल, रज ५ सूरज ६. कुछ भी ७. पराये चेहरे से अपरिचित ८ ज्ञान-नेत्र, अन्तर्नेत्र ९ मन की धूल का १० सूर्य ११ दृष्टि, ज्योति १२ एकत्व, अद्वैतता के १३ प्राचुर्य, बहुलता से १४. सच्चाई को देखने वाली आँख १५ तमाशा देखने मे सलग्न या आसक्त १६. एकत्व अथवा अद्वैत की प्रतिष्ठा का ।

१४. वह हुस्न जल्वागर है, वह रुख़[1] बेनकाब[2] है।
लेकिन कुछ अपनी आँखो का पर्दा हिजाब[3] है॥

—आश्ना

१५ कर तमाशाए-जहाँ[4] से पहले अपनी आँख वन्द।
देखना उसका अगर 'नासिख़' तुझे मंजूर[5] है॥

—नासिख़

१६. हो दीद[6] का जो शौक़ तो आँखो को वन्द कर।
है देखना यही कि न देखा करे कोई॥

१७ पैदा किये फलक[7] ने नादीदनी[8] मनाजिर[9]।
पहुँची है उनकी नजरे, जो साहिवे-नजर[10] है॥

१८ रौशन अगर हो नूरे-हकीकत[11] से तेरी चश्म[12]।
है हर शरारे-संगे-निहा[13] तूर[14] का चिराग[15]॥

—ज़फर

१९ जाहिर की आँख से न तमाशा करे कोई।
हो देखना तो दीदए-दिल[16] वा[17] करे कोई॥

२०. चश्मे-ज़ाहिर[18] गर है रोशन, चश्मे-वातिन[19] कोर[20] है।
यह नही मुमकिन कभी देखे कोई वेदार[21] ख्वाव[22]॥

---

१ मुखाकृति, छवि, चेहरा २ अनावृत, वेपर्दा, स्पष्ट, प्रत्यक्ष ३. ओट, आड ४ ससार की लीला से ५ स्वीकार ६ दर्शन ७ आकाश ने ८ अदर्शनीय, जो देखने मे न आएँ अमूर्त ९ दृश्य १० दृष्टि वाले ११ यथार्थ प्रकाश १२ आँख १३ पत्थर मे छुपा प्रत्येक स्फुलिंग १४ सीरिया का एक पहाड, जिस पर हजरत मूसा ने खुदा का जल्वा देखा था १५. दीपक १६ मन की आँख, अन्तर्नेत्र १७ खोलना १८ वाह्य चक्षु वाहर की आँख १९ अन्तर्नेत्र, २० अन्धा, ज्योति-विहीन २१ जाग्रत, सोते से उठा हुआ २२ सपना ।

२१ सब तरफ से दीदए-बातिन[1] को जब यकसू[2] किया।
जिसकी ख्वाहिश[3] थी वही हरसू[4] नजर आया मुझे॥
—नासिख

२२ नज़र हो तो नज़र आती है कैफियत[5] दो आलम[6] की।
चलो 'अनवर' तमाशा देख आएँ बज्मे-रिन्दाँ[7] मे॥
—अनवर

२३ किस जान जल्वागर तेरी वहदत का नूर था?
जल्वा तेरा था आम, नजर का क़सूर[8] था॥
—खुर्शीद

२४. वख्गे है जलवये-गुल[9], जौक़-तमाशा[10] 'गालिब।
चश्म को चाहिए हर रंग मे वा[11] हो जाना॥
—ग़ालिब

२५ कोरबातिन[12] को नजर क्या पडे जल्वा उनका।
दीखता है उन्हे हर शै मे शनासा[13] उनका॥
—अदीब

२६ मुँदे गर चश्मे-जाहिर, दीदए-बेदार[14] हो पैदा।
दरो-दीवार से नक्शे-जमाले-यार[15] हो पैदा॥
—आतिश

२७ वह था न हमसे दूर, न मैं उनसे दूर था।
आता न था नजर, तो नजर का कसूर था॥

२८ तुझे देखा तो, अब कुछ देखने को जी नही चाहता।
किये है बन्द आँखे तेरी सूरत देखने वाले॥
—हनीफ

---

१ अन्तर्नेत्र २ एकाग्र, ३ इच्छा ४ हर तरफ, सर्वत्र, चारो ओर ५ अवस्था, स्थिति, हालत ६ इहलोक, परलोक ७. मस्तो की सभा मे ८ दोष ९ फूलो के दृश्य १० खेल का मजा ११ खुलना १२ जिसकी आत्मा मे ज्ञान का प्रकाश नही, अन्धात्मा का, १३ पहचानने वाला, जानकार १४ जाग्रत नेत्र, अन्तर्नेत्र १५ प्रिय दर्शन का चित्र।

२९. आँखे तो बेशुमार देखी—लेकिन।
कम थी बखुदा[1]—जिनको बीना[2] पाया॥
३० 'अमीर' उसकी तजल्लीगाह[3] है दुनिया, जो आँखे हों।
वही गुल[4] है गुलिस्ता[5] मे, वही है शमअ महफिल मे॥

—अमीर

३१. खुली है चश्मे-हक़ीकत जिन्हो की शक्ल-हुबाब[6]।
वह बाँधते नही तकिया जहाने-फानी[7] पर॥

—ज़फर

३२. जल्वए दोस्त तो मौजूद है हर शै मे रिन्द।
आप अन्धा है तो आँखो मे तेरे नूर नही॥
३३ जल्वए-यार हर इक शै मे नजर आता है।
तू न देखे तो यह तकसीर[8] है बीनाई[9] की॥

—रिन्द

३४. तू अगर देखे तो हर ज़र्रा किताबे-पन्द[10] है।
क्या मगर देखेगा तू, तेरा तो दीदा[11] बन्द है॥
३५. हर जा है उसका जल्वए-रुख़, वह किधर नही ?
पर जिससे देख लें, वह हमारी नजर नही॥
३६ अगर निगाह[12] हो, तो क्या तलाश[13] की हाजत[14]।
तेरा ही जल्वा है चारो तरफ जमाने मे॥
३७ बेकार बनाये नही आँखो के पियाले।
दीदार[15] का साइल[16] हो जो याराए-नजर[17] है॥

---

१ ईश्वर के लिए २ देखने वाली ३ ज्योति-गृह, प्रकाशालय ४ पुष्प ५ बाग मे ६ बुलबुले की तरह ७ नश्वर ससार पर ८ दोष ९. दृष्टि का १० उपदेश ग्रन्थ, सदुपदेश या शिक्षा पूर्ण ग्रन्थ ११. आख १२ दृष्टि, या नजर १३ खोज १४ आवश्यकता १५ दर्शन का १६ प्रार्थी, उम्मीदवार १७. दृष्टि वाला।

३८. तजस्सिस[1] की नज़र से सैरे फितरत[2] की जो ऐ अकबर !
कोई ज़र्रा न था जिसमे कि इक आलम[3] नही निकला ॥

—अकबर

३९. जिनको आँखे हैं नही, वह देखते हैरान हो ।
वह सनम[4] पिनहाँ[5] नही है कोरे-मादरज़ाद[6] से ॥

४०. चश्मे-वहदतबी[7] से लाजिम है तमाशाए-चमन[8] ।
ख़ार[9] गुल दोनो बगल-परवर्दा[10] है गुलजार[11] के ॥

—दर्द

४१ चश्मे-जाहिरबी[12] से तो देखा नही जाता है यार ।
तुमने भी ऐ दिल की आखो ! उसको दिखलाया नही ॥
हो मुयस्सर[13] क्यो कर उस पर्देनशी का देखना ?
है जो पर्दा दरमियाँ[14], वह उसने उठवाया नही ॥

—ज़फर

४२ जो है पर्दे मे पिन्हाँ[15] चश्मे-बीना[16] देख लेती है ।
जमाने की तबीअत[17] का तकाजा[18] देख लेती है ॥

—इक़बाल



---

१ खोज की २ प्रकृति की सैर ३. ससार ४ प्रिय ५. गुप्त, छिपा हुआ ६ जन्मान्ध से, जो माँ के पेट से ही अन्धा जन्मा हो ७. अद्वैत दृष्टि से ८ उद्यान की क्रीडा ९ काँटा १० पास-पास या साथ-साथ पलने वाले ११. उद्यान के १२ वाहरी तडक-भडक या ऊपरी टीम-टाम को देखने वाली आँख, वाह्य दृष्टि १३. प्राप्त, उपलब्ध १४ बीच मे १५ गुप्त, छिपा हुआ १६. देखने वाली आँख १७. स्वभाव का १८. माँग, आवश्यकता ।

दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ !

१ दुनिया मे हूँ, दुनिया का तलवगार नही हूँ ।
वाज़ार से गुजरा हूँ, खरीदार नही हूँ ॥

—गालिब

२. जमाने ने मेरे आगे भी दुनिया पेश कर दी थी ।
मगर मैंने तो अपना फ़ायदा इनकार मे देखा ॥

३. मैं भागता हूँ दुनिया आ-आके है लिपटती ।
'आतिश' मुझी को इसने शायद कि मर्द[1] पाया ॥

—आतिश

४. भागती फिरती थी दुनिया जव तलव[2] करते थे हम ।
अव जो नफरत[3] हमने की, वह वेकरार[4] आने को है ॥

५. दुनिया है वह सैय्याद[5] कि सव दाम[6] मे इसके ।
आ जाते है, लेकिन कोई दाना[7] नही आता ॥

६ हज़ारो ही मसाइव[8] झेलकर पाई है यह नेमत[9] ।
न था कुछ सहल[10] दुनिया से मेरा वेजार[11] हो जाना ॥

७ दुनिया का तरद्दुद[12] तव तक था,
जव तक हम उसके तालिव[13] थे ।
फेरी जो नज़र गम[14] हो गए कम,
रगवत[15] न रही दुनिया न रही ॥

---

१. पुरुष, वीर २ चाह, इच्छा ३. घृणा ४ वेचैन ५. शिकारी ६ जाल ७ होशियार, बुद्धिमान ८ विपत्तियां ९ वरदान १० सरल ११ दुःखी, बेचैन १२ दुःख १३ इच्छुक १४. दुःख १५ आसक्ति ।

८. सच पूछिये तो राहत[1] ही मिली दुनिया से जुदा[2] हो जाने मे।
थोडी-सी उदासी[3] हो भी तो हो आफत[4] तो मगर बरपा[5] न रही।
९. लज्जते-दुनिया[6] जो सच पूछो उसी को मिल गई।
जिसने यह समझा कि दुनिया का मजा[7] कुछ भी नही॥
१०. वह इसका राज़[8] समझा, वह इसका पेच[9] समझा।
दुनिया मे रहके जिसने दुनियाँ को हेच[10] समझा॥
११. नही इक मर्द[11] को दुनिया से मतलब[12]।
मरें नामर्द[13] इस ज़न[14] पर हजारो॥
१२. लज्जत[15] को तर्क[16] कर तो हो दुनिया का रज दूर।
परहेज[17] भी दवा है जो बीमार ने किया॥

—आतिश

१३. पाँव आराम से फैलाये है उसने अपने।
हाथ दुनियाँ से 'जफर' जिसने यहाँ खीच लिया॥

—जफर

१४. तर्के-दुनियाँ से हुई जमीयते-खातिर[18] नसीब[19]।
हाल मेरा गो कि जाहिर मे परेशाँ[20] हो गया॥
१५. खुदा के वास्ते दुनियाए-दूँ से[21] मुँह जो मोडे हैं।
वही है मुस्तनद[22] इन्सान, मगर अफसोस थोडे हैं॥
१६. जाहिदा[23] क्यो कर करूँ मैं तर्क दुनिया, यह वह है।
सैर को आये थे आदम[24] बागे-रिजवाँ[25] छोडकर॥

—नासिख

---

१ आराम, सुख २ अलग ३ परेशानी ४ मुसीबत, ५. व्याप्त, छाई हुई, हावी ६ ससार का सुख, ७ स्वाद, आनन्द ८ भेद, रहस्य ९ टेढापन, १० निम्न, हेय ११ पुरुष १२ प्रयोजन १३ नपुंसक, कायर १४ औरत १५ दुनियावी सुख का स्वाद १६ त्याग १७ पथ्य १८. आत्म-सन्तोष १९. प्राप्त २०. उदासीन, कष्टप्रद २१ पापमय ससार से २२. विश्वस्त, प्रामाणिक २३. जितेन्द्रिय, सयमी २४ हजरत आदम, जो सबसे पहले पुरुष थे, मूल पुरुष २५ स्वर्ग, बहिश्त।

१७ छोड़ दे दुनिया को कोई जो बज़ेरे-आसमाँ[1]।
हिम्मते-हातिम[2] का पहुँचे उसके कब्र पासंग दस्त[3]?

—सौदा

१८ रगे-दुनिया देखकर बेचारा 'अकबर' डर गया।
पन्दे-वाइज़[4] मान ली, मरने से पहले मर गया॥

—अकबर

१९ दुनिया के खराबे[5] मे न घर जिसने बनाया।
जन्नत[6] मे निकलेगा जवाब उसके मकाँ का॥

—आतिश

२०. आराम का तालिब[7] है तो लाज़िम[8] है सफर कर।
है आक़िबतअन्देश[9] तो दुनिया से गुज़र भी॥

२१ नजात[10] होनी नही मक्रे-ज़ाल[11] दुनिया से।
यह लिपटी जाती है, दामनकशाहज़ार[12] हूँ मैं॥

—ज़रार

२२ दुनिया भी दीन है जो हो लज्ज़त बशर[13] से तर्क।
क्यो हो हराम[14] नशा न हो जिस शराब मे॥

२३ आसाँ[15] नही है दाम[16] से दुनिया के छूटना।
यह इक बडे हकीम का बाधा तिलिस्म[17] है॥

—अमीर

२४ दौलते-दुनिया से 'आतिश' हमने जब फेरी निगाह।
जिस तरफ आँख उठ गई तोदे[18] लगे अक्सीर[19] के॥

—साबिस

---

१ आकाश के नीचे २ हातिमताई के साहस का ३ हाथ ४ उपदेशक की शिक्षा ५ निर्जन और अन्नजल-रहित स्थान मे, सुनसान, खण्डहर में ६ स्वर्ग, सुरलोक ७ इच्छुक ८ आवश्यक, जरूरी ९ हर काम को उसका परिणाम सोचकर करने वाला, परिणामदर्शी, १० मुक्ति, छुटकारा ११. मायावी, छलपूर्ण, १२ पल्ला बचाता हुआ १३ मनुष्य १४ अविहित, निषिद्ध १५ सरल, सुकर १६ जाल १७ जादू १८ ढेर १९ कीमिया, रसायन के।

२५. दुनिया मे हम रहे तो कई दिन, पर इस तरह ।
दुश्मन के घर मे जैसे कोई महमाँ रहे ॥

—क़ायम

२६. मरना कबूल, पर मुझे दुनिया नही क़बूल ।
ग़मज़[1] उठेगे मुझ से न इस पीर-ज़ाल[2] के ॥

—नासिख़

२७. जो अज़्म[3] सैर-मानी[4] है सुबक[5] हो बारे-दुनिया[6] से ।
कि सरपर बोझ होने से सफर मुश्किल से होता है ॥

—सहर

२८. मरने की दुआएँ क्यो मागूँ, जीने की तमन्ना कौन करे ?
यह दुनिया हो या वोह दुनिया, अब ख़्वाहिशे-दुनिया[7] कौन करे ?

२९. दुनिया ने हमे छोडा 'जज्बी' हम छोड न दे क्यो दुनिया को ?
दुनिया को समझकर बैठे है, अब दुनिया-दुनिया कौन करे ?

—जज्बी

३०. रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहा कोई न हो ।
हमसख़ुन[8] कोई न हो, और हमज़बा[9] कोई न हो ॥
बे दरोदीवार-सा इक घर बनाना चाहिए ।
कोई हमसाया[10] न हो और पासबाँ[11] कोई न हो ॥
पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार[12] ।
और अगर मर जाइए तो नौहाख़्वा[13] कोई न हो ॥

—गालिब

३१. दुनिया की महफिलो[14] मे उकता गया हूँ या रब[15] !
क्या लुत्फ़ अजुमनका[16] जब दिल ही बुझ गया हो ॥

---

१ दुःख २ वृद्धा स्त्री के ३ सकल्प ४ पर्यटन का आशय, ५ मुक्त, रहित, ६ ससार के भार से ७ ससार की इच्छा ८ अपने जैसा बोल कहने वाला, बोलने वाला ९ अपनी जैसी भाषा बोलने वाला १० पडोसी ११ निरीक्षक, निगरां १२ परिचर्या करने वाला, १३ रोने वाला १४ गोष्ठियो से, जलसो से १५. हे प्रभो ! १६. सभा का ।

३२. शोरिश[1] से भागता हूँ, दिल ढूँढता है मेरा।
ऐसा सकूत[2] जिस पर तकरीर[3] भी फिदा हो॥

३३. मरता हूँ खामशी[4] पर, यह आरजू है मेरी।
दामन मे कोह[5] के इक छोटा-सा झोंपड़ा हो॥

—इकबाल

३४. नादान[6] से नही कहते, कहते हैं दाना[7] से।
दाना है वह जो अपना फेरे दिल दुनिया से॥

—ज़फर

३५ दिल पाक न हो जब तक दुनिया की तमन्ना से।
क्या काम निकलता है तसबीह[8]-ओ-मुसल्लाह[9] से॥

३६. अरे न आओ दुनिए-दूँ[10] के धोखे मे।
सराव[11] है यह, जिसे मौजे-आब[12] समझते है॥

—अनीस

३७. गोता[13] तो लगाये ज़मजम[14] मे,
और गर्क[15] है मुहब्बे-दुनिया[16] मे।
पानी ने बदन को पाक किया,
अब बातिन[17] जाहिर[18] कौन करे ?

—जाकिर

३८. हकीकत[19] मे जगह दुनिया नही है दिल लगाने की।
वफा करती नही बेवफा सारे जमाने की॥

---

१. उपद्रव, दगा, फ़साद २ शान्ति ३ वक्तृत्व ४. मौन ५ पर्वत ६. अनाड़ी, मूर्ख, नासमझ ७ बुद्धिमान, होशियार समझदार ८. जपमाला ९ नमाज पढने की चटाई या दरी १० पापमय ससार के ११. मृगतृष्णा १२ पानी की लहर १३ डुबकी १४ मक्के का एक कुआँ, जिसका पानी बड़ा पवित्र समझा जाता है १५ डूबा हुआ १६ ससार के प्रेम में १७. अन्तरंग मन, हृदय १८. उज्ज्वल १९ वस्तुत ।

३९. ऐ जौक[1] गर है होश तो दुनिया से दूर भाग।
इस मैकदे[1] मे काम नही होशियार का॥

४०. कह रहा है आसमा यह सब समा कुछ भी नही।
पीस दूँगा एक गर्दिश[2] मे जहाँ कुछ भी नही॥

—ज़ौक़

४१. घर कौन-सा बसा कि जो वीरा[3] न हो गया।
गुल कौन-सा हुआ कि परेशाँ[4] न हो गया॥

—कबीर



१ मदिरालय २ चक्कर में ३ उजाड, सुनसान ४ मुरझाया हुआ, नष्ट ।

एक आलम है नज़र में, एक दुनिया दिल में है



१. किस को देखे किस तरह और किसको चाहे किस तरह ?
एक आलम[1] है नजर मे, एक दुनिया दिल मे है ॥

—इक़बाल

२ मजिले-हस्ती[2] मे दुश्मन को भी अपना दोस्त कह।
रात हो जावे तो दिखलावे तुझे रहजन[3] चराग़[4] ॥

—ग़ालिब

३. वोह आदमी कहाँ है, वोह इन्सान है कहा ?
जो दोस्त का हो दोस्त, उदू का[5] उदू न हो ॥

४. अपने दिल मे दोनो रखते हैं वरावर मुझको याद।
हो सके तो दोस्त-दुश्मन को वरावर चाहिए ॥

५. दुश्मन से भी अदावत[6] नही है फकीर को।
ऐ दोस्त ! याँ वदी[7] का एवज[8] भी निकोई[9] है ॥

६. वोह कौन लोग है, वेगाने[10] है जो अपनो से।
हमे तो गैर[11] से भी वूए-आशना[12] आई ॥

—रिन्द

७ वह तर्जे-जिन्दगी[13] हो कि मरने के वाद भी।
दुनिया के लव[14] पै तेरे लिए वाह-वाह[15] रहे ॥

---

१ ससार २ जीवन-यात्रा मे ३ लुटेरा ४ दीपक ५ शत्रु ६. शत्रुता, दुश्मनी ७ वुराई ८ वदला ९ अच्छाई, भलाई १०. पराये, अनजान, अपरिचित ११ पराये, दूसरे, अपरिचित १२. मित्र की गन्ध, परिचित की गन्ध १३ जीवन-पद्धति, जीवन का ढंग १४ होठ १५ धन्य धन्य, शावाशी ।

८. शाहराहे-हस्तिए-मौहूम[1] मे वह चाल चल।
अपनी आँखो को बिछावे दोस्त-दुश्मन ज़ेरे-पा[2] ॥
९. दुश्मन भी हो तो दोस्ती से पेश आए है।
बेगानगी[3] से अपना नही आशना[4] मिजाज[5] ॥

—आतिश

१०. बफा-सरिश्त[6] हूँ, शेवा[7] है दोस्ती मेरा।
न की वह बात, जो दुश्मन को नागवार[8] हुई ॥

—दुर

११. सफ्हए-हस्ती[9] मे सूरत है नही अगयार[10] की।
हर मुरक्का[11] मे है तसवीरे बस अपने यार की ॥
१२ भरी है मेरे जर्फे-दिल[12] मे, यॉ तक दोस्त की उल्फत[13]।
कि बुग्जे-गैर[14] का जिसमे, गुजर मुश्किल से होता है ॥

—सहर

१३. क्या जाने कैसी होती है, 'नासिख' उदू[15] की शक्ल ?
याँ कोई जुज-हबीब[16] हजूरे-नजर[17] नही ॥

—नासिख

१४ वेगाना गर नजर पडे, तो आशना को देख।
बन्दा गर आए सामने तो भी खुदा को देख ॥

—दर्द

१५. मुहब्बत-पेशा[18] है, दिल मे कदूरत[19] हम नही रखते।
सफाई है हमारी आईना हर दोस्त-दुश्मन पर ॥

---

१ भ्रमात्मक अथवा मायावी जीवन के राजमार्ग मे २ पैर के नीचे ३ परायेपन ४ परिचित ५ स्वभाव ६ प्रतिज्ञा पालन करने वाला, वफा करने वाला ७ ढग, तरीका, परिपाटी, पद्धति ८ वेमजा, प्रतिकूल, नापसन्द जो अच्छी न लगे ९ जीवन मे १० परायो की, अपरिचितो की ११ तसवीरो का, एलवम, चित्रावली १२ मन के पात्र मे १३ प्रेम, स्नेह १४ पर के द्वेप का १५ शत्रु की १६ मित्र के अतिरिक्त १७ दृष्टि के सामने उपस्थित या पस्तुत १८ प्रेम के व्यापारी १९. जलन, द्वेप।

१६. अहले-इस्लाम[1] तो कहते हैं, मुसलमान है यह।
हिन्दू कहते हैं, नही कोई यह हिन्दू होगा॥
—फरेब

१७. मंज़ूर[2] है कि रंज[3] मुझे हो, जहां को ऐश[4]।
तोडू एवज़[5] मे फूल के काँटा गुलाव का॥
—वजीर

१८. हर्गिज़ मुझे नजर नही आता वजूदे-ग़ैर[6]।
आलम[7] तमाम[8] एक वदन[9] ही मे दीदा[10] हूँ॥

१६ सुल्ह-कुल[11] मश्रब-ओ-मजहव[12] है तो क्या दुश्मन-ओ-दोस्त ?
दिल मे वोह फूल हुए, आँख मे जो खार[13] हुए॥
—अनवर

२० दोस्त तो दोस्त है, दुश्मन से भी है रव्त[14] मुझे।
दिल मे हर शख्स के रहता हूँ तमन्ना होकर॥
—साविक

२१. हम न है दोस्त किसी के, न किसी के दुश्मन।
यार से हमको लगावट है न अगयार से लाग॥
—अमीर

२२. न तो दुश्मन कोई मेरा, न कोई मेरा दोस्त।
वारे-खातिर[15] न किसी का, न गुवारे-दामन[16]॥

२३. दोस्त-दुश्मन-यार रखता, खातिर अपनी क्या अजीज ?
ऐव[17] उल्फत के सिवा, हममे हुनर[18] कोई न था॥
—आतिश

---

१ मुसलमान २. स्वीकार ३. दु ख, पीडा ४. सुख, आराम, चैन ५ वदले मे ६ पराये का अस्तित्व ७ ससार ८. समस्त, सारा ९. देह, शरीर, १० आंख, आख का डेला ११ जो सबके साथ दोस्ती रखे १२ धर्म और मत १३ काटे १४ मैत्री, मेल-जोल १५. तवीअत का वोझ, ऐसी वात या ऐसा काम जिसे मन न चाहे १६. आचल की धूल १७ दुर्गुण, दोप १८ गुण, खूवी।

२४ गुंजाइशे-अदावते-अगयार[1] इक तरफ ।
यॉं दिल मे जोफ[2] से खलिशे-खार[3] भी नही ॥

—गालिब

२५ इक नया एहसास इस सीने मे अब पाता हूँ मैं ।
दुश्मनी करते है दुश्मन और शरमाता हूँ मै ॥
बेकसो-मजबूर इन्सा को दुआ देता हूँ मैं ।
वार[4] करता है कोई तो मुस्करा देता हूँ मैं ॥

—जोश

२६. करूँ मैं दुश्मनी किससे, नही दुश्मन कोई मेरा ।
मुहब्बत ने जगह दिल मे नही छोडी अदावत[5] की ॥
२७ खिदमत करूँ मै सबकी खिदमत-गुजार[6] बनकर ।
दुश्मन के भी न खटकूँ, आँखो मे खार[7] बनकर ॥
२८. इलाही करके तय किन रफअतो[8] को मैं कहाँ पहुँचा ?
कि यकसॉं[9] पड रही हैं अब निगाहे दोस्त-दुश्मन पर ॥

—हबीब

२९ न मुझको फूलो से दुश्मनी है, न मुझको खारो से है अदावत[10] ।
जो इख्तिलाफे-चमन[11] मिटा दे, मै उन बहारो का साथ दूँगा ॥

—प्रदीब



१ दूसरो की शत्रुता का अवकाश २ दुर्बलता, कमजोरी, दीनता ३. काटे की चुभन ४. आक्रमण, हमला ५ शत्रुता, दुश्मनी ६ दिल से सेवा करने वाला, सेवक, फर्माबरदार ७ काटा ८ ऊँचाइयो को ९ समान, एक जैसी १०, विरोध ११ उद्यान का मतभेद, वैमनस्य, फूट ।

अहिंसा का मतलब वही जानते है।

◎

१. अहिंसा का मतलब वही जानते है।
जो इन्सां को अपना खुदा मानते है॥

२ मत जुल्म[1] करो, मत जुल्म सहो, इसी का नाम अहिंसा है।
बुजदिल[2] है जो, बेजान[3] है जो, उनसे बदनाम अहिंसा है॥

३. अहिंसा वह धर्म है कि जिस पै कुदरत नाज[4] करती है।
सदाकत[5] नाज करती है, नदामत[6] नाज करती है॥
उसूलो[7] पर इसी के शाने-वहदत[8] नाज करती है।
हकीकत मे अगर पूछो, हकीकत[9] नाज करती है॥

४ खंजर[10] चले किसी पै, तड़पते है हम 'अमीर।'
सारे जहाँ का दर्द, हमारे जिगर मे है॥

—अमीर

५ किया तसलीम[11] यह मैंने, अहिंसा नाम है मेरा।
सितम[12] सह लेना, गम खाना, अगर्चे[13] काम है मेरा॥
मगर जब भी कभी मैं सूरते-सादिक पै[14] आती हूँ।
नजर भर मे[15] कयामत[16] के नये जौहर[17] दिखाती हूँ॥

---

१ अत्याचार, अन्याय २ कायर, डरपोक ३. निष्प्राण, शक्तिहीन ४. गर्व ५ यथार्थता, सत्यता, सच्चाई ६ लज्जा, हया ७ सिद्धान्तो, नियमो ८ एकता का वैभव, एकत्व अथवा अद्वैत की श्रेष्ठता ९ सच्चाई, वास्तविकता १० तलवार ११ मानना, स्वीकार, १२ अत्याचार १३ यद्यपि १४ वास्तविक रूप में, सच्चे ढग मे १५ क्षण भर मे, पलक मारते १६. प्रलय के १७ गुण, दक्षता।

मुझे बुज़दिल समझना, बुजदिली की इक अलामत[1] है।
हकीकत मे मेरा पैगाम, पैगामे-बगावत[2] है॥

६ दर हकीक़त[3] दिल नही, जिसमे न हो एहसासे-दर्द[4]॥
दीदए-बेनूर[5] है वह चश्म[6], जो पुरनम[7] नही॥

७. कोई रोता नजर आये तो आँसू पोछ दामन[8] से।
मदद बेकस[9] की कर दामो-दिरम[10] से, जान से, दिल से॥

८. अगर तेरे दिल मे दया ही नही।
समझ ले तुझे दिल मिला ही नही॥

९ हर दुखी को आँसुओ की बूँद दो।
इस खजाने मे न आयेगी कमी॥

१० मसीहो-खिज्र[11] की उम्रो से उसका हर नफस[12] बेहतर[13]।
वह इन्सॉं, जो मुसीबत मे, किसी इन्साँ के काम आये॥

—हफीज

११ वह आँख, आँख नही, वह दिल, दिल नही।
जिसे किसी की मुसीबत नज़र नही आती॥

१२ मुसीबत जिसको पेश आये, तो उसका आश्ना[14] तू हो।
कोई मातमजदा[15] पाये तो उसका गमरुबा[16] तू हो॥
कोई हो राह-गुमकरदा[17] तो उसका रहनुमा[18] तू हो।
गरज़[19] हर जख्म[20] का मरहम हो, हर दुख का दवा तू हो॥

—अहमदी

---

१. लक्षण, चिन्ह २ क्रान्ति का सन्देश ३ वस्तुत ४ दु खानुभूति ५. अन्धी आख ६ आख ७. आसुओ से भीगी हुई ८ आचल ९ दीन-हीन, गरीब, असहाय १० रुपये-पैसे से ११ मार्ग दर्शक देवता की १२ सास १३. श्रेष्ठ, अच्छा १४ मित्र, साथी १५ शोक-ग्रस्त, दु खी १६ दु.ख मिटाने वाला १७ भूला-भटका हुआ, पथ-भ्रष्ट १८ मार्ग दर्शक १९ किंबहुना २०. घाव।

१३. मत सता जालिम किसी को, मत किसी की आह ले।
दिल के दुख जाने से नादाँ! अर्श[1] भी हिल जायगा॥

१४ वता अय खाक के पुतले! कि दुनिया मे किया क्या है?
गरज जिसके लिए आया, उसे पूरा किया क्या है?
दुआएँ ली, कभी ठडा किया दिल दर्द-मन्दो[2] का।
वुरे हालो मे तू शामिल हुआ मोहताज वन्दो का?
शरीके-दर्दो-ग़म[3] होकर किसी का दुख वटाया है?
मुसीवत मे किसी आफतजदा के[4] काम आया है?
मिसाले-वुलवुला[5] है जिन्दगी दुनियाए-फानी में।
जो तुझसे हो सके करले भलाई ज़िन्दगानी मे॥

१५. तनपरस्ती पै[6] जो हो सर्फ,[7] वह दौलत क्या है?
ग़ैर को[8] जिससे न हो राहत,[9] वह राहत[10] क्या है?

१६ मगर मेरा जौके-परस्तिश[11] जुदा[12] है।
मैं सागर' हूँ भाई का अपने पुजारी॥

—सागर निजामी

१७. अपनी हस्ती[13] का सफीना[14] सूए[15]—तूफाँ करले।
हम मुहव्वत को शरीके—गमे-इन्साँ[16] करले॥

—मजाज़

१८ ख़ुदा के वन्दे[17] तो है हज़ारो, वनो मे फिरते है मारे-मारे।
मैं उसका वन्दा वनूँगा जिसको, खुदा के वन्दो से प्यार होगा॥

—इक़वाल

---

१. आकाश २ दुखियो का ३ दुःख-पीडा मे सम्मिलित ४. विपत्ति-ग्रस्त, पीडित ५ वुलवुले की तरह ६ शरीर-पूजा पर, अपने शारीरिक सुख पर ७ व्यय, खर्च ८ दूसरे को ९ सुख, शान्ति, आराम १० सुख ११. उपासना की रुचि, आराधना का ढग १२. पृथक्, अलग, दूसरा १३, जीवन की १४ नाव १५ तूफान की ओर १६ मनुष्य के दुख मे सम्मिलित १७. सेवक।

१९ किसी दुनिया के बन्दे को, अगर शौके-शहादत[1] हो।
तो उसका काम दुनिया मे, सदा इन्सॉं की खिदमत[2] हो ॥
२०. यूँ ही काम दुनिया का चलता रहेगा।
दिये-से-दिया यूँ ही जलता रहेगा ॥
२१. मर्द हो तो किसी के काम आओ।
वर्ना खाओ, पियो, चले जाओ ॥
२२. जागने वालो! गाफिलो को जगाओ।
तैरने वालो! डूबतो को तिराओ ॥
तुम अगर हाथ-पाँव रखते हो।
लंगडे-लूलो को कुछ सहारा दे जाओ ॥

—हाली

२३ पढ-पढके घिसा देता है तस्बीह[3] के दाने।
इक दानए-खैरात[4] मे सौ-सौ है वहाने।
दरगाहे-खुदा[5] मे तो सदा हाथ उठाये।
साइल[6] की अजाबत[7] पै जबाँ तक न हिलाये ॥
दामन[8] तो गो वक्ते-दुआ[9] अश्क[10] से तर हो।
मुहताज[11] की जारी[12] का मगर कुछ न असर हो ॥
ऐमाल[13] का यह हाल है फिर ख्वाहिशे-फिरदौस[14]।
अफ़सोस है, अफ़सोस है, अफसोस है, अफसोस ॥
२४ ईमा[15] गलत, उसूल[16] गलत, इद्दुआ[17] गलत।
इन्सॉं की दिलदिही,[18] अगर इन्सॉं न कर सके ॥

—असर लखनवी

---

१ बलिदान होने की लगन २. सेवा ३ माला ४ दान के नाम पर एक अन्न का दाना देने मे ५ प्रभु के दरबार मे ६ प्रार्थी, भिक्षुक, सवाल करने वाला ७ अभ्यर्थना, याचना ८ आंचल ९ प्रार्थना या स्तुति के समय १० आसू ११ असहाय, निराश्रय १२ विलाप, रोना १३. कर्म, कृत्य, आचरण, व्यवहार-वर्ताव १४ स्वर्ग की इच्छा १५ धर्म १६ सिद्धान्त, नियम १७. दावा १८. सान्त्वना, ढारस, दिलासा, सहायता, सहानुभूति।

२५ मुकर्रम[1] जिन्म[2] है, यां दस्तगीरी[3] नीमजानो की[4] ।
खरीदा कर मिले जितनी दुआए नातुवानो[5] की ॥

२६, वह आदमी ही क्या है, जो दर्द-आशना न हो ।
पत्थर से कम है, दिल मे शरर गर निहाँ नही ॥

—जकी

२७ दर्दे-दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को ।
वर्ना ताअ़त[6] के लिये, कुछ कम न थे करों-वयाँ[7] ॥

—दर्द

२८ यही है इवादत[8] यही दीनो-ईमाँ ।
कि काम आये दुनियाँ मे इन्साँ के इन्साँ ॥

२९ किसी का रंज देखूँ यह नही होगा मेरे दिल से ।
नजर सैयाद[9] की झपके, तो कुछ कह दूँ अनादिल[10] से ॥

—साकिब

३०. इज्जत उसी की अह्ले-नजर की नजर मे है ।
सव कुछ वगर मे है, जो मुहव्बत वगर मे है ॥

—अमीर

३१ किसी की आँख तर देखूँ तो अश्क[11] आँखो से जारी हो ।
किसी की वेकरारी[12] से, मुझे भी वेकरारी हो ॥
किसी की जान से बढकर न अपनी जान प्यारी हो ।
मेरी हस्ती[13] का मरकज[14] और मकसद[15] इन्किसारी[16] हो ॥

---

१ स्थायी २ वस्तु ३. सहायता, मदद ४. आसन्न मृत्यु, मृतप्राय, निराश्रय, अत्यन्त पीडित ५ निर्वलो, शक्तिहीनो ६. ईश्वर-आराधना के लिए, प्रभु की उपासना के लिए ७ देवता, फरिश्ते ८ भक्ति, उपासना ९ शिकारी १० वुलवुल ११ आसू १२ व्याकुलता, वेचैनी १३. जीवन १४. केन्द्र, परिधि १५ उद्देश्य, लक्ष्य १६ विनय, नम्रता, सेवा-भाव ।

दिले-दर्द आश्ना[1] को भी अता[2] हो सोजे-परवाना[3]।
पतगे की तरह आये मुझे हँस-हँस के मर जाना॥

३२ दर्द जिस दिल मे हो, उस दिल की दवा बन जाऊँ।
दुख मे हिलते हुए लब[4] की दुआ बन जाऊँ॥

३३ मुबारक हैं, जो दिल मे दूसरो का दर्द रखते है।
जो आँसू आँख मे और लबपै आहे-सर्द[5] रखते हैं॥

३४ जिन सवेरो से मिले, सुबहे-मुहब्बत[6] का पयाम[7]।
उन सवेरो को किसी के खूँ से[8] क्यो नहलाइए?

—मुनव्वर लखनवी

३५. दिखा सकेगी न हरगिज जहा को अम्न की[9] राह।
सितमगरी[10] की वोह मशअल[11] जो दूद[12] से है सियाह[13]॥

—मुल्ला

३६ कही बिजली गिरे वह अपना गुलशन हो कि औरो का।
मुझे अपनी ही शाखे-आशियाँ[14] मालूम होती है॥

—सरदार जाफरी

३७ तेरे अत्वार[15] की तरह जाहिद!
क्या भरोसा तेरी बहिश्तो का?
मुझको इन्सान से मुहब्बत है,
मैं नही मौतकिद[16] फिरिश्तो का॥

—शाद

---

१ सहानुभूतिकर्ता हृदय, हमदर्द दिल २ प्राप्त ३. पतगे की जलन ४. होठ ५ ठडी आह ६ प्रेमरूपी प्रभात ७. सन्देश ८ रक्त से ९ शान्ति की १० अत्याचार करने की ११ मशाल १२ धूएँ से १३. काली १४ घोसले की टहनी १५ चाल-ढाल की १६ विश्वासी, श्रद्धालु।

५१. ख़िरमने-दिल[1] जला रहा हूँ मैं।
नक्शे-हस्ती[2] मिटा रहा हूँ मैं॥
तू न मगमूम[3] हो, मगर ऐ दोस्त!
तेरी ही सिम्त[4] आ रहा हूँ मैं॥
५२ दूर इन्सान के सर से यह मुसीबत कर दो।
आग दोजख़ की बुझा दो उसे जन्नत कर दो॥

—मजाज़

५३. ज़ीस्त मे[5] एहतयाज के लमहे,[6] लोग कहते है आम आते हैं।
मुफलिसो के दिलो को मत ठुकरा, यह पियाले भी काम आते है॥
५४ कसरते-गम मे[7] लुत्फे-गमख्वारी,[8]
सागरे-जमका[9] काम देता है।
वक्त पर एक लफ्ज़े-हमदर्दी,[10]
इब्ने-मरियम[11] का काम देता है॥

—अदम

५५ गैर के दर्द पै भी अश्क-वदामाँ[12] होना।
यही मैराजे-वशर[13] है, यही इन्साँ होना॥
५६. तगद्दुद को तगद्दुद से[14] दवाले यह तो मुमकिन[15] है।
मगर शोले को[16] शोले से बुझाया जा नही सकता॥
५७ इसी का नाम जीना है, जिगर ख़ूँ हो तो हो जाये।
न क़ूशे-दहर मे[17] इक ख़ास अपना रग भरता जा॥

---

१ मनरूपी खलिहान, २ अपना अस्तित्व ३ सन्तप्त, दु:खी ४. ओर, तरफ ५. जिन्दगी मे, ६ आवश्यकता के अवसर ७ दु:खो की अधिकता मे ८ दु:ख सहन करने का स्वभाव या आनन्द ९ वह प्याला जिसमे जमशेद वादशाह विश्व की झलक देखा करता था १०. सहानुभूति का शब्द ११ ईसामसीह, जो दीन-दुखियो के पिता कहलाते थे १२ रोना १३ मनुष्य जीवन का आदर्श १४ हिंसा मे, दवाव से १५ सम्भव १६ आग को, चिनगारी को १७ ससार के मानचित्र मे।

५८. मरीजे-गमको[1] तसल्लियो से
कही सिवा[2] दे रहा है तसकी।
वोह इक चमकता हुआ-सा आँसू,
जो दीदए चारासाज मे[3] है॥

५९. जब कभी अम्नकी[4] इन्साँ ने कसम खाई है।
लबे-इब्लीस पॅ[5] हल्की-सी हँसी आई है॥

—मुल्ला

३०. मेरे नग्मोका[6] यह हासिल[7]।
दुनियाँ को सीने से लगा ले॥

—फिराक गोरखपुरी

६१. किसी का जख्म[8] हो, मेरा ही वह बने नासूर।
किसी का चाक[9] हो, मेरा ही चाक कहलाये॥

—मुनव्वर लखनवी

६२ अहिंसा से है ऐ गाफिल! कयामे-आलमे-इमकाँ[10]।
जो यह दुनिया से उट्ठेगी तो दुनिया भी नही होगी॥

६३. वह की खलूसकी[11] तौहीन[12] अहले-दुनिया[13] ने।
जबाँ पै[14] लफ्ज़ मुहब्बत[15] गराँ[16] गुजरता है॥

—निहाल सेवहारवी

६४ ख़ुशी की मुआरिफत[17] और गम की आगही[18] न मिली।
जिसे जहाँ मे मुहब्बत की जिन्दगी न मिली॥

---

१. दु खी-दर्दी को, २ अधिक ३ चिकित्सक की आँख मे ४ शान्ति की ५. शैतान के होटो पर ६ गीतो का ७ निष्कर्ष, नतीजा, तात्पर्य ८ घाव ९ फटन, दरार, विदीर्ण १० ससार का अस्तित्व स्थिर है ११ प्रेम की, सद्व्यवहार तथा सदाचार की १२ अपमान १३ दुनिया के लोगो ने १४ जिह्वा पर १५. प्रेम का शब्द १६ भारी, कठिन १७ परख १८ जानकारी।

३८ वता दो आविदाने-वे-अमल[1] को,
खुदा उकता चुका है वन्दगी से।
खुदा से क्या मुहब्बत कर सकेगा,
जिसे नफरत है उसके आदमी से॥

—नरेशकुमार शाद

३९ ओ वेरहम मुसाफिर हँसकर साहिल की तौहीन[2] न कर।
हमने अपनी नाव डुवोकर, तुझको पार लगाया है॥

४० जो पार उतारे औरो को, उसकी भी नाँव उतरनी है।
जो ग़र्क़ करे[3] फिर उसकी भी यहाँ डुवको-डुवको करती है॥

४१ मुब्तिलाए-दर्द[4] होने की यह लज़्ज़त[5] देखिए।
किस्स-ए-गम[6] हो किसी का, दिल मेरा धक्-धक् करे॥

—कतीलशिफाई

४२. तुझको जो .खुदा से उल्फत है,
उसके वन्दो से उल्फत कर।
क्या रक्खा मन्दिर-मस्जिद मे,
कल्वे-इन्साँ[7] की जियारत[8] कर॥

४३., अपना दर्दे-दिल समझने की यहाँ फुर्सत किसे ?
हम तो औरो का तडपना देखकर तडपा किये॥

४४ किसी को हम न रौदेंगे अगर राहे-तरक्की मे[9]।
तो हर इक खाक के ज़र्रे को दामनगीर[10] देखेंगे॥

४५ जीने का लुत्फ सारा उल्फत की याद से है।
पहले जो दर्दे-दिल था, अव वह सकूने-जा[11] है॥

---

१ चरित्रहीन भक्त को २ अपमान ३ डुबोए ४ दुःख मे लीन अथवा मगन ५ मजा, आनन्द, स्वाद ६ दुःख की कथा या कहानी ७. मनुष्य के मन की ८ तीर्थ यात्रा ९ उन्नति अथवा विकास के मार्ग मे १० दामन पकडने वाला, आचल पकड कर रोकने वाला ११. मन की शान्ति।

४६ दिल है इक दौलत, मगर दर्द-आश्ना[1] होने के बाद ।
अश्क[2] मोती है मगर ग़म की जिला[3] होने के बाद ॥

—मुल्ला

४७ परिस्तारियाँ[4] है जहाँ जुल्मतो की[5],
वहाँ नूरे-शम्सो-क़मर[6] बेचता हूँ ।
जहाँ दर्दे-दिल का मुखालिफ[7] है आलम[8],
वहाँ दर्दे-दिल का असर बेचता हूँ ॥

—जोश

४८. ऐ ख़ुदा ! तुझको पूजने वाले,
तग करते है तेरे बन्दो को[9] ।
बागे-जन्नत के सब्ज पेडो से,
बाँध अपने नियाजमन्दो को[10] ॥

४६. ऐ गरीबो को रौंदने वालो !
आदमी सब्जा-ओ-गयाह[11] नही ॥
यह फकीराने-राहे-उफतादा[12],
दर्से-इबरत[13] है फर्शे-राह[14] नही ॥

—अदम

५०. कभी वोह दिन थे अपने दिल को हम अपना न कहते थे ।
मगर अब हर बशर के दिल को अपना दिल समझते है ॥

—जगन्नाथ आज़ाद

---

१ हमदर्द, जो किसी के दु ख-दर्द को जानता हो, दुख मे सहायता देने वाला २ आँसू ३. रोशनी, ज्योति ४ सरक्षण ५ अधेरो को ६ चन्द्र सूर्य का प्रकाश ७ विरोधी ८, ससार ९ सेवको को १० श्रद्धालुओ को ११. घास-फूँस १२. रास्ते पर पडे रहने वाले दुखी, मँगते १३ नसीहत के सवक हैं १४ रास्ते के फर्श ।

६५. काँटे चुनने से क्या हासिल, इकबार मज़ाके-सब्ज-ओ-गुल[1] ।
जिसमें काँटे जम ही न सके, वोह सीरते-आबो-गुल[2] कर दे ॥
—मुल्ला

६६. .खुद को पहचान सकी दु:ख-भरी दुनिया न अभी ।
गमे-इन्सॉं[3] को न आया गमे-इन्सॉं होना ॥

६७ यह शोला[4] मुहब्बत का, यह आँच मुहब्बत की ।
इन्सान की मिट्टी को अक्सीर[5] बनाये है ॥
—फिराक गोरखपुरी

६८ कभी भूलकर न करना किसी से सुलूक[6] ऐसा ।
कि जो तुम से कोई करता, तुम्हे नागवार[7] होता ॥



---

१ फूल-पत्तियो से सुरुचि रखने वाले २. फूलो का स्वभाव ३ मनुष्य के दु:ख को ४ चिनगारी ५. रसायन ६ बर्ताव, व्यवहार, आचरण ७ प्रतिकूल, नापसन्द ।

इन्सान का फ़रिश्तों से रुतबा बढ़ा दिया !



१ क्या शाने- एजदी[1] ने तमाशा दिखा दिया।
इन्सान का फरिश्तो[2] से रुतबा[3] बढा दिया ॥

२ बनाया 'जफर' खालिक[4] ने कब इन्सान से बेहतर[5]।
मलक[6] को, देव को, जिनको[7], परी को, हूरो-गिल्माँ[8] को ॥

—जफर

३ 'अमीर' इसकी है ला-मका[9] तक रसाई[10]।
फरिश्ते से भी कुछ सवा[11] आदमी है ॥

—अमीर

४ यह शरफ[12] कम नही ऐ आदमे-खाकी[13] तेरा।
उसने अपने लिए तामीर किया खानए-दिल[14] ॥

—असर

५ जो फरिश्ते करते है, कर सकता है इन्सान भी।
पर, फरिश्तो से न हो, जो काम है इन्सान का ॥

—जौक

---

१. ईश्वरीय तेज ने २ देवताओ से ३ पद, दर्जा ४. सृष्टिकर्ता, ईश्वर ने ५ उत्तम, अच्छा, श्रेष्ठ ६ फरिश्ते को ७. एक प्राणी, जिसकी उत्पत्ति अग्नि मे मानी जाती है और वह दिखायी नही पडता, भूत को, ८ स्वर्गाङ्गना देवी और स्वर्ग के बालक देवकुमार को ९ ईश्वर १०. पहुँच, प्रवेश ११ अधिक, उच्च १२ श्रेष्ठता, उत्तमता, सम्मान, सत्कार, उत्तुङ्गता १३ मिट्टी के पुतले १४ मन का मन्दिर ।

६. ख़ाक के पुतले ने वोह् वोझ लिया गर्दन पर।
कि समझते थे जिसे अर्श के हामिल[1] भारी ॥

—आतिश

७ बावजूद कि परो-वाल न थे आदम के।
पहुँचा उस जा[2] कि फरिश्तो का भी मक़दूर[3] न था ॥

—मीर दर्द

८ मलक[4] सज्दा[5] करे आदम[6] को, क्या वन्दा-निवाजी[7] है।
दिया वन्दे को अपने उसने खुद आदाव[8] अपना-सा ॥

—जौक़

९ हैं मुश्ते-ख़ाक[9] लेकिन, जो-कुछ हैं 'मीर' हम है।
मक़दूर[10] से जियादा मक़दूर[11] है हमारा ॥

—मीर

१० वशर जो इस तीरे-खाकदाँ[12] मे पडा यह इसकी फिरोतनी[13] है।
वगर्ना कन्दीले-अर्श[14] मे भी इसी के जलवे की रोशनी है ॥

११ पर फरिस्तो के जहाँ जलते थे वाँ बुलवा लिया।
वाह क्या रुतवा[15] दिया खालिक[16] ने आदमजाद को[17] ॥

—वजरार

१२ हुर्मत[18] से मलाइक[19] ने, इसे सजदा किया है।
जिस वक्त कि वह सूरते-इन्सान[20] मे आया ॥

---

१ आकाश को धारण करने वाले २ जगह ३. सामर्थ्य ४. फरिश्ते, देवता ५ सिर झुकाना, नमस्कार करना, मत्था टेकना ६ मनुष्य को ७. मानव-पूजा ८ सम्मान, प्रतिष्ठा ९ मुट्ठी-भर खाक, आदमी १० शक्ति, वल ११ साहस, हिम्मत १२ मृत्युलोक, ससार मे, १३. विनम्रता, विनीतता, खाकसारी वरतना १४ आकाश के कंडील मे १५ महत्ता, श्रेष्ठता, पद, दर्जा १६. सिरजनहार, ईश्वर १७ मनुष्य को १८. प्रतिष्ठा, सम्मान, इज्जत १९ देवतागण, फरिश्ते २० मनुष्य के रूप मे ।

१३ मत सहल हमे जानो, फिरता है फलक[1] बरसो ।
तब खाक के पर्दे से इन्सान निकलते है ॥

—मीर

१४ जमीनो-आसमानो-महरो[2] - मह सब तुझ मे है इन्सॉ ।
नजर कर देख मुश्ते-खाक[3] मे क्या-क्या झमकता है ?
१५ अशूरफ-मखलूक[4] कहलाता न क्योकर आदमी ?
तू खुदा होकर खुदी से शक्ले-इन्सॉ[5] हो गया ॥
१६ मूसा[6] ने कोहे-तूर पै, बाते खुदा से की ।
रुतबा बशर का देखिए, होता है क्या से क्या ?
१७ गर आँख है तो बातिने[7]-इन्साँकी दीद[8] कर ।
क्या-क्या तिलिस्म-ओ-फन[9] है मुश्ते- गुबार[10] मे ॥

—नासिख

१८ और पैराये[11] मे मुमकिन[12] नही .कुदरत का ज़हूर[13] ।
है यकीं[14] मुझको खुदा सूरते-इन्साँ होगा ॥

—सहर

१९. दिया अल्लाह ने ऐसा कमाले-इश्क इन्साँ को ।
फरिश्ता देखकर इन्साने-कामिल[15] हाथ मलता है ॥

—जफर

२० फरिश्ते सजदा करते है, बडी तौकीर[16] है उनकी ।
बढाया क्या खुदा ने मर्तबा औलादे-आदम[17] का ॥

—आबाद

---

१ आकाश २ पृथ्वी, आकाश, सूर्य और चन्द्र ३ मनुष्य मे ४ प्राणियो मे सर्वश्रेष्ठ ५ मनुष्याकृति, मनुष्य के रूप मे ६ एक पैगम्बर, जिन्होने फिरऔन को मारा था ७ मनुष्य के अन्तर का ८ दर्शन ९ जादू और हुनर १० मुट्ठी-भर धूल, मनुष्य ११. वस्त्र, लिबास मे, १२ सम्भव १३ जल्वा, दर्शन, आविर्भाव १४ विश्वास १५ सर्वाङ्गपूर्ण मनुष्य को, १६ प्रतिष्ठा, सम्मान, इज्जत, सत्कार १- मनुष्य का ।

२१ क्या गजब है नही इन्साँ को इनसाँ की कदर।
हर फरिश्ते को यह हसरत[1] है कि इनसाँ होता॥

—हसरत

२२. फरिश्ते से बेहतर हैं इन्सान बनना।
मगर इसमे पडती है मेहनत ज़ियादा[2]॥

—ज़ौक़

२३ जौहर[3] वह कौन-सा है, जो इनसान मे नही।
देकर खुदा ने अक्ल इसे जुज़ो-फनू[4] किया॥

२४. ज़ाहिरा हस्ति-ए-नाचीज[5] बशर है क्या चीज़?
यह वोह कतरा है, जो बढ जाए तो दर्या हो जाए।

२५ फरिश्तो को क्या मात दी आदमी ने।
कयामत का यह मुश्ते-खाक निकला॥

२६ फरिश्ते भी देखे तो खुल जाएँ आँखे।
बशर को वह जलवे दिखाए गए है॥

२७. सुनते है कान रखके, फरिश्ते भी इसकी बात।
कहता है दूर-दूर की इन्साँ कभी-कभी॥

२८ जो खानए-हस्ती[6] मे है, इन्साँ के लिए है।
आरास्ता[7] यह घर इसी महमाँ[8] के लिए है॥

—ज़ौक

२९. ऐ 'दाग़' आदमी की रसाई[9] तो देखना।
सर पर धरे है अर्शने[10] खैर-उल-बशर[11] के पाँव॥

—दाग़

---

१ लालसा, इच्छा, अभिलाषा २. अधिक ३. गुण ४ ज्योतिर्मय, प्रकाशपूर्ण ५ हेच जीवन, क्षुद्र जीवन ६ जीवन रूपी घर, मन-मन्दिर ७, सजा हुआ, सुसज्जित ८ अतिथि ९. पहुँच १०. आकाश ने ११ श्रेष्ठ पुरुष के।

३०. शाने-ख़ालिक[1] है अयाँ,[2] इन्सान की तकरीर[3] मे।
.ख़ुद मुसव्वर[4] बोलता है, पर्दए-तसवीर[5] मे॥
३१. अर्श तक हो नही सकती जो रसाई[6], न सही।
यही इन्सॉ की है मैराज[7] कि इन्सॉ हो जाए॥
३२ जल्वा तो हर इक तरह का, हर शान मे देखा।
जो कुछ कि सुना तुझ मे, सो इन्सान मे देखा॥
३३ इन्सॉ की जात से है .ख़ुदाई के खेल यॉ।
बाजी कहा बिसात पै[8] गर शाह ही नही॥

—दर्द

३४. समझे 'आतिश' न कोई आदमे-खाकी[9] को हकीर[10]।
नही असरार[11] से यह ख़ाक का पुतला ख़ाली॥

—आतिश

३५. मुख़्तार[12] भी मजबूर भी कामो मे बशर है।
इससे यह सजावार,[13] जजा[14] है भी नही भी॥

—अकसर

३६. अपनी सूरत का वह हुआ शैदा[15]।
अपने-आपको इन्सॉ बना देखा॥
३७ फरिश्ते और वोह सजदा करे आदम के पुतले को!
झुकाया नूरियो[16] के सर को भी इस पैकरे-गुल[17] ने॥

—सफ़ी

---

१ ईश्वर की श्रेष्ठता अथवा महत्ता २ प्रकट, व्यक्त ३ भाषण, बोली, भाषा ४ चित्रकार, चितेरा, शिल्पी, तस्वीर बनाने वाला ५ चित्र की ओट मे ६. पहुँच ७ उच्चता ८ शतरज के तख्ते पर ९ मनुष्य को १० नगण्य, तुच्छ ११ मर्म, भेद, रहस्य से १२ सर्वेसर्वा, समर्थ १३ योग्य, पात्र, लायक १४ प्रतिकार, बदला १५ आसक्त १६. देवताओ १७ फूल जैसे शरीर ने, गुलबदन ने।

३८ यह सब जहूर शाने-हकीकत[1] बशर मे है।
जो कुछ निहाँ[2] था तुख़्म[3] मे, पैदा शरर[4] मे है॥

३६ लज्ज़ते-शर्म[5] शना[6] थी कब फरिश्तो को नसीब ?
यह मज़ा चखने को पैदा ख़लक[7] में आदम हुआ॥

४०. सानअ[8] की सनअ़तो[9] की सौ हुस्न क्यो न बरसे ?
अपनी किसी अदा[10] को इन्साँ बना दिया है॥

—अमीर

४१ जौहर[11] है तुम मे सब मल्कूतीसिफात[12] के।
इन्साँ किया सज्दए-मलाइक[13] के वास्ते॥

—सज्दए-मलाइक

४२. नही असरार[14] से आतिश, यह पुतला खाक का खाली।
यही वह गर्द है, जिससे सवार आखिर अयाँ[15] होगा॥

—आतिश

४३. ज़हूरे-आदमे-खाकी[16] से, यह हमको यकी आया।
तमाशा अंजुमन[17] का देखने खि़ल्वत-नशी[18] आया॥

४४. फख्र[19] आदम[20] को न होता, जो फ़रिश्ता[21] होता।
बनी-आदम[22] से जो मन्सूब[23] हुआ, खूब[24] हुआ॥

---

१ सत्यता की प्रतिष्ठा या मर्यादा २ छिपा हुआ ३. बीज मे ४ स्फुलिंग, चिनगारी ५. लज्जा का मजा ६. प्राप्ति, लाभ ७ ससार मे ८ निर्माता, बनाने वाला, कारीगर ६ कारीगरियो १० हाव-भाव, अगभगिमा को ११ गुण १२ देवताओ जैसे, देवताओ के गुणवाली १३ देवताओ के सिर झुकाने के लिए १४. रहस्य, भेद १५ प्रकट, जाहिर १६ मनुष्य के आविर्भाव मे १७ सभा, गोष्ठी महफिल का १८ एकान्त सेवी १६ गौरव, नाज २० मनुष्य २१ देवता २२ मानव-जाति मे २३ सम्बद्ध, जिसकी किसी की ओर निस्बत की गयी हो २४ सुन्दर, उत्तम, अच्छा।

४५. आदमे-ख़ाकी से आलम[1] को जिला[2] है वरना।
आईना[3] यह था, मगर काबिले-दीद[4] न था॥

४६ फरिश्ते आदमी बनकर न रह सके।
वह ऐसी कौनसी मुश्किल थी आदमीयत मे॥

—अकबर हैदरी

४७. मै क्या हूँ मेरे समझने को समझ है दरकार[5]।
खाक समझा जो मुझे खाक का पुतला समझा?

४८. हुस्ने-इन्सॉं[6] से फरिश्तो ने भी झाँके है कुएँ।
आफते ढाता है यह खाक का पुतला क्या-क्या?

४६ आदमी के हाले-अबतर[7] पर फरिश्ते रो दिए।
हम खुदा थे, किस्मतो से टुकडे-टुकडे हो गए॥

—फिराक

५० जिन्हे शक[8] हो, वोह करे, और खुदाओ की तलाश।
हम तो इन्सान को दुनिया का ख़ुदा कहते है॥

—मुल्ला

५१. फितरते-आदम[9] मे थी अल्लाह क्या नश्वोनुमा[10]।
एक मुट्ठी खाक यो फैली कि दुनिया हो गई॥

—सीमाब

५२ ख़ाइफ़[11] ख़ुदा है जिनसे वे इन्सॉं है आजकल।
डरते थे जो खुदा से वे इन्सॉं कहाँ रहे?

—नरेन्द्रकुमार शाद

---

१ ससार की २ आभा, प्रभा, चमक, रोशनी ३ दर्पण ४ देखने के योग्य, दर्शनीय ५ वाछित, आवश्यक, जरूरी ६ मानव-सौन्दर्य ७. दुर्दशा पर, बुरी हालत पर ८. अविश्वास, सन्देह ६ मनुष्य की प्रकृति या स्वभाव मे १० विकसित होना, विकास पाना ११ भयभीत।

५३. मुझको अब मेहरो-मुहब्बत[1] से कोई प्यार नही।
मैंने इन्सान को चाहा भी तो क्या पाया है?

—कतील शिफाई

५४ इब्ने-आदम[2] को साहबे-जाह[3] करो,
कम्बख्त को अब और न गुमराह[4] करो।
अल्लाह से इन्सान है -कबका वाकिफ[5],
इन्सान से इन्सान को आगाह[6] करो॥

—जोश

५५ कमाले-आदमे खाकी[7] तो देखो।
जमीमे आसमाँ तक छा रहा है॥

५६ अगर अपने को फितरतका[8] यह इन्साँ राजदाँ[9] कर ले।
हर-इक जर्रे से पैदा बेतकल्लुफ[10] सौ जहाँ कर ले॥

५७. आँखो मे समाती नही कुछ रफअते-अफलाक[11]।
किस मर्तबे-ओजपे[12] इन्साँ नजर आया॥

५८. चश्मे-जहाँ को[13] वुसअते-जोशे-अमल[14] दिखाये जा।
अर्जो-समा के ताजदार[15] अर्जो-समा पै छाये जा॥

—निहाल सेविहारवी

५९. कोई मंजिल इन्तहाए-ओजे-इन्सानी[16] नही।
कोकबे-तकदीरे-आदम[17] है फरोगे-लामकाँ[18]॥

—रविश सिद्दीकी

---

१ कृपा और स्नेह से २ मानव-सन्तान को ३ गौरवान्वित, प्रतिष्ठित ४ पथ-भ्रष्ट ५ अभिज्ञ, परिचित ६ सावधान, सचेत ७ मिट्टी से बने मनुष्य का कौशल ८ प्रकृति का ९ मर्मज्ञ, ज्ञानी, जानने वाला, रहस्यज्ञ १० नि.सकोच, बेखटके, आराम से ११. आकाश की चाल, उच्चता १२. उन्नत पद पर १३ विश्व दृष्टि को १४ कर्तव्य के उत्साह का क्षेत्र १५ पृथिवी आकाश के सम्राट् १६ मनुष्य की महानता की कोई सीमा नही १७. मनुष्य का भाग्य-नक्षत्र ही १८ ईश्वर को प्रकाश देता है।

६०. ख़ुद्दारियों[1] के होते हर शख्स के कदमचर ।
झुकता है क्यो मेरा सर[2] दुनियाँ नही समझती ॥

६१. फिर कोई कैद[3] न तेरे लिए बाकी रहती ।
तू अगर्चे[4] दामसे[5] खुद अपनी रिहा[6] हो जाता ॥
अपनी अज्मतका[7] नही खुद तुझे गाफिल एहसास[8] ।
बन्दगी अपनी जो करता तो खुदा हो जाता ॥

६२ अगर जन्नत[9] भी तुझको मिल गई क्या तेरे हाथ आया ?
तुझे खुद खूबिए-आमाल का इनआम[10] होना था ॥

६३ इन्सान के उरूज[11] का क्या खाक ऐतबार[12] ?
बिगडा वही हुबाब की सूरत,[13] जहाँ बना ॥

६४ पूजती है इन्हे माबूद[14] समझकर दुनिया ।
आदमी से तो मुनव्वर कही पत्थर अच्छे ॥

—मुनव्वर लखनवी

६५ शेखजी[15] आप वली[16] है तो बताये मुझको ।
आजकल हजरते-इन्सान कहाँ होता है ?

६६ वहिश्त मे[17] कोई रौनक नही है मुद्दत से ।
ख़ुदा को देर से इन्सान की जरूरत है ॥

---

१ स्वाभिमान होने पर भी २ मस्तक ३ बन्धन ४ यदि ५ जाल से, कैद से ६ मुक्त ७ गौरव का, महिमा-गरिमा का ८ ज्ञान, अनुभूति ९ स्वर्ग १० सदाचार का पुरस्कार ११ उत्थान, उन्नति, विकास का १२ विश्वास १३. बुलबुले की तरह १४. आराध्य, ईश्वर १५ वृद्ध, बुजुर्ग १६ महात्मा, ऋषि १७ स्वर्ग, वैकुण्ठ मे ।

६७ न जा इन वेसरो-सामान इन्सानो की हालत पर।
हयाते-जाविदॉ[1] इनके तग्रारुफ को[2] तरसती है॥

—ग्रदम

६८. बगावत[3] का ग्रलमवरदार[4] हूँ, महशर बदामॉ[5] हूँ।
फरिश्तो ने[6] जिसे सिज्दे[7] किये हैं, मै वह इन्सॉ हूँ॥

—मजाज



१ अमर जीवन २. परिचय प्राप्त करने को ३ विद्रोह, क्रान्ति का ४. झडा उठाने वाला ५ प्रलयकर ६ देवताओ ने १४ नमस्कार, झुककर नतमस्तक होना।

इन्सानियत का दहर मे मिलना मुहाल है !



१ इन्सानियत का दहर[1] मे मिलना मुहाल[2] है।
लेकर चराग[3] शौक[4] से ढूँढा करे कोई ॥
२ हो न कुछ इन्सानियत[5] इन्साँ[6] मे तो फिर इन्सान क्या ?
ऐ 'जफर' गर्चे[7] हुआ जाहिर[8] मे वह इन्सा की शकल[9] ॥
—जफर

३. अब कहाँ इन्साँ, जिसे इन्साँ कहे।
चलती-फिरती देख लो परछाइयाँ[10] ॥ —जिगर
४ गो[11] बजाहिर[12] खाक[13] के पुतले हैं यकसाँ[14] सब, मगर।
कोई है अक्सीर[15] इनमें और कोई खाक[16] है ॥
५. आदमी कहते है जिनको, कम हैं दुनिया मे वोह लोग।
यो तो सब औलादे-आदम[17] से यह बस्ती है भरी ॥
६ बजाहिर[18] सब है इन्साँ, लेक[19] बातिन[20] की खुदा जाने।
कि हैं इन्सान इनमे कितने और हैवान[21] कितने हैं ?
७. न हो कुछ भी अमल[22] और हो किताबो से लदा।
'जफर' उस आदमी को हम तसव्वुर[23] बैल करते है ॥

---

१ ससार २ असम्भव ३ दीपक ४ चाव ५ मनुष्यता ६ मनुष्य ७ यदि ८. प्रकट रूप मे, देखने मे ९ आकृति, ढाँचा १०. प्रतिबिम्ब, साए ११ यद्यपि १२. प्रकटत, प्रत्यक्ष रूप मे १३. माटी के १४ बराबर १५ रसायन, कीमिया १६ मिट्टी, धूल १७ मानव-सन्तति १८ देखने मे, प्रत्यक्ष रूप मे १९. परन्तु २०. अन्दर, २१ पशु २२. आचरण २३. खयाल ।

८. जानवर[1], आदमी[2], फ़रिश्ता[3], ख़ुदा[4]।
आदमी की है सैकडो किस्में[5]॥
—जफर

९. शक्लो-सूरत[6] से जाहिर है कि हैं इन्सान के पुतले।
मगर ऐमाल[7] कहते है कि है शैतान[8] के पुतले॥

१० आदमीयत[9] और शै[10] है, इल्म है कुछ और शै।
लाख तोते को पढाया फिर भी हैवाँ[11] ही रहा॥
—ज़ौक

११ नाज[12] है ताकते-गुफ्तार[13] पै इन्सानो[14] को।
बात करने का सलीका[15] नही नादानो[16] को॥

१२. सराफत[17] इसमे नही इन्सा की,
उसने दुनिया मे क्या कमाया?
वले[18] बुज़ुर्गी[19] छुपी है इसमे,
कि उसने अपने को क्या बनाया?
—हाली

१३ देखने मे गो सरापा[20] सूरते इन्साँ[21] है तू।
अपनी सीरत[22] मे जियादातर[23] मगर हैवा है तू॥
—कमाल

१४. हुस्ने-सीरत[24] पर नजर कर, हुस्ने-सूरत[25] को न देख।
आदमी है नाम को गर ख़ू[26] नही इन्सान की।
—आरज़ू

---

१ पशु २ मनुष्य ३ देवता ४ परमात्मा ५ प्रकार, रूप ६. आकृति से ७. कर्म, आचरण, व्यवहार ८ राक्षस ९. मानवता १०. वस्तु ११ पशु १२. गर्व १३ वक्तृत्व शक्ति १४ मनुष्यो १५. ढग १६ मूर्खों १७ विशिष्ठता, श्रेष्ठता १८ किन्तु, मगर १९ वडप्पन, गौरव २० आपाद-मस्तक, सिर से पैर तक २१ मनुष्य की आकृति २२. स्वभाव २३ अधिकाशत २४ स्वभाव-सौन्दर्य २५ आकृति की सुन्दरता को २६ स्वभाव, आदत।

१५ पढके दो कलमे अगर कोई मुसलमा[1] हो जाय ।
फिर तो हैवान भी दो रोज मे इन्साँ हो जाय ॥

—मुल्ला

१६ खेलते हैं जो मजलूमो[2] की जानो[3] से ।
हैवान अच्छे है ऐसे इन्सानो से ॥

—खालिश दर्दी

१७. अम्ने-आलम[4] तो मुश्किल[5] नही है ।
आदमी, आदमी हो तो जाए ॥

—अनवर

१८ इन्साँ की जहालत[6] का अभी है वही मेयार[7] ।
है सबसे सिवा[8] पुख्ता[9] दलील[10] आज भी तलवार ॥

—मुल्ला

१९ मजहब से न ईमान को खतरा है बहुत,
दुनिया मे न शैतान से ख़तरा है बहुत ।
सच पूछे जो मुझसे कोई 'फरहत' साहब,
इन्सान को इन्सान से खतरा है बहुत ॥

—फरहत

२० दरिन्दो[11] मे हुआ करती हैं अब सरगोशियाँ[12] इस पर ।
कि इन्सानो से बढकर कोई ख़ूँ-आशाम[13] क्या होगा ?

—आदीब

२१ 'मीर' साहब गर फरिश्ता[14] हो तो हो ।
आदमी होना मगर दुशवार[15] है ॥

—मीर

---

१. मुसलमान २ पीडितो की ३ प्राणो से ४ विश्व-शान्ति ५ कठिन ६ अज्ञानता, नासमझी का ७ स्तर, धरातल ८ अधिक ९ पक्की, दृढ १० तर्क ११ खूँख्वार, जानवरो १२ कानाफूसी, चर्चा १३. रक्त-पिपासु, खून बहाने वाला १४ देवता १५ कठिन ।

२२. दिल-सोज[1] नही है अब आहे, तासीर[2] नही अफसानो मे।
दुनिया मे दिखावा आम हुआ, अखलास[3] नही इन्सानो मे ॥

२३ .खुदा! कुछ भी न दे, फिर भी यह सौ देने का देना है।
अगर इन्सान के पहलू मे तू इन्सान का दिल दे ॥

२४. मुल्ला दुखी, रहमान नही मिलता है,
पडित दुखी, भगवान नही मिलता है।
मैं हूँ दुखी इन्सानो की इस वस्ती मे
ढूँढे से इन्सान नही मिलता है ॥

—कमल

२५ दर्दे-दिल,[4] पासे-वफा[5], जज्वए-ईमा[6] होना।
आदमीयत है यही और यही इन्साँ होना ॥

—चकवस्त

२६ न वोह रास्ते है, न वोह मंजिले है,
वदल ही दिया जैसे रुख जिन्दगी ने ॥
अभी आदमी, आदमी का है दुश्मन,
अभी खुद को समझा नही आदमी ने ॥

—दर्द सईदी

२७ भटके हुए इन्सान को देखो तो जरा,
इस अक्ल के नादान को देखो तो जरा।
किस तरह अकड-अकड के रखता है कदम,
दो पाँवो के हैवान को देखो तो जरा ॥

—हसरत

२८. सच पूछिए तो मिलना मुमकिन नही जहाँ मे।
दाना[7] भी आदमी-सा, नादान[8] भी वशर-सा ॥

—बेदिल

---

१ दिल को तडफा देने वाली २ प्रभाव, असर ३ सदाचार, प्रेम-भाव ४ मानसिक पीडा की अनुभूति ५ नेकी का गुण ६ धर्म-श्रद्धा का भाव ७ बुद्धिमान ८. मूर्ख, नासमझ।

२९ हुस्ने-सूरत[1] महज[2] बेरौनक[3] है सीरत[4] के बग़ैर।[5]
जिन गुलो[6] मे बू[7] नही वोह खुशनुमा[8] कहने को है ॥
३० और कुछ हाजत[9] नही है दोस्ती के वास्ते ।
आदमी होना है काफी[10] आदमी के वासते ॥
३१ आओ वोह सूरत[11] निकाले, जिसके अन्दर जान[12] हो ।
आदमीयत दीन हो, इन्सानियत ईमान हो ॥
३२ मैं शरावे-वहम आबाई[13] का मतवाला नही ।
आदमीयत से कोई शै[14] दहर[15] मे वाला[16] नही ॥

—जोश

३३ सभी कुछ हो रहा है, इस तरक्की के जमाने मे ।
मगर यह क्या गजब है कि आदमी इन्साँ नही होता ॥

—फिराक

३४ न दौलत याद आती है, न गम होता है सरबत[17] का ॥
जिसे रोती है दुनिया, वह है जौहर[18] आदमीयत का ॥
३५ सीरत[19] के हम गुलाम है, सूरत[20] हुई तो क्या ?
सुर्खो-सफेद मिट्टी की मूरत हुई तो क्या ।
३६. खुदा तो मिलता है, इन्सान नही मिलता ॥
यह जिन्स वोह है कि देखी कही-कहीं मैंने ॥

— इक़बाल

३७ आदमी होना वहुत दुशवार है ।
फिर फरिश्ते हिर्से-आदम[21] क्या करे ?

—दाग़

---

१ शरीर-सौन्दर्य २ केवल ३ अशोभास्पद ४ स्वभाव ५ विना ६. फूलो ७ सुगन्ध ८ सुन्दर ९ आवश्यकता १० पर्याप्त ११ ढग, तरीका, उपाय १२ प्राण १३ परम्परागत, रूढि रूपी शराब का १४ चीज १५. ससार १६ ऊँची १७ पूँजी का १८ गुण, खूवी १९ स्वभाव २०. शक्ल, शरीर-सौन्दर्य २१ मनुष्य होने का लालच ।

३८ वस कि दुशवार है हर काम का आसाँ[1] होना।
आदमी को भी मुयस्सर[2] नही इन्साँ होना॥
—गालिब

३९ इस दर्जा गिराया है खुद को, इस दौर[3] के आदमजादोने[4]।
इन्सान तो है फिर भी इन्साँ, हैवानो को शरमाते हैं॥
—मजर

४०. हमने माना हो फरिश्ते शेख जी।
आदमी होना बहुत दुशवार है॥
४१ शैताँ भी अमाँ[5] माँगता है इनके अमल[6] से।
क्या हजरते-आदम[7] की भी औलाद गजब है॥
—ज़ौक

४२ दुनियाँ बढी तनज्जुले-इन्सानियत[8] के साथ।
सब कुछ यहाँ मही, मगर इन्साँ नही रहा॥
—अब्बास सहारनपुरी

४३ हो गया क्या आदमी को ऐ खुदा!
कुछ खयाले-आदमीयत ही नही॥
४४ उठ गये दुनिया मे मानी-आश्ना[9]।
ऐ जिगर! सूरत के बन्दे रह गये॥
—जिगर

४५ है और कोई शै इन्सानियत मेरे तखय्युल[10] मे।
खयालो मे कभी तस्वीरे-इन्साँ[11] देख लेता हूँ॥
—सीमाब

४६ इस जमाने का इन्कलाब[12] न पूछ।
रूह शैतान की, शक्ल आदम की॥
—जिगर

---

१ सरल २ प्राप्त, नसीब ३ युग ४ आदमियो ने ५ शरण ६ करतूत ७. बाबा आदम ८. मनुष्यता की अवनति ९ तत्त्वार्थ-प्रेमी १० विचार ११ मनुष्य का चित्र १२ परिवर्तन।

४७ इन्साँ कहाँ है ? किस कुर्रे[1] मे गुम है।
यहाँ तो कोई हिन्दू है मुसलमाँ कोई॥
—जोश

४८. चिराग[2] इन्सानियत के हरसू,[3] न जब तक इन्साँ जला सकेगे।
रहेगा छाया हुआ अधेरा, फिजा[4] भी तारीक[5] ही मिलेगी॥
—वारिस

४९ इन्सानियत कि जिससे अबारत[6] है जिन्दगी,
इन्साँ के साये से भी गुरेजाँ[7] है आजकल।
शाइस्तगी के[8] भेस मे रूहे-दरिन्दगी,[9]
इन्सान के लिबास मे गैताँ है आजकल।
वो दिन गए कि ताइरे-मकसूद[10] था शिकार,
इन्सान का शिकार खुद इन्साँ है आजकल॥

५० हरचन्द[11] कायनाते-दोआलम मे[12] ऐ जिगर।
इन्साँ ही एक चीज़ है—इन्साँ मगर कहाँ ?

५१ जब तक इन्साँ पाकतीनत[13] ही नही।
इल्मो-हिकमत, इल्मो-हिकमत ही नही।
आदमी के पास सब कुछ है, मगर—
एक तनहा[14] आदमीयत ही नही॥
— जिगर

५२ राजदारे-खुदी[15] हो तो जाये, हासिले-जिन्दगी[16] हो तो जाये।
अमले-आलम तो मुश्किल नही है, आदमी आदमी हो तो जाये॥
—अनवर साबरी

---

१ कोने मे २ दीपक ३ चारो ओर ४ वातावरण ५ अन्धकार पूर्ण ६ श्रेष्ठ, उत्तम ७, भागती हुई, पास न आने वाली ८ शिष्टता एव सभ्यता के ९ हिसक पशु की आत्मा १० इच्छा का पछी ११ यद्यपि १२ उभय लोक मे, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड मे १३ शुद्वात्म स्वच्छ प्रकृतिवाला १४ एकमात्र, केवल १५ अहवाद का मर्मज्ञ १६ जीवन का निष्कर्ष, निचोड, सार।

५३ इलाही दुनिया मे और कुछ दिन, अभी कयामत[1] न आने पाये।
तेरे बनाये हुए बशर को, अभी मैं इन्साँ बना रहा हूँ॥
—बिस्मिल सईदी

५४. इनसानियत .खुद अपनी निगाहो मे है ज़लील[2]।
इतनी बुलन्दियो पै[3] तो इन्सॉ न था कभी॥
—जगन्नाथ आजाद

५५. क़बूल[4] करते न हम अज़ल मे[5], किसी तरह यह लिबासे-इनसाँ।
खबर जो होती कि पस्त इस दर्जह[6] फितरते-आदमी[7] मिलेगी॥
—आरिफ बांकोटी

५६. यह दिल वबाये-फिरका परस्ती का[8] है शिकार।
इन्सानियत की मौत नुमायाँ[9] अभी से है॥
—निशात सईदी

५७ यह दुनिया है या दरिन्दो की[10] बस्ती ?
है खाइफ[11] यहाँ आदमी आदमी से॥
—एजाज़ सद्दीकी

५८ जहॉ इन्सानियत वहशत के[12] आगे जिबह[13] होती है।
वहाँ जिल्लत[14] है दम लेना, वहाँ बेहतर है मर जाना॥
—गुलजार देहलवी

५९ इस फिक्रो-नज़र की दुनियॉ से, इन्साँ का उभरना लाजिम है।
गुल कैसे खिलेगे आइन्दा[15] ? आईने-गुलिस्ता[16] क्या होगा ?
—नज़र

१, प्रलय २ भ्रष्ट, तिरस्कृत ३ ऊचाइयो पर, उन्नति पर ४. स्वीकार ५ सृष्टि के आदि काल मे, प्रारम्भिक काल मे ६ इस सीमा तक ७. मनुष्य की प्रकृति, स्वभाव ८ साम्प्रदायिक एव धार्मिक भेदभाव की महामारी का ९. व्यक्त, प्रकट, स्पष्ट १० जगली जानवरो की ११. भयभीत १२ पागलपन, त्रास के १३ कत्ल १४ पाप, गुनाह १५ भविष्य मे, आगे १६ उद्यान का विधान, नियम।

६० कौन अब नेकी करे इन्सानियत के नाम पर।
नेकियाँ तो जिस कदर थी सर्फे-ईमा[1] हो गई ॥
—अर्श मलसियानी

६१ नामजा[2] औहाम[3] कर सकते न हो जिनका शिकार,
गाये-बाजे पर न हो जिनके अकायद[4] का मदार[5],
ऐ खुदा ! हमको नजाए कुफ्रो-ईमा[6] से बचा,
अपने हिन्दू से बचा, अपने मुसलमाँ से बचा,
रूह की रफअत मे[7] जो हो आस्मानी[8] आदमी,
अलगरज[9] मेरे वतन को जिन्दगी दे ऐ .खुदा !
आदमी दे, आदमी दे, आदमी दे, ऐ खुदा !!
—जोश

६२ इस अहद[10] मे कमयाबिए-इन्साँ[11] है कुछ ऐसी।
लाखो मे ब-मुश्किल[12] कोई इन्साँ नजर आया ॥

६३. गर्मे-पैकार[13] हुई गुर्ग-खसाइल[14] अकवाम[15]!
खूने-इन्साँ है, दरिन्दो को[16] हलाल ऐ साकी !
आदमीयत का है ताबूत[17] सरे-दोश-कमाल[18]।
आदमीयत की यह पामाले-कमाल[19] ऐ साकी !
——निहाल सेवहारवी

६४. अज़मते-इन्साँ[20] नही है, नाज़े-दाराई का[21] नाम।
आदमीयत है .खुद इन्साँ की परीजाई का[22] नाम ॥

---

१. ईमान के लिए खर्च २ अनुचित ३ वहम, अन्ध विश्वास ४. विश्वास, श्रद्धा का ५ निर्भरता, दारमदार ६ धर्म-अधर्म के झगडे से ७ आत्मा की विशाल उदारता, दिल के हौसले वाले ८ देवतुल्य ९. भाव यह है, तात्पर्य यह कि १० युग ११ मनुष्यता का अकाल १२ कठिनता से १३ लडने-मरने मे लीन १४ भेडियो जैसे स्वभाव वाली १५ जातियाँ १६ खूनी जानवरो की १७ अर्थी, जनाजा। १८. चालाक कन्धो पर १९. गुणो का पतन २०. मनुष्य की महत्ता, प्रतिष्ठा २१ बादशाही घमण्ड का २२ नम्रता।

जल्द इस आईने-जुलमत को[1] मिटाया जायगा।
कैसरो-कम्री को[2] अब इन्सॉ बनाया जायगा॥

६५ आदमीयत है फरिश्तो से बहुत दूर 'रविश'।
वाइज़े-शहर को[3] दुश्वार है इन्साँ होना॥

६६. आदमीयत[4] की बलन्दी[5] लेकर।
बादशाहो की निगाहो से गुज़र॥

६७ वह इन्साँ इन्किलाबे-आस्माँ[6] की राह तकता है।
कि जिसका मुन्तजिर[7] है, इन्किलाबे-आस्माँ अब तक॥

६८ नजर के सामने दम तोडते रहे इन्साँ।
यह जिन्दगी हो तो इस ज़िन्दगी से क्या हासिल?

६९ यह है दौरे-जलाले-इब्ने-आदम[8]।
न सुलतानी न खाकानी के[9] दिन है॥

—रविश सद्दीकी

७० जब-जब इसे सोचा है, दिल थाम लिया मैंने।
इन्सान के हाथो से इन्सान पै जो गुजरी॥

७१ क्या करे हम भी, क्या करो तुम भी।
आदमी आदमी का दुश्मन है।

—फिराक़ गोरखपुरी

७२. इन्सानो मे साँप बहुत है,
कातिल भी जहरीले भी।
इनसे बचना मुश्किल है,
आजाद भी है फुर्तीले भी॥

—हफीज जालन्धरी

---

१ अन्धकार मे डालने वाले विधान को २ बड़े-छोटे सबको ३ नगर के उपदेश को ४ मानवता की ५ उच्चता, उन्नति, विकास ६. आकाश-परिवर्तन, क्रान्ति ७ प्रतीक्षा करने वाला ८ मानव पुत्रो के गौरव का युग ९ बादशाहत और रईसो के।

७३. यह कहते हैं कि सब मख़लूक[1] से इन्सान अफजल[2] है।
न हो जब जौहरे-ज़ाती[3] तो फिर दावा मोहमल[4] है॥

७४ जो ज़ुल्म[5] इन्सॉं करता है, वह हैवॉं[6] कर नहीं सकता।
वह कौन ऐसी जफा[7] है, जोकि इन्सॉं कर नहीं सकता?

७५ गिरे इन्सान तो हैवान की हद से भी गिर जाये।
बने शैताने-सानी[8] आदमीयत से जो फिर जाये॥

—अम्न लखनवी

७६. मुझको इन्सान की जरूरत है।
रहम खाकर खुदा न दे जाना॥

७७ कोई यजदॉं[9] है यहॉं कोई फरिश्ता[10] है यहॉं।
क्या बुराई थी अगर, आदमी इन्सॉं होता॥

७८ जिसे आदमीयत नहीं रास आई।
वही इब्ने-आदम[11] खुदा हो गया है॥

७९ मद्धिम[12] है दैरो-काबाके गर दोस्तो चिराग।
इन्सानियत के नक्शे-कदम[13] ही से काम लो॥

८० तखलीक-कायनात के[14] दिलचस्प जुर्म पर[15]।
हँसता तो होगा आप भी यजदॉं[16] कभी-कभी॥

८१ यजदा-ओ-अहरमन के[17] ज़माने गुजर गये।
अब वक्त हर लिहाज से[18] इन्सॉं का वक्त है॥

८२. जोरे-खल्लाक को[19] तफरीहका सामॉं[20] होना।
किस कदर मज़ह-अँगज[21] है इन्सॉं होना॥

—अदम

---

१ प्राणियों से, २ श्रेष्ठ ३. निजी गुण मानवता ४. व्यर्थ, झूठा ५ अत्याचार ६. पशु ७ अन्याय, अनीति, अत्याचार ८ दूसरा शैतान ९. ईश्वर १० देवता ११ मानवपुत्र १२ मन्द १३ चरण-चिन्ह १४ सृष्टि निर्माण के १५ अपराध पर १६ ईश्वर १७ खुदा और शैतान के १८ प्रत्येक दृष्टि के १९ खुदा के २० मनोरंजन का साधन २१ उपहासास्पद।

८३. आदमी इकबार छूकर सरहदे-हैवानियत[१]।
लौट आएगा कभी इन्सानियत की राह पर[२]॥

—दानिश

८४. इन्सानियत से जिसने बशर को[३] गिरा दिया।
या रब[४]! वह बन्दगी[५] हुई या अबतरी[६] हुई॥

—अमन

८५ इन्सान है जहां में वह आदमी कि जो।
मुतअास्सुबो-हरीस[७] नहीं, ऐबबीं[८] नहीं॥



१ पशुता की सीमा २ मानवता की पगडन्डी पर ३ मनुष्य को ४ हे प्रभो! ५ उपासना, भक्ति ६ पतनोन्मुखी स्थिति, ७ पक्षपाती, कट्टर, संकुचित हृदय और लालची ८ दोषदर्शी, छिद्रान्वेषी।

यह है तहजीब, आदमी में हो हया !



१. यह नही तहजीब[1] आला सूट हो।
हैट सर पर पाँवो मे फुल[2] बूट हो॥
आँखो पर ऐनक, कलाई पर घडी।
पीछे कुत्ता, हाथ मे फैन्सी छडी॥
यह नही तहजीब ऐसी शान हो।
देखे नफरत[3] से गरीब इन्सान को॥
यह नही तहजीब, पहने वह लिबास।
देख कर जिसको हया[4] आये न पास॥
यह नही तहजीब, नगे सर फिरे।
वक्त खोये सीधी-टेढी माँग मे॥
यह है तहजीब आदमी मे हो हया।
दिल मे हर लहजा[5] रहे खौफे-खुदा[6]॥
जीने का मकसद हो खिदमत[7] खल्क[8] की।
आदमी के काम आए आदमी॥
बस शराफत[9] है निहायत खूब[10] शै[11]।
नाम इसका दूसरा तहजीब है॥

—नश्तर

---

१ सभ्यता २ पूरा ३ घृणा ४ लज्जा, शर्म ५ प्रत्येक क्षण ६ प्रभु का डर ७ सेवा ८ जनता की ९ सज्जनता, शिष्टता १०. बहुत बढिया, उत्तम ११ वस्तु।

२ जिस रोशनी मे लूट ही की आपको सूझे,
तहजीब की मैं उसको तजल्ली[1] न कहूँगा।
लाखो को मिटा कर जो हजारो को उबारे[2],
उसको तो मैं दुनिया की तरक्की[3] न कहूँगा॥

३ हमको नई रविश[4] के हलके[5] जकड रहे है।
बाते तो बन रही है और घर उजड़ रहे है॥

—दाग़

४ यूनानो मिस्र रूमा सब मिट गए जहाँ से,
अब तक मगर है बाक़ी नामो-निशाँ हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती[6] मिटती नही हमारी,
सदियो रहा है दुश्मन दौरे-जमाँ[7] हमारा॥

—इकबाल

५ इन्साँ की जहालत[8] का अभी है वही मेयार[9]।
है सब से सिवा[10] पुख्ता दलील[11] आज भी तलवार॥

—मुल्ला

६. तहजीब का आईना[12] अब तक
शर्मिन्दए-अहसाँ[13] हो न सका।
क्यो शोरे-तरक्की[14] है या रब[15]।
इन्साँ ही जब इन्साँ हो न सका॥

—शफीक़

७ नई तहजीब मे दिक्कत[16] जियादह[17] तो नही होती।
मज़ाहब[18] रहते है कायम, फकत[19] ईमान[20] जाता है॥

—अकबर

१ ज्योति, रोशनी २ उठाए ३ उन्नति ४ ढग, पद्धति के ५ क्षेत्र, सीमाएँ ६ अस्तित्व ७ काल-चक्र ८ अज्ञानता ९ मापदण्ड १० अधिक ११ प्रबल युक्ति १२ दर्पण १३ आभारी, कृतज्ञ १४ उन्नति या प्रगति का कोलाहल १५ हे प्रभो! १६ कठिनाई १७ अधिक १८ पन्थ, सम्प्रदायें १९ केवल सिर्फ २० धर्म।

८ न वह रास्ते है, न वह मजिले हैं,
बदल ही दिया जैसे रुख[1] जिन्दगी ने।
अभी आदमी, आदमी का है दुश्मन,
अभी खुद को समझा नही आदमी ने।
जहाँ सैकडो बुतकदे[2] ढा दिये है,
खुदा भी तराशे हैं कुछ बन्दगी ने॥

—दर्द सईदी

९. पुरानी रोशनी मे और नई मे फर्क इतना है।
उसे किश्ती नही मिलती, इसे साहिल नही मिलता॥

१० तालीम हमे दी जाती है, वह क्या है, फकत बाजारी है।
जो अक्ल सिखाई जाती है, वह क्या है, फकत सरकारी है।

—अकबर

११. इस जगह तो कापती है कहर[3] की परछाईया।
जिन्दगी गायब[4] है मुर्दे सास लेते है यहा॥

— जोश

१२. हमे घेरे हुए है हर तरफ इस्लाह[5] की मौजे[6]।
मगर यह हिस[7] नही है कि डूबते है या उभरते है ?

१३ दयारे-मगरिब के रहने वालो! खुदा की बस्ती दुका नही है।
खरा जिसे तुम समझ रहे हो, वही जरे-कम अय्यार होगा॥
तुम्हारी तहज़ीब अपने खजर[8] से आपही खुदकशी[9] करेगी।
जो शाखे-ना जुक[10] पै आशियाना[11] बनेगा, नापायदार[12] होगा॥

—इकबाल

---

१ दिशा, ढग २ मन्दिर, मूर्ति-गृह ३. दैवी आपत्ति, दैवी कोप की, बलाए आस्मानी ४ लुप्त, समाप्त ५ सुधार की ६ लहरें, उमगें ७. सवेदन, अनुभव, एहसास ८ तलवार ९ आत्महत्या १०. कमज़ोर या पतली टहनी पर ११ घोसला १२ कमज़ोर।

१४ न कोई तकरीमे-बाहमी[1] है, न प्यार बाकी है अब दिलो मे।
ये सिर्फ तहरीर[2] मे डियर सर, है या 'जनाबे-मुकर्र भी'[3] है॥

१५. इल्मी तरक्कियो से जवाँ[4] तो चमक गई।
लेकिन अमल[5] वही हैं फरेबो दगा[6] के साथ॥

१६. तालीम का शोर ऐसा, तहजीब का गुल[7] इतना।
बरकत[8] जो नही होती, नीयत[9] की खराबी है॥

—अकबर

१७ वकीले-अहले मगरिब,[10] यह जमाना है तरक्की का।
मुझे भी शक[11] नही इसमे कि गफलत[12] का जमाना है॥

१८ सफाईयाँ हो रही है जितनी, दिल उतने ही हो रहे है मैले।
अन्धेरा छा जायेगा जहाँ मे, अगर यही रोशनी रहेगी॥

—जोश

१९ तरक्की मुस्तकिल[13] वह है, जो रूहानी[14] हो ए-अकबर!
उडा जो जर्रए-अन्सर[15], वह फिर सूए-जमी[16] आया॥

२० वह दिल मे .खुश है—बी० ए० पास अब मेरा भतीजा है।
मगर उनसे कोई पूछे कि क्या इसका नतीजा[17] है॥

२१. अब पढे लिक्खो का यह दस्तूर है।
जो कहे बीबी उन्हे म.जूर हैं॥

२२. तिफ्ल[18] मे बू[19] आए क्या, माँ-बाप के अतवार[20] की।
दूध तो डब्बे का है, तालीम[21] है सरकार की॥

---

१. पारस्परिक शिष्टाचार २. लेखन ३ पूज्य, मान्यवर, महाशय ४. वाणी ५ आचार-व्यवहार ६. छल-कपट ७ कोलाहल ८. बढोतरी, कल्याण ९ संकल्प, इरादा, खयाल, आशय की १० पश्चिम वालो के कथनानुसार ११ सन्देह १२ असावधानी, अज्ञानता, बेखबरी का १३. स्थायी १४. आध्यात्मिक १५ परमाणु का टुकडा १६ पृथ्वी की ओर १७. परिणाम १८. बच्चो मे १९ गन्ध २० रग-ढंग, गुणो की २१. शिक्षा।

यह है तहजीव आदमी मे हो हया !

२३. तमाशा देखिये बिजली का मगरिब[1] और मशरिक[2] मे।
कलो[3] मे है वहाँ दाखिल,[4] यहाँ मजहब पै गिरती है॥
२४ नज़र उनकी रही कालिज मे बस इल्मी[5] फवायद[6] पर।
गिरा की चुपके-चुपके बिजलियाँ दीनी[7] अकायद[8] पर॥

—अकबर

२५ इज्ज़त[9] कुछ और शै[10] है, नुमायश[11] कुछ और शै।
यूँ तो यहाँ खुरोस[12] के सरपर भी ताज है॥
नाज है ताकते-.गुफ्तार[13] पै इन्सानो को।
बात करने का सलीका[14] नही हैवानो को॥

—आरज़ू

२६ मसावात[15] इसको कहते है, नई तहजीव क्या कहना ?
कि सूरत हो गई यकसाँ[16] जनानी और मर्दानी॥
२७. आजकल है अदबियत[17] का यह मैयार[18] 'जरीफ'।
वही उस्ताद[19] है मश्शाक[20] जो हो गाने का॥

—ज़रीफ

२८. बाज़ार नया, ग्राहक भी नये, अब जिन्से-वफा[21] की कद्र नही।
बेसूद[22] नुमाइश रहने दे, ऐ दिल! यह माल पुराना है॥

—अनवर

२६. महर[23] सदियो से चमकता ही रहा अफलाक[24] पर।
रात ही तारी[25] रही इन्सान के इदराक[26] पर॥

---

१ पश्चिम २ पूर्व ३ मशीनो मे ४ प्रविष्ट ५. शैक्षणिक ६ लाभोपर ७ धार्मिक ८. विश्वासो, विधि-विधानो पर ६ प्रतिष्ठा १०. चीज ११. प्रदर्शन, दिखावा १२. मुर्गे के १३ वाक्शक्ति १४ ढग, तरीका १५ बराबरी, समानता १६ बराबर, एक—जैसे, समान १७. साहित्यिकता १८ मापदण्ड १६ अध्यापक, गुरु २० अभ्यस्त २१ नेकी के माल की २२. बेकार, व्यर्थ, अलाभप्रद २३ सूर्य २४. आकाश पर २५ छाई रही २६. बोध, ज्ञान।

अक्ल के मैदान मे ज़ुल्मत[1] का डेरा ही रहा।
दिल मे तारीकी,[2] दिमागो मे अधेरा ही रहा॥

—मजाज़

३० फिर्कावन्दी है कही और कही जाते है।
क्या ज़माने मे पनपने की यही बाते है॥

—इक़बाल

३१ उफक[3] पर जग[4] का खूनी सितारा जगमगाता है।
हर इक झोका हवाका मौत का पैगाम[5] लाता है॥

—मजाज

३२ रगे-दुनिया देखकर घबरा गया अपना तो जी।
भाई को भाई से भी इस दौर[6] मे उल्फत[7] नही॥

—दाग

३३ फरेब[8] देकर हयाते-नौ का[9], हयात[10] ही छीन ली है हमसे।
हम इस जमाने का क्या करेंगे, अगर यही है नया जमाना॥

३४ अक्ल[11] बारीक[12] हुई जाती है।
रूह[13] तारीक[14] हुई जाती है।

—जिगर

३५. ढूँढने वाला सितारो की गुज़रगाहो का[15],
अपने अफकार[16] की दुनिया मे सफर कर न सका।
जिसने सूरज की शुआओ[17] को गिरफ्तार किया,
जिन्दगी की शबे-तारीक[18] सहर[19] कर न सका॥

—इकबाल

---

१. अन्धकार का २. अँधियारी, धुँधलापन ३. क्षितिज पर ४. युद्ध ५. सन्देश ६. युग मे ७ प्रेम ८ धोखा, बहकावा, झाँसा ९ नवजीवन का १०जीवन ११ बुद्धि १२ सूक्ष्म, पैनी १३ आत्मा १४ अन्धकार पूर्ण १५ रास्तो, मार्गो १६. चिन्तन, विचार, खयाल १७ किरणो को १८ अँधेरी रात १९ प्रभात, सुबह, प्रकाशपूर्ण, रोशन।

३६ और सब कुछ हो रहा है, इस तरक्की[1] के जमाने मे ।
मगर यह क्या गजब है, आदमी इन्साँ नही होता ॥

—वक

३७ जहालत[2] है इर्फां[3] पै छाई हुई ।
तो दुनिया है चक्कर मे आई हुई ॥

३८. जिसे हम इल्म समझे, इंतिकाए-बरबरीयत[4] है ।
कि एटमबम बनाना आज शाने-आदमीयत है ॥
घरौंदे है हदूदे[5]-रगो-नस्लो-कौमो-मजहब के ।
हुए दिल तग और आदर्श नीचे हो गये सबके ॥
बुतो के नाम पर लडना, खुदा के नाम पर लडना ।
गरज हर काम पर, हर नाम पर, हर गाम[6] पर लडना ॥
गिरे इन्सान तो हैवान[7] की हद[8] से भी गिर जाए ।
बने शैताने-सानी[9] आदमीयत से जो गिर जाए ।

—अम्न

३९ क्या करे हम भी, क्या करो तुम भी ।
आदमी, आदमी का दुश्मन है ॥

४० रुपया राज करे, आदमी बन जाय गुलाम ।
ऐसी तहज़ीब तो तहजीब की रुस्वाई[10] है ॥

४१ गिरती दुनिया ले जो सभाल, है कोई माई का लाल ?
मज़हब वाले दौलत वाले, दोनो बडे गुरू घंटाल ॥

—फ़िराक़

४२ निगाहे जिस तरफ उट्ठी, वही है लूट का आलम ।
दयानत[11] मिट गई है अब न कुछ ईमान बाकी है ॥

---

१ प्रगति, उन्नति २ अज्ञानता, जडता, मूढता ३. विवेक, ज्ञान, बोध, ब्रह्मज्ञान ४ जघन्य अपराध ५ सीमाएँ ६ पग, कदम ७ पशु ८ सीमा ९ दूसरा शैतान । १० निन्दा, बदनामी ११ सत्यता, ईमानदारी ।

ऐ भागने वाले! वक्त है यह,
हाँ सहने-चमन से[1] भाग निकल!
जब बाग कफस[2] बन जायेगा,
उस वक्त गुरेजाँ[3] क्या होगा?

५५. जिसको मैंने रेशमी फरगल[4] दिये।
उसने बख़्शा[5] है मुझे दामाने-चाक[6]॥
क्या यही तहजीब की मैराज[7] है?
जमा कर लाता हूँ ज़र[8], पाता हूँ खाक[9]॥

—नदीम क़ासिमी

५६ फज़ाए-आस्माँ[10] से बे-गुनह[11] बन्दो पै बमबारी।
फना-कोशी[12] की ख़ातिर नस्ले-इन्सानी[13] की तैयारी॥
यह इन्सानो के अन्दर जज्बए-वहशत[14] अरे तौबा!
दरिन्दो की-सी इन्सानो की यह खसलत[15] अरे तौबा!!
बहाना ख़ूने-इन्साँ दौरे-मौजूदा[16] का इक फन[17] है।
तबाही हाँ तबाही मशरिको-मगरिब[18] मे कदगन[19] है॥
वही साइंस[20], जिस पर अहले-मगरिब[21] नाज़[22] करते हैं।
वही तहज़ीबे-खूनी[23], मग़रिबी[24] दम जिसका भरते हैं॥

—अम्न लखनवी

---

१. उद्यान के भीतर से २ पिंजरा, कारागार ३ पलायन, भागना ४ लम्बे परिधान ५ प्रदान किया है ६ फटा वस्त्र ७ आदर्श, उच्चता, लक्ष्य-विन्दु ८ धन ९ धूल, मिट्टी १० आकाश से ११ निरपराध १२. युद्ध-लिप्सा १३ मनुष्य जाति १४ पागलपन के विचार १५. स्वभाव, प्रकृति, आदत १६ वर्तमान युग १७ कला, गुण, हुनर १८. पूर्व और पश्चिम मे १९ वर्जित २०. विज्ञान २१ पश्चिम वाले २२ गर्व २३. रक्तिम सभ्यता २४ पश्चिम वाले।

५७ ज़रा देखो तो बिगडी किस कदर हालत हमारी है ।
रविश[1] बिगडी, चलन बिगडा, हमारा पैरहन[2] बिगडा ।।
—.ख़ुर्शीद

५८ यह तहज़ीबे-ज़र-अफशाँ[3] दाग़दारे-.ख़ूने-आदम[4] है ।
यह ख़ूँ-आशामिए-सरमाया[5] कज्ज़ाकी[6] से क्या कम है ?
अब इस लानत को दुनिया से मिटा देने का वक्त आया ।।

५९ है रौशन कस्रे-दौलत मे[7] चिरागे-सर खुशी[8] अब तक ।
ख़फा है झोपडो से जिन्दगी की रौशनी अब तक ।
अँधेरे मे नई शमएँ जला देने का वक्त आया ।।

६० तमद्दुन[9] खुद-फरेबी[10] और सियासत[11], तग-दामानी[12] ।
बहुत गमनाक[13] है, काशानए-आदम[14] की वीरानी ।
अब इस उजडे हुए घर को बसा देने का वक्त आया ।।

६१. यह तूफाने-हसद[15], यह साज़िशे-बुग्ज़ो-रिया[16] कब तक ?
यह नफरत, आह जंजीरे-दरे-ख़ल्के-खुदा[17] कब तक ?
हर-इक दर पर मुहब्बत की सदा[18] देने का वक्त आया ।।
—रविश

---

१ आचरण, आचार-व्यवहार २ परिधान, लिबास ३ पूँजीवादी सभ्यता, धन-वैभव का गर्व ४ मानव रक्त से रजित है ५ रक्तलोलुप धन-सत्तावाद ६ लुटेरेपन से ७ पूँजीवाद के गढ मे ८ सुख-वैभव के दीपक प्रज्वलित हैं ९ सभ्यता १० आत्म-छल, आत्म-वचना ११ राजनीति १२ सकीर्ण मनोवृत्ति १३ दु खपूर्ण, शोक-पूर्ण १४ मानवता का निवास-गृह (मानवता का निवास-गृह शोकपूर्ण एव उजाड है) १५ ईर्ष्या का तूफान १६ द्वेष तथा मायाचारी का षड्यन्त्र १७ ईश्वरीय सृष्टि के द्वार की जजीर (साकल) कब तक लगी रहेगी १८ आवाज़ ।

नही वाकी रहा इन्सान मे जज्बा[1] शराफत[2] का।
अगर्चे[3] देखने को आज भी इन्सान वाकी है॥

४३. ऐ आस्मान ! तेरे .खुदा से नही है खौफ[4]।
डरते है ऐ जमीन ! तेरे आदमी से हम॥

—जोश

४४ न भाईयो से रही मिल्लत,[5] न यारो[6] से रही यारी[7]।
जो उल्फत[8] है तो जर[9] से है, यही वस सवको प्यारा है॥

४५ .खुदा के फज्ल[10] मे वीवी-मियाँ, दोनो मुहज्जव[11] हैं।
हिजाव[12] उनको नही आता, इन्हे गुस्सा[13] नही आता॥

— अकबर

४६. यह राज[14] अव कोई राज नही, सव अहले-गुलिस्ताँ[15] जान गये।
हर शाख़[16] पै उल्लू वैठा है, अजामे-गुलिस्ताँ[17] क्या होगा ?

—मुल्ला

४७ गुलशने-हस्ती[18] मे यकरगी[19] का आलम[20] आम था।
पहले सिर्फ इक कौम थी, इन्सान जिसका नाम था॥

४८. जो मरहले[21] है दीन के, उन सवसे क्या गरज ?
कॉलिज के पढने वालो को मजहव से क्या गरज ?

— विस्मिल

४९. पहले कभी समझ का उलट-फेर यूँ न था।
रौशन थी अक्ल, अक्ल का अन्धेर यूँ न था॥

—अकबर

---

१ भावना, विचार, ख़याल २ सज्जनता, सुशीलता, ३. यद्यपि ४ भय, डर ५ प्रेम-सद्भाव, मेल-जोल ६ मित्रो से ७ मित्रता, ८. प्रेम, मुहब्वत ९ धन १० कृपा, दया, मेहरबानी ११ सभ्य, शिष्ट, शिक्षित १२ पर्दा, लज्जा, शर्म, हिचकिचाहट, सकोच १३. क्रोध १४ रहस्य, भेद १५ चमन वाले १६. टहनी १७ उद्यान का परिणाम १८. जीवन, ससारोद्यान १९. एकात्मता, समानता २० स्थिति, हालत २१ समस्याएँ, प्रश्न।

५०. गामजन[1] सदियो से है, गो जादए-तहजीब[2] पर।
दूर है इन्सानियत से नौए-इन्सानी[3] बहुत ॥

५१ है यह सब तहज़ीवे-हाजिरकी[4] करम-फरमाईयाँ[5]।
हो गया है आज अरजाँ[6] खूने-इन्सानी[7] बहुत ॥

—अफसर मेरठी

५२. यह तहज़ीबे-हाजिरकी[8] इशवा-तराजी[9]।
कि है मर्द भी रश्के-जन[10] तौबा-तौबा ॥
वही सौमनातो के मेमार है, अब।
जो कल तक थे, खैबर-शिकन[11] तौबा-तौबा ॥

—मुअल्लिम

५३. बस्तियो-की-बस्तियाँ बर्बादो-वीराँ[12] हो गई।
आदमी की पस्तिया[13] आखिर नुमायाँ[14] हो गई ॥
कत्लो-गारत के हजारो दाग लेकर वहशते[15]।
आज सुनते है कि फिर इस्मत-बदामाँ[16] होगई ॥

—अर्श मलसियानी

५४ तहज़ीब का परचम[17] लहराया
हर शहरो-चमन वीरान[18] हुआ।
तामीर का[19] है सामाँ[20] जो यही,
तखरीब[21] का सामाँ क्या होगा ?

---

१. मार्ग-रत २ सभ्यता की पगडडी पर ३ वर्तमान मानवता ४ वर्तमान सभ्यता की ५ कृपा, मेहरबानियाँ ६ सस्ता ७ मानव-रक्त ८ वर्तमान सभ्यता की ९ हाव-भाव दिखाने का भाव, नाजो-अन्दाज १० नारी को भी लज्जित करने वाले ११ खैबर नामक एक अरब दुर्ग को तोड़ने वाले १२. नष्ट-भ्रष्ट १३ पतितावस्थाएँ १४ उजागर, प्रकट १५ पागलपन १६ शील को लूटने वाली १७ झडा १८ उजाड, सुनसान १९ निर्माण का २०. साधन-सामग्री २१. ध्वस, विनाश ।

६२ इसी तहज़ीबे-नौ ने[1] की नसाइय्यत की[2] बरबादी।
इसी ने छीन ली हम से मसर्रत की[3] फिरावानी[4]॥
यही तहज़ीबे-नौ है राहज़न[5] तकदीसो-ईमाँ[6] की।
इसी तहजीब ने मजरूह[7] कर दी रूहे-ईमानी[8]॥
ख़ुदा महफ़ूज़[9] रक्खे हमको इस तहज़ीब से दाइम[10]।
करे ख़ुददारियों[11] की ख़ालिके-अकबर[12] निगहबानी[13]॥

६३ नक़ल[14] अँग्रेजों की फैशन में तो करली तुमने।
नकल, पर तुमसे तरक़्क़ी[15] में उतारी न गई॥
किस तरह तौक़े-असीरी[16] का उतर सकता है?
जब कि यह टाई गले से भी उतारी न गई॥
ताव मूँछों पै दिया, बाल सँवारे, लेकिन—
कौम की बिगडी यह तक़दीर सँवारी न गई॥



१ नयी सभ्यता २ सदुपदेशों, नसीहतों की ३ ख़ुशी की ४ प्रचुरता, अधिकता ५ लुटेरी ६ पवित्रता तथा धर्म ७ घायल, ८. धर्म-विश्वास-रूप आत्मा की, ९ निरापद, सुरक्षित, सही-सलामत १० नित्य, सदा ११. स्वाभिमान तथा आत्म-गौरव की १२ ईश्वर, परमात्मा १३ देख-रेख, सुरक्षा १४ अनुकरण १५ उन्नति १६ बन्दीपन का पट्टा, पराधीनता का पट्टा।

जीना किस काम का, जो मंज़िल न मिले !



१. मिलना किस काम का, अगर दिल न मिले ।
जीना किस काम का, जो मंजिल न मिले ॥
२. मेरी जिन्दगी इक मुसलसल[1] सफर[2] है ।
जो मंजिल पै पहुँचा तो मंजिल बढ़ा दी ॥
३ आई सदा कि तू अभी मंजिल से दूर है ।
पहुँचा जहाँ-जहाँ भी मुझे दिल लिये हुए ॥

—दिल

४ ढूँढता फिरता हूँ ऐ 'इक़बाल' अपने-आपको ।
आप ही गोया मुसाफ़िर आप ही मंजिल हूँ मैं ॥

—इक़बाल

५ सँभलने दे ज़रा ऐ बेताबिये-दिल[3] ।
नज़र आते हैं आसारे-मंज़िल[4] ॥

—जज़्बी

६ अभी तकमीले-उल्फ़त[5] पर, न दिल मगरूर[6] हो जाए ।
यह मंज़िल वह है, जितनी तय हो, उतनी दूर हो जाए ॥
७ जितनी करीब[7] है मंज़िले-यार[8] ।
ऐ दिल ! उतनी ही दूर भी है ॥

—अहसान

---

१ निरन्तर, क्रम-बद्ध २ यात्रा ३ दिल की बेचैनी ४ गन्तव्य स्थान के लक्षण ५ प्रेम की पूर्णता पर ६ गर्वीला ७ समीप ८. प्रिय का गन्तव्य स्थान ।

८ अभी है मजि़ले-मकसूद[1] कोसो।
रहे पीछे 'जिगर हम कारवाँ[2] से॥

९ सफर करते हुए मंजिल-व-मंजिल जा रहे है हम।
मुझे यह सारी दुनिया, कारवाँ मालूम देती है॥

१० मजि़ले-ऐश[3] नही है यह सराये-फ़ानी[4]।
रात की रात ठहर जाएँ ठहरने वाले॥

११ मेरी हस्ती[5] शौके-पैहम[6], मेरी फितरत[7] इज़तराव[8]।
कोई मजि़ल हो, मगर गुज़रा चला जाता हूँ मैं॥

—जिगर

१२ न जाने कहाँ से, न जाने किधर से,
बस इक अपनी धुन मे उडा जा रहा हूँ।
निगाहो[9] मे मंजिल मेरी फिर रही है,
यूँ ही गिरता-पडता चला जा रहा हूँ॥
न इदराके-हस्ती[10] न एहसासे-मस्ती[11],
जिधर चल पडा हूँ चला जा रहा हूँ॥

१३ भटका हूँ अपनी मजि़ले-मक़सूद से वारहा[12]।
आसान[13] जानकर कभी दुशवार[14] जानकर॥

—अहसान दानिश

१४ मजाहब[15] क्या है ? राहे[16] मुख्तलिफ[17] है एक मजि़ल की।
है मजिल क्या ? जहाँ सव कुछ है, पर राहे नही होती॥

—अफसर

---

१. लक्ष्य-विन्दु २ काफला, यात्री-दल ३. सुख-धाम ४. क्षणिक निवास स्थान ५ अस्तित्व, जीवन ६ निरन्तर उत्कण्ठा ७ स्वभाव ८. व्याकुलता, वेचैनी ९ नजरो १० अस्तित्व का ज्ञान, जीवन की समझ ११. मस्ती की अनुभूति १२ कई वार १३ सुगम, सरल १४ कठिन १५ धर्म, पन्थ १६ मार्ग १७ विभिन्न, अलग-अलग।

१५ इस तरह तय की हैं हमने मंज़िलें ।
गिर पडे, गिर कर उठे, उठ कर चले ॥

—हैदरअली

१६. ठहरे अगर तो मजिले-मकसूद फिर कहाँ ?
सागर[1] बकफ[2] गिरे तो सँभलना न चाहिए ॥

१७ न कामयाब[3] हुआ मैं, न रह गया महरूम[4] ।
बडा ग़ज़ब है कि मजिल पै खो गया हूँ मैं ॥

१८ अभी कोई मजिल नही कोई मज़िल,
अभी पाये-हिम्मत[5] बढाता चला जा ।
कहाँ के मनाजिर[6], कहाँ के मज़ाहिर[7],
तू खुद अपने नज़दीक[8] आता चला जा ॥
कयूदे-दो-आलम[9] से आजाद[10] होकर,
हदूदे-मुहब्बत[11] बढाता चला जा ॥

—जिगर

१९ इससे बढके और क्या बे-राहरवी[12] होगी ।
गामे-पुरशौक[13] का मज़िल से शनासा[14] होना ॥

—असगर

२० हर क़दम पर थी उसकी मज़िल, लेक[15] ।
सर से सौदाए-जुस्तजू[16] न गया ॥

—मीर

२१. 'काफिर' बिचारा किस क़दर काफिर नसीब[17] है ।
मजिल पै पहुँच के भी हम मजिल से दूर हैं ॥

—काफिर

---

१ प्याला २. हाथ मे ३ सफल ४ वचित ५ साहस पूर्ण पग ६. दृश्य ७. प्रदर्शन ८ समीप ९ लोक परलोक के विधान या नियम-उपनियम १० स्वतन्त्र ११ प्रेम की सीमा १२ गुमराही, पथ-भ्रष्ट १३ साहस पूर्ण पग का १४ परिचित, जानकार १५ परन्तु १६ तलाश का पागलपन १७. भाग्यहीन ।

२२ रसा[1] ऐ खिज्रे-मंजिल[2]! कौन उसके आस्तां[3] तक है।
वही तक मुझको पहुँचा दे, नजर मेरी जहाँ तक है॥
—नातिक

२३ न वाकिफ[4] कारवाँ से हूँ, न कुछ आगाह[5] मजिल से।
किया मै वादिये-उल्फत[6] को तै इक जुबिशे-दिल[7] से॥
—क़ुदरत

२४ रहरवे-राहे-मुहब्बत[8] रह न जाना राह मे।
लज्ज़ते-सहरानवर्दी[9] दूरिये-मजिल[10] मे है॥
—बिस्मिल

२५. मज़िले-मकसूद तक पहुँचे बडी मुश्किल से हम।
जौफ[11] ने अक्सर[12] बिठाया, शौक[13] अक्सर ले चला।
—दाग़

२६. उन्ही को हम जहा मे रहरवे-कामिल[14] समझते है।
जो हस्ती को सफर और कब्र को मजिल समझते हैं॥
—बर्क

२७. मै चाहता हूँ कि मजिल ही मुँह से बोल उठे।
फिजा-शनास[15] कोई मेरे कारवाँ मे नही॥
—सीमाब

२८. पहुँचे है जो अपनी मज़िल पर, उनको तो नही कुछ नाजे-सफर।
चलने का जिन्हे मकदूर[16] नही, रफ़्तार की बाते करते हैं॥

२९ चले जब राह मे उसकी तो तफरीक[17] क्या मानी?
जहाँ पर पाँव पड जाए, वही मज़िल समझते है॥
—शकील

---

१. पहुँचा हुआ २ मार्ग-दर्शक ३. चौखट ४ परिचित ५ जानकार ६ प्रेम की घाटी को ७. हृदय की गति, दिल की हरकत से ८. प्रेम-पथ के पथिक ९ जगल मे घूमने का मजा १०. गन्तव्य स्थान का दूरस्थ होना ११ दुर्बलता १२ प्रायः, बहुधा १३ लगन १४ पूर्ण पथिक १५ हालात का जानकार १६ शक्ति १७ भेद-भाव।

३० नही मुमकिन कभी वोह मजिले-मकसूद पर पहुँचे !
जो पहले ही कदम पर हो गया सरगस्ताँ-ओ-हैरा[1] !!

—नाशाद

३१. अपने कदम के साथ है मजिल लगी हुई !
मंजिल पे जो नही, वोह हमारा कदम नही !!

—निहाल

३२. हमी थे क्या जुस्तजू का हासिल[2],
हमी थे क्या आप अपनी मजिल ?
वही पै आकर ठहर गया हूँ,
चले थे जिस रहगुजर[3] से पहले ।।

३३ अव्वल-अव्वल हर क़दम पर, थीं हज़ारो मजिले ।
आख़िर-आखिर इक मुक़ामे-बेमुकाम आ ही गया ।।

३४. फिक्रे-मंजिल है, न होशे-जादये-मज़िल[4] मुझे ।
जा रहा हूँ, जिस तरफ ले जा रहा है दिल मुझे ।।

—जिगर

३५. न हिम्मत हार ऐ मज़िल के राही !
कि मंज़िल भी अब तेरी मुन्तजिर[5] है ।।

३६. मुसाफ़िर पहुँच कर मजिल पे अपनी चैन पाते है ।
वो मौजें[6] सर पटकती है; जिन्हे साहिल[7] नही मिलता ।।

३७ दुनिया की सैर करने को ठहरे नही है हम ।
दम ले लिया है मजिले-दुशवार देखकर ।।

—अख्तर

३८ सिर्फ इक कदम उठा था ग़लत राहे-शौक़[8] मे ।
मज़िल तमाम उम्र मुझे ढूँढती रही ।।

—अदम

---

१ हैरान और परेशान २ प्राप्तव्य ३ मार्ग से, पड़ाव से ४. गन्तव्य स्थान के पाथेय की सुध ५ प्रतीक्षा मे ६. लहरें ७ किनारा ८. प्रेम-मार्ग ।

३९ 'फिराक़' तू ही मुसाफिर है, तू ही मंज़िल है।
क्रिधर चला है मुहब्बत की चोट खाये हुए॥

—फिराक

४०. यहाँ नेकी-वदी[1] दो रास्ते हैं, गौर[2] से सुन ले।
तुझे जाना है किस मंजिल पै, अपना रास्ता चुन ले॥

४१ सर शमा-सा कटाइए, पर दम न मारिए।
मंजिल हजार दूर हो, हिम्मत न हारिए॥

४२. मंजिल से भी नावाकिफ[3] हैं[3] राह से भी आगाह[4] नही।
अपनी धुन मे फिर भी रवाँ[5] है, यह भी अजब दीवाने हैं॥

—आजाद

४३. सरे-मंज़िल पहुँच सकता नही वोह काफिला हर्गिज।
जिसे रहवर[6] पै भी बेगानये-मंजिल[7] का धोका है।

४४ सामने मंज़िल है और आहिस्ता उठते है कदम।
पास आकर हो रहे है दूर फिर मंज़िल से हम।
कामयाबी मे भी है नाकामयाबे-ज़िन्दगी[8]।
ऐन मंजिल पर नहीं हैं आश्ना[9] मंज़िल से हम॥

—अलम

४५. गर्चे[10] हूँ गुमराह[11], मंज़िल पर पहुँच जाऊँगा मैं।
रहरवो[12] के पाँव के चलते निशाँ[13] को देखकर॥

—नाशाद

४६ चलते-चलते थक गया, अफ़सोस है।
फिर भी मंजिल मेरी लाखो कोस है॥

४७. मंजिल की जुस्तजू से पहले किसे खबर थी?
रस्तो के बीच होगे और रहनुमा[14] न होगा॥

—कैफी

---

१ अच्छाई-बुराई २. ध्यान ३ अपरिचित ४- अभिज्ञ ५ गतिशील ६ पथ-प्रदर्शक ७ गन्तव्य स्थान से अपरिचित ८. जीवन की असफलता ९ परिचित, अभिज्ञ १० यद्यपि ११ भटका हुआ, अनभिज्ञ १२ यात्रियो १३ चिन्ह को १४. मार्ग-दर्शक।

४८ हजार नाकामियाँ[1] हो 'नश्तर' हज़ार गुमराहियाँ हो, लेकिन ।
तलाशे-मजिल अगर है दिल से, तो एक दिन लाजिमी[2] मिलेगी ॥

—नश्तर

४९ खुद्दारियाँ[3] यह मेरे तजस्सुस[4] की देखना ।
मज़िल पे आके अपना पता पूछता हूँ मै ॥

—अफसर मेरठी

५०. काट लेना हर कठिन मज़िल का कुछ मुश्किल नही ।
इक ज़रा इन्सान मे चलने की आदत चाहिए ॥

५१ अहले-हिम्मत[5] मजिले-मकसूद तक आ ही गए ।
बन्दए-तकदीर[6] किस्मत का गिला[7] करते रहे ॥

—चकवस्त

५२ दिल को होना था जुस्तजू[8] मे खराब ।
गाम थी वर्ना मजिले-मकसूद ॥

—जज्बी

५३. खुद जानता हूँ मजिले-मकसूद का पता ।
हँसता हूँ छेड-छाड के हर राहबर[9] को मैं ॥

५४ मज़िल किधर है, इस पै अपनी नजर नही ।
जो राह मे मिला उसी राही के साथ है ॥

५५. क़िस्मत पै उस मुसाफिरे-बेबस[10] की रोइए ।
जो थक गया हो सामने मज़िल के बैठ के ॥

५६ तू कहाँ है कि तेरी राह मे यह काबा औ दैर[11] ।
नक्श[12] बन जाते हैं, मजिल नही होने पाते ॥

—फानी

---

१ असफलताएँ २ अवश्य ३ अहमन्यता ४ तलाश ५. साहसी ६ भाग्यवादी ७. शिकायत ८ तलाश ९ मार्ग-दर्शक को १० विवश यात्री ११ मन्दिर १२ चित्र, चिन्ह ।

५७ आह ! किस की जुस्तजू[1] आवारा[2] रखती है तुझे।
राह[3] तू, रहरौ[4] भी तू, रहबर[5] भी तू, मंजिल[6] भी तू ॥
—इक़बाल

५८ बेख़बर[7] मंजिल से हैं वोह सालिकाने-राहे-इश्क़[8]।
जो क़दम रखते है राह-ओ-रस्मे-मंजिल[9] देखकर ॥
—वहशत

५९ फिर मैं आया हूँ तेरे पास, ऐ अमीरे-कारवाँ[10]।
छोड़ आया था जहाँ तू, वह मेरी मंजिल न थी ॥

६० उक़ाबी रूह[11] जब बेदार[12] होती है जवानो मे।
नजर आती है उनको अपनी मंज़िल आसमानो मे ॥
—इक़बाल

६१. आएगी हाथ मंज़िले-मक़सूद .खुद-ब-.खुद[13]।
देखो तो चल के चार क़दम राहबर के साथ ॥

६२. वही रस्ता हूँ .खुद चलने लगा जो मेरे चलने मे।
जो .खुद चलने लगी मंज़िल, वही मैं एक मंज़िल हूँ ॥

६३ चाहूँ तो अब भी जानिबे-मंजिल[14] पलट चलूँ।
गुमराह इसलिए हूँ कि रहबर ख़फ़ा[15] न हो ॥

६४ ख़िज्रे-रहे-मंजिल[16] तेरा गर दिल नही होता।
मंजिल का पता सैकड़ो मंज़िल नही होता ॥

६५. क़यामत[17] तक रहे यह लुत्फ़ ज़ौक़े-जुस्तजू[18] मेरा।
जो थक कर बैठ जाऊँ तो मंज़िल दूर हो जाए ॥
—माजिद

---

१ तलाश २. घुमक्कड़ ३ पथ ४ पथिक, ५. पथ-प्रदर्शक ६ गन्तव्य स्थान ७. अनभिज्ञ, अनजान ८ प्रेम-पथ के पथिक ९ प्रेम-मार्ग के रीति-रिवाज १०. काफ़ले का सरदार ११. गिद्ध-की सी आत्मा १२ जाग्रत १३. अपने आप १४ गन्तव्य स्थान की ओर १५. नाराज १६ गन्तव्य स्थान का मार्ग-दर्शक १७. प्रलयकाल १८. तलाश की लगन ।

६६ इनको क्या मालूम क्या मंजिलत[1] इन्सान की ?
यह गुलामी को समझते हैं सिफत[2] इन्सान की ॥

—निहाल

६७ जो तुन्द[3] बगूलों[4] से उलझे, वोह अज्मे-सफर[5] की बात करें।
इस मंजिले-नौ[6] के रस्ते मे कितने ही बयाबाँ[7] होते हैं ॥

६८ कदम चूम लेती है खुद आके मंजिल।
मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे ॥

६९ पस्त-हिम्मत[8] वोह हैं राहे-शौक मे जो रह गए।
हौसले वाले के आगे दूर कुछ मंजिल नहीं ॥

७० जहाँ खुद खिज्रे मंजिल राहे-मंजिल भूल जाता है।
हमे आता है उन पुर-पेच[9] राहों से गुजर जाना ॥

—अनवर

७१. सफर मे सई-ए-कामिल[10] हो तो निकले राह मंजिल की।
कि दरिया की रवानी[11] से बिना[12] पडती है साहिल की ॥

७२ गुमरही[13] खुद मंजिले-मकसूद की है रहनुमा[14]।
खिज्र मिल जाते हैं, जिनको रास्ता मिलता नहीं ॥

७३ क्यों किसी रहबर से पूछूँ अपनी मंजिल का पता ?
मौजे-दरिया[15] खुद लगा लेती है साहिल का पता ॥

७४ चाल धीमी है तो क्या, आएगी मंजिल जरूर।
खौफ[16] गिर जाने का भी तो तेज-रफ्तारी मे है ॥

७५. उठता नहीं है अब तो कदम मुझ गरीब का।
मंजिल से कह दो दौड के ले मुझको राह मे ॥

---

१ गन्तव्य दिशा २ खूबी, विशेषता ३ तीव्र ४ झोंको ५. यात्रा का संकल्प ६. नूतन गन्तव्य स्थान के ७ सुनसान जंगल ८ अनुत्साही ९ टेढ़ी-मेढी १० पूर्णांत प्रयत्नशील ११ प्रवाह, बहाव १२ नींव, बुनियाद १३ भूल जाना, भटकना १४. मार्ग-दर्शन १५. नदी की लहर १६. भय, डर ।

७६ मंजिल की तरफ अपना कदम जितना बढाता हूँ।
जिसे नजदीक समझा था, उसे अब दूर पाता हूँ॥

७७ न पीछे हटाया क़दम को बढाकर।
अगर दम लिया भी तो मंज़िल पै जाकर॥

७८ घर बैठे हमे हाथ लगी मंजिले-मकसूद।
जब बैठ गए तोड़ के हम पाँव तलब[1] के॥

७९ इरादे तो है मंजिल के, सफ़र करना नही आता।
हमे कहना तो आता है, मगर करना नही आता॥

८० जुस्तजू-ए-यार[2] मे गुम[3] खुद मेरा दिल हो गया।
यह मुसाफिर चलते-चलते आप मंजिल हो गया॥

८१ गर्दिश[4] जो हो तकदीर मे कुछ सई[5] काम आती नही।
मंजिल कुछ आगे बढ गई, पहुँचा जो मैं मंज़िल के पास॥

—ताज मुनव्वर

८२. क़दम बढाओ खिजानसीबो[6]! वो मंज़िले मुन्तजिर[7] है अपनी।
जहाँ पहुँच कर निगाहे-दिल[8] को, बहार[9] की ताज़गी[10] मिलेगी॥

—शाद

८३ खबर हो कारवाँ को मंजिले मक़सूद[11] की क्यो कर ?
बजाये रहनुमाई[12] रहजनी[13] है आम ऐ साकी॥

—आजाद

८४. अभी कोई मंजिल नही तेरी मंजिल।
अभी पाये-मंजिल बढाता चला जा॥

—जिगर

८५ मंज़िल मे मुहव्वत की हस्ती[14] ही रुकावट है।
कल बज्म[15] मे कहता था हँसता हुआ परवाना॥

—साही

---

१ चाह, इच्छा, कामना २. प्रिय की खोज ३ विलुप्त ४ चक्कर ५ कोशिश, पुरुपार्थ ६ पतझड मे रहने वालो ७. प्रतीक्षित ८ मन की दृष्टि ९. वसन्त १० स्फूर्ति ११ लक्ष्य १२. पथ-प्रदर्शक १३ लुटेरापन १४. जीवन १५. महफ़िल, सभा।

८६ जहाँ तक आखिरी नजरें तेरी मुश्किल से पहुँची है ।
वही मजिल की हृद है ख्वावे-मजिल देखने वाले ॥
—जज्बी

८७ आगे वढने को वढे मज़िल-ब-मजिल हम, मगर ।
यह नही सोचा कभी आखिर कहाँ तक आ गए ?
—मजूर अयूबी

८८. हमे राहे-तलव[1] मे ख़ाक हो जाने से मतलब है ।
कदम पहुँचे न पहुँचे मज़िले-मकसूद पर अपना ॥
—बक़

८९ जबी[2] पै वल[3] तक न आने पाये, सऊबतो[4] को उठाते जाओ ।
मिले न जब तक निशाने[5]-मज़िल, कदम को आगे बढाते जाओ ॥

९०. जरा इतना तो फर्मा दे कि मज़िल की तमन्ना मे ।
भटकते हम फिरेंगे ऐ अमीरे-कारवाँ[6] कब तक ?
—जगन्नाथ आज़ाद

९१ वोह अज्म[7] है जो ले आता है,
कदमो तक खीच के मंजिल को ।
इस राज़[8] को रहबर[9] क्या समझे,
इस भेद को मजिल क्या जाने ?

९२. जब इश्क हो अपनी धुन मे रवाँ[10]
बे-खौफो-खतर मज़िल की तरफ ।
वोह राह की मुश्किल क्या समझे,
वोह दूरिए-मज़िल[11] क्या जाने ?
—आज़ाद

---

१ मार्ग की चाह २. मस्तक ३ सलवट, शिकन ४ कठिनाइयो, कष्टो ५ चिन्ह ६ यात्री दल के नेता ७ सकल्प, इरादा ८ मार्ग दर्शक ९. जाता हुआ, वहता हुआ १० विना किसी भय और खटके के, निर्भयता के साथ, ६ गन्तव्य की दूरी को ।

९३ पाये-तलब[1] भी तेज़ था, मंजिल भी थी क़रीब[2]।
लेकिन नजात[3] पा न सके रहनुमां[4] से हम ॥
९४ न आने दिया राह पर रहबरो ने[5]।
किये लाख मंजिल ने हमको इशारे ॥

—अर्श मलसियानी

९५. ख़ुदी[6] को अपनी मिटा चुके हैं,
अब अपनी हस्ती[7] मिटा रहे हैं।
हटा के रस्ते से हम यह पत्थर,
करीब[8] मज़िल के जा रहे हैं ॥

—नफीस देहलवी

९६. गुमाँ[9] था मंजिल का मुझको जिस पर,
वहाँ पहुँच कर खुला यह उक़दा[10]।
कि मैं भी गुमकरदहराह[11] तुम भी,
यहाँ कोई राहदाँ[12] नही है ॥

—अफसर

९७. होगी इसी तरह से तै मंजिले ओज[13] की तमाम।
रफअते-महरो माह को[14] फर्शे कदम[15] बनाये जा ॥

—निहाल सेवहारवी

९८. आस्माँ मबहूत[16] था, तपती जमी खामोश थी।
एक वीरां रास्ते पर जा रहा था एक जवाँ[17] ॥
मैंने पूछा—"ऐ मुसाफिर ! किस तरफ जायेगा तू ?"
कांपती आवाज़ मे बोला—"मेरी मज़िल कहां ?"

---

१ चाह का चरण २ निकट, नजदीक ३ मुक्ति, छुटकारा ४. पथ-प्रदर्शक-से ५ मार्ग-दर्शको ने ६ अहभाव को ७ अस्तित्व ८ निकट, समीप ९. विश्वास, सन्देह १०. भेद ११ मार्ग भ्रष्ट, मार्ग से भटका हुआ १२ मार्ग मे अभिज्ञ, मार्ग जानने वाला १३ उन्नति की, विकास की १४ १५. सूर्य-चन्द्र की चाल के साथ चल १६ हक्का-बक्का, हैरां १७ युवक ।

९९. तुझे मालूम क्या मर्दे-ख़िरदमन्द[1],
कि मेरे शौक की मजिल कहाँ ?
ख़िरद[2] नन्ही-सी इक महदूद[3] वस्ती,
मुहव्वत एक ख़लाए-बेकराँ[4] है ॥

—नदीम क़ासिमी

१०० वोह सामने सरे-मजिल चिराग जलते हैं ।
जवाब पाँव न देते तो मैं कहाँ होता ?

—राज रामपुरी

१०१ न जाने कौन रहज़न[5] का कदम हो, कौन रहबर[6] का ।
मिटा डाला रहे-मजिल[7] का इक-इक नक्शे-पा[8] मैंने ॥

—शाद आरफी

१०२ गजब है जुस्तजूए-दिलका[9] यह अजाम[10] हो जाये ।
कि मजिल दूर हो और रास्ते मे शाम हो जाये ॥

—शेरी भोपाली

१०३. मुक़ाम ऐसा भी आता है राहे-ज़िन्दगानी मे[11] ।
जहाँ मज़िल भी गर्दे-कारवाँ[12] मालूम देती है ॥

—हुरमत उलइकराम

१०४. है कारवाँ[13] अभी मज़िल से दूर ही लेकिन ।
यह कम नही है, कि रहज़न[14] की रहबरी[15], न रही ॥

—मजहर इमाम

१०५ यह हादसाते-इश्क़[16] नही है तो और क्या ?
मज़िल कही है, दिल है कही, राहबर[17] कही ॥

— मशीर झिझानवी

---

१ अक्लमन्द २ अक्ल ३ सीमित ४ असीमित क्षेत्र ५ लुटेरे का ६ पथ-प्रदर्शक का ७ गन्तव्य मार्ग का ८ चरण-चिन्ह ९ मन की खोज का १०. परिणाम, स्थिति ११ जीवन के मार्ग मे १२ यात्री दल की धूलि १३. यात्री दल १४ लुटेरो की १५ नेतृत्व १६ प्रेम-सम्बन्धी घटनाएँ १७. पथ-प्रदर्शक ।

१०६. दीदनी[1] है यह जनूने-शौक़ की वा-रफ़्तगी[2]।
पूछते हैं अपनी मज़िल का पता मंज़िल से हम ॥
१०७ तेरे कूचे तक पहुँचने मे पड़ी सौ मजिले।
वे-नियाज़ाना[3] गुजर आये हर-इक मजिल से हम ॥
— मन्सूर सईदी

१०८. खुदा मालूम ? मूसा तूर से[4] क्यो वेकरार[5] आये ?
मेरी मजिल मे ऐसे मरहले[6] तो वेशुमार आये ॥
— बिस्मिल शाहजहाँपुरी

१०९. ठोकर किसी पत्थर से अगर खाई है मैंने।
मजिल का निशा[7] भी उसी पत्थर से मिला है।
—बिस्मिल सईदी

११० रहबर[8] ने रहज़नो[9] से बढाई है दोस्ती।
मंजिल पै आके लुटने का इमकाँ[10] अभी से है ॥
—निशात सईदी

१११. मिल गया आख़िर निशाने-मंजिले-मकसद[11], मगर।
अब यह रोना है कि ज़ौके-जुस्तजू[12] जाता रहा ॥
११२ रहवर[13] या तो रहजन[14] निकले या है अपने आप मे गुम[15]।
काफिलेवाले किससे पूछें, किस मज़िल तक जाना है ?
—अर्श मलसियानी



---

१ देखने योग्य २ प्रेम के उन्माद का दौर ३ निरपेक्ष भाव से ४ शाम [सीरिया] का एक पर्वत, जिस पर हज़रत मूसा ने ईश्वर का जलवा देखा था ५ व्याकुल, वेचैन ६ पड़ाव, उतरने का स्थान ७ पता, चिन्ह ८ पथ-प्रदर्शक ने ९ लुटेरो से १०. सम्भावना ११ उद्देश्य-पूर्ति का साधन १२. खोज की लगन या रुचि १३ मार्ग-दर्शक १४. लुटेरे १५ आत्मविस्मृत, खोये हुए।

ज़िन्दगी जिन्दादिली का नाम है !



१ ज़िन्दगी जिन्दादिली[1] का नाम है।
मुर्दा-दिल[2] ख़ाक जिया करते हैं॥

—नासिख़

२. होशियार ओ कामयाबे-जिन्दगी[3]।
जिन्दगी नाकामियों[4] का नाम है॥

—जोश

३ हर नफस[5] आह और अनफास[6] पै जीने का मदार[7]।
ज़िन्दगी आहे-मुसलसल[8] के सिवा कुछ भी नहीं॥

—फानी

४ न समझने की बातें है, न ये समझाने की।
जिन्दगी उचटी हुई नींद है दीवाने की॥

—फिराक़

५ .ख़ुलूसे-इश्क़[9], न जोशे-अमल[10], न दर्दे-वतन[11]।
यह ज़िन्दगी है ख़ुदा या जिन्दगी का कफन ?

—जिगर

---

१ जीवितहृदयता २ मृतकहृदय ३ सफल जीवन वाले ४ असफलताओ का ५ प्राण ६ प्राणो पर ७ इच्छा, कामना ८ निरन्तर दुःख, अटूट आह ९. प्रेम-निष्ठा १० आचरण का उत्साह ११. राष्ट्र के प्रति सहानुभूति।

६. कही से ढूँढ कर ला दे हमे भी ऐ गुलेतर[1]।
वोह जिन्दगी जो गुजर जाय मुस्कराने मे ॥

—आरज़ू

७ होश जब आया तो क़यामत[2] आ गई।
जिन्दगी मेरी जभी तक है कि मै गफलत[3] मे हूँ ॥

—दाग़

८. जिन्दगी है या कोई तूफान है,
हम तो इस जीने के हाथो मर चले।
दोस्तो! देखा तमाशा यॉंका बस,
तुम रहो, अब हम तो अपने घर चले ॥

—दर्द

९ नही जिन्दगी को वफा[4] वर्ना 'अख्तर'।
मुहब्बत से दुनिया को मामूर[5] कर दूँ ॥

—अख्तर

१० दारे-फानी[6] मे यह क्या ढूँढ रहा है 'फानी'।
ज़िन्दगी भी कही मिलती है फना[7] से पहले ॥

—फ़ानी

११ कोई नामालूम[8] मजिल है .खुदा जाने कहाँ ?
जिन्दगी जिसकी तरफ इक मुस्तकिल[9] परवाज़[10] है।

—ख़याल

१२ जिन्दगी नाकामियो[11] की इक मुसलसल[12] दास्ता[13]।
मौत क्या है, जिन्दगी की दास्ताँ का खात्मा[14] ॥

—महरूम

---

१ फूल २. प्रलय ३ प्रमाद, अज्ञान ४. बात निबाहना ५. पूर्ण, भरा हुआ ६ नश्वर ससार ७. मृत्यु से ८. अज्ञात ९ स्थायी १०. उडान ११. असफलताओ की १२ क्रम-बद्ध, निरन्तर १३ कहानी १४ समाप्ति।

१३ जिन्दगी तो नाज[1] के काबिल[2] नही।
जिन्दगी पर सब को बेजा[3] नाज है॥

—बिस्मिल

१४ जिन्दगी का साज भी क्या साज है ?
बज रहा है और बे-आवाज है॥

१५ उम्रे-अजीज़[4] गुजरी हसरत-परस्तियो[5] मे।
ऐसी भी जिन्दगी का या रब ! हिसाब होगा ?

१६ मैं यह कहता हूँ फना को भी अता[6] कर जिन्दगी।
तू कमाले-जिन्दगी[7] कहता है मर जाने मे है॥

—असग़र

१७ इत्तहादे-बाहमी[8] का है नतीजा जिन्दगी।
जर्रे क्या शै थे, मगर मिलने से इन्सॉं होगया॥

—साक़िब

१८ यही ज़िन्दगी मुसीबत[9], यही जिन्दगी मसर्रत[10]।
यही जिन्दगी हकीकत[11], यही जिन्दगी फसाना[12]॥

१९ ऐश से क्यो .खुश हुए, क्यो गम से घबराया किये।
जिन्दगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किये॥

—जज्बी

२० जिन्दगी क्या है, गुनाहे-आदम[13]।
जिन्दगी है तो गुनहगार[14] हूँ मैं॥

—नजाज

२१ यह भी कोई जिन्दगी है गम की मारी ज़िन्दगी ?
चीखती, रोती, बिलखती, बिलबिलाती ज़िन्दगी॥

—सबा

---

१ अभिमान, गर्व २. योग्य ३ अनुचित ४ प्यारी उम्र ५ इच्छाओ की पूजा ६ प्रदान ७ जीवन की वास्तविकता ८ पारस्परिक एकता, मेल-जोल ९ दुख, विपत्ति १० खुशी, सुख ११ वास्तविक सच्चाई १२ कहानी १३. बाबा आदम का पाप १४. पापी।

२२. दारे-फानी मे हो गाफिल मौत से इक पल नही।
क्या भरोसा ज़िन्दगी का आज है और कल नही॥

२३ ज़िन्दगी है, फर्ज़[1] अदा[2] करने का नाम।
जिन्दगी है, फर्ज़ पै मरने का नाम॥

—नज़र

२४ ज़िन्दगी क्या है? अनासिर[3] मे जहूरे-तरतीब[4]।
मौत क्या है? इन्ही अजजा का[5] परेशाँ होना[6]॥

—ग़ालिब

२५. 'वर्क' उसकी ज़िन्दगी है दरहक़ीक़त[7] ज़िन्दगी।
जिसको दुनिया मे सकूने-क़ल्ब[8] हासिल हो गया॥

—वर्क

२६. यह माना जिन्दगी है चार दिन की।
बहुत होते है यारो! चार दिन भी॥

—फ़िराक़

२७. क्या-क्या बताऊँ तुमको, क्या-क्या छुपाऊँ तुमसे?
इस जिन्दगी की हालत सागर से कम नही है॥

२८ इक मुअम्मा[9] है समझने का न समझाने का।
जिन्दगी काहे की है, ख्वाब[10] है दीवाने[11] का॥

—फानी

२९ उमीदो मे ही जाने-ज़िन्दगी[12] है।
तमन्ना[13] पासवाने-जिन्दगी[14] है॥
वोह जिन्दा क्या है जिसका बुझ गया दिल।
सरासर नौहा-ख्वाने-ज़िन्दगी[15] है॥

—अम्न

---

१ कर्तव्य २. पूर्ण, पूरा ३. तत्त्वो में ४. क्रमबद्ध प्रकटीकरण, ५ तत्त्वो का ६ बिखर जाना, अलग-अलग हो जाना ७ वस्तुतः ८ मन की शान्ति ९ गुत्थी, पहेली १० सपना ११ पागल का १२ आशाओ पर ही जीवन निर्भर है १३. आशा १४. जीवन की रक्षक १५ जिन्दगी का मातम।

३०. जिन्दगी इन्साँ की है मानिन्दे-मुर्गे-खुशनवा[1]।
शाख पर बैठा कोई दम, चहचहाया, उड गया ॥
३१ समझता है तू राज़[2] है जिन्दगी।
फकत[3] ज़ौके-परवाज[4] है जिन्दगी ॥

—इक़बाल

३२. कभी मुस्कराहट, कभी चश्मे-पुरनम[5]।
बस इतना-सा है जिन्दगी का फसाना ॥

—सलमा

३३ पर्दा-दर-पर्दा, नक़ाब-दर-नकाब[6]।
जिन्दगी कितना रसीला साज है ॥

—ताजवर

३४. यही है जिन्दगी तो जिन्दगी से खुदकशी[7] अच्छी।
कि इन्साँ आलमे-फानी[8] पै बार[9] हो जाए ॥

—जिगर

३५. महदूद[10] जिन्दगानी दुनिया है इस क़दर[11]।
हर साँस पर गुमाँ[12] है, कही आखिरी[13] न हो ॥

—नानक

३६ जिन्दगी इक तीर है, जाने न पाए रायगाँ[14]।
देखलो पहले निशाना[15], बाद मे खीचो कमाँ ॥
३७. गम[16] की तलछटके सिवा कुछ जामे-हस्ती[17] मे नही।
है हकीक़त मे सरापा[18] सोज[19] साजे-जिन्दगी[20]।
बुलबुला पानी पै उट्ठा और मिटकर यह कहा।
यह मआले-जिन्दगी[21] है, यह है राजे-जिन्दगी[22] ॥

---

१. मृदुभाषी पक्षी की तरह २ रहस्य ३. केवल ४ उड़ने की अभिरुचि ५ गीली आँखें, रोना ६. आवरण ७. आत्महत्या ८. नश्वर ससार पर ९ भार, बोझ १० सीमित ११. इतनी १२. शक, सन्देह १३ अन्तिम १४ व्यर्थ १५ लक्ष्य १६. दुख, रंज की १७ जीवन के प्याले मे १८. सिर से पैर तक १९ जलन, दुख, आह २० जीवन का बाजा २१. जीवन का परिणाम, अन्त २२ जीवन का रहस्य।

३८. ज़िन्दगी की रह[1] मे चल, लेकिन जरा बच-बच के चल।
यह समझ ले कोई मीनाखाना[2] बारे-दोश[3] है॥
३९ कौन कहता है कि मौत अंजाम[4] होना चाहिए।
ज़िन्दगी का जिन्दगी पैगाम[5] होना चाहिए॥

—असर

४० जिन्दगी की दूसरी करवट थी मौत।
जिन्दगी करवट बदल कर रह गयी॥
४१. 'फानी' की ज़िन्दगी भी क्या जिन्दगी थी या रब।
मौत और जिन्दगी मे कुछ फर्क चाहिए था॥

— फानी

४२ सैकडो गम है, हजारो रज है लाखो अलम।
क्या बताऊँ आपसे, क्या है हिसाबे-जिन्दगी[6]॥
दिल अगर खुश है तो सब कुछ है, नही तो कुछ नही।
यह सवाबे-जिन्दगी[7] है, यह अज़ाबे-जिन्दगी[8]॥
४३. जिन्दगी इल्मो[9]-हुनर[10] अज्मो[11]-अमल[12] का नाम है।
जिन्दगी उसकी है जिसको है शऊरे-जिन्दगी[13]॥
४४. आरज़ू[14], फिर आरज़ू के बाद खूने-आरज़ू[15]।
चार हर्फों[16] मे है सारी दास्ताने-ज़िन्दगी[17]॥
४५. जिन्दगी क्या है मुसलसल[18] इज्तराब[19]।
इज्तराबे-दिल[20] से फिर घबराएँ क्या ?

—शातिर

---

१. मार्ग मे २. पात्र-घर ३ कन्धे का बोझ ४. परिणाम, नतीजा ५. सन्देश ६. जीवन का हिसाब ७ पुण्यमय जीवन ८ पापमय जीवन ९–१०–११–१२ विद्या, गुण या कला, विचार=ज्ञान और आचरण का १३. जीवन का ज्ञान, जीवन की समझ, जिन्दगी का होश १४ इच्छा, कामना, हविस १५ कामना की अपूर्ति १६ शब्दो मे १७ जीवन की कहानी १८. निरन्तर, लगातार १९ बेचैनी, व्याकुलता २० मन की व्याकुलता।

४६. वह सौदा जि़न्दगी का है कि गम इन्सान सहता है।
नही तो है बहुत आसान इस जीने से मर जाना॥

—चकबस्त

४७. इक जान का अजाब[1] है, यह जि़न्दगी नही।
अल्लाह किस बला[2] मे गिरफ्तार[3] होगए?

—अकबर

४८. यह अकामत[4] मे हमे पैगामे-सफर[5] देती है।
जिन्दगी मौत के आने की खबर देती हैं॥

—जौक़

४९. मआ़ले[6]-जि़न्दगी को सोचकर धुनता हूँ सर पहरो।
वोह कैसे लोग हैं या रब! जिन्हे जीने का अरमाँ[7] है?

५०. हम हुए जिस दिन से पैदा मौत पर ईमान[8] है।
जि़न्दगी गोया फना होने का इक सामान है॥

— तसकीन

५१ जि़न्दगी इक तिलिस्म[9] फानी[10] है।
सब करामात है साँस चलने की॥

— जफर

५२ जि़न्दगी चश्मे-जहाँ मे ख्वार रखती है दिला।
दोश[11] पर सब ने लिया, जब आदमी बेदम[12] हुआ॥

—नासिख़

५३ अब भी इक उम्र पै, जीने का न अन्दाज[13] आया।
जिन्दगी छोड दे पीछा मेरा, मैं बाज़ आया॥

—शाद

---

१ यातना, पीडा, दु ख, तकलीफ २ आफत मे ३ कैद, ग्रस्त ४ प्रारम्भ मे ५ यात्रा का सन्देश ६ जीवन के परिणामको ७ इच्छा, लालसा ८. विश्वास ९. माया, इन्द्रजाल, जादू १० नश्वर, क्षणभगुर ११ कन्धे पर १२. निष्प्राण १३. ढंग, तरीका, सलीक़ा।

५४. हैरत मे ख़त्म हो गई, इन्शाए[1]-जिन्दगी ।
हल हो सका न हमसे मुअम्मा[2]-ए-जिन्दगी ॥
५५. आलमे-नजअ[3] मे दिन-रात बसर करते हैं ।
जिन्दगी नाम को है, मौत के दिन भरते हैं ॥
५६. जिन्दगी अपनी जब इस शक्ल[4] मे गुज़रे 'ग़ालिब !'
हम भी क्या याद करेंगे कि ख़ुदा रखते थे ?

—ग़ालिब

५७ दीनो-दुनिया दोनो अपने जेबो-दामाँगीर[5] हैं ।
इस दोरोजा जिन्दगी मे 'शाद' हम क्या-क्या करें ?

—शाद

५८. जिन्दगी की कशमकश[6] से मरके कुछ पाई नजात[7] ।
इससे पहले ऐ 'नज़र' फुर्सत कभी ऐसी न थी ॥

—नज़र

५९. मिसाले-बुलबुला[8] है जिन्दगी दुनिया-ए-फानी[9] मे ।
जो तुझसे हो सके कर ले भलाई जिन्दगानी मे ॥
६०. न भूल इस जिन्दगी पै गाफिल !
नही कुछ एतबार[10] इसका ।
कि राह लेगी यह अपनी इक दिन,
अदम[11] का रस्ता तुझे बताकर ॥

—अमीर

६१. कौन-सा झोका बुझा देगा किसे मालूम है ?
जिन्दगी इक शमअ़ रोशन[12] है हवा के सामने ॥

—सराज

---

१ साहित्य, लेख, तहरीर २ पहेली, गुत्थी, समस्या ३. मरणावस्था मे दशा, ४. अवस्था, हालत, ढग मे ५ पाकेट और अञ्चल मे ६ खीचातानी, सघर्ष, लडाई ७ मुक्ति, छुटकारा ८ बुलबुले की तरह ९. नश्वर संसार मे १०. विश्वास, यकीन ११ परलोक, यमलोक का १२ जलती हुई मोमबत्ती ।

६२ तेग-उरियाँ[1] बन गई है, जिन्दगी मेरे लिए ।
मौत के पर्दे मे है, पिनहाँ[2] ख़ुशी मेरे लिए ।।

—असर

६३ जो हैं अहले-बसीरत[2] इस तमाशागाहे-हस्ती[3] मे ।
तिलिस्मे-जिन्दगी को खेल लडको का समझते है ।।

६४. जिन्दगी बहरे-जहाँ[4] मे, है बशर की ऐसी ।
बुलबुला पानी मे जिस तरह उठा, बैठ गया ।।

—रहीम

६५. जिन्दगी मे भूलकर लगजिश[5] न हो इन्सान से ।
गर खयाल इतना रहे, क्या होगा मर जाने के बाद ।।

—बासित

६६ जिन्दगी नाम है जज्बे-परस्तारी[6] का ।
वाह[7] वो बन्दा[8] कि जिसका कोई माबूद[9] न हो ।।

—सईद

६७ जिन्दगानी है अलामत[10] मर्ग[11] की ऐ ग़ाफिलो !
और कुछ इस ख्वाब[12] की ताबीर[13] की हाजत[14] नही ।।

६८ हर इक को है ज़माने मे जिन्दगी मकसूद[15] ।
किसे ख़बर है कि मकसूदे-जिन्दगी[16] क्या है ?

६९ ऐन[17] हस्ती[18] थी अदम[19] की नेस्ती[20] मेरे लिए ।
मौत का पैग़ाम लाई जिन्दगी मेरे लिए ।।

—यूसुफ

---

१. नगी तलवार २. छिपी हुई ३ बुद्धिमान, चतुर ४ जीवन के क्रीडास्थल मे ५ ससार-समुद्र मे ६. स्खलन, त्रुटि, भूल, अपराध ७. पूजा की भावना, पूजा का विचार ८ खूब, धन्य ९ उपासक, भक्त, पुजारी १०. ईश्वर, जिसको पूजा जाय ११. चिन्ह, निशानी १२ मृत्यु की १३ स्वप्न १४. स्वप्न-फल १५ आवश्यकता, जरूरत १६ अभीष्ट, अभिलषित १७. जीवन का उद्देश्य, जीवन का लक्ष्य-विन्दु, १८ वस्तुत वाकई १९. अस्तित्व, जीवन २०. परलोक, यमलोक की बरबादी, तबाही ।

७० जिन्दगी मौजे-आब[1] है गोया[2]।
दम का आना हुबाब[3] है गोया॥

—फकीर

७१ दर्द बढ कर दवा न हो जाए।
जिन्दगी बे-मजा न हो जाए?

—ज़ेबा

७२. है किस कदर गरूरे-शिकन राहे-जिन्दगी।
जिस सर को देखता हूँ वही पायमाल[4] है॥

—हफीज़

७३ हम जिन्दगी समझते थे जिसको, वह ख्वाब था।
बाली[5] पै आके मौत ने बेदार[6] कर दिया॥

—बिस्मिल

७४ जिन्दगी जामे-ऐश[7] है, लेकिन।
फायदा क्या अगर मुदाम[8] नही॥

—वली

७५. इक उम्र से है जिन्दगी और मौत मे झगडा।
किस्सा नही चुकता यह बखेडा है कहाँ का॥

—रिन्द

७६ कयामे जिन्दगी[9] बहरे-फना मे गैर मुमकिन[10] है।
यह जिन्दगी तीर की सूरत[11] चली जाती है तूफाँ मे॥

—आबाद

७७ जिन्दगी की लज्जतो में जिस कदर आगे बढे।
दिलकशी[12] के साथ रस्ता पुरखतर[13] होता गया॥

---

१ पानी की लहर २ मानो, जैसे ३. बुलबुला ४ पाँव तले रौंदता हुआ ५ उपधान, तकिये ६ सचेत, जाग्रत ७. सुख का पिआला ८ स्थायी ९. जीवन की स्थिरता १०. असम्भव ११ भाति १२. मनोहरता, सुन्दरता, चित्ताकर्षकता १३. भयानक, भयकर, विकट।

७८ साँचा यह जिन्दगी है फकत रूह के लिए।
जब ढल चुके तो साचे को लाजिम है आए मौत ॥
७९. क्या-सबाते-उम्र[1] वस इक जुम्बिशे-फितरत[2] की।
जिन्दगी क्या है, फकत इक अक्स[3] आईने[4] मे है ॥
८०. था जिन्दगी ने मर्ग का खटका[5] लगा हुआ।
उड़ने से पेश्तर[6] ही मेरा रंग ज़र्द[7] था ॥

—ग़ालिब

८१ अबस[8] इस जिन्दगी पर गाफिलो का फख्र[9] करना है।
यह जीना कोई जीना है कि जिसके साथ मरना है ?
८२ जिन्दगी कहती है दुनिया से तू अपना दिल लगा।
मौत कहती है कि ऐसी दिल-लगी अच्छी नही ॥
८३ बशर[10] को जिन्दगी मे गफलते उम्मीदे-फर्दा[11] है।
मगर दम-भर भी अपने कस्द से वह जी नही सकता ॥
८४. गुजर की जब न हो सूरत,[13] गुज़र जाना ही बेहतर है ॥
हुई जब जिन्दगी दुश्वार[14] मर जाना ही बेहतर है ॥
८५ जिन्दगी कैसी मुसीबत थी कि 'अल्ला की पनाह।
जान निकली है तो अब होश ठिकाने आई ॥

—असर

८६ आर जूए-जिन्दगी[15] थी बाइसे-तकलीफे-जाँ[16]।
यह खलिश[17] मिटती तो फिर आराम ही आराम था ॥

—रवाँ

१ आयु का चिरस्थायित्व २ प्रकृति के कम्पन की ३ प्रतिविम्ब ४. दर्पण मे ५ मृत्यु का भय ६ पहले ७. पीला ८. व्यर्थ, वेकार, फिजूल ९ गर्व, अभिमान, नाज १० मनुष्य को ११ आनेवाले कल की वेखबरी १२ सकल्प, इरादे, इच्छा से १३ ढग, उपाय १४ कठिन, मुश्किल १५. जीवन की कामना १६ प्राणो के कष्ट का कारण १७ चुभन।

८७ किस जिन्दगी पँ खूब अकड़ते थे सुबह-ओ-शाम।
झोका हवा का था इधर आया उधर गया॥

८८. जि़न्दगी की कद्र ऐ 'महमूद' मुश्किल हो गई।
वार[1] वोह डाला हदादिस[2] ने दिले-नाशाद[3] पर॥

—महमूद

८९. यह अदम[4] वालो की खामोशी ने साबित[5] कर दिया।
था अजाबे-कब्र[6] के बदतर[7] अज़ाबे-जिन्दगी[8]॥

९० अपनी जिन्दगी को गमो-रजो मुसीबत समझो।
मौत की कै़द लगा दी है गनीमत समझो॥

९१ हर नफस[9] उम्र-गुजिश्ता[10] की है मैंयत[11] फानी।
जिन्दगी नाम है मर-मर के जिये जाने का॥

—फ़ानी

९२ मरना ही लिक्खा है मेरी किस्मत मे अजीजो[12]।
गर[13] जि़न्दगी होती तो यह आज़ार[14] न होता॥

—दर्द

९३. अर्सा[15] तो जिन्दगी का नही इस कदर भी याँ।
अफसोस मे किसी के कोई हाथ मल सके॥

९४. .खुशी जिसकी तमन्ना थी मिली वह कजे-मरकद[16] मे।
बहुत ढूँढा तुझे बादे-फना[17] ऐ जिन्दगी मैंने॥

---

१ भार, वजन २ मुसीबतो ने ३ सन्तप्त मन पर, दुखी दिल पर ४ परलोक, यमलोक ५ प्रमाणित ६ कब्र की पीड़ा से ७. बहुत खराब ८. जीवन की यातना ९ सास १० बीती हुई आयु की ११. मृतक, मरा हुआ आदमी १२. प्रिय जनो! प्यारो! १३. यदि, अगर १४ रोग, विपत्ति, खेद, कष्ट, दु:ख १५. समय, वक्त १६ कब्र के एकान्त मे १७. मरने के बाद।

९५ जुस्तजू[1] से यह मिला आखिर निशाने-जिन्दगी[2] ।
चन्द कब्रे नक्शे-पाए-रहरवाने-जिन्दगी[3] ॥

९६. मौज[4] की शान है तूफान के बरपा[5] रहने मे ।
जिन्दगी क्या है ? गिरिफ़्तारे-बला[6] हो जाना ॥

—अमीन

९७ ज़िन्दगी खुद क्या है फानी, यह तो क्या कहिए मगर ।
मौत कहते है जिसे वह जिन्दगी का होश है ॥

—फानी

९८ मेरी यह जिन्दगी है कि मरना पडा मुझे ।
इक और ज़िन्दगी की तमन्ना लिये हुए ॥

—हफीज़

९९. जिन्दगी दरिया-ए-बेसाहिल[7] है और किश्ती ख़राब ।
मैं तो घबरा कर दुआ करता हूँ तूफाँ के लिए ॥

—सीमाब

१००. मुझे ज़िन्दगी की दुआ देने वाले ।
हँसी आ रही है तेरी सादगी पर ॥

—गोपाल मित्तल

१०१. मरके टूटा है कही सिलसिलये-कैदे-हयात[8] ।
हाँ मगर इतना है ज़ंजीर[9] बदल जाती है ॥

—फानी

---

१ खोज, तलाश से २. जीवन का चिन्ह, जीवन का पता ३ जीवन-यात्रियो के पाँवो के चिन्ह या उभरे हुए चिन्ह ४ लहर-तरग, ५. उपस्थित, कायम, व्याप्त, छाया हुआ ६ विपत्ति-ग्रस्त, ७ बिना तट की नदी ८ जीवन की कैद का सिलसिला, ९ शृखला, साकल ।

१०२ ज़िन्दगी बस है गम का दरिया।
न कोई इसको है लाघ पाया ॥
कि जिसने जब भी लगाई डुबकी।
वो उभर के ऊपर कभी न आया ॥ —रामस्वरूप

१०३ जईफी जिन्दगी मे
वेजाँ खू की रवानी है।
अगर जिन्दादिली है तो
बुढापा भी जवानी है ॥

१०४ कौन कहता है कि है अंजाम[1] मौत ?
जिन्दगी का ज़िन्दगी अजाम है ॥
असर

१०५ है अजल[2] की इस गलत-बख्सी[3] पे हैरानी[4] मुझे।
इश्क[5] लाफानी[6] मिला है जिन्दगी फानी[7] मुझे ॥
हफीज

१०६ मेरा तजरुबा[8] है कि इस जिन्दगी मे।
परेशानियाँ[9]–ही–परेशानियाँ हैं ॥
हफीज

१०७. जीने वाला यह समझता नही सौदाई[10] है।
जिन्दगी मौत को भी साथ लगा लाई है ॥
१०८ जुस्तजू है जिन्दगी, ज़ौके-तलब[11] है जिन्दगी।
जिन्दगी का राज[12] लेकिन दूरिये-मजिल[13] मे है ॥
असगर

---

१ परिणाम २. सृष्टि के पहले दिन की ३. अयुक्त दान ४ आश्चर्य ५ प्रेम ६ अमर शाश्वत ७. क्षणिक ८. अनुभव ९ दुख बेचैनियाँ १० पागल ११ पाने की लगन १२. रहस्य १३. गन्तव्य-स्थान की दूरी मे।

१०९. जब्रे-कुदरत[1] ने आदमी के लिए,
कैसा दिल-आवेज[2] छाँटा है ।
दिल की तस्कीन[3] ढूँढने वाले ।
जिन्दगी एक हसीन[4] काटा है ॥

अदम

११०. अजब जिन्दगी है, अजब जिन्दगी है ।
कि है जुल्म पर जुल्म और बेबसी[5] है ॥

आरजू

१११ दूसरो को जिसने दुनिया मे बनाया कामयाब ।
जिन्दगी उसकी है 'दानिश' उसका जीना है सफल ॥

दानिश

११२ नही वह जिन्दगी, जिसको जहा[6] नफरत[7] से ठुकराए,
नही वह जिन्दगी, जो मौत के कदमो पै झुकजाए ।
वही है जिन्दगी, जो नाम पाती है भलाई मे,
खुदी को छोड करके पहुँच जाती है खुदाई मे ॥
११३ मुबारक जिन्दगी के वास्ते दुनिया को मरजाना ।
हमें तो मौत मे भी जिन्दगी मालूम देती है ॥

रञ्ज

११४ तबीबों[8] से मैं क्यो पूछूँ, इलाजे-दर्दे-दिल[9] अपना ?
मर्ज[10] जब जिन्दगी खुद हो तो, फिर उसकी दवा क्या है ?
११५. हम न होगे, न जमाने मे निशानी होगी ।
जिन्दगी अपनी किसी रोज कहानी होगी ॥

बिस्मिल

---

१ प्रकृति की शान्ति ने २. मानसिक रोग ३ शान्ति ४ सुन्दर, ५ मजबूरी ६ संसार ७ घृणा ८ हकीमो ९ मानसिक पीडा की चिकित्सा १० रोग ।

११६ जिन्दगी यों तो फकत[1] बाजिए-तिफलाना[2] है ।
मर्द वोह है जो किसी रंग में दीवाना है ॥

—चकबस्त

११७ जहाँ तक हो बसर[3] कर जिन्दगी आला खयालों[4] में ।
बना देता है अच्छा बैठना साहब-कमालों में ॥

—शाद

११८ तमाम उम्र बसर यूँही जिन्दगी होगी ।
खुशी में रंज कहीं, रंज में खुशी होगी ॥

—दाग

११९ जौके-करम[5] नहीं है, ताबे-जफा[6] नहीं है ।
बुजदिल[7] को जिन्दगी का कोई मजा नहीं है ॥

—जोश

१२० पैगाम जिन्दगी ने दिया मौत का मुझे ।
मरने के इन्तजार में रोना पड़ा मुझे ॥

१२१. वह जमाना और था, जब जिन्दगी आसान थी ।
यह जमाना और है, अब जिन्दगी दुश्वार है ॥

१२२ जिन्दगी नाम है तूफाने-आजादी[8] का 'रविश' ।
नंगे-साहिल[9] है वो जिसको कोई तूफाँ न मिला ॥

—रविश सिद्दीकी

१२३ जो सच पूछो तो दुनिया में फकत रोना-ही-रोना है ।
जिसे हम जिन्दगी कहते हैं, कांटों का बिछौना है ॥

१२४. इन्हीं फिक्रों[10] में अपनी जिन्दगी के दिन गुजरते हैं ।
यह करना है, वह करना है, यह होना है, वह होना है ॥

—बिस्मिल

---

१ केवल २ बच्चों का खेल ३ व्यतीत ४. ऊंचे विचारों में ५. महरबानी का शौक ६ अत्याचार की शक्ति ७ डरपोक ८. विपत्तियों और दुर्घटनाओं का तूफान ९ तट के लिए कलंक, १० चिन्ताओं ।

१२५ कहते है इक फरेबे-मुसलसल[1] है जिन्दगी ।
उसको भी वक्फे-हसरत-ओ-हिरमा[2] बना दिया ।।

—असगर

१२६ कर आँसू पसीने, लहू की रवानी[3] ।
जो चाहे दिलेजार[4] तू जिन्दगानी ।।
१२७ जिन्दगी नाम था जिसका उसे खो बैठे हम ।
अब उमीदो[5] की फकत[6] जलवागरी[7] बाकी है ।।

—चकबस्त

१२८ तरस रही है जिन्दगी, बरस रही है जिन्दगी ।
नफस-नफस मे[8] तिश्नगी[9] की दास्तॉ[10] लिये हुए ।।

—जिगर

१२९. नतीजा जिन्दगानी का है कुछ दुनियॉ मे कर जाना ।
खयाले-मौत[11] बेजा[12] है, वह जब आये तो मर जाना ।।
१३० हँस के दुनियाँ मे मरा और कोई रोके मरा ।
जिन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा ।।
जी उठा मरने से वह जिसकी खुदा पर थी नजर ।
जिसने दुनियाँ ही को पाया था वह सब खोके मरा ।।

—अकबर

१३१ जिन्दगी की हकीकत[13] आह न पूछ ।
मौत की वादियो मे[14] इक आवाज ।।

—अख्तर शीरानी

---

१ धारावाहिक [लगातार] धोखा २. कामना और दु ख के हवाले । ३ प्रवाह, बहाव, धार, ४ दीन हृदय, दु खित मन, ५ आशाओ, आकाक्षाओ की ६ केवल, सिर्फ, ७ दिखावा प्रदर्शनी, ८ सास-सास मे, ९ प्यास, १० कहानी, ११ मृत्यु का विचार, मरने की चिन्ता, १२ अनुचित, बेतुका, व्यर्थ १३ वास्तविकता, यथार्थता, सत्यता, १४ घाटियो मे ।

१३२. हमको क्या जिन्दगी से 'अदम'।
आप जाती है, आप आती है ॥

१३३. जिन्दगी खोके यह खयाल आया ।
जिन्दगी चीज थी जरूरत को ॥

—अदम

१३४. जो जीना हो तो पहले जिन्दगी का मुद्दआ[1] समझे।
खुदा तौफीक[2] दे तो आदमी खुद को खुदा समझे ॥

—अफसर

१३५ जिन्दगी क्या है मुसलिसल[3] शौक पैहम इज्तराब[4]।
हर कदम पहले कदम से तेजतर[5] रखता हूँ मै ॥

—जाँनिसार अख्तर

१३६ दिल से गर्मो-सर्दका[6] एहसास[7] तक जाता रहा ।
जिन्दगी यह है तो नैयर, मौत किसका नाम है ?

—नैयर अकबराबादी

१३७ मुसल्सल[8] मुसीबत[9], सरासर[10] तबाही[11]।
मेरी जिन्दगानी अरे तौबा ! तौबा ॥

—हरीचन्द अख्तर

१३८ उमीदो मे[12] ही जाने-जिन्दगी है,
तमन्ना पासबाने-जिन्दगी[13] है,
रहे जोगे-अमल दिल मे मुसल्सल[14],

---

१ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन, २ योग्यता, पात्रता, ३. निरन्तर चाह, लगन, अलावा, ४ लगातार बेचैनी, ५ अधिक तेज, ६ सांसारिक सुख-दुःख का ऊँच-नीचका, ७ ज्ञान, अनुभूति, सज्ञा ८ निरन्तर ९ विपत्ति १० बिल्कुल ११ विनाश १२ आशा मे ही जीवन का प्राण है, आशा पर ही १३ जीवन निर्भर है । जीवन की रक्षक १४ लगातार

यही रूहे-रवाने[1]-जिन्दगी है,
नही बाकी जो सरमे कोई सौदा,
तो फिर क्या खाक शाने-जिन्दगी है ?
वह जिन्दा क्या जिसका बुझ गया दिल ।
सरासर नौहा-ख्वाने-जिन्दगी[2] है ॥

—अम्न लखनवी

१३९ जिन्दगी है सिर्फ शायद एक मौजे-बेकरार[3] ।
बारहा[4] लौटे है तूफाँ की तरफ साहिल से हम ॥

—मख्मूर सईदी

१४० न सोज़ है तेरे दिल मे, न साज फितरत मे ।
यह जिन्दगी तो नही, जिन्दगी हकीकत मे ॥

—राज चाँदपुरी

१४१ जानता हूँ बता नही सकता ।
जिन्दगी किस तरह हुई बरबाद ? ,,

१४२ अरे ओ बेकसी पै रोने वाले ! कुछ खबर भी है ?
वही है जिन्दगी, जो जिन्दगी देखी नही जाती ॥

—शिफर ग्वालियरी

१४३ जिन्दगी धूप-छाँव है ऐ दोस्त !
गम से उकता के मुस्करा देंगे ॥

—हुबाब तरमजी

१४४ गमे-दौरा मे[5] गुजरी जिस कदर गुजरी जहाँ गुजरी ।
और इस पर लुत्फ ये है जिन्दगी को मुख्तसर[6] जाना ॥

—मजाज

---

१ प्राण डालने वाली २ जिन्दगी का मातम, जीवन का शोक ३ बेचैन लहर ४ बार-बार, कई बार ५ दुनिया की मुसीबतो मे ६ संक्षिप्त, अत्यल्प, थोडी ।

१४५ जिन्दगी पर डालली, जिसने हक़ीक़त-बीं[1] निगाह ।
जिन्दगी उसकी नजर मे वे-हक़ीक़त[2] हो गई ॥

—नजर सहवारवी

१४६ ज़िन्दगी होती है मुश्किल से कही मुश्किलतर[3] ।
जिस कदर कहते है आशी मुझे मालूम न था ॥

—निहाल

१४७ इस कदर शादाब[4] हो जायेगी कुश्ते-ज़िन्दगी[5] ।
यह जहाँ कहलायेगा, इक दिन विहिश्ते-जिन्दगी[6] ॥

—निहाल

१४८ हाय क्यो फितरत को[7] मासूमो पॅ[8] रहम आता नही ।
मुख्तसर[9] है किस कदर यह ज़िन्दगी का खेल भी ॥

—नदीम क़ासिमी

१४९ कौन कह सकता है ख्वावे-रायगाँ[10] है जिन्दगी ?
ऐ अमीने-होश ![11] कैफ़े-जाविदा[12] है जिन्दगी ॥
जादा-पैमां,[13] कारवाँ-दर-कारवाँ है ज़िन्दगी ।
जिन्दगी मौजे-रवा, जूए-रवाँ, वहरे-रवाँ[14] ॥

—रविश सिद्दीकी

१५० आरजू[15] इक जुर्म[16] है, जिसकी सजा है ज़िन्दगी ।
ज़िन्दगी-भर आर्जूओ को पशेमाँ[17] कीजिये ॥

—दानिश



१ यथार्थदर्शी, सच्चाई को देखने वाली २ अवास्तविक, तुच्छ, नगण्य, असत्य ३ अधिक जटिल, कठिन ४ हरी-भरी ५. मुर्झाई जिन्दगी ६ जीवन का स्वर्ग ७ प्रकृति को ८ बेगुनाहो पर, निरपराधो पर ९ संक्षिप्त स्वल्प, थोडा १०. व्यर्थ स्वप्न ११ होश की धरोहर के रक्षक १२ स्थायी आनन्द १३ जीवनरूपी यात्रीदल पगडंडी पर बढ़ा जा रहा है १४ जीवन बहती हुई लहर, नहर और समुद्र है १५ इच्छा, कामना, चाह, १६ अपराध १७. लज्जित, शर्मिंदा ।

जवानी की कहानी क्या ? जवानी ख़ुद कहानी है !



१ कहानी कहने वाले हाय, क्यो जिक्रे-जवानी[1] है।
जवानी की कहानी क्या, जवानी खुद कहानी है ।।

—सीमाब

२. बला[2] है, अहदे-जवानी से खुश न हो ऐ दिल।
सभल कि उम्र की दुनियाँ मे इनकलाब[3] आया ।।

—साक़िब

३. रहती है कब बहारे-जवानी[4] तमाम उम्र ?
मानिन्द[5] बूये-गुल[6] इधर आई, उधर गई ।।

४ जवानी आदमी की मायए-इलज़ाम[7] होती है।
निगाहे-नेक[8] भी इस उम्र मे बदनाम होती है ।।

५ महतरानी होकि रानी मुस्करायेगी जरूर।
कोई आलम[9] हो जवानी गुन गुनायेगी जरूर ।।

६ मौत से बढकर बुढापा आएगा।
जान से बढकर जवानी जाएगी ।।

—दाग

७ है जवानी खुद जवानी का सिंगार।
सादगी गहना है इस सिम के[10] लिए ।।

—अमीर

---

१ युवावस्था की चर्चा २ मुसीबत ३ परिवर्तन, क्रान्ति ४. यौवन का वसन्त ५ तरह ६ फूल की महक ७. दोषो की सम्पत्ति ८. पवित्र दृष्टि ९ अवस्था १०. उम्र के ।

८. मुहब्बत है अपनी भी लेकिन न अन्धी।
जवानी है लेकिन दिवानी नही है ॥

—जिगर

९ हर गुनाह[1] से तोबा कर ली, जब जवानी हो चुकी।
जाहिदो[2]! जन्नत[3] मे जाना कोई तुमसे सीखले ॥

१०. इधर आँख झपकी, उधर ढलगई वह।
जवानी भी इक धूप थी दोपहर की ॥

—इबरत

११ जो जिन्दादिल[4] है हमेशा जवान रहते है।
बहारे-जीस्त[5] यकीनन्[6] इसी शबाब[7] से है ॥

— फैजी

१२ गफलत[8] मे गई आह मेरी सारी जवानी।
ऐ उम्र-गुजिश्ता[9] तेरी मै कद्र न जानी ॥

—मीर

१३. जवानी और हगामो[10] से खाली।
ये, जीना है यह कोई जिन्दगी है ?

—दिलीप शावानी

१४ शबाब[11] नाम है उन जाँनवाज[12] लमहो[13] का।
जब आदमी को यह महसूस[14] हो जवाँ हूँ मैं ॥

—निसार

१५. रियाजत[15] चीज तो अच्छी है लेकिन हजरते-जाहिद[16]।
यह बेमौसम-सी शै[17] मालूम होती है जवानी मे ॥

—अदम

---

१. पाप-कर्म २ सयमी पुरुषो। ३ स्वर्ग मे ४ प्रसन्न-चित्त ५ जीवन-शोभा ६ निस्सन्देह ७ जवानी मे ८. प्रमाद ९ गुजरी हुई उम्र १० हो-हल्ला, लडाई-झगडा। ११ जवानी १२ प्रसन्न १३ क्षणो १४ अनुभव १५ त्याग-तपस्या १६ सयमी महोदय। १७ वस्तु।

१६ हाय वह दौरे-जिन्दगी[1], जिसका लकव[2] शबाब था।
कैसी लतीफ[3] नीद थी, कैसा हसीन[4] ख्वाब[5] था ?

—कदीर लखनवी

१७ जवानी हो गर जाविदानी[6] तो या रब !
तेरी सादा दुनिया को जन्नत[7] बना दे॥

—अख्तर

१८ जवानी हासिले-हुस्ने-दो-आलम[8] होती जाती है।
अरे तोबा कयामत[9] कदे-आदम[10] होती जाती है॥

१९ कदम डगमगाये, नजर बहकी-बहकी।
जवानी का आलम[11] है सरशारियाँ[12] है॥

—जिगर

२० जवानी से अच्छे थे दिन कमसिनी[13] के।
कि अब छिपते है सामने होने वाले॥

२१ फानी[14] है, यह दुनिया भी, हर ऐश[15] भी फानी है।
उम्रे-रवाँकी[16] कीमत कुछ है तो जवानी है॥

—अहसान

२२ पीरी[17] मे वलवले[18] वोह कहाँ है शबाब के ?
एक धूप थी, जो साथ गई आफताब[19] के॥

२३ दो लफ्जो[20] मे पोशीदा[21] कुल मेरी कहानी है।
इक लफ्ज मुहब्बत है, इक लफ्ज जवानी है॥

२४ फिक्रे-दुनिया[22] थी न कुछ अन्देश-ए-अजाम[23] था।
हाय क्या आलम था वह, जिसका जवानी नाम था॥

---

१. जीवन का युग २ उपनाम, उपाधि ३ मजेदार ४ सुन्दर ५ सपना ६ शाश्वत, अमर ७ स्वर्ग ८ जिसे दो दुनिया का सौन्दर्य प्राप्त है ९ प्रलय १० मानवाकार ११ दशा, अवस्था १२ मदमस्तियाँ १३ अल्पवय, कमउम्र १४ क्षणिक १५ ऐश्वर्य १६ बहती हुई आयु की १७ बुढापे मे १८ उमगें, जोश १९ सूर्य २० शब्दो २१ छिपी हुई २२ ससार की चिन्ता २३ परिणाम या अन्त का डर।

२५ कहता हूँ जो मैं कि जवानी मेरी।
पीरी[1] कहती है कि ख्वाब[2] देखा होगा॥

—रशीद

२६. अखीर[3] हो गए गफलत[4] मे दिन जवानी के।
वहारे-उम्र[5] हुई कब खिजा[6] नही मालूम॥

—आतिश

२७ वह जवानी हो चुकी, वह नौजवानी हो चुकी।
सिर्फ मरना रह गया, अब जिन्दगानी हो चुकी॥

२८. पीरी में अब न 'हातिम' जवानी को याद कर।
सूखे दरख्त भी कही होते है फिर हरे?

—हातिम

२९. जाना था कि आना था जवानी का इलाही!
सैलाब[7] की थी मौज या झोका था हवा का?

३०. यही दिन थे सौ सौ वार तुम सवरते।
जवानी तो आई, सवरना न आया॥

३१ जवानी भी अजब शै है कि जब तक है नशा उसका।
मजा है सादे पानी मे शरावे-अर्गवानी[8] का॥

३२. गमो[9] पर गम फटे पड़ते है अय्यामे-जवानी[10] मे।
इजाफे[11] हो रहे है वाकियाते-जिन्दगानी[12] मे॥

३३. बुढापा नाम है जिसका, वह है अफसुर्दगी[13] दिलकी।
जवानी कहते है जिसको तबीअत की जवानी है॥

—नजर

३४ कुछ ठडी सासे होती है, अश्को[14]-की रवानी होती है।
पूछे तो कोई मेरे दिल से, क्या चीज जवानी होती है?

---

१. बुढापा २ स्वप्न ३. समाप्त ४ प्रमाद ५ आयु का वसन्त ६ पतझड ७. तूफान, बाढ ८. अगूरी शराव का, ९ दु ख १० युवावस्था मे, यौवन-काल मे ११ बढोतरी वृद्धि १२ जीवन की घटनाओं १३ दुर्बलता, मुरझाना १४. आँसुओं,।

३५. गाफिल[1] किये देती है जवानी की उमगे ।
इस उम्र मे इन्सा को दिखाई नही देता ॥

—शातिर

३६. अमीर' जाती जवानी यह मुझसे कहती है ।
खिजा न समझो मुझे, आखिरी बहार हूँ मै ॥

—अमीर

३७ हुस्न है बेवफा है फानी भी ।
काश[2] ! समझे इसे जवानी भी ॥

३८ कुछ कद्र न की अहदे-जवानी[3] की सद अफसोस[4] !
हम रह गए गफलत मे, यह आया भी गया भी ॥

३९ सैर कर दुनियाँ की गाफिल ! जिन्दगानी फिर कहाँ ?
जिन्दगी गर कुछ रही तो नौजवानी फिर कहाँ ?

४०. उम्रे-दो-रोजा[5] अपनी जवानी मे कट गई ।
यह रात सिर्फ एक कहानी मे कट कई ॥

४१ चार दिन जोशे-जवानी मे गनीमत जानिये ।
खुश्क[6] होकर नख्ल[7] फिर होता नही जिनहार सब्ज[8] ॥

४२ सकूने-कल्ब[9] की दौलत[10] कहाँ दुनियाँ-ए-फानी मे[11] ?
बस इक गफलत[12]-सी हो जाती है और वह भी जवानी मे ॥

४३ ऐ जवानी ! यह तेरे दम के है सारे झगडे ।
तू न होगी तो यह दिल न यह अरमाँ[13] होगा ॥

---

१. प्रमत्त २ क्या ही अच्छा हो ३. युवावस्था की ४ अत्यन्त दुःख, पछतावा, ५ दो दिन की आयु, ६ सूखे, ७ वृक्ष ८ हरे-भरे ९. मानसिक शाति १० सम्पत्ति ११ क्षण भगुर ससार १२ प्रमाद-सा, १३ इच्छा, उमग, कामना ।

४४. मस्ती शराब की सी है यह आमदे-शबाब[1]।
ऐसा न हो कि तुमको जवानी नशा करे ?

—मीर तकी

४५. हैफ[2] अय्याम[3] जवानी के चले जाते है।
हर घडी दिन की तरह हम तो ढले जाते है ।।

—इन्शा

४६. हवाए-नफ.स[4] का तूफान है वहरे-जिन्दगानी[5] मे।
खुदा महफूज[6] रक्खे किश्तिये-दिल[7] को जवानी मे ।।
४७ ता-हश्र[8] अब न होगी मुलाकात[9] आपसे।
रुखसत हुआ यह कहके जमाना शबाब का ।।
४८ आरजू[10]-ही-आरजू है हासिले-अहदे-शबाब[11]।
आरजू-ही-आरजू मे फैसला हो जायगा ।।
४६ अफसान-ए-शबाब[12] खुदारा न पूछिए।
देखा है जिसको जागते मे यह वह ख्वाब था ।।
५०. लुत्फ[13] कहते है जिसे ख्वाब है बेदारी[14] का।
और जवानी है फकत आलमे-जजबात[15] की रात ।।
५१. दो रोज मे शबाब का आलम[16] गुज़र गया।
बदनाम करने आया था, बदनाम कर गया ।।
५२. न पूछ ऐश जवानी का हमसे पीरी मे।
मिली थी ख्वाब मे वह सल्तनत[17], शबाब न था ।।

—अमीर

१ युवावस्था का आगमन, २ आश्चर्य है ३ युवावस्था के दिन। ४. विकार-वासना की हवा ५ जीवन-समुद्र मे ६ सुरक्षित ७. मन की नैया, ८ प्रलय-काल पर्यन्त ९ साक्षात्कार, १० इच्छा, कामना ११. युवावस्था १२. जवानी की कहानी १३. मजा १४. जागत-अवस्था, १५ उमगो की। १६ अवस्था १७. हकूमत।

५३. आज ऐ गाफिल ! जवानी मे अकडना है अबस।
कल यह कदे-रास्त[1] मुहताजे असा[2] हो जायगा ॥

—फसाहत

५४ मुहताज अब नही हम नासह[3] ! नसहीतो के[4] ।
साथ अपने सब वह बाते लेती गई जवानी ॥

—दर्द

५५ जवानी का जब उतरा नशा सरसे तब यह होश आये।
बडी नादानियाँ की हमने दानाई[5] के पर्दे मे ॥

—महसर

५६. अगर कुछ जिन्दगानी मे मजा है।
तो अय्यामे-जवानी में[6] मजा है ॥

—रानी

५७ ऐ 'दाग' यह किस काम की मस्ती-ओ जवानी।
तुम इसमे जो अन्देश-ए-फर्दा[7] नही रखते ॥

—दाग

५८ 'शायर' वस अब बहारे-जवानी तमाम[8] है।
समझे हो जिसको सास वह झोके खिजां के है ॥

—आगा शायर

५९ कर दिया जौफ ने[9] आजिज[10] गालिब !
नगे-पीरी[11] है जवानी मेरी ॥

—गालिब

---

१ सीधा पग, अकडा हुआ कदम २ लाठी का जरूरतमन्द ३. उपदेशक ४ शिक्षाओ के ५ बुद्धिमत्ता की ओट मे ६ यौवन के दिनो मे, योवन-काल मे ७ आने वाले कल का सन्देह ८ समाप्त ९. कमजोरी ने १०, नम्र, झुका हुआ ११ बुढापे का कलक।

६०. जिन्दगी रुख्सत हुई, जिस वक्त तू रुखसत हुआ।
ऐ शबाब ऐ ! गुलशने-जन्नत[1] निशाने-जिन्दगी[2] ॥

—अकबर

६१. चली मुँह मोड़कर क्यो ऐ जवानी !
हमें यह वलवले अपने दिखाके ॥

—जुर्रत

६२. गुजर गये है जवानी के दिन जो गफ़लत से।
अब एक-एक का मुँह देख रहे है गफलत से ॥

—शाद

६३ जवानी हस के काटी, अब पलक पर अश्क चमकी है।
जो रात आखिर हुई निकला सितारा सुबहे-पीरीका[3] ॥

—रासिख

६४. आलम तमाम अपनी जवानी से था जवाँ।
हम पीर[4] क्या हुए कि जहा[5] पीर हो गया ॥

—अमीर

६५ अच्छा हुआ शबाब का आलम उतर गया ।
इक जिन[6] चढा हुआ था कि सरसे उतर गया ॥

असद

६६ क्या खफा[7] कर दिया जवानी को।
कोसूँ किस मुँह से नातवानी को[8] ?

—सोज

६७. दुश्मन न था शबाब ! तू नादान दोस्त था।
बदनाम कर गया मुझे, बदनाम हो गया ॥

---

१ स्वर्ग का उद्यान २ जीवन का लक्ष्य, चिन्ह ३ वृद्धावस्था के प्रभात का ४. वृद्ध, बूढे ५ ससार ६ भूत ७ कुपित, नाराज ८ दुर्बलता को।

६८ गाफिल[1] है बहारे-चमन,[2] उम्रे-जवानी[3] ।
कर सैर कि मौसम यह दुबारा नही होता ॥

—जौक

६९ जवानी है तो जौके-दीद[4] भी, लुत्फे-तमन्ना[5] भी ।
हमारे घर की आबादी कयामे-महमाँ[6] तक है ॥

७० खुदा की खुदाई का जलवा है ऐ बुत !
यह हुस्ने-जवानी नही शाने-रब है ॥

७१ हुआ राही अदम[7] का कारवाँ[8] जब से जवानी का ।
बदलता ही गया नकशा[9] निशाते-जिन्दगी[10] का ॥

—जरार

७२. जवानी की दुआ लडको को नाहक[11] लोग देते है ।
यही लडके मिटाते है जवानी को जवाँ होकर ॥

—मजाज

७३ जो दानिशमन्द[12] है, वह यूँ दुआ देते है लड़को को ।
न हो मक्कार[13] पीरी मे, न हो आशिक[14] जवाँ होकर ॥

—अकबर

७४ बच जाए जो दुनिया मे जवानी की हवा से ।
होता है फरिश्ता[15] कोई इन्साँ[16] नही होता ॥

—कतील शफाई

७५ जवानी खो के इन्साँ लाख तदबीरे करे, लेकिन ।
दुबारा हाथ आ सकता नही दामन[17] जवानी का ॥

---

१. प्रमत्त २ उद्यान की शोभा, वसंत, ३. युवावस्था, ४ दर्शन की उत्कंठा ५ कामना का आनन्द, ६ अतिथि के ठहरने तक ७ परलोक, ८ काफला, ९ चित्र १० जीवन की प्रसन्नता ११ व्यर्थ १२ बुद्धिमान १३ चालबाज, मायावी १४ ससार-प्रेमी १५. देवता १६ मनुष्य १७ पल्ला ।

७६. जवानी के दिन जो गँवाते फिरे ।
बडे होके चिमटे बजाते फिरे ॥

७७ किस काम की नदी वोह, जिसमे नही रवानी[1] ?
ज़ब होश ही नही तो किस काम की जवानी ?

—जोश

७८ नदामत[2] हुई हश्र मे जिनके बदले ।
जवानी की दो-चार नादानियाँ है ॥

—हफीज

७९ नौजवानी मे मसाइब[3] से डराता है मुझे ।
नासिहा नादाँ[4] ! यह है मौसमे-बर्को-शरर[5] ॥

८०. आलमे-कैफी-जनूं[6] मे मारती है कहकहे[7] ।
ज़िन्दगी जब मौत की आँखो मे आँखें डालकर ॥

—जोश मलीहाबादी



---

१. प्रवाह, वहाव २ शर्मिन्दगी, बदनामी ३. मुसीबतो, कष्टो ४. मूर्ख उपदेशक ! ५. विजली और शोलो की चीज ६ उन्मत्तावस्था मे ७. ठहाके, अट्टहास ।

कुछ करलो नौजवानो !



१ कुछ करलो नौजवानो ! उठती जवानियाँ हैं।
खेतो को दे लो पानी, यह बह रही है गगा ॥

—हाली

२. उक़ाबी रूह[1] जब बेदार[2] होती है जवानो मे ।
नजर आती है उनको अपनी मज़िल आसमानो मे ॥

—इकबाल

३ क़दम क़दम ही नही, दिल से दिल मिलाके चलो।
क़दम उठाओ जरा और मुस्करा के चलो ॥

४ ले चुके अंगडाईयाँ, ऐ गेसुओवालो[3] ! उठो।
नूर[4] का तडका[5] हुआ, ऐ शब के मतवालो ! उठो ॥

—बर्क

५. मिटेगा दीन[6] भी और आबरू[7] भी जाएगी ।
तुम्हारे नाम से दुनियां को शर्म आएगी ॥

—चकबस्त

६ दिल हमारा जज्बये-गैरत[8] को खो सकता नही।
हम किसी के सामने झुक जाएँ, हो सकता नही ॥
राहे-खुद्दारी[9] से मरकर भी भटक सकते नही।
टूट तो सकते हैं हम, लेकिन लचक सकतें नही ॥

---

१. गिद्ध की-सी आत्मा, २ जागृत ३ ज़ुल्फो वालो ४ प्रकाश का ५. प्रभात ६. धर्म, ७ प्रतिष्ठा, इज्जत ८ लज्जा को, व्यक्तित्व की आन से तात्पर्य है ६ स्वाभिमान के पथ से।

हश्र मे[1] भी खुसरवाना[2] शान से जाएँगे हम ।
और अगर पुरसिश[3] न होगी तो पलट[4] आएँगे हम ॥
अहलेदुनियाँ[5] क्या है और उनका असर क्या चीज है ?
हम खुदा से नाज करते हैं, बशर[6] क्या चीज है ?
नाज कर ऐ यार ! अपनी दिलवरी पर नाज कर ।
'जोश'-सा मगरूर है तेरा गुलामेकमतरी[7] ॥

—जोश

७ नौजवानो ! यह बडे बूढे न मानेंगे कभी ।
सेहते-अफकार[8] से खाली[9] है इनकी जिन्दगी[10] ॥
सुबह का जब नाम आता है तो सो जाते है यह ।
रोशनी को देखते ही कोर[11] हो जाते है यह ॥
इनके शानो[12] पर तो ऐसे सर हैं ऐ अहले-निगाह[13] ।
जिनका गूदा जल चुका है, जिनके खाने है सियाह[14] ॥
और वह खाने है जिन तक रोशनी जाती नही ।
आँधियो के वक्त भी जिनमे हवा आती नही ॥

—जोश

८ तेरा शबाब[15] अमानत[16] है सारी दुनिया की ।
तू खारजारे जहाँमे[17] गुलाब पैदा कर ॥
तू इन्कलाब[18] की आमद[19] का इन्तजार[20] न देख ।
जो हो सके तो अभी इन्कलाब पैदा कर ॥

—मजाज

---

१. कयामत के दिन खुदा के सामने २. शाहाना बादशाही ३. पूछ, आवभगत ४. लौट ५. दुनिया वाले ६. आदमी ७. विनम्र सेवक ८. स्वस्थ चिन्तन से ९. रिक्त १०. जीवन ११. अन्धे । १२ कन्धो पर १३ दृष्टि-सम्पन्न १४ काले, अन्धकारपूर्ण १५ जवानी १६ धरोहर १७. कटीले ससार मे १८ परिवर्तन १९. आगमन २० प्रतीक्षा ।

९. इस जहाँ और इस जहाँ की तलखियो[1] के रूबरू[2] ।
रक्स[3] करते जाएँगे हम मुस्कराते जाएँगे ॥
राह मे गर हादसे[4] आते हैं आने दो उन्हे ।
हादसो पर कहकहे-पैहम[5] लगाते जाएँगे ॥
नाम लेवा दर्द का कोई यहाँ हो या न हो ।
दोस्तो ! हम दर्द की दौलत लुटाते जाएँगे ॥
हाँ, हमारे फैसलो[6] मे फैसला इक यह भी है ।
दोस्त बनते जाएँगे, दुश्मन बनाते जाएँगे ॥
चश्मे-आलम[7] मे तजल्ली[8] की कमी पाएँगे जब ।
नूर[9] बनकर चश्मे-आलम मे समाते जाएँगे ॥

—जगन्नाथ आजाद

१०. जवानी मे इबादत काहिली[10] अच्छी नही ।
जब बुढापा आएगा कुछ बात बन पडती नही ॥
११. जवानो को जरा परवाह[11] नही बे-ऐतिदाली[12] की ।
बुढापे मे नतीजे[13] इसके यह नादान देखेंगे ॥

—अकबर

१२ और चल-फिरले जरा तन-तन के ऐ बाके जवाँ[14] ।
चार दिन के बाद फिर टेढी कमर हो जाएगी ॥
१३ इबरत[15] यह कह रही है जवानो की कब्र पर ।
यारो ! कहो उमग जवानी की क्या हुई ?

—अमीर

---

१ कटुताओ, कठिनाइयो, कष्टो, विपत्तियो के २ सामने ३ नृत्य, नाच ४ कष्ट, आपत्तिया ५ निरन्तर या बारम्बार अट्टहास ६ निर्णयोमें ७ विश्व की दृष्टि ८ ज्योति ९ प्रकाश १० भक्ति करने मे आलस्य ११. ख्याल, विचार १२ किसी काम मे हद से आगे बढ जाने की बद परहेजी की १३ परिणाम १४ अकड ऐंठ रखने वाले युवक १५ शिक्षा, सीख, लेख ।

१४. जवानी मे अदम[1] के वास्ते सामान कर गाफिल !
मुसाफिर शबसे[2] उठते है, जो जाना दूर होता है ॥

—हृश्र

१५. खुदा की याद जवानी मे गाफिलो ! कर लो !
वगर्ना वक्ते-फजीलत[3] तमाम[4] होता है ॥

—आतिस

१६ मजा है जोशे-जवानी मे पारसाई[5] का ।
वो नाखुदा[6] है, जो किश्ती बचाये तूफाँ से ॥

—हफीज

१७. सोहबे[7]-पीरा जवानो ! फैज[8] से खाली नही ।
यह कमा का जोर है, जो देखते हो तीर मे ॥

—बेताब

१८ चर्ख टेढा ही रहा और सैकड़ों बाके जवा ।
टेढे होकर जेरे[9]-चर्खेपीर[10] सीधे हो गए ॥

१९. धर्म पे जो न फिदा[11] हो वह जवानी क्या है ?
दूध की धार है तलवार का पानी क्या है ?

—चकबस्त

२०. शबाब[12] नाम है उस जाँबाज लमहे[13] का ।
जब आदमी को यह महसूस हो जवाँ हूँ मैं ॥

—अख्तर असारी

२१. कदामत[14] हदे खीचती ही रहेगी,
कदामत की बुनियाद ढाता चला जा,

---

१ परलोक २. रात से ३ श्रेष्ठ समय ४. समाप्त, व्यतीत ५. इन्द्रिय-निग्रह परहेजगारी ६ मल्लाह, नाविक ७. सत्पुरुषो की सगति ८. दानशीलता लाभ, उपकार, नफा, भलाई ९. पुराने आकाश के नीचे १० न्योछावर, बलिदान ११ यौवन १२ प्राण-प्रेरक पल १३ प्राचीनता, पुरानी दकियानूसी बाते ।

जो परचम[1] उठा ही लिया सरकशी[2] का।
इसे आस्मां तक उड़ाता चला जा ॥

—मजाज

२२ उट्ठो मेरे बेदारो[3] जवां अज्म[4] सपूतो !
मर्दाना[5] बढो नीद के मातो को जगादो ॥
जो हिन्दका बागी[6] है वह ससार का बागी।
संसार से ससार के बागी को मिटा दो ॥

—सागर

२३ बढे चलो, रुको न अब यह कारवां,[7] बढे चलो।
कदम जवाँ है, तुम जवाँ हो, दिल जवाँ, बढे चलो ॥
बढे चलो, बढे चलो .

गुलामी को पछाड़ दो,
पुराना झडा फाड़ दो,
हिमालय की चोटीपे निशान[8] अपना गाड दो।
तुम्हारे पाँव चूम लेगा आस्माँ, बढे चलो ॥
बढे चलो, बढे चलो
कदम रुके न तुम रुको,
वह मजिल आ गई बढो,
हथेलियो पै सर लिये बढे चलो बढे चलो।
जमाना है तुम्हारे साथ, बे-गुमां[9] बढे चलो ॥
बढे चलो, बढे चलो ....

—सागर

---

१ झडा २ विद्रोह, बगावत का ३ जाग्रत ४ सकल्प, इरादा ५ मर्दो की तरह ६ विद्रोही, अवज्ञाकारी ७ यात्रीदल ८. झडा ९. विश्वास-पूर्वक, निस्सन्देह असन्दिग्ध ।

२४ उल्फत[1] की गंगा हरसू[2] बहा दो,
बुग्जो-हसदका[3] किस्सा चुका दो,
हर तीरगी[4] को अज्मे-फना[5] दो,
महरो-वफाकी[6] शमए जला दो,
ऐ नौजवानो ! ऐ नौजवानो !!

२४ तू इन्किलाब की आमदका[7] इन्तजार न कर ।
जो हो सके तो अभी इन्कलाब पैदा कर ॥

—मजाज

२५ ऐ सोई हुई कौम के वेदार[8] जवानो !
ऐ हिम्मते-मर्दानाके जीरूह निशानो[9] !
सौ बात की यह बात है इस बात को मानो,
जीने का जो अरमान[10] है तो मौत की ठानो,
बेग़र्क[11] हुए कोई उभरता ही नही है ।
जो बात पै मरता है, वह मरता ही नही है ॥

२६ मैदां मे अगर सीना उभारा नही जाता,
लानत का[12] कभी तौक[13] उतारा नही जाता,
शेरो की तरह जिनसे डकारा नही जाता,
इज्जत की तरफ उनको पुकारा नही जाता,
मै खान-ए-इकराम मे[14] पीने नही देती ।
दुनियां कभी नामर्दको[15] जीने नही देती ॥

—जोश

---

१ प्रेम का २. हर तरफ, चारो ओर ३ ईर्ष्या द्वेषका ४ अँधेरे को ५ मृत्यु का निमन्त्रण ६ नेकियो की ७ आगमन का ८ जाग्रत, जागते हुए ९ वीरोचित साहस के भव्य कर्णधारो, १०. उत्कण्ठा, लालसा, इच्छा ११ बिना डूबे १२ धिक्कार, भर्त्सना १३ गले का पट्टा १४ प्रतिष्ठित मदिरालय मे १५ भीरु, डरपोक, नपुंसक को ।

२७. ऐ जवा मर्दो ! खुदारा[1] बाँधलो सरमे कफन ।
सर बरहना[2] फिर रही है, इज्जते कौमे-वतन !
हाँ जमीको जेर[3] करके आसमानो पर चढो ।
हाँ बढो ऐ सफशिकन[4] वीरो ! बढो, जल्दी बढो ।
पाव मे ताचन्द[5] जंजीरे-गुलामी की[6] खराश[7] ।
सिर्फ इक जुम्बिश[8] अभी होती है कडिया[9] पाश-पाश ।[10]

२८. ऐ मेरे हिन्दोस्ता के मुर्दा-खसलत[11] नौजवा !
तेरे खालो-खतमे[12] पीरी के[13] निशा[14] पाता हूँ मैं ॥
तेरे मुस्तकाबिल की जानिब[15] जब उठाता हूँ निगाह ।[16]
चर्ख पर[17] उडती हुई कुछ धज्जिया पाता हूँ मैं ॥
हैफ[18] तेरी नौजवानी पर है पीरी के निशां ।[19]
दूसरी कौमो के बूढो को जवा पाता हूँ मै ॥
आग बुझ जायेगी, छाती सर्दो-नम[20] हो जायगी ।
चौक ! वर्ना[21] जिन्दगी की पुश्त[22] खम[23] हो जायगी ॥

—जोश



१. ईश्वर के लिए २. नगे सिर ३ जीत ४. सैनिको की पक्तियो को चीरने वालो ५. कब तक ६ पराधीनता की बेडी की ७ खरोच, खाज ८ प्रकम्पन, झटका ९ बेडियाँ, बन्धन १० टुकडे-टुकडे ११ मुर्दो जैसे स्वभाववाले, १२. तिल और लकीर मे १३ बुढापे के १४ चिन्ह, लक्षण १५ भविष्य की ओर १६ दृष्टि १७ आकाश पर १८ अफसोस १९. लक्षण चिन्ह २०. ठडी-तर २१, अन्यथा २२ पीठ २३ टेढी ।

मेरा नारा इन्कलाबो-इन्कलाबो-इन्कलाब !



२. काम है मेरा तगय्युर[१] नाम है मेरा शबाब[२] ।
मेरा नारा इन्कलाबो[३]-इन्कलाबो-इन्कलाब ।

—जोश

१ नया चश्मा[४] है पत्थर के शिगाफो[५] से उबलने वाला ।
जमाना किस कदर बेताब[६] है करवट बदलने को ।।

—सरदार जाफरी

३ तुझे है याद नुस्खा[७] जुल्मते-आलम[८] बदलने का ।
तो फिर क्यो मुन्तजिर[९] बैठा है तू सूरज निकलने का ।।

—सीमाब

४. है वक्त बदलने का, सब काम बदल डालो ।
आगाज[१०] बदल डालो, अंजाम[११] बदल डालो ।।

—इकबाल

५ बगावत[१२] जवानों का मजहब[१३] है 'सागर' ।
गुलामी[१४] है पीरी, बगावत जवानी ।।

—सागर

६ दिल का चिराग जब तलक, तुझसे जले जलाए जा ।
रात भी है अगर तो क्या ? रात को दिन बनाए जा ।।

—मुल्ला

---

१ परिवर्तन, तब्दीली २ जवानी ३ परिवर्तन, क्रान्ति ४ झरना ५ छेदो, दरारो ६ बेचैन ७ उपाय, ढंग ८ संसार का अन्धेरा ९ प्रतीक्षा मे १० प्रारम्भ, आदि ११ परिणाम, अन्त १२ विद्रोह, क्रान्ति १३ धर्म १४. दासता ।

७. उठो और उठके निजामे-जहाँ[1] बदल डालो ।
यह आसमाँ, यह जमीन, यह मकाँ बदल डालो ॥
हयात कोई कहानी नही, हकीकत है ।
इस एक लफ्ज से कुल दास्ता बदल डालो ॥

—सागर

८. तूफानो मे जो पलते जा रहे हैं ।
वही दुनिया बदलते जा रहे हैं ॥

—जिगर

९. छिपा रखा है जिसने आज किस्मत के सितारो को ।
उसी बदली से होगे एक दिन शम्सो-कमर[2] पैदा ॥

—गालिब

१० हुस्ने-माजी[3] से जो लिपटा[4] है, वह सौदाई[5] है ।
कि बदल जाने की दुनिया ने कसम[6] खाई है ॥

—सीमाब

११ बढो कि रगे-चमन[7] बदल दें,
चलो-चलो हिम्मत आज़माएँ ।
जुनू[8] की लौ और तेज कर दो,
फसुर्दा[9] शमओ[10] को फिर जलाएँ ॥

१२ तुझे दुनिया को समझने की हविस[11] है ऐ काश[12] !
तुझे दुनिया को वदल देने का अरमा[13] होता ॥

—फिराक

---

१ संसार की व्यवस्था २ सूरज और चाँद ३. अतीत के सौन्दर्य से ४ चिपटा ५. पागल ६ शापथ ७ उद्यान का रग ८ पागलपन की ९. बुझी हुई १०. दीपको को ११. इच्छा कामना १२. क्या ही अच्छा हो १३ अभिलाषा ।

१३. यजदां[1]-ओ-अहरमन[2] के जमाने गुजर गए।
अब वक्त हर लिहाज से इन्सांका वक्त है।।

—अदम

१४. मैं जुल्मतों[3] से उलझ-उलझ कर, वह दौर[4] नजदीक ला रहा हूँ।
मुसाफिरों की तलाश में जब नज्म[5] के कारवाँ रहेंगे।।

—नदीम

१५ यूं नग्मासरा[6] हो कि यह आलम[7] ही बदल जाए।
अफसूं[8] तेरा बेदर्द, हवादस[9] पै भी चल जाए।।

—बेदर्द

१६ अगर दो-इक सफीने[10] डूबते हैं, डूब जाने दो,
किसी कीमत सही, इन तुन्द[11] धारों को बदल डालें।
मसल दे उन गुलों को, जो बादे-सरसर[12] से मुरझाए,
जो मुरझाएं खिजासे उन बहारों को बदल डालें।।

—शरर

१७. हकीकत[13] में हकीकत मेरे ऊपर नाज करती है।
कि आवाजे-तगय्युर[14] से मेरी ही आवाज करती है।।
१८. जहाँ में इनकलाबे-ताजा[15] होने वाला है।
गुलामी के अन्धेरे में उजाला होने वाला है।।
१९ खुदाने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली।
न हो खुद जिसको एहसास अपनी हालत बदलने का।।

—सीमाब

---

१ ईश्वर २ शैतान को ३ अंधेरों से ४ युग ५ सितारों के ६ अच्छी आवाज में गाने वाला ७. संसार ८. जादू ९. मुसीबतों कष्टों पर १० नौकाएँ ११ तेज १२ सनसनाती हवा में १३ वास्तव में १४ परिवर्तन की ध्वनि १५ नवीन क्रान्ति।

२०. जहाँ जुल्मत[1] का मरकज[2], आँधियो का आशियाना है।
वहाँ आजाद पैगामे-चिरागाँ[3] लेके आया हूँ ॥

—आजाद

२१ महफिले-नौमे[4] पुरानी दास्तानो[5] को न छेड !
रग पर जो अब न आएँ, उन फसानो को न छेड !

२२ सितारो से आगे जहाँ और भी है,
अभी इश्क के इम्तिहाँ[7] और भी है।
तू शाहीं[8] है, परवाज[9] है काम तेरा,
तेरे सामने आसमाँ और भी है।
इसी शाखो[10]-गुल मे उलझकर न रह जा,
तेरे सामने आशियाँ[11] और भी है ॥

२३ जिस कदर[12] दुनिया दबाये, उस कदर बेदार[13] हो।
अपनी दुनिया खुद बदलने के लिये तैयार हो ॥

—इकबाल

२४ तजरुबे[14] सब हेच हैं, कानून[15] सब बेकार है।
हर जमाना इक नया पैगाम लेकर आया है ॥

२५. कांटो को रोदते[16] हुए, शोलो[17] से खेलते,
हर-हर कदम पै धूम मचाते चले चलो।
बुझते हुए चिराग[18] भी हैं काम के असर,
शमए[19] नई उन्ही से जलाते चले चलो ॥

—असर

---

१ अधेरेका २. केन्द्र ३. दिव्य-संन्देश ४ नयी सभायें ५ कहानियो को ६ किस्सो को ७ परीक्षा ८. बाज नामक पक्षी ९. उडान १० टहनी और फूलो मे ११ घोसले १२ जितना १३. जाग्रत १४. अनुभव १५. विधान १६ कुचलते १७ स्फुलिंग १८. दीपक १९. मोमबत्ती।

२६ जमीनो-ग्रासमाँ से तग है तो छोड़ दे उनको।
मगर पहले नये पैदा जमीनो-ग्रासमाँ करले ॥

—सीमाब

२७. मैं सोजे-वफा[1] का दुनिया को पैगाम सुनाने ग्राया हूँ।
जो ग्राग लगे तो वुझ न सके, वह ग्राग लगाने ग्राया हूँ॥

—सीमाव

२८. वह जल्द-जल्द वदलता हुग्रा जमाना है।
कि ग्राज है जो हकीकत[2] वह कल फसाना[3] है॥

—ग्रहसान

२९ नाज[4] क्या इसपै जो वदला है जमाने ने तुम्हे ?
मर्द वह हैं, जो जमाने को वदल देते है।

—ग्रकवर

३०. लाने वाले गुलस्तिाँ[5] मे वह वहारे लाएँगे।
फूल कांटो की नजाकत[6] देखकर शरमाएँगे॥
वक्त इम दुनियाँ मे यह पैगाम लेकर ग्राएगा।
वक्त से जो ग्राज टक्कर खाएगा, मिट जाएगा॥
कमनजर[7] ! तू भी निगाहे खोलकर वोह दौर[8] देख।
ज़िन्दगी ने किस तरह वदले है ग्रपने तौर[9] देख॥
ग्रौर ग्रगर देखा न तूने वक्त की रफ्तार[10] को।
वक्त भूलेगा न इक लहजा[11] तेरे किरदार[12] को॥
तू ग्रगर मलहक[13] रहा सिक्कों की झनकारो के साथ।
वक्त रखेगा तुझे दुनिया के गद्दारो के साथ॥

—आजाद

---

१. प्रेम के दुख का २ वास्तविकता, असलियत ३. कहानी-किस्सा, ४. गर्व ५ उद्यान वाग मे ६. कोमलता ७. सकीर्ण दृष्टि ८. युग ९. ढग तरीके १०. गति, चालको ११. क्षण १२. आचरण, वर्ताव-व्यवहार को १३. आसक्त, मस्त।

३१ खुदा जाने अब दिल कहाँ आके ठहरे ?
बडे इन्कलाबात[1]-से हो रहे है ॥

३२ 'असद' चलो कि बदल दे हयात[2] की तकदीर।
हमारे साथ जमाने का फैसला[3] होगा ॥

—असद भोपाली

३३ चाँद-तारे गुचओ-गुल सब यही होगे, मगर ।
फिर भी करवट लेके दुनिया क्या-से-क्या हो जाएगी ?

—शफीक

३४. फिजाओ[4] पै परचम[5] उडाता चला जा;
हवाओं मे हलचल मचाता चला जा।
जमाना तेरे साथ आएगा, लेकिन,
जमाने को पीछे हटाता चला जा ॥

—कैफी

३५. मिटा दे अपनी गफलत फिर जगा अरबाबे-गफलत[6] को।
उन्हे सोने दे, पहले ख्वाब[7] से बेदार[8] तू हो जा ॥

—सीमाब

३६. हर गर्दिशे-हयात[9] है, दौरे हयात-नौ[10] ।
दुनिया को जो बदल न दे वह मैकदा[11] नही ॥

—फिराक

३७. नया आदम तराशूँगा, नई हव्वा बनाऊँगा।
नया माबूद[12] ढालूँगा, नया बन्दा बनाऊँगा ॥

—सागर

---

१ परिवर्तन-से २. जीवन ३. निर्णय, ४ वातावरण ५. पताका, झडा ६. गफलत मे पडे हुओं को ७ सपना ८. जाग्रत ९. जीवन १०. नव जीवन का युग ११. उपासना के योग्य देवता १२ ईश्वर, आराध्य देव ।

३७ किधर है तू ऐ जुर्रते-वागियाना[१] ।
वदल दे मुकद्दर,[२] वदल दे जमाना[३] ॥
वशर[४] की यह पस्ती[५] अरे तौवा ! तौवा ![६]
ज़माने का आका[७], गुलामे-जमाना ॥[८]

—जिगर

३८ कहाँ यह दहरे-कुहना[९] और कहाँ जौके-जवाँ[१०] मेरा ?
कोई दुनिया नई होती, कोई आलम[११] नया होता ?

—सीमाव

३९ उठ ऐ नदीम[१२] ! कि रगे-जहाँ[१३] वदल डाले,
जमी को ताजा करे, आसमाँ वदल डालें ।
उरूजे-नौ-ए-वशर को[१४] फलकरवे[१५] टकराकर,
खयाले-रफजते-कर्रो-वयाँ[१६] वदल डाले ।
कदीम वहमने[१७] जिसको यकीन[१८] समझा था,
नये यकीन से अव वोह गुमा[१९] वदल डालें ।
यह वलवला[२०] है, आ सबसे पेश्तर[२१] ऐ दोस्त !
मिजाजे-तिफ्ल के हिन्दोस्ताँ[२२] वदल डाले ॥

जोश

४०. उठो, वह सुवह का गर्फा[२३] खुला जजीरे-शव[२४] टूटी ।
वह देखो पौ फटी, गु चे खिले, पहली किरन फूटी ।

---

१ क्रान्तिपूर्ण साहस २. भाग्य ३. युग, दुनिया ४. मनुष्य की ५ गिरावट, पतन ६ हाय ! हाय ! ७ युग युग का स्वामी ८. ससार का दास ९. पुराना युग १०. युवकोचित उत्साह ११. ससार १२ साकी १३ ससार की प्रणाली १४ नवीन मानवता की उन्नति को १५ आकाश से १६. वनो -जगलो के उमगी विचारो को १७ पुराने अन्ध-विश्वास ने १८ विश्वास १९. शक, वहम, अन्धविश्वास २० उत्साह २१ पहले २२. भारत के वाल-स्वभाव को २३. द्वार २४ रात की शृ खला ।

उठो, चौंको, बढो, मुँह-हाथ धो, आँखो को मल डालो।
हवाए-इनकलाब आने को है, हिन्दोस्तांवालो !

—जोश

४१ उठाओ सागर, बजाओ बरबत,[१] नया जमाना नया ज़माना !
वह दिन गये जब निगाहे-साकी पै नाचता था शराबखाना ।।
कभी दबे हैं, न दब सकेंगे, मिजाज अपना है बागियाना।
कुछ अपना नुकसान ही करेगा, ज़ो हमसे टकरायेगा ज़माना ।।
न तुझको काबू दिलो-नजर पर,
न अपनी परवाजे-बेखतर पर ।[२]
कफसको[३] बदनाम करने वाले !
कफस तो है सिर्फ आबो-दाना ।।
जुनूने-तामीर[४] है सलामत तो वर्को-बारां का[५] हमको क्या गम ?
चमन की हर शाख को बना लेगे फिर बहारोका[६] आशियाना ।।

—सागर

४२ इक दिन तुलूअ[७] होगा फर्दा[८] नये सिरे से।
होती है रोज़ पैदा दुनिया नये सिरे से ।।

—अफसर मेरठी

४३ उठ खूने-इन्किलाबका कसबल लिये हुए ।
आँधी का शोर आग की हलचल लिये हुए ।।

—जोश

देख रफ्तारे-इन्किलाब[९] 'फिराक' !
कितनी आहिस्ता और कितनी तेज ?

—फिराक

---

१. सितार की तरह का एक बाजा २ निर्भय उडान पर ३. पिंजरे को ४. निर्माण की धुन का पागलपन ५. बिजली और बर्षा, ६ बसंत ऋतु का, बहार का ७ उदय ८ भविष्य ९ परिवर्तन, क्रान्ति की चाल ।

४५. ऐ खाकनशीनो ! उठ बैठो, वह वक्त करीब आ पहुँचा है।
जब तख्त[1] गिराये जायेगे, जब ताज[2] उछाले जायेंगे ॥
अब टूट गिरेगी जजीरे, अब जिन्दानो की[3] खैर नही ।
जो दरिया झूमके उट्ठे है, तिनको से न ढाले जायेगे ॥

— फैज

४६ बगावत[4] का अलमबरदार[5] हूँ, महशर बदामाँ[6] हूँ ।
फरिश्तो[7] ने जिसे सज्दे किये है मैं वह इन्साँ हूँ ॥
पुरानी दुश्मनी है अहले-जरके आस्तानो से[8] ।
मैं बिजली हूँ, गिरा करता हूँ अक्सर आसमानो से ॥
बढा हूँ जब भी मैदा मे बगावत का अलम[9] खोले ।
फरिश्तेने अजलके[10] आस्माँ पर हँसके पर तोले ॥
मेरे सीने मे मुस्तकबिलके[11] जलवे मुस्कराते हैं ।
मेरी गुफ्तार[12] सुनकर अहले-दौलत काँप जाते हैं ॥

—मजाज

४७ बेकसो के तहखानो मे, आँसुओ के चिराग जलते है ।
इन चिरागो की झिलमिलाहट मे, सैकडो इन्किलाब पलते है ॥
४८. निजामे-आलम[13] बदल रहा है, खुदा भी शायद नया बनेगा ।
नये-नये-से है सब मुजाविर,[14] नयी-नयी-सी है खानकाहे[15] ॥

—शाद

४९ वही हकदार है किनारो के ।
जो बदल दे बहाव धारों के ॥

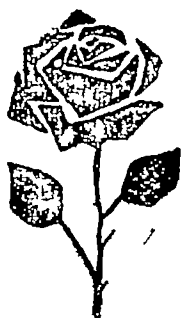
—निसार इटावी

---

१ सिहासन २ मुकुट ३. कैदखानों की ४. विद्रोह ५ झण्डा उठाने वाला ६ प्रलयकर ७ देवताओ से ८ धनिको से ९ झडा १० मृत्यु के ११ भविष्य का १२ वाणी आवाज १३ विश्व-व्यवस्था १४. मजार की कमाई खाने वाला, दरगाह आदि का खिदमती १५ दरगाहें ।

५०. गमे-हयातके[1] मारेहुओ न घबराओ !
तुम्हारे होंठो को हम मुस्तकिल[2] हँसी देंगे ॥
उठो और उठके करो सुबहे-नौ का[3] इस्तकबाल[4] ।
हम आफताब[5] है दुनिया को रौशनी देंगे ॥

—हुरमतुलकराम



---

१ जीवन के दुःखो के २ स्थायी ३. नव-प्रभात का ४ स्वागत
५ सूर्य ।

अहले-हिम्मत के कदम रुकते नहीं !



१. लाख पेचीदा हो राहे-जिन्दगी ।
अहले-हिम्मत के कदम रुकते नही ।।

—तालिब

२. अहसान ले न हिम्मते-मर्दाना[1] छोडकर ।
रस्ता भी चल तो सब्जये-वेगाना[2] छोडकर ।।

—नज्म

३. वह कौन-सा उकदा[3] है जो वा[4] हो नही सकता ?
हिम्मत करे इन्सान तो क्या हो नही सकता ?

४ हिम्मत बुलन्द[5] चाहिए ऐ दिल कि वस्ले-दोस्त[6] ।
आसाँ[7] अगर नही है तो दुश्वार[8] भी नही ।।

५ अहले-हिम्मत[9] ने हुसूले-मुद्दआ[10] मे जान दी ।
और हम बैठे हुए रोया किये तकदीर[11] को ।।

६. चला जाता हूँ हँसता-खेलता मौजे-हवादस[12] से ।
अगर आसानियाँ हो, जिन्दगी दुश्वार हो जाए ।

७ न शाखे-गुल[13] ही ऊँची है, न दीवारे-चमन[14] बुलबुल !
तेरी हिम्मत की कोताही,[15] तिरी हिम्मत की पस्ती[16] है ।।

—अमीर

---

१ पुरुषोचित साहस २ हरी-भरी घास को, ३ रहस्य, गुत्थी, समस्या ४ हल ५. उच्च साहस ६ प्रिय मित्र का मिलन ७ सरल-सुगम ८. कठिन ९. साहसिक ने १० उद्देश्य-पूर्ति मे ११ भाग्य १२ मुसीबतो सी लहर से १३. फूलों की टहनी १४ बगीचे की दीवार १५ कमी १६ निम्नता, दीनता ।

८ कदम चूम लेती है खुद आके मजिल।
मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे॥

९ यह मुमकिन[1] है कि लिक्खी हो कलम ने फतह[2] आखिर[3] मे।
जो है अहबाबे-हिम्मत[4] गम नही करते शिकिस्तो[5] का॥

—शाद

१०. हुआ करती हैं दुश्वारी से ही आसानियाँ पैदा।
बडे नादान है मुश्किल को जो मुश्किल समझते हैं॥

११ हम डूबने वाले मौजो[6] की तौहीन[7] गवारा[8] क्यो करते ?
कश्ती का सहारा क्यो लेते, साहिल की तमन्ना क्यो करते ?
बिजली की चमक, बादल की गरज,
पुरजोर हवा तारीक फिजा[9]।
खुद आग नशेमन[10] को दे दी,
तिनको-पै भरोसा क्यो करते ?

—साहिर

११ पस्तियो मे[11] रहके भी जिनके इरादे[12] हो बुलन्द।
डालते है वोह जवां-हिम्मत[13] सितारो पर कमन्द[14]॥

—गालिब

१२ कदम रहता है साबित[15] जिनका इस सख्ती-ए-दौरां[16] मे।
बहादुर[17] है वही सर[18] किल-ए-फौलाद[19] करते हैं॥

—आतिश

---

१ सभव २ विजय ३ अन्त ४ साहसी ५. पराजयो का ६ लहरोकी ७ अपमान, वेईज्जती ८. सहन, वरदाश्त ९. अधकारपूर्ण वातावरण १०. घोसला ११. नीचाइयो मे १२ सकल्प १३ तरुण-साहसी १४ रस्सा १५ दृढ मजबूत १६ विपत्ति काल मे १७ वीर १८ विजय, फतह १९ फौलादी किले को।

१३ आसान नजर आए हर इक मुश्किले-दुनियाँ[1]।
दे साथ अगर हिम्मते-मर्दाना किसीका ॥
१४. हरीफे-तूफाँ[2] जो बन सके बन, कि जिन्दगी नाम है इसीका।
सहारा मौजो का लेके उठना भी डूब जाने से कम नही है ॥

—महर

१५. कमाले-बुज़दिली[3] है पस्त[4] होना अपनी आँखो मे।
अगर थोडी-सी हिम्मत हो तो फिर क्या हो नही सकता ?
उभरने ही नही देती हमे बेमायगी[5] दिल की।
नही तो कौन क़तरा है, जो दरिया हो नही सकता ?

—चकबस्त

१६. मुसीबतो मे न हार हिम्मत,
नजर मे रख यह उसूले-फितरत[6]।
जो बादे-शब[7] इक-सहर[8] भी होगी,
तो बादे-गम[9] इक खुशी मिलेगी ॥

—अख़्तर

१७ किनारा गो किनारे को ही कहना चाहिए, ताहम[10]।
कुछ ऐसे जिन्दा-दिल भी है जो तूफानो को कहते है ॥

—अदम

१८ मजा तो जब था कि साहिल[11] पै झूमने वाले।
भवर मे घिरके भी थोडी-सी हा-हू[12] करते ॥

—अदम

---

१. ससार की कठिनता २ तूफान का शत्रु ३ परले सिरे का डरपोकपन ४. हीन ५ उत्साहहीनता, दीनभावना कमजोरी ६. प्रकृति का नियम ७ रात बीतने पर ८ सुबह, प्रात ९ दुख के पश्चात् १०. फिर भी ११ तट १२ हो-हल्ला, हाथ पैर मारना।

१९ हवादस[1] से उलझकर मुस्कराना मेरी फितरत[2] है ॥
मुझे दुश्वारियों[3] पर अश्क[4] बरसाना नही आता ॥

—अहसान दानिश

२० सच पूछो तो इस दुनिया मे, हरकत[5] से ही बरकत[6] है ।
जिसने कुछ ढूँढा होगा तो उसने कुछ पाया होगा ॥

—अफसर

२१ खौफ[7] मत खाइए अन्धेरो से,
जुल्मतों[8] मे भी नूर[9] होता है ।
बाज औकात[10] राहे-हस्ती[11] मे,
अपना साया[12] भी दूर होता है ॥

—अदम

२२ बहुत चाहता हूँ करूँ लुत्फ[13] हासिल ।
मुझे काश[14] मिल जाए हिम्मत कही से ॥
२३. किश्ती है किनारे पर जिनकी,
तूफां की हकीकत क्या जाने ?
अन्दाज-ए-तूफा[15] होता है,
जब दूर किनारा होता है ॥

—अख्तर

२४ जहाजो को डुबो दे जो उसे तूफान कहते है ।
जो तूफानो से टक्कर ले, उसे इन्सान कहते हे ॥

---

१ मुसीबतो, विपत्तियो से २. प्रकृति, स्वभाव ३ कठिनाइयो ४ रोना, आँसू बहाना ५ स्पन्दन, श्रम ६. समृद्धि ७ डर, भय ८ अन्धेरोमे ९. प्रकाश १० कई बार, कभी-कभी ११ जीवन-मार्ग १२. छाया १३ खुशी, मजा १४ क्या अच्छा हो, १५ तूफान का अनुमान ।

२५. साहिवे-हिम्मत नही डरते मुसीबत से कभी।
मौत क्या उसके लिए तो जीस्त[1] का पैगाम है॥

—अकरम

२६ मै वार[2] भी खाता[3] जाता हूँ,
कातिल से भी कहता जाता हूँ।
तौहीन[4] है दस्ते-वाजू[5] की वोह,
वार कि जो भरपूर[6] नही॥

—जिगर

२७. न डर वादे-मुखालिफ[7] से तू ऐ उकाव[8]!
यह तो चलती है तुझे ऊँचा उठाने के लिए॥

—इकबाल

२८. मर्द कहते हैं उसे ऐ माँग-पट्टी के गुलाम!
जिसके हाथो मे हो तूफानी अनासर[9] की लगाम।
मर्द की तखलीफ[10] है जोर आजमाने के लिए।
गर्दने सरकश[11] हवादस[12] की झुकाने के लिए॥

—जोश

२९ हो अज्म[13] तो सब काम सँवर[14] जाते है,
डूबे हुए दिल खुद ही उभर आते है।
जिस राह पै फरिश्तो[15] को हो चलना मुश्किल,
उस राह से इन्सान गुजर जाते हैं॥

३० गर चाहते हो दहर[16] मे मैदान मारना।
दुश्वारियाँ हजार हो, हिम्मत न हारना॥

---

१. जीवन का सन्देश २ आक्रमण ३. सहता ४ अपमान ५ भुजाओकी ६ पूरा ७. प्रतिकूल वायु = गिद्धपक्षी, ९ तत्त्वो की १०. साहसिकता ११ अकडी हुई, सीधी १२ विपत्तियो १३ सकल्प, साहस १४ सुधर, १५ देवताओ को १६ दुनिया।

३१. अहले-हिम्मत[1] मजिले-मकसूद[2] तक आ ही गए।
बन्दये-तकदीर[3] किस्मत का गिला[4] करते रहे॥

३२. दस्ते-हिम्मत[5] से है बाला[6] आदमी का मर्तबा[7]।
पस्त-हिम्मत[8] यह न होवे, पस्त-कामत[9] हो तो हो॥

—जौक

३३ यह मुद्दत[10] हस्ती[11] की आखिर, यूँ भी तो गुजर ही जाएगी।
दो दिन के लिए मैं किस से कहूँ, आसान मेरी मुश्किल करदे॥

३४ हो नही सकती कभी आसान उसकी मुश्किलें।
खुद जो अपनी मुश्किलें आसान करता ही नही॥

३५. मौस्सर[12] हादसे[13] अर्जो-समा[14] मुझ पै क्या होते?
मेरी फितरत[15] ने सीखा ही नही मुश्किल से डर जाना॥

३६ गजब है 'जौहर' मदद होती है हिम्मत चाहिए।
मुस्तैऊद[16] रहिए मुकद्दर आजमाने के लिए॥

३७. छिपा दस्ते-हिम्मत[17] मे जोरे-कजा[18] है।
मसल[19] है कि हिम्मत का हामी[20] खुदा है॥

३८ जेरे-कदम[21] है मजिले-मकसूद अपने 'रिन्द'!
हिम्मत से तो करीब[22] है गो[23] राह दूर है॥

—रिन्द

---

१ साहस वाले २ गन्तव्य स्थान ३. भाग्यवादी ४ शिकायत ५ साहस से ६ श्रेष्ठ ७ गौरव ८ असाहसी, कायर ९ ठिगना, बौना १० समय ११ जीवन १२ प्रभावपूर्ण,असर डालने वाले १३. दुर्घटनाएँ १४ पृथ्वी और आकाश १५ प्रकृति, स्वभाव १६ सन्नद्ध, तैयार १७ साहसो मे १८ मृत्यु का बल १९ कहावत २०. समर्थक, पक्षपाती २१ पाँव-तले २२ निकट, समीप २३. यद्यपि।

३९ मजिले-मकसूद पै हिम्मत से पहुँचता है बशर[1]।
पाये-हिम्मत[2] से पता चलता है कूए-यार[3] का ॥
४०. मिल नही सकती निकम्मो[4] को जमाने मे मुराद[5]।
कामयाबी[6] की जो ख्वाहिश[7] हो तो मेहनत[8] चाहिए ॥
४१ थके जो पाँव तो चल सरके बल न ठहर 'आतिश'।
गुले-मुराद[9] है मजिल मे, खार[10] राह मे ॥

—आतिश

४२. जायका[11] दर्दे-मुहब्बत का तन आसानो[12] को क्या ?
जानते है अहले-हिम्मत ही मुसीबत के मजे ॥
४३ काट लेना हर कठिन मजिल का कुछ मुश्किल नही।
इक जरा इन्सान मे चलने की आदत चाहिए ॥
४४ खुदाने वुसअते-दामाने[13] हिम्मत की अता[14] जिसको।
नही होते के हर्गिज तग-दिल[15] वह तगदस्ती[16] मे ॥

—जफर

४५ हिम्मत-ओ-मेहनत[17] हो तो, सौ बात की है एक बात।
लोग कहते है जिसे मुश्किल, वह मुश्किल ही नही ॥

—ऐश

४६. दुरे-मकसद[18] की ख्वाहिश और गमे-जा[19], क्या हिमाकत[20] है ?
किसी को हाथ आए है, कही मोती भी साहिल[21] से ?

—जामिन

---

१ आदमी २. साहस के चिन्हो से ३ यार की गली का ४. वेकारो, साहस हीनो को ५ सफलता ६. सफलता ७. इच्छा ८. श्रम से ९ आशा या भावना का फूल १० काटा ११ मजा, स्वाद १२. शारीरिक सुविधा चाहने वालो १३ साहस की उच्चता १४ प्रदान १५ परेशान १६ गरीबी मे १७ श्रम और साहस १८ उद्देश्य का मोती १९ प्राणो की पीडा, २० अपमान २१ किनारे से ।

४७ ममनून[1] हूँ मै हिम्मते-मुश्किल-पसन्द[2] का।
जो काम सहल[3] थे वही दुशवार हो गए ॥
—नजर

४८. पहुँचे उस बुतके न दर तक, यह है हिम्मत का कसूर[4]।
वर्ना[5] चाहे जो वशर अर्श[6] पै काबू[7] हो जाय ॥
—दर्क

४९. ओ नगे-एतबार[8] दुआ[9] पर न रख मदार[10]।
ओ वेवकूफ! हिम्मते-मर्दाना चाहिए ॥
—हफीज

५०. पस्त-हिम्मत[11] वह है राहे-शौक[12] मे जो रह गए।
हौसले वाले[13] के आगे दूर कुछ मंजिल नही ॥
—सालिक

५१ दरिया हूँ कोहसार[14] से टकराके जाऊंगा।
रस्ते के हादसात[15] पै मै छाके जाऊँगा ॥

५२ तरक्की कोशिश-ओ-मेहनत ही से दुनिया मे होती है।
तनज्जुल[16] उनका लाजिम[17] है, जो हिम्पत हार बैठे है ॥
—अफजल

५३ हिम्मते-मर्दाना है मेरी मुझे मुश्किल-कुशा[18]।
गैर से ख्वाहा[19] मदद का वक्ते-मुश्किल[20] मैं नही ॥

५४. बहादुर पर्वतो को धूल ही केवल समझते हैं।
वह तूफानों की हर इक मौज[21] को मजिल समझते है ॥

---

१ अहसानमन्द २ कठिनाई पसन्द करने वाली की हिम्मत का ३. आसान ४ अपराध ५ नही तो ६ आकाश ७ नियन्त्रण ८ अविश्वासी ९ प्रार्थना १० निर्भरता ११ हतोत्साह, अल्पसाहसी, कम हौसले वाले १२ शोक के रास्ते मे १३ साहसी उत्साही १४ पर्वत से १५ कठिनाइयो, कष्टो, रुकावटो पर १६ अवनति, पतन १७ अनिवार्य १८. कठिनाइयो को हल करने वाली १९. इच्छुक २० कठिनाई के समय २१ लहर को।

कही जाकर नही है खोजनी पडती उन्हे मंजिल ।
जहा वह पॉव रखते है, वही मजिल समझते है ॥

५५. हिमाला गर आए राह मे, हटा दे ।
सितारो से नजरे लडाता चला जा ॥

—अख्तर

५६. मर्द वह कब है भंवर से जो उभर सकता नही ।
हक ही जीने का नही उसको जो मर सकता नही ॥

—जोश

५७ मुझे आगोशे[१]-तूफाँ ही जिगर आगोशे-मादर[२] है ।
वोह कोई और होगे अम्नेसाहिल[३] देखने वाले ॥

—जिगर

५८. पड़ा रह आप अपनी पस्तिये-हिम्मत[४] से पस्ती[५] मे ।
रसाई[६] तो तेरी ऐ खाक के पुतले खुदा तक है ॥

५९ रास्ते मे रुक के दम ले लू मेरी आदत नही ।
लौटकर वापस चला जाऊँ, मेरी फितरत[७] नही ॥

—मजाज

६० बढा दी इतना कहकर शमअ ने परवानो की हिम्मत ।
"है जलना काम उनका, जो है दिल वाले जिगर वाले ॥

—अलम

६१. होते है अक्सर[८] मकासिद[९] मे वह अपने कामयाव[१०] ।
नामुरादी[११] मे भी होते है जो हिम्मत-आशना[१२] ॥

—जहीन

६२. साहिवे-हिम्मत[१३] नही दबता मुसीवत से कभी ।
ज़ोर से आंधी के आतिश[१४] की भड़क जाती नही ॥

---

१. तूफान की गोद २ माता की गोद ३ शान्त किनारे को ४. साहसहीनता से ५ निचाई मे ६ पहुँच ७ प्रकृति, स्वभाव ८ प्राय. ९. उद्देश्यो मे १० सफल ११ मनोरथ मे असफलता, नाकामी, दुर्भाग्य १२ साहसी, उत्साही १३ साहसी, हिम्मती १४ आग ।

६३ इसी दुनिया की अक्सर[1] तल्खियो ने[2] मुझको समझाया।
कि हिम्मत हो तो फिर है जहर भी इक चीज खाने की॥
—नैयर

६४ कदम अपना फराजे-हिम्मते-आलीपै[3] रखता जा।
जिसे कहता है जाहिद अर्श[4] यह जीना[5] है कुर्सी का॥
—शाद

६५ दरिया मे कूद मारिकाआरा[6] हो मौजो[7] से।
गौहर[8] की आर्जू हो तो साहिलगजी[9] न हो॥
—मारिकाआरा

६६ पस्त-हिम्मत से[10] हसूले-मुद्दआ[11] होता नही।
हाथ आता है वडी मुश्किल से पानी चाह का॥

६७ वह डूबे सैले-जमानामे[12] या किनारे जाये।
बशर का[13] काम है बस हाथ-पैर मारे जाये॥

६८ बजुज[14] सख्ती उठाये नाम मुमकिन[15] है कही निकले।
तराशा जाय जब सौ बार पत्थर तब नगी[16] निकले॥

६९. जहांमे पाएगा क्योंकर वह गौहरे-मकसूद[17] ?
जिसे तलाश से हो शर्म जुस्तजूसे[18] से गुरेज[19]॥

७० वही है साहिबे-इमरोज[20] जिसने अपनी हिम्मत से[21]।
जमाने के[22] समन्दरसे[23] निकाला गौहरे-फर्दा[24]॥



---

१. प्राय, अधिकतर २ कटुताओने ३ श्रेष्ठ साहस की ऊंचाई पर ४ आकाश ५ सोपान ६ योद्धा, लडने वाला ७. लहरो से ८ मुक्ता, मोती ९ तटस्थ १०. उत्साहहीनता अनुत्साह ११ उद्देश्य की प्राप्ति १२ युग-प्रवाह, कालकी बाढमे १३ मानवका १४ अतिरिक्त, बिना १५. सभव १६ मुक्ता, मोती १७ इच्छा, उद्देश्य का मोती १८ खोज से १९. उपेक्षा, घृणा २०. आज के दिन का स्वामी २१ साहस से २२. समय, काल के २३ सागर से २४. आगामी कल का मोती।

गया वक़्त फिर हाथ आता नहीं !

१ इन्सान खोके वक्त को पाता नही कभी ।
जो दम गुजर गया, वह फिर आता नही कभी ॥
सदा दौर-दौरा दिखाता नही ।
गया वक्त फिर हाथ आता नही ॥

२ जिसने पहचानी न कोई कद्र अपने वक्त की ।
कामयाबी उसको हासिल हो नही सकती कभी ॥
जिसने कल पर आज अपना काम छोड़ा, रह गया ।
"कल भला देखी है किसने ?" खूब कोई कह गया ॥

३ गनीमत समझ वक्ते-फुर्सत[1] को गाफिल[2] ।
न हाथ आएगा फिर यह मौका जो अब है ॥

४ अपने दम को आदमी हरदम गनीमत जान ले ।
खाक का फिर ढेर है, बादे-फना[3] कुछ भी नही ॥

—दाग

५ मुझको गफलत ने[4] खबर अय्यामे-फुर्सत[5] की न दी ।
आह ! जब जाते रहे दिन तब मैं पछताने लगा ॥

—कुदरत

६ जब खजाना लुट गया तब होश मे आये तो क्या ?
वक्त खोकर दस्ते-हसरत[6] मलके पछताये तो क्या ?

—हाली

---

१ अवकाश के समय को २ प्रमादी ३. मरने के बाद ४ प्रमादने ५ अवकाश के दिनो तथा क्षणो की ६ अतृप्त कामना के हाथ ।

७ दारे-फानी[1] मे हो गाफिल मौत से इक पल नही।
क्या भरोसा जिन्दगी का आज है और कल नही ॥

—जौक

८ वक्त पर[2] कतरा[3] है काफी[4] अब्रे खुश-अंजाम[5] का।
जब कि खेती जल गई बरसा तो फिर किस काम का ?

९ ऐ वक्त-वक्त प्यारे ! पछता रहे हैं खो कर।
मुमकिन नही है अब तो मरकर भी हो मुयस्सर[6] ॥

१० गनीमत है कोई दम सैरे-गुलशन।
भरोसा क्या है ? दम आवे न आवे ?

—हिदायत

११ दोरोजा जीस्त[7] गनीमत है जिक्रे-हक[8] करले।
बदन मे जान, दहन मे जबाँ रहे, रहे न रहे ॥

—अमीर

१२ गुजरने को गुजर जाती है उम्रे शादमानी[9] मे।
यह मौके कम मिला करते हैं लेकिन जिन्दगानी मे ॥

१३ जो हम-तुम पास बैठे है सुनो यह दम गनीमत है।
यह हँसना, बोलना रह जाय तो क्या कम गनीमत है ॥

१४ नग्माहाए[10] गम को भी ऐ दिल गनीमत जानिये।
बेसदा[11] हो जाएगा यह साजे-हस्ती[12] एक दिन ॥

—गालिब

१५ बुरे है या भले हम-तुम, 'जफर' लेकिन गनीमत है।
कि याँ आएँगे फिर-फिर कर न हम-जैसे न तुम-जैसे ॥

—जफर

---

१ नश्वर संसार २ उचित समय पर ३ बूँद, ४ पर्याप्त ५. शुभ परिणाम लाने वाले बादल का ६. प्राप्त ७ जिन्दगी ८ सत्य की चर्चा, तत्व-चिन्तन, प्रभु-स्मरण ९ खुशी मे १० शोकपूर्ण गीत ११ बन्द, चुप १२. जीवन का वाद्ययंत्र ।

१६ जो दम है गनीमत है, क्या जानिये क्या कल हो ?
इक दौर[1] की निस्बत[2] है इमरोज[3] को फर्दा[4] से ॥

—यगाना

१७ फुर्सत बहुत ही कम है गनीमत समझ जफर !
हंस-बोल कर बसर हो जो औकाते-चन्द रोज[5] ॥

१८. जो आज सोहबते-अहबाब[6] है, गनीमत है ।
शरीक[7] कल कोई हमदम रहे न रहे ॥

—वजीर

१९ यहां गर्दिश[8] फलक की चैन देती है किसे 'इन्शा' ।
गनीमत है कि हम-सोहबत[9] यहां दो-चार बैठे हैं ॥

—इन्शा

२० नतीजा[10] जिन्दगानी का है कुछ दुनियां मे कर जाना ।
खयाले-मौत[11] बेजा[12] है, वह जब आये तो मर जाना ॥

२१ फस्ले-गुल[13] है बुलबुल ! अर्मां[14] हो सके जितने निकाल ।
शाखे-गुल[15] सूनी नजर आयेगी मुरझाने के बाद ॥

—आजम

२२. फोरे-मंजिल के लिए हर मौका है, मगर ।
इक जरा इनसान मे चलने की आदत चाहिए ॥



---

१. प्रवाह, चक्र २ अपेक्षा ३ इस दिन को, आज के दिन को ४. आने वाले कल ५ अल्प कालीन अवसर ६ मित्रो का मिलन ७ सम्मिलित, शामिल ८. चक्र ९ सगी-साथी १० जीवन का परिणाम, अर्थ प्रयोजन ११ मृत्यु का विचार १२ अनुचित १३. मौसम बहार १४ इच्छा, लालसा, अभिलाषा १५. फूलो की डाली ।

अपनी करनी, पार उतरनी !

ॐ

१. अकड़-ऐंठ सब धरी रहेगी, सीधे होकर जाओगे।
अपनी करनी पार उतरनी, जैसा करोगे पाओगे॥

—फ़ना

२. नेक[1] फल पाता है वह, हर वक्त जो नेकी[2] करे।
फ़ैसला[3] है, आदमी जैसा करे, वैसा भरे॥

३ बुरा मागेगा जो औरो का खुद उसकी बदी[4] होगी।
जो खोदेगा गढा, उसके लिए खाई खुदी होगी॥

४. अभी तो महवे-सितम[5] हो लेकिन,
वोह दिन भी आएगा एक दिन।
जफा[6] की आंखो मे होंगे आंसू,
वफा[7] के लबपर हँसी मिलेगी॥

—अकरम

५. अन्धा हुआ हूँ नामए-ऐमाल[8] देखकर।
जितनी कि खाक[9] उडाई थी, आँखो मे भर गई॥

—नजर

६ दुनिया अजब बाज़ार है, कुछ जिन्स[10] याँ की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बदसे बदी की बात ले॥

---

१ अच्छा, भला २ भलाई ३ निर्णय ४ बुराई ५ अत्याचार-रत ६. जुल्म, अत्याचार ७ नेकी के ८ कर्मों का बहीखाता ९ धूल १० सामग्री, सामान, माल।

मेवा खिला मेवा मिले, फल-फूल दे, फल-पात ले।
आराम दे, आराम ले, दु.ख-दर्द दे, आफात[1] ले॥
कलजुग नही, कर-जुग है, यां दिन को दे और रात ले!
क्या .खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥

—नज़ीर

७. न चैन पाएगा तू भी जालिम[2] किसी का ख़ाना[3] खराब[4] करके।
यह याद रखना कि लेगे बदला जनाब बारी हिसाब करके॥

—जफर

८. जो पार उतारे औरो को, उसकी भी नाव उतरती है।
जो ग़र्क[5] करे फिर उसकी भी यॉ डुबको-डुबको करती है॥

९. बिखेरता है जो औरो की राह मे कॉटे।
वह हात[6] ज़ख्म-रसीदा[7] जरूर होता है॥

—मुनव्वर

१०. यह .खूब[8] क्या है, यह जिस्त[9] क्या है,
जहा की असली सरिश्त[10] क्या है?
बड़ा मज़ा हो तमाम चेहरे,
अगर कोई बेनकाब[11] कर दे॥
तेरे करम[12] के मुआमिले[13] को, तेरे करम पर ही छोड़ता हूँ।
मेरी खताए[14] शुमार[15] करले, मेरी सज़ा[16] का हिसाब करदे॥

—हफ़ीज

११ बद[17] न बोले .जेरे-गर्दू[18] गर कोई मेरी सुने।
है यह गुम्बद[19] की सदा[20], जैसी कहे वैसी सुने॥

—जौक़

---

१ मुसीबतें, विपत्तियाँ २. अत्याचारी ३ घर ४. उजाड़ कर, ५. डुबोए ६ हाथ ७ घायल ८ अच्छा ९ बुरा १०. स्वभाव ११. बेपर्दा, निरावरण १२ दयालुता १३. काम को १४. अपराध १५ गिनले १६. दण्ड का १७. बुरा १८ आकाश के नीचे १९ गुम्बज, महराब की २०. ध्वनि, आवाज़।

१२. एवज़[1] नेकीका है नेकी, बदीका है बदी बदला ।
मसल[2] है दूध का दूध और पानी है पानी का ॥

१३. नतीजा क्योकर अच्छा हो, न हो जब तक अमल अच्छा ।
नही बोया है तुख़्म[3] अच्छा तो कब पाओगे फल अच्छा ?

१४ बढके फव्वारे के मानिन्द[4], न बोल ऐ मुनइम[5] !
थूकना चर्ख़[6] को, है अपने ही मुँह पर आता ॥

१५. आदिल[7] है देगा हासिले-कश्ते-अमल[8] हमे ।
काटेगे आप हमने यह खेती जो बोई है ॥

१६ दुश्मनी करने का फल दुश्मन को खुद मिल जायगा ।
आने वाला एक दिन उसके लिए मुश्किल का है ॥

—रज़ा

१७ जो अमीरी मे ग़रीबो की मदद करता नही ।
उसकी नादारी[9] मे कोई उसका दम भरता नही !

१८ दुनिया न जान इसको मियाँ ! दरिया की यह मझधार है ।
औरो का बेडा पार कर, तेरा भी बेडा पार है ॥

१९ जो बोया था वह खाते है, जो बोते हैं वह खाएँगे ।
हर हालत मे, हर दुनिया मे ऐमाल[10] ही आगे आएँगे ॥

२० तुझको देता नही नैरंगे[11]-ज़माना धोखा ।
फेल[12] तेरा तुझे इन्सान ! दगा[13] देता है ॥

—इन्द्रजीत

---

१ बदला, फल, परिणाम २ कहावत, लोकोक्ति ३ बीज ४ भाति, तरह ५. धनिक ६ आकाश पर ७. न्यायनिष्ठ, न्यायशील ८ कर्म की खेती का फल ९. दरिद्रता, गरीबी मे १० कर्म, आचरण ११ ससार की माया, जादू १२. कर्म १३ धोखा ।

२१. जिसने रखा दूसरो की शादमानी[1] का ख़याल।
वह न पाएगा कभी अपनी तबीअ़त मे मलाल[2]॥
२२. जब मैं कहता हूँ कि या अल्लाह! मेरा हाल देख।
हुक्म होता है कि अपना नामए-ऐमाल[3] देख॥
२३. जो पूछे जाएँगे आखिरमे[4] वह नेक ऐमाल[5] हैं तेरे।
अगर कुछ साथ जाएँगे, वह नेक अफ़आ़ल[6] हैं तेरे॥

१ खुशी, प्रसन्नता, हर्ष का २. रंज, शोक, ३ कर्मों का बहीखाता, ऐमालनामा ४. अन्त मे ५. सत्कर्म ६. अच्छे कर्म, सत्कर्म।

रहा एक-सा कब किसीका ज़माना ?



१. जो है आज खन्दां[1], वह कल नालाज़न[2] है।
रहा एक-सा कब किसी का ज़माना ?

—अदीब

२ बनने के बाद जिसको बिगड़ना नही पडा।
ऐसा कभी किसी का मुकद्दर[3] कहाँ बना ?

—मुनव्वर

३. सैलाब-के-सैलाब[4] गुज़र जाते है,
गरदाब-के-गरदाब[5] गुज़र जाते हैं।
आलाम-ओ-हवादस[6] से परेशाँ[7] क्यो है ?
यह ख्वाब[8] हैं और ख्वाब गुज़र जाते हैं॥

—अखम

४. आज काटें है अगर तेरे मुकद्दर मे तो क्या ?
कल तेरा भर जायगा फूलो से दामन, गम न कर॥

—निहाल

५ जो गम[9] हद[10] से ज़ियादा हो, खुशी नज़दीक होती है।
चमकते है सितारे रात जब तारीक[11] होती है॥

—अफसर

---

१ हँसनेवाला २ चीखने-चिल्लाने वाला, रोता हुआ ३ भाग्य ४ बाढ ५. भँवर ६ विपत्तियो और कष्टो से ७ दुखी ८. स्वप्न ९. दुःख १०. सीमा से ११. अंधेरी।

६ चमनके माली अगर बना लें,
मुआफिक[1] अपना शुआर[2] अब भी।
चमनमे आ सकती है पलट कर,
चमन से रूठी वहार अब भी॥

—जिगर

७ जिनके हँगामो[3] से थे आबाद वीराने[4] कभी।
शहर उनके मिट गए, आबादियाँ वन हो गई॥

—इक़बाल

८ ऐ दिल! न कर गिला,[5] दो-चार दिन की बात है।
चार दिन की गड़बड़ी और फिर चांदनी रात है॥
९. ऐ गर्दिशे-दौरा[6] तेरे भी अन्दाज़[7] निराले होते है।
दु.ख-दर्द उन्ही को मिलता है, जो नाज़[8] के पाले होते है॥

—मुल्ला

१०. खुदाकी शान हमी थे कभी कफस[9] वाले।
हमे तो आज यहाँ आशियाँ[10] नही मिलता॥

—जिगर

११ कौन होता है दिले-अफसुर्दा[11] का पुरसाने-हाल[12]?
फूलकी .खुशबू भी चल देती है मुरझानेके बाद॥
१२. कल जिनपै ज़माना हँसता था, आज उनकी लहद[13] पर रोता है।
अव जागने वाले जागे हैं जव सोने वाला सोता है॥

—असद

---

१ अनुकूल २. आचरण ३ कोलाहल, शोरो-.गुल से ४. जंगल ५. शिकायत ६ दुनिया की मुसीवत, संकट-युग ७ ढग ८ नज़ाकतके ९. पिंजरे वाले १० घोसला ११ उदास, दु.खी दिल का १२ हाल-चाल पूछनेवाला १३. क़ब्र पर।

१३ हो दौरे-ग़म[1] कि अहदे-.खुशी,[2] दोनो एक है ।
दोनो गुज़श्तनी[3] है, खिज़ाँ क्या बहार क्या ?

—महरूम

१४. वह जल्द-जल्द बदलता जमाना है ।
कि आज है जो हक़ीक़त,[4] वह कल फ़साना[5] है ॥

—असर

१५ बहार आई बजाओ अन्दलीबो[6] ! साज[7] इशरत[8]के ।
गई हसरत[9]की वह रातें, गये वह दिन मुसीबतके ॥

—यक़ीन

१६. तमाम उम्र बसर यूँ ही ज़िन्दगी होगी ।
.खुशीमे रंज कही, रंजमे .खुशी होगी ॥

—दाग़

१७. पल-भर मे कुछ-से-कुछ है ज़माने[10]की रंगतें ।
आलम[11]के इनक़लाब[12] कयामतसे कम नही ॥

१८ अब हम भी वह नही है, गर आप वह नही हैं ।
हम भी बदल गये, जो ज़माना बदल गया ॥

—नजर

१९. इतर मिट्टीका भी जो मलते न थे पोशाक[13]मे ।
कासए-सर[14] उनके देखे हमने रुलते खाकमे ॥

२० मखमली गद्दोपे जिनको नीद तक आती न थी ।
एक पत्थर है फकत उनके सिरहानेके लिए ॥
जिनके लगर[15] रात-दिन जारी[16] थे भूखोके लिए ।
आज वोह मुहताज है बस दाने-दानेके लिए ॥

---

१ विपत्ति का चक्र २ सुख का समय ३ नाशवान, अस्थायी ४. सत्य, तथ्य ५ कहानी ६. बुलबुलो ! ७ वाद्य ८ ऐश्वर्य, सुख के ९. अतृप्त कामना की १० काल, समय ११. संसार के १२. परिवर्तन १३. लिबास, कपड़ो मे १४, सिर के प्याले १५. भंडार १६. चालू ।

२१ शिकस्ता-दिल[1] हो न मेरे माली !
वोह दिन भी नज़दीक आ रहा है ॥
कि फूल खिलते हुए मिलेंगे,
फिजा[2] महकती हुई मिलेगी ॥

—शरीफ

२२. मुसीबतो मे न हार हिम्मत,
नजर मे रख यह उसूले-फितरत[3] ।
जो बादे-शब[4] इक सहर[5] भी होगी,
तो बादे-गम[6] इक ख़ुशी मिलेगी ॥

—अख़्तर

२३ कभी तो इस जिन्दगी-ए-मुर्दा[7] पै रग आएगा ज़िन्दगी का ।
कभी तो बदलेंगे दिन हमारे, कभी तो हमको ख़ुशी मिलेगी ॥

—अर्श

२४ फूलोसे जो खेला करते थे, दर-दरकी ठोकर खाते है ।
जीनेकी तमन्ना थी जिनको, अब जीनेसे घबराते हैं ॥

—मजर

२५ गुलिस्ताने-हयाते-चन्दरोज़ा[8] का न सुन किस्सा ।
बहार आई थी बरसोमे, खिजां आई घडी-भरमे ॥

—शौकत थानवी

२६. क्या इससे बहस कैसे थे, जो दिन गुज़र गये ?
अच्छे थे या बुरे, हमे बर्बाद कर गये ॥
'अख़्तर' यह ग़मके दिन भी गुज़र जायेगे यूं ही ।
जैसे वह राहतो[9] के ज़माने गुजर गये ॥

—अख़्तर

---

१. भग्न-हृदय २ वातावरण ३. प्रकृति का नियम ४ रात के बाद ५. प्रभात, सुबह ६ दुख के बाद ७ मुर्दे की जिन्दगीपर, निष्प्राण जीवन पर ८ अल्पकालीन जीवन के बगीचे का ९. सुखो के ।

२७ थी जो कल तक कश्तिए-उम्मीद[1]को थामे हुए ॥
रुख बदलकर आज वोह मौजें[2] भी तूफां बन गईं ॥

२८ बेगाने[3] जो शुरू[4]से है, उनका ज़िक्र क्या ?
अपने भी गैर हो गए, इसका मलाल[5] है ॥

—अम्न

२९ ऐ महवे-निशाते-फस्ले-गुल[6] अजामे-खुशी[7] गम होता है ।
फूलों की तरह जो हँसते है, इक रोज़ वोह गिरियाँ[8] होते है ॥

—अलम मुजफ्फरनगरी

३० अब जहाँमे उनकी क़ब्रोके निशाँ मिलते नही ।
उम्र-भर जो फिक्रे-तस्ख़ीरे-जहाँ[9] करते रहे ॥

—महरूम

३१ नाम आज कोई याँ[10] नही लेता है उन्होका ।
जिन लोगोके कल मुल्क[11] ज़ेरे-नगी[12] था ॥

३२ ऐ हुब्बे-जाहवालो[13] ! जो आज ताजवर[14] है ।
कल उसको देखियो तुम, न ताज है, न सर है ॥

—मीर

३३. फलक देता है जिनको ऐश, उनको ग़म भी होते है ।
जहाँ बजते है नक़्क़ारे,[15] वहाँ मातम[16] भी होते है ॥

—दाग़

---

१ आशा की नैया को २ लहरें ३. पराये ४. प्रारम्भ से ५. दु:ख ६. सुख मे तल्लीन मौसमी फूल ७. हर्ष का परिणाम ८. रोते हैं ९ विश्व-विजय की चिन्ता १० यहाँ ११ दुनिया १२ निगरानी, शासन मे १३. ऐश्वर्य से प्रेम रखने वालो, १४. सम्राट्, बादशाह १५. नगाड़े १६. शोक ।

३४. जिनके जलवे न समा सकते थे ईवानो[1]में ।
उनकी ख़ाक आज उड़ी फिरती है वीरानों[2]मे ॥
—रवाँ

३५. गुलशन बहारपर है, हँसो ऐ गुलो ! हँसो ।
जब तक ख़बर न हो तुम्हे अपने मआल[3]की ॥
—आसी

३६. यह सोचते ही रहे और वहार ख़त्म हुई ।
कहाँ चमनमे नशेमन बने, कहाँ न बने ?
—असर

३७ दिन जो दुश्मनके फिरे, मेरे भी फिरने चाहिएँ ।
क्या जमाना एक ही करवट बदलकर रह गया ?
३८. क्या सुरमा-भरी आँखोंसे आँसू नही गिरते ?
क्या मेहदी लगे हाथोसे मातम नही होता ?
—रियाज़

३९ क्या मौसमे-गुल[4]पर इतराकर हम गाएँ तराना फूलोंका ?
दो रोज़मे आनेवाला है एक और ज़माना[5] फूलोंका ॥
४०. कभी शादी कभी ग़म है, कभी कुछ है कभी कुछ है ।
बदलता रग है मानिन्द हरवा[6] रोजगार अपना ॥
—जरार

४१. हर मर्तवा ज़मानेको होता है इन्क़लाव[7] ।
लाती है रंग गर्दिशे-दौरा[8] नये-नये ॥
४२. है रगे-तमाशाए-जहाँ[9] सूरते-ख़ुर्शीद[10] ।
जो सुवहको देखा, वह नजर शाम न आया ॥

---

१ महलो में २ जगलो मे ३ परिणाम की ४. मौसम वहार पर ५. काल, समय ६. युद्ध, जंग ७. परिवर्तन ८. काल-चक्र, दुनिया की मुसीवत ९. दुनिया के खेलो का रग १०. सूर्य की भाति ।

४३. कुछ भी हासिल[1] बाकमालो[2]को नही है जुज़ जवाल[3]।
मूरदे-नुक़सान[4] हुआ जब माह[5] कामिल[6] हो गया ॥
—नासिख

४४. फ़लक[7]ने चैन[8]से दो दिन भी कब रहने दिया मुझको ?
इधर सरसे ख़िज़ां गुजरी उधर सरपर बहार आई ॥
—जिगर

४५ याद रख, देखके दुनियाके नशेब[9] और फराज[10]।
अब बुलन्दी[11] है जहां, फिर वही पस्ती[12] होगी ॥
४६. यो नही रहने का, बदलेगा जहांका इन्तिज़ाम[13]।
कल वोही मजबूर[14] होगे, आज जो मुख़्तार[15] हैं ॥
—रिन्द

४७ एक वजअ[16]पर नही है ज़मानेका तौर[17] आह !
मालूम हो गया मुझे लैल-ओ-निहार[18] से ॥
४८. दौरे-सागर[19] था अभी या है अभी चश्मे-पुर-आब[20]।
देख 'सौदा' गर्दिशे-अफलाक[21]से क्या-क्या हुआ ?
—सौदा

४९ नही सबात[22] बुलन्दए-इज्ज़ो-शां[23]के लिए ।
कि साथ ओज[24]के पस्ती है आसमांके लिए ॥
—जौक़

---

१. प्राप्त २. पूर्ण पुरुषो को ३. दु.ख के अतिरिक्त ४. ह्रसोन्मुख ५. चन्द्रमा ६. पूर्ण ७. आकाश ने ८. सुख से ९-१०. उतार और चढ़ाव ११ ऊंचाई १२ नीचाई १३ व्यवस्था १४. विवश १५. सत्ताधारी, सत्ता-प्राप्त १६. स्तरपर १७ ढंग-ढर्रा १८. दिन-रात से १९. शराब का दौर २० आंसू-भरी आंख, रोना २१ आस्मानी मुसीबत से २२. स्थायित्व २३. ऊंची शान और इज्जत वाले के २४. ऊंचाई के ।

५०. देखा न एकरंग जहाने-दोरंग[1]मे ।
अच्छा किसीका है तो किसीका बुरा नसीब[2] ॥
—अमीर मीनाई

५१. करे है गर्दिशे-दौरां तरह हिंडोलेकी ।
हर-एक शख्सको यां गाह[3] पस्त[4] गाह बुलन्द[5] ॥
—सौदा

५२. तनज्ज़ुल[6]मे तरक्की[7] है तरक्कीमे तनज़्ज़ुल है ।
तमाशा देख ग़ाफिल ! माहे-नौका[8] माहे-कामिल[9]का ॥
५३. अजीव दुनियाका हाल देखा, कमाल[10] ही को ज़वाल[11] देखा ।
उन्हीको अब पुरमलाल[12] देखा, जो लुत्फे-राहत[13] उठा चुके है ॥
५४. वदल लेता है करवट एक हालतपर नही रहता ।
कभी यह शोवदागर[14] एक सूरत[15]पर नही रहता ॥
५५. प्यादा-पा[16] जो चमनमे वहारको देखा ।
हवाके घोडेके ऊपर खिजां सवार आई ॥
५६. हसीनो[17]से कहो नाज़ां[18] न हो हुस्ने-दुरोज़ा[19]पर ।
खिज़ांमे वैठकर रोया करेंगे इन वहारोको ॥
५७. मिलाया खाकमे उसको जिसे चमका हुआ देखा ।
फलक इन रफअतो[20]पर देखना क्या पस्त हिम्मत है ?
५८ खात्मा[21] ऐशका[22] हसरत[23] हीपै होते देखा ।
रोके ही उट्ठे है इस वज़्म[24]से गाने वाले ॥

---

१. दुरगी दुनिया मे २ भाग्य ३ कमी ४. नीचा ५. ऊँचा ६. ह्रास मे ७. विकास ८ नये चन्द्रमा का ९. पूर्ण चन्द्र का १०. पूर्ण ११. सकट १२. दु.खी १३. सुख का मजा १४. जादूगर १५. ढग पर १६. पैदल १७. सुन्दर रूप-रग वालो से १८ मगरूर, अहकारी, गर्वीले १९. क्षणिक सौन्दर्य पर २०. ऊँचाइयो पर २१ समाप्ति, अन्त २२. सुख का २३. अतृप्त कामना २४. सभा से ।

५६. नैरंगिये-ज़माने[1]से खातिर[2] न जमा[3] रख ।
सौ रंग बदले जाते हैं यां एक आन[4]मे ।।
६०. हुई यह रात-भरमे खन्दाहाए-ऐशकी[5] सूरत ?
चमनका ग़ुंचा-ग़ुंचा[6] सुबहको इक चश्म-गिरियां[7] था ।।
६१. एक बनता है बिगड़ जाता है फौरन[8] दूसरा ।
देख ओ नादां ! तमाशा गर्दिशे-अय्याम[9]का ?

—आबाद

६२. इक रंगे-मुस्तक़िल[10]पे कहां दहरको कयाम[11] ?
हँगामे हर जमूद[12]मे है इन्तशार[13]के ।।
६३. कहां है, तग़य्युर[14] ज़मानेका देखे !
खुदाईका सामान कर जाने वाले ।।
६४ नही क़रार[15] ज़मानेको एक हालतपर ।
जो दोपहर हूँ मै नालां[16] तो दोपहर खामोश[17] ।।

—आतिश

६५. कोई रह सकता जमानेमे नही इक तौरपर ।
कुछ-से-कुछ कर डालता है ऐ 'ज़फर' दम-भरमे चर्ख[18] ।।

—जफ़र

६६ दिन एक-से नही हैं चमने-रोजगार[19]के ।
दो दिन खिज़ा[20]के होते है दो दिन बहारके ।।

---

१. काल के धोखे से २ विश्वास ३ जरा, बिलकुल ४ क्षण मे ५. हसाने वाले सुख की ६ प्रत्येक कली ७. रोने वाला ८ तुरन्त ९ समय के फेर का १०. स्थायी रंग पर ११. स्थिति, ठहराव १२. सयोग मे १३ वियोग के १४. परिवर्तन १५ ठहराव १६. रोता हुआ १७ चुप, शान्त १८. आकाश १९. उद्यान की दशा के २०. पतझड़ के ।

६७ गाह[1] गर्मी गाह सर्दी गाह दिन है गाह रात ।
ऐ 'ज़फर' रहता नही, दायम[2] जमाना एक-सा ॥

—ज़फ़र

६८. किसीकी एक तरह पर बसर हुई न 'अनीस' ।
उरूजे-महर[3] भी देखा तो दोपहर देखा ॥

—अनीस

६९. किसीको पस्त करे है फलक[4] किसीको बुलन्द[5] !
कि इस हिंडोलेमे है हर जमाँ[6] नशेब-ओ-फराज़[7] ॥

७० नही रहती हमेशा एक-सी रंगत जमानेकी ।
कुछ इसके रगमे रगे-हिना[8]का कारखाना है ॥

—ज़फ़र

७१. रखता है चर्ख ओज[9] किसीका कब एक दिन ?
होता है दोपहरमे जवाल[10] आफताब[11]का ॥

७२ दो रोज एक वजअ[12]पे रगे-ज़हाँ[13] नही ।
वह कौन-सा चमन[14] है कि जिसको खिज़ाँ[15] नही ?

—नासिख़

७३. जमीने-चमन गुल खिलाती है क्या-क्या ?
बदलता है रंग आसमाँ कैसे-कैसे ?

—आतिश

७४ होता न क्योंकि ऐ महे-कामिल[16] तुझे ज़वाल[17] ?
बाइस[18] तेरे ज़वालका तेरा क़माल[19] था ॥

—ज़फ़र

---

१. कभी २. नियत, निश्चित ३. सूर्य का चढ़ाव ४. आकाश ५. ऊँचा ६. समय, जमाना ७. उतार-चढाव ८. मेहन्दी का रग ९. उच्चता १० पतन, गिराव, अवनति, ह्रास ११ सूर्य का १२. स्तर, ढग १३ संसार का रग १४ उद्यान १५ पतझड़ १६. पूर्ण चन्द्र १७. पतन, ह्रास १८. कारण, सवब १९. पूर्णता ।

७५. मुसीवतमे न घवरा, कर गुजर जैसे वने वैसे ।
ये दिन भी जाएँगे एक दिन, वे दिन भी आएँगे एक दिन ॥
७६. सभी हँसते हुए मिलते हैं जव तक चार पैसे हैं ?
न पूछेगा गरीवीमे कोई भी आप कैसे है ?

—अकवर

७७. घर कौन-सा वसा कि जो वीराँ न हो गया ?
गुल कौन-सा हँसा कि जो परेशाँ न हो गया ?
७८. यह माना कि जिन्दगी मे गम वहुत हैं ।
हँसे भी जिन्दगी मे हम वहुत है ॥

—मैकश अकवरावादी

हर हालमें ख़ुश रहना !



१. हर हाल मे .ख़ुश रहना, .ख़ुश रहके अलम[1] सहना।
इक चीज़ ज़मानेमे 'फ़रहत'[2]की भी हस्ती है॥ फरहत

२. हर हुक्ममे हूँ राज़ी, हर हालमे हूँ ख़ुश।
कुछ है अगर तो यह है, दुनियाँमे शादमानी[3]॥ हाली

३. आदमी दुनियाँमे .ख़ुश हरदम नही तो कुछ नही।
दमके है सब दमदमे, जब दम नही तो कुछ नही॥ हश्र

४ आज़ादगीमे[4] ख़ुश रहो, जजालमे[5] भी शाद[6] हो।
इस हालमे भी शाद हो, उस हालमे भी शाद हो॥ नजीर

५ किस्मत बुरी सही, पर तबीअत बुरी नही।
है शुक्र[7] की जगह कि शिकायत नही मुझे॥ ग़ालिब

६. हर आन हँसी हर आन[8] .ख़ुशी, हर वक़्त अमीरी है बाबा।
जब आलम मस्त फ़क़ीर हुए, फिर क्या दिलगीरी[9] है बाबा॥
जफर

७. जो होना है वह होता है, जो होना है वही होगा !
घटाएँ क्यो .ख़ुशी अपनी, बढाएँ क्यो मिहन[10] अपना ? ताहिर

८. डर मौतका, जीनेकी तमन्ना नही रखते !
हम दिलमे किसी तरहका खटका[11] नही रखते ! शाकिर

---

१ दु.ख, वेदना २ हर्ष, ख़ुशी, कवि का उपनाम ३ ख़ुशी ४ स्वतन्त्रता मे, ५. कैद मे, बन्धन मे ६. प्रसन्न ७ कृतज्ञता की, आभार-प्रदर्शन की ८. प्रतिक्षण ६. दु ख, उदासी, घबराहट १०. दु ख, शोक, रज ११ भय ।

९. हर इक मौसम मे कश्ते-आ.जू[1] सरसब्ज़[2] रहती है।
तरद्दुद[3] गैर को[4] होगा, यहाँ तो चैन करते है॥ जौहर

१०. मुसीबत हो कि राहत[5] हो, नही लाजिम[6] गिला[7] करना।
बशर का[8] फर्ज[9] है, हर हाल मे शुक्रे-खुदा[10] करना॥
ताहिर

११ न वस्ल[11] मे राहत[12], न जुदाई मे[13] अलम[14] है।
आये की न शादी[15] न गये का मुझे गम[16] है॥ अमीर

१२. बन्दा वोह, जो दम न मारे।
प्यासा खडा हो दरिया-किनारे॥ यगाना

१३ उस जुल्म पे कुर्बा[17] लाख करम[18],
उस लुत्फ़ पे सदके[19] लाख सितम।
उस दर्द के काबिल हम ठहरे,
जिस दर्द के काबिल कोई नही॥ वासित भोपाली

१४ आदमी खुशखू[20] नही तो कुछ नही।
फूल मे गर बू[21] नही तो कुछ नही॥

१५ नही इसके बराबर नेमतो मे[22] कोई नेमत है।
कोई दिल से मेरे पूछे, जो गम खाने मे लज्जत[23] है॥ अदीब

---

१ कामना की खेती २. हरी-भरी ३ चिन्ता, आतुरता, परेशानी ४. अन्य को, दूसरे को ५ सुख, चैन ६ आवश्यक ७ शिकवा-शिकायत ८ मनुष्य का ९ कर्तव्य १० प्रभु का आभार मानना ११ मिलन, सयोग १२ सुख, खुशी १३ वियोग मे १४ दु ख, व्यथा १५ हर्ष, प्रसन्नता १६ दु ख, वेदना १७ निछावर १८ दया, बख्शिश १९ बलिहारी २० प्रसन्न-प्रकृति, हँसमुख २१ सुगन्ध २२. ईश्वर-प्रदत्त उत्तम वस्तुओ मे २३ स्वाद, मजा।

१६. राज़ी है हम उसी मे, जिसमे तेरी रजा[1] है।
या यूँ भी वाहवा है और वूँ भी वाहवा है॥

१७. राज़ी रहे बशर जो ग़रीबी के हाल मे।
पाये मज़ा पुलाव का अरहर की दाल मे॥

१८. बहुत ख़ुश हूँ, खुदा याद आ रहा है इस मुसीबत मे।
मेरी किश्ती को ऐ तूफाँ[1] यूँही जेरो-जबर[2] रखना॥

१९ हमे जो-कुछ मुयस्सर[3] आए है वो बेशो-कम[4] अच्छा।
ख़ुशी हो तो ख़ुशी अच्छी, अगर गम हो तो ग़म अच्छा॥

२०. ग़म एक इम्तिहान[5] था इन्सा के वास्ते।
जो लोग अहले-ज़ौक[6] थे, वो मुस्करा दिए॥

२१. कस्रते-गम मे[7] भी चेहरे पर बहाली[8] चाहिए।
सामने नजरो के तस्वीरे-खयाली[9] चाहिए॥

२२ मुझे गम से इस वास्ते प्यार है।
कि मेरे बुरे वक्त का यार है॥

२३. शादमानी मे[10] गुजरते अपने आपे से नही।
गम मे रहते है शगुफ्ता[11] शादमानो[12] की तरह॥ हफीज



---

१ इच्छा, मर्जी २ तले-ऊपर, उथल-पुथल ३ उपलब्ध होना ४ अधिक और न्यून ५ परीक्षा ६ शौकीन ७ दु खाधिक्य मे, अत्यन्त दु ख की स्थिति में ८ प्रसन्नता, उल्लास, रौनक ९ विचारो का चित्र १० खुशी मे ११. प्रसन्न-वदन, खिले हुए १२. प्रसन्न, मस्त व्यक्तियो की भाति।

यह कहाँ की दोस्ती है ?



१ यह कहाँ की दोस्ती है कि बने है दोस्त नासह[1] ?
कोई चारासाज़[2] होता, कोई ग़मगुसार[3] होता !!

२. दोस्ती और किसी गरज़के लिए ?
यह तिजारत[4] है दोस्ती ही नही !!

३. बहुत तहकीक़[5] पर मैंने अगर पाया तो यह पाया।
वजूदे-दोस्ती[6] गर है तो यारो की जबाँ तक है !! रंजूर

४. नही 'अहसान' अब वह मजलिसे-अहबाब[7] पहली-सी ?
मैं अब इन्सा से पहले जर्फे-इन्सा[8] देख लेता हूँ !! अहसान

५. तुम हो कि मुद्दतो मे भी मेरे न हो सके !
मैं हूँ कि एक बातमे दीवाना हो गया !!

६ दोस्तो से और वफा की आज़ू ऐ बेखबर !
तेरी उम्मीदो के पीछे कारवाने-यास[9] हैं !! दानिश

७ बहुत आश्ना हैं जमानेमे, लेकिन—
कोई दोस्त दर्द-आश्ना[10] चाहता हूँ !! आजाद

८ जब दोस्त भी जहाँ मे निभाये न दोस्ती !
दुश्मनसे फिर हमे गिलए-इन्तिकाम[11] क्या ? मुनव्वर

---

१. उपदेशक २. चिकित्सक, उपचारक ३. सहानुभूति करने वाला, हमदर्द ४ व्यापार ५ जाच-पडताल पर ६ मित्रता का अस्तित्व ७ मित्र-सभा ८. मनुष्य की पात्रता ९ निराशा का काफिला १० दुःख का साथी ११ प्रत्यु-पकार की शिकायत।

९. अहबाबने की आकर फौरन मेरी दिलजोई ![1]
मै दूर मुसीबत से जिस वक्त गुजर आया !! अर्श

१०. यह दोस्तो का रवैया, यह दुश्मनो का सुलूक ![2]
जो मुझसे पूछो तो दोनो मे कोई फर्क नही !!

११. कुछ मुहब्बत की आग होती है, कुछ रकाबत[3] के खार होते है !
दोस्तो की मिजाज-पुरसीके[4] जाविए[5] वेशुमार[6] होते हैं !!
अदम

१२. ऐ मेरे पुर-खलूस हमदर्दो ![7] अब जियादा करम न फर्माओ ![8]
रहम खा-खाके मेरी हालत पर, डर रहा हूँ मुझे न खा जाओ !!
शाद

१३. दोस्तोसे हमने वह सदमे[9] उठाए जान पर !
दिलसे दुश्मन की अदावत का[10] गिला जाता रहा !! आसी

१४. उम्र हो जायगी 'एहसां', एक दिन यूँ ही तमाम !
दोस्त बनते जाइए, दुश्मन बनाते जाइए !! एहसान

१५. दुश्मनोने क्या बुराई की, जो कीनी दुश्मनी ?
दोस्तोने दोस्तीमे दिल के टुकडे कर दिये !

१६ दहरमे हम वफाशिआरो[11] को, दोस्तो के भरमने मार दिया !
दुश्मनो से तो बच निकले लेकिन-दोस्तोके करमने[12] मारदिया !!
शाद

१७. यगाने[13] तो अपने नही बन सकेंगे !
तू गैरो को अपना बनाता चला जा !! अर्श

---

१ सहानुभूति २ व्यवहार ३. ईर्ष्या-द्वेष ४. मिलने और सात्वना देने के ५ दृष्टिकोण, ढग ६ अनगिनत, असख्य, ७ प्रेमी, हितैपियो ! ८ कृपा न करो ९ दुःख, संकट १० शत्रुता का ११ प्रेमियो, वफादारो को १२ कृपाने १३ अपने ।

१८ हाँ हमारे फैसलोमे फैसला इक यह भी है !
दोस्त बनते जाइए दुश्मन बनाते जाइए !! आजाद

१९. हुआ मालूम मिलकर हमको यारो से ऐ 'बिस्मिल !'
कि दुनियामे अगर है दोस्ती, तो वह है मतलब की !! बिस्मिल

२०. न जाने क्यों मेरी आँखो मे आ गए आँसू ?
किसीने हाथ बढाया जो दोस्ती के लिए !!

२१ जिन्दगीमे पास से दम-भर न होते थे जुदा !
कब्र मे तनहा[1] मुझे यारो ने क्यो कर रख दिया ? गालिब

२२. रो रहा हूँ दोस्तो की सर्द-महरी[2] देखकर !
जिस कदर गाढी छनी थी, उस कदर पानी हुई !! राज

२३. न हो दोस्तका दोस्त को गर खयाल !
नही दोस्त वह जानका है वबाल[3] !!

२४ ऐशके यार तो अगयार[4] भी बन जाते है !
दोस्त वह है, जो बुरे वक्त मे काम आते है !! हाली

२५ अजब नाआश्ना[5] हैं आश्ना इस बहरे-हस्तीके[6] !
डुबो देते है उसको, हाथ ये जिसका पकडते हैं !!

२६. आश्ना जितने है, हैं अपनी गरजके आश्ना !
खूब देख हमने अपना आश्ना कोई नही !! जफर

२७ यक-रंग[7] आश्ना नही, हमने परख लिया !
मुँहपर खरे हैं आप, मगर दिल मे खोट है !!

---

१ अकेला २. गैर वफादारी ३. दु ख, विपत्ति, सकट ४ पराये, दूसरे ५ अपरिचित, अनभिज्ञ, अनाडी ६. जीवन-सागर के ७. एक रग में रंगा हुआ, पक्का ।

२८. दोस्ती के जो किया करते है दावे अहबाब[1] !
वक्त पड़ता है तो फिर आंख चुरा लेते है !!

२९. है ये दुश्मन, जो तुम्हारे दोस्त है ।
मैं दिखाऊँगा जो दम मे दम रहा !! आशिक़ टोंकी

३० मैं हैरां[2] हूँ कि क्यो उससे हुई थी दोस्ती अपनी ?
मुझे कैसे गवारा[3] हो गई थी दुश्मनी अपनी ? दानिश

३१. दिलो के दौलतकदे[4] है खाली,
वफा के जौहर[5] नही किसी मे ।
दुहाई ऐ दुश्मनो ! दुहाई,
फरेब.खुर्दा[6] हूँ दोस्ती का !! असर

३२ निगाहे ढूँढती हैं दोस्तो को और नही पाती ।
नज़र उठती है अब जिस दोस्त पर पडती है दुश्मन पर । फानी

३३ परेशां[7] हुआ दोस्ती करके मै ।
बहुत मुझको अरमान था चाह का !! मीर

३४. हुआ हासिल यह हमको दोस्तो की बेवफ़ाई से ।
कि हमने उम्र-भरकी तौबा करली आश्नाई से !!

३५ दें गैर दुश्मनी का हमारी खयाल छोड़ ।
यां दुश्मनी के वास्ते काफी हैं यार बस !! हाली

३६. अहबाब की जफाएँ तो जख्मी न कर सकी !
अहबाब के खुलूस[8] का मारा हुआ हूँ मैं !!

३७ कौन कहता है कि मिलना दोस्तो से है बुरा ।
लेकिन इतना क्यो मिलो, उकताएँ जिससे आश्ना ?

---

१. मित्र-गण, दोस्त २. आश्चर्य-चकित ३ सह्य, बरदाश्त ४. भवन ५. गुण, खूबियाँ ६ धोखा खाया हुआ ७ दुःखी, तग ८. बर्ताव-व्यवहार का ।

३८. आडे[1] आया न कोई मुश्किल मे ।
मशवरे[2] देके हट गये अहवाब ।। — जोश

३६ 'अहसान' कोई अपना बुरे वक्त मे नही !
अहबाब वेवफा है, खुदा वेनियाज़[3] है ।। — अहसान

४० अपने मतलव के लिए, हर एक वन जाता है दोस्त ।
यूँ कोई वहरे-जहाँ मे,[4] आश्ना होता नही ।। — सहर

४१ हमे भी आ पड़ा है दोस्तो से काम कुछ यानी[5] ।
हमारे दोस्तो के वेवफ़ा होने का वक्त आया ।। — फ़ैज़

४२. दिल अभी पूरी तरह टूटा नही ।
दोस्तो की महरवानी चाहिए ।।

४३. देखलो कोई किसी का दोस्त दुनिया मे नही ।
जान[6] फ़ुर्क़त[7] मे गई, दिल को न मुतलक[8] गम हुआ ।। — आबाद

४४. कोई पक्का दोस्त है तो कोई कच्चा दोस्त है ।
हाँ मुसीबत मे जो काम आए, वो सच्चा दोस्त है ।।

४५. वेगरज[9] दोस्तो की हमदर्दी[10], किस कदर[11] .खुलूसो-सादा[12] है ।
यह वह कमयाब[13] फूल हैं, जिनमे रग कम है महक ज़्यादा है ।।
— अदम



---

१ आगे, सामने, समीप २ सलाह, राय ३ नि स्पृह, वेपर्वाह ४. ससार-सागर में ५ अर्थात्, मतलब यह है कि ६. प्राण ७ वियोग मे ८ जरा भी ६. नि स्वार्थ १० सहानुभूति ११ किस प्रकार, कैसी १२. निश्छल, निष्कपट १३. दुष्प्राप्य, जो बहुत कम मिल सकें ।

अपने ऐबो पे नज़र कर ?

❀

१. अपने ऐबो[1] पे नज़र कर, अपने दिलको साफ़ कर !
क्या हुआ गर खल्क[2] मे तू पारसा[3] मशहूर है ?

२. इतनी ही दुश्वार[4] अपने ऐबकी पहचान है !
जिस कदर करनी मलामत[5] और को आसान है !! हाली

३ औरोपे मोतरिज़[6] थे, लेकिन जो आंख खोली !
अपने ही दिलमे हमने गंजे-अयूब[7] देखा !! अकबर

४. जो भले है, वह बुरो को भी भला कहते हैं !
न बुरा सुनते हैं अच्छे, न बुरा कहते है !!

५. फिलहकीकत[8] वे बुरे है, जो समझते है बुरा !
ऐ 'ज़फर' उसकी तरफसे जो हुआ अच्छा हुआ !!

६. न थी हालकी जब हम अपने खबर,
रहे देखते औरोके ऐबो-हुनर !
पड़ी अपनी बुराइयोपे जो नज़र,
तो निगाहमे कोई बुरा न रहा !! हाली

७. ऐ 'जौक' किसको नज़रे-हिकारत[9] से देखिए ?
सब हमसे हैं ज़ियादा, कोई हमसे कम नही !! जौक

---

१ दोपो, अवगुणो २ संमार मे ३ मंयमी, इन्द्रिय-निग्रही ४ कठिन, दुष्कर ५. भर्त्सना, डाट-डपट, निन्दा ६ आपत्ति-कर्ता, ऐतराज़ करने वाले ७, दोषो-अवगुणों का खजाना ८. वास्तव मे, दरअसल ९. घृणा-दृष्टि से ।

८. मैं बता दूँ आपको, अच्छो की क्या पहचान है ?
वोह है खुद अच्छे, जो औरोको नही कहते बुरा ॥ जौक

९. हम किसीको क्यो कहे, मुँह से बुरा अपने 'जफर' ।
हम ही सबसे है बुरे, हमसे बुरा कोई नही ॥ जफर

१० नज़र आते है हमको ऐब अपने खूबियाँ[1] बनकर ।
हम अपने जहल[2]को भी, यह सभते है कि इर्फां[3] है ॥

११ देखता है ऐबो-हुनर औरका है सब कोई ।
अपना मालूम 'जफर' ऐबो-हुनर किसको है ? जफर

१२ औरोकी ऐबजोई,[4] अपना हुनर[5] नही है ।
अपनी ही ऐबजोई, है यह हुनर हमारा ॥ जोशिश

१३. औरोंपे जब ऐतिराज़[6] करता हूँ,
मौत आये न आये, मैं तो मर जाता हूँ ।
दुनियाके गुनाहपे[7] कौन उठाये उँगली ?
अपने ही गुनाहोंसे डर जाता हूँ ॥ फहंत

१४. अगर ढूँढोतो 'अकबर' मे भी पाओगे हुनर कोई !
अगर चाहो, निकालो ऐब तुम अच्छे-से-अच्छे मे ॥ अकबर

१५ देखते हैं जो हुनर, ऐबको कब देखते है ?
ऐबके देखने वाले तो हुनर देख चुके ? फरेब

१६ ऐबबी[8] को क्या हो अपने ऐबे-मख्फ़ी[9] पर नज़र ?
देख सकती हैं भला आंखे कहाँ बालाए-सर[10] ?



---

१ गुण २ अज्ञान, अविवेक, मूर्खता को ३ ज्ञान, विवेक, ब्रह्मज्ञान ४. दोष-दर्शिता, पराये दोष देखने की आदत ५. गुण, विशेषता, कला ६ आपत्ति ७, पाप-दोषपर ८. दोषदर्शी को ९. गुप्त दोषपर १०. सिर के ऊपर ।

जो रखता है क़ाबू में दानिश जबां को !



१. जो रखता है क़ाबू[1] मे 'दानिश' ज़बा को ।
वना लेगा अपना वह सारे जहाँ को ।। — दानिश

२. जहाँ काम होता है मीठी ज़बां से ।
नही इसमे लगती है दौलत जियादा[2] !! — हाली

३. ख़मोशी[3] मे अमन है, रास्ती[4] है सफ़ाई है !
यह वह दारू[5] है जो कितने ही मर्जो[6] की दवाई है !!

४. वात का ज़ख्म है तलवार के ज़ख्मो से सिवा[7] ।
कीजिए क़त्ल, मगर मुँह से कुछ इर्शाद[8] न हो ।। — दाग़

५. कहे एक जब सुनले इन्सान दो ।
कि हक़ ने ज़बां एक दी कान दो ।। — ज़ौक़

६. फ़ितरत[9] को नापसन्द है सख़्ती जबान मे !
पैदा हुई न इसलिए हड्डी जबान मे ।। — हबीब

७. दुश्मन से भी रवा[10] हैं तुमको जबानें-शीरी[11] !
जब दिल को रंज पहुँचा, क्या लुत्फ़[12] गुफ़्तगू का[13] ?

८. बहुत नाज़ुक जमाना है, ज़बां को बन्द कर रक्खो ।
मसल मशहूर है; दीवार के भी कान होते है ।।

---

१. नियत्रण २ अधिक ३ मौन, चुप्पी ४ सत्यता, यथार्थता ५. औषधि ६ रोगो की ७. अतिरिक्त, अधिक गहरा ८ आज्ञा, हिदायत ९. प्रकृति को १० उचित ११. मधुर वचन १२ आनन्द, मजा १३. वातचीतका ।

९. ज़बाँ वही है कि हिलने मे जिसके हो कुछ फ़ैज[1] ।
वर्ना[2] यूँ हरकत मे जबान है सब की ।।

१०. है जमीनो-आस्माँका फर्क कौलो-फ़ेल[3] मे ।
'अहमदी' जो मुँह से कहते हो, वह करना चाहिए ।। अहमदी

११. होंट अपना हिला न समझे बिन ।
यानी[4] जब खोले तो जबा टुक[5] सोच ।। मीर

१२. लाख नेमत के बराबर है जबाने-शीरी[6] ।
जायका[7] बस है जबां का मेरे दन्दा[8] के तले ।।

१३ तल्खगोई[9] से बचो, शीरीजबा[10] बनकर रहो ।
अपने-बेगाने के दिल पर हुक्मरा[11] बनकर रहो ।।

१४. अक्लमन्द इन्सां हमेशा बोलता है तोलकर ।
बेवकूफ इन्सा हमेशा तोलता है बोलकर ।।

१५. लाल उगल मुँह से, अगर तुझमे हिम्मते-मर्दाना[12] है ।
आग उगलने को मुँह मिस्ले-रफ़ल[13] पाया तो क्या ?

१६. छुरी का, तीर का, तलवार का तो घाव भरा ।
लगा जो ज़ख्म ज़बाका, रहा हमेशा हरा ।।

ज़बाँ अपनी हद मे है बेशक[14] ज़बा ।
बढे एक नुक्ता[15] तो है यह जियाँ[16] ।।
समझ-सोच करके जो खोले ज़बा ।
तो प्यारा बने उसका सारा जहा ।।

---

१ लाभ, फायदा, उपकार २ अन्यथा, नही तो ३ कथनी और करनी मे ४. अर्थात्, कहने का तात्पर्य यह है कि ५. जरा ६. मीठी बोली ७. स्वाद ८. दाँतो के नीचे ९ कटुभाषिता, कड़वी बोली से १०. मधुर-भाषी ११. शासक १२. पुरुषोचित साहस १३. बन्दूक के समान १४. निस्सन्देह १५. बिन्दु १६. हानि, क्षति ।

खरे-खोटे की कसौटी है, मुसीबत क्या है ?



१. अपने-बेगानो[1] की खुलती है हकीकत[2] इससे !
खरे-खोटे की कसौटी है, मुसीबत[3] क्या है ?

२. सुर्खरू[4] होता है इन्सा, आफते[5] आने के बाद !
रंग लाती है हिना[6] पत्थरपे घिस जाने के बाद !!

३. सब्र[7] से बढकर मुसीबतमे कोई हामी[8] नही !
यह सिफत[9] पैदा हो जिसमे, उसमे कुछ खामी[10] नही !!

४. जवाले-मालो-दौलतमे,[11] बस इतनी बात अच्छी है।
कि दुनियाको बखूबी[12] आदमी पहचान जाता है !!

५. तसकीन[13] मुसीबतमे देनेको, यूँ तो जमाना आता है !
ऐसा भी कोई आता है जिसे बिगडी को बनाना आता है !!

अलम

६. होते हैं बडे किस्मतके धनी, जो यह सदमे[14] सह जाते है !
तूफ़ाने-हवादस[15] मे वर्ना[16] अच्छे-अच्छे, बह जाते है !!

७. जबाब ज़ख्मे-जिगर दे रहा है हँस-हँसकर !
"वही तो दिल है कि जो खुश रहे मुसीबत मे !! साकिब

---

१ अपने-परायो की २. वास्तविकता, असलियत ३ विपत्ति, संकट-काल ४. सम्मानित, सफल ५. आपत्तियाँ, दुःख ६ मेंहदी ७. धैर्य, धीरज ८ सहायक मित्र ९ गुण १० कच्चापन, कमी ११. धन-वैभव के पतन के समय मे, १२ भली-भाँति १३. धीरज, तसल्ली १४ दुःख, संकट १५ विपत्तियो के तूफान में १६. अन्यथा।

८. शऊरे-आदमी[1] बेदार[2] होता है मुसीबत मे !
वो खुशकिस्मत[3] है, जिनपे गर्दिशे-अय्याम[4] आती है ! फ़ानी

९. मुसीबत का हरइकसे अहवाल[5] कहना !
मुसीबतसे है यह मुसीबत जियादा !! हाली

१० अय 'रिन्द' वक्ते-बद[6] मे किसीने दिया न साथ !
आंखे चुराये अपने-पराये चले गए !! रिन्द

११. जब पड़ा है वक्त कोई, हो गए है सब अलग !
दोस्त भी अपना नही, बेगाना तो बेगाना है !!

१२. मुसीबत के दिनो से ऐशके दिन जब मेरे बदले !
'ख़याल' अगयार[7] का तो जिक्र क्या है, दोस्त सब बदले !!
ख़याल

१३ कोई शरीके-हाल[8] बुरे वक्त का नही !
आती नही है मौत भी बीमार देखकर !! रंग

१४ सियहबख्ती[9] मे कब कोई किसी का साथ देता है !
कि तारीकी[10] मे साया[11] भी जुदा[12] होता है इन्सा से !! नासिख़

१५. भरी दुनियामे कोई भी नजर आता नही अपना !
'अदीब' इक दौर[13] ऐसा भी गुजर जाता है इन्सापर !! अदीब

१६. बागबा ने[14] आग दी, जब आशियाने को मेरे !
जिनपे तकिया था, वही पत्ते हवा देने लगे !! साकिब

---

१ मनुष्य की दक्षता २ जाग्रत ३ भाग्यशाली ४ समय का चक्र, दिनो का उलट-फेर ५ हाल, समाचार ६ सकट-काल मे ७ दूसरो का ८. साथी, सगी ९ विपत्ति-काल मे १० अँधेरे मे ११. छाया १२ अलग १३. युग, समय, चक्कर १४ माली ने ।

१७. यार-ओ-ग़मख्वार[1] है दुनिया मे बनी के साथी !
जब बिगडती है तो सब आँख चुरा जाते हैं ।। बेखुद

१८. किस्मत की शिकायत किससे करे ?
वह बज्म मिली है हमको जहाँ ।
राहतके हजारो साथी है,
दुःख-दर्द का साथी कोई नही ।। नजीर बनारसी

१९. यह ख़ूब जाचा, यह ख़ूब बरता,
यह खूब जाना, यह खूब देखा ।
कि वक्ते-नाज़ुक[2]पे इस जहा मे
नही है साथी कोई किसी का ।। नूह

२०. मुसीबतमे न घबरा, कर गुज़र जैसे बने वैसे ।
यह दिन भी जाएँगे इकदिन, वह दिन भी आएँगे इक दिन ।।

२१. आराम के थे साथी क्या-क्या, जब वक्त पड़ा तब कोई नही ।
सब दोस्त है अपने मतलबके, दुनियामे हमारा कोई ।।
आज़ाद



१ सहानुभूति रखनेवाले सगी-साथी, २. सकट-कालमे ।

तदबीर के हाथो से गोया तकदीर का पर्दा उठता है!



१. तदबीर के हाथो से गोया[1] तकदीर का पर्दा उठता है।
या कुछ भी नही या सब-कुछ है, या मिट्टी है या सोना है!!

२. न रखो कातिवे-तकदीर[2] पर इल्जाम[3] किस्मत का।
तुम्हारे हाथ मे ऐ दोस्तो! किस्मत तुम्हारी है!!

३ .खुदी को कर बुलन्द[4] इतना कि हर तकदीर से पहले।
.खुदा वन्दे से खुद पूछे बता तेरी रजा[5] क्या है?

इक़बाल

४. शिकायत की जो किस्मत की, तो दिल कहने लगा चुप रह।
मुकद्दर आप अपना हम बनाते है मिटाते हैं!!

५. हा-हा मगर ऐ दोस्त! तू तदबीर किये जा।
यह भी तेरी तक़दीर के दफ्तर मे लिक्खा है!!

६ अच्छा-बुरा बनना मौकूफ़[6] अक्ल पर है।
तक़दीर के महल का मैमार[7] खुद बशर है!!

७. नही कानूने-फित्‌रत है, जिसे तकदीर कहते है।
जिसे किस्मत समझते हैं, वह तदबीरो का हासिल[8] है!! अकबर

८ छिपा रखा है जिसने आज क़िस्मत के सितारे को।
उसी बदली से होगे एक दिन शम्सो-कमर[9] पैदा!! फानी

---

१ मानो २ भाग्य-लेखक पर ३ दोष ४ उच्च ५ इच्छा ६ निर्भर ७ निर्माता, कारीगर ८ फल, परिणाम ९ सूरज और चांद।

९. मुकद्दरका लिखा मिटता नही आंसू बहाने से।
यह वह होनी है जो होकर रहेगी हर बहाने से।। साहिर

१० हमारी अक्ले-बेतदबीर[1] पर तदबीर हँसती है।
अगर तदबीर हम करते हैं तो तकदीर हँसती है।। हातिम

११ नतीजा एक ही निकला कि थी किस्मत मे नाकामी[2]!
कभी कुछ कहके पछताये, कभी चुप रहके पछताये।। आर्जू

१२ इन्सान समझता है कि तदबीर है सब-कुछ।
मजबूरियां कहती है कि तक़दीर भी कुछ है।।

१३ फिक्रे-राहत[3] छोड़ बैठे हम को राहत मिलगई।
हमने किस्मतसे लिया जो काम था तदबीर का।।

१४ अक्लसे क्या पूछता, आफतको सरपे देखकर।
वह तो ख़ुद चकरा गई, क़िस्मत का चक्कर देखकर।। अर्श

१५. मुसीबतमे बशरके जौहरे-मर्दाना[4] खुलते हैं।
मुबारक बुजदिलो[5]को गर्दिगे-किस्मत[6] से मर जाना।। चकबस्त

१६ तेरी हिम्मत ही तेरी किस्मत है; हुक्मे-तकदीर[7] क्या कजा[8] हैं।
और जो होना है कुछ तो होने दे, रोने-धोनेसे यूँ हुआ क्या है?
बशीर

१७. अहले-हिम्मत[9] मंज़िले-मकसूद[10] तक आही गए।
बन्दए-तक़दीर[11] किस्मतका गिला करते रहे।। चकबस्त

१८. मैं कहता था इन्सानकी गर तकदीर नही तो कुछ भी नही!
हिम्मत बढकर बोल उठी, तदबीर नही तो कुछ भी नही।।

---

१. पुरुषार्थहीन बौद्धिक ज्ञानपर २ असफलता ३. सुख की चिन्ता ४. पुरुषोचित गुण ५ कायरो को ६ भाग्य-चक्रसे ७. दैव की आज्ञा ८. बला, मृत्यु ९. साहसी, पुरुषार्थी १० लक्ष्य-बिन्दु ११ भाग्यवादी।

१९. पस्त-हिम्मत[1] रोते रहते है सदा तकदीर को।
साहिवे-हिम्मत[2] हमेशा करते है तदबीर को ॥

२०. अगर तकदीर भी अच्छी हो, तब तदबीर बनती है।
बुरा गर हो क़लम कब ठीक फिर तस्वीर बनती है ?

२१. गर्दिश जो हो तक़दीरमे, कुछ सई[3] काम आती नही।
मंजिल कुछ आगे बढ गई, पहुँचा जो मैं मज़िल के पास ॥ अमीर

२२ तदवीर सदा रास्त[4] जो आती नही 'अकबर'।
इन्सान की ताकत के सिवा भी है कोई चीज ॥ अकबर

२३. तदबीर न कर, फायदा तदबीरमे क्या है ?
कुछ यह भी खबर है तेरी तकदीर मे क्या है ? जौक

२४. काम सब तकदीर पर है, है मगर तदबीर शर्त।
कुछ सबब[5] भी चाहिए इस आलमे-असबाब[6]मे ॥ जफर

२५. उस वक्त, मुसाफिर वेचारा अपनी किस्मतको रोता है।
जब डूबने लगती है किश्ती नजदीक किनारा होता है ॥

२६ तदबीर ही तेरी नाकिस[7] थी, तकदीरको तू इल्जाम[8] न दे।
कर सब्र[9] ज़रा कारे-मुश्किल[10] सब वक्त पे आसा[11] होते हैं ॥
अलम

२७ जो मुकद्दर है वह टल सकता नही 'गालिब' कभी।
तेरी किस्मतका तुझे मिलता है छप्पर फाडके ॥ गालिब



---

१ साहस-हीन, अपुरुषार्थी २ साहसी ३ कोशिश ४ फलदायी, कारगर ५ कारण ६ कार्यकारणरूप ससारमे ७ अपूर्ण, दूषित, मिथ्या ८ दोष ९ धैर्य, धीरज १० कठिन कार्य ११ सरल।

मौत क्या है, जिन्दगी की दूसरी तस्वीर है !



१. मौत क्या है, जिन्दगी की दूसरी तस्वीर है।
जिसने इस रुख़[1] से इसे देखा वही कामिल[2] हुआ ॥

२. ज़िन्दगी खुद क्या है 'फानी', यह तो क्या कहिए, मगर।
मौत कहते है जिसे, वह जिन्दगी का होश है ॥ फानी

३. ज़िन्दगी बैठी थी अपने हुस्न[3] पर भूली हुई।
मौत ने आते ही सारा रंग फीका कर दिया ॥ अख़्तर

४. कौन ऐसा है नही है मौत की जिसको ख़बर।
फिर जो गफलत है तो यह दुनिया का इक दस्तूर[4] है ॥

५. मौत को देखा तो दुनिया से तबीअत[5] फिर गई।
उठ गया दिल दहर से दौलत नजर से गिर गई ॥

६ जीने-मरने की हकीकत, जब से हम पर खुल गई।
जिन्दगी और मौत दोनो का मज़ा जाता रहा ॥

७. मौत जब तक नज़र नही आती।
ज़िन्दगी राह पर नही आती ॥

८ ज़िन्दगी की आँख से देखा है नक्शा[6] मौत का।
मौत के मुँह से सुनूँगा दास्ताने-जिन्दगी[7] ॥ अकबर हैदरी

---

१. पहलू २ सम्पूर्ण, सर्वाङ्गपूर्ण ३. सौन्दर्य ४. रिवाज, परम्परा ५ जी, रुचि ६. चित्र ७ जीवन की कहानी।

९ कुछ हवा भर दी गई है खाक की तामीरमे[1]।
मौत हँसती है मेरी हस्ती का सामा[2] देखकर ॥ जिगर

१०. जा व बेजा[3] के हवादस[4] से बचाती है तुझे।
मौत कहते हैं जिसे, है पासबाने-ज़िन्दगी[5] ॥ अकबर

११. मौत का झटका लगा ऐसा कि आँखें खुल गई।
रूबरू[6] मंज़र[7] है ख्वाबे-जीस्त[8] की तामीरका[9] ॥ रोशन

१२. मौत आती नहीं करीने[10] की।
यह सज़ा मिल रहा है जीने की ॥ आतिश

१३. ज़िन्दगी ने सैकड़ो सामा किये।
मौत ने आकर पशेमा[11] कर दिया ॥ जोश

१४ ज़िन्दगी पाकर हुआ सारा जमाना बेख़बर[12]।
मौत भी आयेगी इक दिन, इसका किसको होश है ?

१५ गाये जा मस्ती के तराने, ठंडी आहें भरना क्या ?
मौत आये तो मर भी लेंगे, मौत से पहले मरना क्या ? जोश

१६ जीने तक है होश के जल्वे, आगे होश की मस्ती है।
मौत से डरना क्या मानी, मौत भी जज्बे-हस्ती[13] है ॥ फ़िराक़

१७. सब जीते जी के झगडे हैं, सच पूछो तो क्या खाक हुए ?
जब मौत से आकर काम पड़ा, सब किस्से-कज़िये पाक हुए ॥

१८ तमाशा इसको समझे, खेल समझे, दिल्लगी समझे।
बस उसकी जिन्दगी है, मौत को जो जिन्दगी समझे ॥

---

१ रचना अथवा आकृति मे २ उपकरण, सामग्री ३ उचित तथा अनुचितके ४. विपत्तियों-सकटोंसे ५ जीवन-प्रहरी ६ सामने ७ दृश्य ८ जीवन-स्वप्नकी ९ इमारत या रचना का १० ढग की ११ लज्जित, पछताने वाला १२. असावधान, लापरवाह १३ जीवन का आकर्षण ।

१९. मौत यह मेरी नही, मेरी कज़ा[1] की मौत है।
क्यो डरूँ इससे कि फिर मरकर नही मरना मुझे॥ अकबर

२०. हंसके दुनिया मे मरा कोई, कोई रो के मरा।
ज़िन्दगी पाई मगर उसने, जो कुछ होके मरा॥

२१. जी उठा मरने से वह, ज़िसकी .खुदा पर थी नज़र।
जिसने दुनिया ही को पाया था, वह सब खो के मरा॥ अकबर

२२ लाई हयात,[2] आये, क़ज़ा ले चली, चले।
अपनी खुशी न आए, न अपनी .खुशी चले॥ ज़ौक़

२३ मौत एक गीत गाती थी।
ज़िन्दगी झूम-झूम जाती थी॥

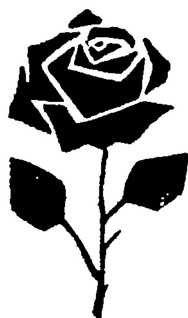
२४. दारे-फानी[3] मे हो ग़ाफिल मौत से इक पल नही।
क्या भरोसा ज़िन्दगी का, आज है और कल नही॥ ज़ौक़

२५ ऐसे जीने पे 'रिन्द' ख़ाक पडे।
मौत इस जिन्दगी पे हँसती है॥ रिन्द

२६ अजल[4] के हाथ मे इन्सान इक खिलौना है।
जिसे किसी-न-किसी दिन तबाह[5] होना है॥ अख़्तर



१ मृत्यु २. जिन्दगी ३. नश्वर संसार मे ४. मृत्यु के ५. नष्ट।



* नग़मे

* से

* जब

* फूल

* खिलेंगे !



नग्मे से जब फूल खिलेंगे,

चुनने वाले चुन लेंगे !

सुनने वाले सुन लेंगे,

तू अपनी धुन में गाता जा !!

—हफ़ीज़ जालन्धरी



नग्मेसे जब फूल खिलेंगे !

०

१ नग्मे[1]से जब फूल खिलेंगे, चुननेवाले चुन लेंगे।
सुननेवाले सुनलेंगे, तू अपनी धुनमे गाता जा॥ हफ़ीज़

२. तुझे पा के मैं ख़ुद को पाऊँगा,
कि तुझी मे खोया हुआ हूँ मैं।
यह तेरी तलाश है इसलिए,
कि मुझे है अपनी ही जुस्तजू[2]॥ फिराक़

३. जबतक हो दिल बगल[3]मे हरदम हो याद तेरी।
जब तक जबा हो मुँहमे, जारी हो नाम तेरा॥ दाग

४. महवे-तसबीह[4] तो सब है, मगर इदराक[5] कहाँ ?
जिन्दगी ख़ुद ही इबादत[6] है, मगर होश नही॥ जिगर

५ किनारा गो[7] किनारेको ही कहना चाहिए, ताहम[8]।
कुछ ऐसे जिन्दादिल[9]भी है, जो तूफानोको कहते हैं॥

६ शमएँ रौशन है, मगर माहौल[10] फिरभी सर्द है।
वोह कहाँ गुम हो गए हैं, जिनको पर्वाना कहे ?

७. यह काटा जो माली तुझे चुभ गया है।
यह काटा भी गुलशनका लख़्ते-जिगर[11] है॥ अदम

---

१ सुरीली आवाज, गीत से २ तलाश ३ पहलू मे ४ माला, जपमें लीन ५. ज्ञान, विवेक ६ उपासना ७ यद्यपि ८ तथापि, फिर भी ९ विनोद-रसिक, प्रसन्नचित्त १० वातावरण ११ जिगर का टुकडा।

८. दिल ख़ुश हुआ है मस्जिदे-वीरान[1] देखकर।
मेरी तरह ख़ुदा का भी खाना[2]खराब है॥

९ मैं क्या था, किसलिए भेजा गया इस दौरे-हस्ती[3]मे ?
न अब तक ख़ुदको पहचाना, न कुछ राज़े-सफर[4] समझा॥

१०. बेचैनियाँ[5] समेटकर सारे जहान की।
जब कुछ न बन सका तो मेरा दिल बना दिया॥

११. वह नग्मा बुलबुले-रंगीनवा[6] इक बार हो जाए।
कलीकी आँख खुल जाए, चमन बेदार[7] हो जाए॥ असग़र

१२. मुझे एहसास[8] कम था, वर्ना[9] दौरे-ज़िन्दगानी मे।
मेरी हर सासके हमराह[10] मुझ मे इन्क़लाब[11] आया॥ आसी

१३ जिस कामको जहाँमे तू आया था ऐ 'नज़ीर,।
ख़ानाखराब[12] तुझसे वही काम रह गया॥ नज़ीर

१४. खुर्शीदवार[13] देखते है सबको एक आँख।
रौशनजमीर[14] मिलते हर नेको-बदसे[15] है॥ जौक़

१५. है कामयाब[16] वही, इस जहाने-फानी[17]में।
जो बेनियाजे-तमन्ना[18] है जिन्दगानीमे॥ अलम

१६. फ़ना[19] कैसी, बक़ा[20] कैसी, जब उसके आश्ना ठहरे।
कभी इस घर मे आ निकले, कभी उस घर मे जा निकले॥
अमीर

---

१ उजाड़ मस्जिद २ घर ३. ससारचक्र में ४. यात्रा का रहस्य ५. व्याकुलता, परेशानियाँ ६ सुन्दर गाने वाली बुलबुल ७ जाग्रत, प्रफुल्ल ८ अनुभव, ध्यान ९ अन्यथा, नही तो १० साथ ११. परिवर्तन १२. भाग्य-हीन, बदनसीब १३. सूर्य की भाँति १४ प्रकाशित हृदय, उज्ज्वल मन वाले १५. भले-बुरे-से १६. सफल, कृतकृत्य १७. क्षणभगुर ससार मे १८ नि स्पृह, निरीह १९ मृत्यु, नश्वरता २०, नित्यता, स्थिरता।

१७ ऐ 'दाग़' अपनी वज़अ़[1] हमेशा यही रही।
कोई खिंचा, खिंचे, कोई हमसे मिला, मिले ॥ दाग़

१८. कुछ वह खिंचे-खिंचे रहे, कुछ हम खिंचे-खिंचे।
इस कशमकश[2] मे टूट गया रिश्ता[3] चाहका ॥ दाग़

१९. हो कितनी ही तारीक[4] शबे-जीस्त[5] की राहे।
इक नूर-सा[6] रहता है झलकता मेरे दिलमे ॥ जोश

२०. छिपाओ आपको जिस ढग या जिस भेसमे।
मगर चश्मे-हक़ीक़तबी से[7] पर्दा हो नही सकता ॥ साकिब

२१. तकल्लुफ़[8] अलामत[9] है बेगानगी[10] की ॥
न डालो तकल्लुफ़की आदत ज़ियादा ॥ हाली

२२. बुढापे मे जवानीसे ज़ियादा शौक होता है।
भडकता है चिरागे-सहर[11] जब खामोश[12] होता है ॥

२३. फूल बननेकी ख़ुशीमे मुस्कराती थी कली।
क्या खबर थी यह तगय्युर[13] मौतका पैगाम[14] है? सिराज

२४. क़स्रोके मनाज़िर[15] ने करवट न कभी बदली।
अन्दर वही आबादी, बाहर वही वीराना[16] ॥ नूह

२५. फूल वही, चमन वही, फर्क़ नजर-नजर का है।
अहदे-बहार मे था क्या, दौरे-खिज़ां मे क्या नही? जिगर

---

१. पद्धति, ढंग २. खीचातानी, आपाधापीमे ३. सम्बन्ध, नाता ४. अन्धकार पूर्ण ५. जीवन-रात्रिकी ६ प्रकाश-सा ७ वास्तविकता को देखनेवाली आँखसे ८. बनावट-दिखावट ९. निशानी १०. परायेपन की ११. प्रातःकालीन दीपक १२ बुझनेवाला १३ परिवर्तन १४. सन्देश १५. दृश्यने १६ सन्नाटा, सूनापन ।

२६. नौकरों पर क्या गुजरती है मुझे मालूम है।
बस करम[1] कीजे, मुझे बेकार रहने दीजिए॥ अकबर

२७. जिसने कुछ अहसा[2] किया, इक बोझ सरपे रख दिया।
सरसे तिनका क्या उतारा, सरपे छप्पर रख दिया॥

२८. बादे-फ़ना[3] फिज़ूल है नामो-निशा की फिक्र।
जब हम नही रहे तो रहेगा मज़ार[4] क्या ? चकबस्त

२९. गुज़रा हुआ ज़माना खारिज[5] है जिन्दगी से।
क्यो याद कर रहा है गुजरा हुआ जमाना ? असर

३०. जिन्दगी है अपने बस मे न अपने बस मे मौत।
आदमी मजबूर है और किस कदर मजबूर है॥

३१. 'यगाना' फिक्रे-हासिल[6] क्या, तुम अपना हक़[7] अदा कर दो।
बला से तल्ख़[8] गुजरे जिन्दगानी रायगा[9] क्यो हो ?
यगाना

३२. मालूम है हमे सब, बुलबुल ! तेरी हकीकत।
इक मुश्त इस्तख्वा[10] है, दो पर लगे हुए है॥

३३. फूल चुनना भी अबस,[11] सैरे-बहारा भी फिजूल।
दिल का दामन ही जो काटो से बचाया न गया॥ ज़फ़ी

३४. ऐश से क्यों खुश हुए, क्यो गम से घबराया किए ?
ज़िन्दगी क्या जाने क्या थी और क्या समझा किए ? ज़फ़ी

३५. जिसको खबर नही, उसे जोशो-खरोश है।
जो पा गया है राज, वह गुम[12] है, खमोश[13] है॥

---

१ दया, कृपा २ उपकार ३. मरनेके बाद ४ कब्र ५ कटा हुआ ६ फल की चिन्ता ७ कर्तव्य ८ कड़वी ९ व्यर्थ, बेकार १०. हड्डी ११. व्यर्थ १२. आत्म-विस्मृत, आत्म-लीन १३ चुप।

३६ मेरी यह ज़िन्दगी है कि मरना पड़ा मुझे।
इक और ज़िन्दगी की तमन्ना लिये हुए ॥ हफ़ीज

३७. न सूरत कही शादमानी[1] की देखी।
बहुत सैर दुनियाए-फ़ानी[2] की देखी ॥ हसरत

३८. तुम को है फ़िक्र तन-आसानी[3] की 'असर'।
ज़िन्दगी कुर्बानियो का नाम है ॥ असर

३९ आर्जू[4] इक जुर्म[5] है, जिसकी सज़ा है जिन्दगी।
जिन्दगी-भर आर्जूओ को पशेमा[6] कीजिए ॥ एहसान

४०. बुलबुल ! गज़लसराई[7] आगे हमारे मत कर !
सब हमसे सीखते है अन्दाज[8] गुफ्तगू[9] के ॥ इक़बाल

४१ सूँघकर मसल डाले तो यह है गुल की जीस्त[10]।
मौत उसके वास्ते डालीपे कुम्हलाने मे है ॥ मुल्ला

४२ जो बेकस है उनको ही ज़ालिम जमाना।
बनाता है तीरे-सितम[11] का निशाना ॥

४३. मुबारक जिन्दगी उनकी है, कद्रे-वक्त उनको है।
जो रटते है तुम्हारा नाम, तुमको याद करते हैं ॥

४४. तेरी हस्ती[12] से मुन्किर[13] होते जाते है जहा वाले।
सभाल अपनी ख़ुदाई को, अरे ओ आस्मावाले ! मुल्ला

४५. ग़ज़ब है मशवरे[14] यह हो रहे है बाग़बानो[15] मे।
हमे बर्बाद[16] कर डालें हमारे आशियानो मे ॥

---

१ ख़ुशी की २. नश्वर ससार की ३. शरीर का आराम ४. कामना, इच्छा ५. अपराध ६. लज्जित ७. गज़ल पढ़ना ८ ढग, तौर-तरीके ९. बात-चीत के १० जिन्दगी ११. अत्याचार के बाण का १२. अस्तित्व से १३ इन्कार करनेवाले १४. परामर्श, मंत्रणाएँ १५. उद्यानपालों, मालियो में १६. नष्ट।

४६. ज़ईफी[1] जिन्दग़ी मे व.क्त की बेजा रवानी है।
अगर जिन्दादिली है तो बुढापा भी जवानी है॥

४७. बेकस की तबाही के सामान हज़ारो है।
दीपक तो अकेला है, तूफ़ान हज़ारो है॥

४८. यह दुःख तेरा है न मेरा।
हम सबकी जागीर है प्यारे॥ फ़ैज

४९ जिस गुलो-बेरंगो-बूको[2] गुलसितां समझा है तू।
ऐ दिले-नादा! कफस[3] को आशियाँ समझा है तू॥

५०. सन्तरी जब चोर हो, तो कौन रखवाली करे?
उस बाग़ का क्या हाल, जहाँ माली ही पामाली[4] करे?

५१. कभी मौजे-दरिया[5] ने मुड़कर न देखा।
सफ़ीना[6] लगा कौन थककर किनारे? मुल्ला

५२. ख़ुदाई[7] अपने मतलब की, जमाना अपने मतलब का।
किसीका साथ देता है, ज़मानेमे कहाँ कोई?

५३. जहाँ जाओ, जहाँ पहुँचो, फ़साना है ख़ुशामदका।
ख़ुदाई है ख़ुशामद की, जमाना है ख़ुशामदका॥

५४. हक़शनासीकी[8] हक़ीकतको उन्होने जाना।
ऐ 'अमीर' अपनी हक़ीकत[9]को जो पहचान गये॥ अमीर

५५. याद करते है .ख़ुदाको तो मुसीबतवाले।
ऐश उसको नही कहते, जो ख़ुदा याद रहे॥

---

१ वृद्धावस्था, बुढापा २. विना सुगन्ध और विना रंग के फूल को ३. पिंजरे को ४. बर्बादी, पाव-तले मसलना ५ नदी की तरग ने ६. नाव, किश्ती ७. दुनिया ८. सत्य अथवा ईश्वर को पहचानने की ९. वास्तविकता को।

५६. दीन जाता है तो जाए, सेठजी को गम नही।
मालोज़र अच्छी तरह दुनिया मे पैदा कर लिया ॥

५७. सेठजी को फिक्र थी, इक-इकके दस-दस कीजिए।
मौत आ पहुँची कि हज़रत ! जान वापस दीजिए ॥ अकबर

५८. आसान नही इस दुनिया मे ख्वाबोके सहारे जी सकना।
संगीन हकीकत[1] है दुनिया, यह कोई सुनहरा ख्वाब नही ॥
अदम

५९. गुजरे हुए जमानेका अब तज़किरा[2] ही क्या ?
अच्छा गुज़र गया, बहुत अच्छा गुजर गया ॥ हफीज़

६०. यह माना, जिन्दगी है चार दिनकी।
बहुत होते है यारो ! चार दिन भी ॥ फिराक़

६१ दुनियाकी सैर करनेको ठहरे नही है हम।
दम ले लिया है मंजिले-दुश्वार[3] देखकर ॥ अख्त़र

६२. अरे ओ जलनेवाले ! काश, जलना ही तुझे आता।
यह जलना कोई जलना है कि रह जाए धुँआ होकर ॥ यगाना

६३ रफीको[4]से रकीब[5] अच्छे, जो जलकर नाम लेते है।
गुलो से खार बेहतर है, जो दामन थाम लेते हैं ॥

६४ ऐ फ़लक ! दे हमको पूरा गम तो खाने के लिए।
वह भी हिस्सा कर दिया सारे ज़माने के लिए ॥ दाग़

६५. अब कहाँ मैं ढूंढने जाऊँ सुकूं[6]को ऐ खुदा !
इन जमीनो मे नही, इन आस्मानोंमे नही ॥ जज़बी

---

१ कठोर सत्य २. चर्चा ३ कठिनमार्ग ४ मित्रो से ५. प्रतिस्पर्धी, विरोधी ६ सुख-चैन को।

६६. चलो, एक मुश्किल तो आसा[1] हुई ।
सुना है कि रस्ता बड़ा पुरखतर[2] है ॥ अदम

६७ लो शमा हुई रौशन, वह आ गए पर्वाने ।
आग़ाज़[3] तो अच्छा है, अंजाम[4] ख़ुदा जाने ॥

६८ गुल से पूछिए न किसी गुलचीं[5] से पूछिए ।
सदमा चमनके लुटने का बुलबुलसे पूछिए ॥ तालिब

६९ कभी यूँ भी गुज़रती है, कभी ऐसा भी होता है ।
कि होटो पर हसी होती है, दिल सीनेमे रोता है ॥ हफ़ीज़

७०. यह करता हूँ, यह कर लिया, यह कल करूँगा मैं ।
इसी फ़िक्रो-इन्तज़ार[6] मे शामो-सहर[7] गई ॥

७१. यह चमन यूँ ही रहेगा और हज़ारो बुलबुले ।
अपनी-अपनी बोलियाँ सब बोलकर उड़ जाएँगी ॥ चकबस्त

७२. बेगाने जो शुरूसे हैं, उनका ज़िक्र क्या ?
अपने भी ग़ैर हो गए, इसका मलाल[8] है ॥ अम्न

७३ दो दिन ऐसे है कि जिनकी फ़िक्र मैं करता नही ।
एक जो आया नही है, दूसरा जो हो चुका ॥

७४ यह दुनिया रंजो-राहत[9] का ग़लत अन्दाज़ा करती है ।
ख़ुदा ही ख़ूब वाक़िफ़[10] है, किसी पर क्या गुज़रती है ?

७५. जब मिले, जिससे मिले, दिल खोलकर मिले ।
इससे बढकर और ख़ूबी कोई इन्सामे नही ॥

---

१. सरल २ भयंकर आपत्तियो तथा विघ्नो से भरा हुआ ३ प्रारम्भ ४. परिणाम, अन्त ५ माली, फूल चुनने वालो से ६. चिन्ता तथा प्रतीक्षा मे ७. साय-प्रात ८ दुख, रंज, अफसोस ९ दुख-सुख का १०. अभिज्ञ, परिचित ।

७६. मर्द ख़ुशख़ू[1] नही तो कुछ नही ।
फूलमे बू नही तो फिर क्या है ?

७७ जिसे हम नाग समझे थे गला अपना सजानेको ।
वह काला नाग बन बैठा हमारे काट खानेको ।।

७८. न वह अगला तराना है, न वह अगला फसाना है ।
ज़मानेमे हमारा अब गया-गुज़रा ज़माना है ।।

७९. जो कोई दर्दका मारा कभी आंसू बहाता है ।
यह दुनिया हँस देती है, ज़माना मुस्कराता है ।।

८०. भँवरसे बच निकलना तो कोई मुश्किल नही, लेकिन ।
सफ़ीने[2] ऐनदरिया के किनारे डूब जाते है ।। कातिल

८१. इरादे बाँधता हूँ, सोचता हूँ, तोड़ देता हूँ ।
कही ऐसा न हो जाए, कही वैसा न होजाए ।। हफीज

८२. मल्लाहोने साहिल-साहिल, मौजोकी तौहीन तो कर दी ।
लेकिन फिर भी कोई भँवर तक जाने को तैयार नही ।। कतील

८३ जब तमन्ना थी तो साहिल का पता मिलता न था ।
डूबना चाहा तो हर तूफान साहिल हो गया ।। कतील

८४ रगे-दुनिया देखकर घबरा गया अपना तो जी ।
भाई को भाईसे भी इस दौर मे उल्फत नही ।।

८५ सुनते है काटेसे गुल तक है राहमे लाखो वीराने ।
कहता है मगर यह अज़्मे-जुनू[3], सहरा[4]से गुलिस्ता दूर नही ।।
मजरूह

---

१. सत्प्रकृति, सुशील, अच्छे स्वभाव वाला २. नाव ३ दृढ निश्चय, वज्र-सकल्प ४. जंगल से ।

८६. मरनेवाले मरते है लेकिन फ़ना[1] होते नही।
वह हकीक़त[2]मे कभी हमसे जुदा होते नही॥ इक़बाल

८७. तिश्नगी[3]को कतरए-शवनम[4] बुझा सकता नही।
सिर्फ इक़रारे-जवानी काम आ सकता नही॥

८८. मैं अकेला ही चला था जानिवे-मजिल[5] मगर।
लोग साथ आते गए और कारवाँ[6] बनता गया॥

८९ हम नादान ही अच्छे थे, जो कुछ फ़िक्र न थी।
बडी उलझनमे पडे है जबसे समझ आई है॥

९० न रास[7] आ सके तो इसमे क्या है कसूर मेरा।
वहार लाया था मै तेरे गुलसिताके लिए॥ फ़ानी

९१ हर एक मुकामसे आगे मुकाम है तेरा।
हयात जौकए-सफरके सिवा कुछ भी नही॥ इकबाल

९२ 'अमीर' इस वागमे रहकर करें क्या दिल उलझता है।
न नख़्वत[8] छोडते हैं गुल, न काटे खू[9] बदलते हैं॥ अमीर

९३. 'सच पूछिए तो मिलना मुमकिन नही जहाँमे।
दाना[10] भी आदमी-सा, नादान[11] भी बशर-सा॥ बेदिल

९४. पहुँचे है जो अपनी मजिलपर, उनको तो नही कुछ नाजे-सफर[12]।
चलनेका जिन्हे मकदूर[13] नही, रफ्तार की बाते करते हैं॥
शकील

९५. क्या चला मै जो रहे-शौक[14]मे रुक-रुकके चला।
लुत्फ़ चलनेका तो जब है कि हवा बन जाऊँ॥ नूह

---

१. नष्ट २ वस्तुतः ३. प्यास को ४ ओस की बूँद ५ गन्तव्य की ओर ६ यात्री-दल ७ अनुकूल ८ अहकार, गर्व ९. प्रकृति, स्वभाव १०. बुद्धिमान, कुशल, समझदार ११. अज्ञानी, नासमझ १२ यात्रा का गर्व १३. शक्ति, सामर्थ्य १४. प्रेम-पथ में, अभिलाषा के मार्ग मे।

९६. आनेवाले किसी तूफानका रोना रोकर।
नाख़ुदा[1] ने मुझे साहिल पे डुबोना चाहा ॥ हफीज

९७. बदलकर रखदिया नाकामियो[2] ने इस कदर मुझको।
कि पहचानी हुई सूरत भी पहचानी नही जाती ॥

९८ दुनियामे रहकर हर इन्सां, दरिया से रवादारी[3] सीखे।
लहरें भी उट्‌ठा करती है किश्ती भी चलती रहती है ॥ मुनव्वर

९९. न चमनकी याद, न शौक़े-चमन जाता है साथ।
बादशाहोके भी बस दो गज़ कफन जाता है साथ ॥

१०० वह आंख, आंख नही, वह दिल नही है दिल।
जिसे किसी की मुसीबत नजर नही आती ॥ मुनव्वर

१०१ नग्मए-पुरदर्द[4] छेड़ा मैंने इस अन्दाज[5] से।
ख़ुद-ब-ख़ुद[6] पडने लगी मुझपर नज़र सैयाद[7] की ॥

१०२. इस तरफ मौजें परेशां[8], उस तरफ साहिल उदास।
डूबनेवाला किधर जाए बडी मुश्किलमे है ? फतील

१०३ एक शहंशाह ने दौलतका सहारा लेकर।
हम ग़रीबोकी मुहब्बतका उड़ाया है मज़ाक़ ॥ साहिर

१०४ आजाद-जमीर[9] है फ़कीरी यह है।
दिल बे-पर्वा है अमीरी यह है ॥ रवां

---

१ मल्लाह २. असफलताओ ने ३. उदारता, सहृदयता, ४. दर्द-भरा गीत ५ ढग से ६ स्वयमेव ७ शिकारी की ८. व्याकुल, वेचैन ९ स्वतन्त्रचेता, मुक्त मन वाला।

१०५ हर मुसाफिरको बाखबर[1] कर दो,
यह मेरे तजरुबे[2] का जौहर[3] है।
रहबरों[4] की फरेबकारी[5] से,
रहजनोका[6] खुलूस[7] बेहतर[8] है॥ अदम

१०६. अब तक न समझ पाये जो खुदको भी ऐ 'रहबर'।
हैरत[9] है कि वह हमको समझाने चले आए॥ रहबर

१०७ देखनेवाले होशमे रहना, सब धोका-ही-धोका है।
जिस्म बड़े बदसूरत[10] हैं, मलबूस[11] बडे भड़कीले हैं॥ अदम

१०८. सदाकृत[12] हो तो दिल सीनेसे खिचने लगते हैं ऐ वाइज[13]!
हकीकृत[14] खुदको मनवा लेती है, मानी नही जाती॥
जिगर

१०९ सबब[15] हर एक मुझसे पूछता है मेरे रोनेका।
इलाही! सारी दुनियाको मैं कैसे राज़दा[16] करलूँ? ताजवर

११०. हुजूरे-अहले-हिम्मत[17] आबरू खोना नहीं आता।
गमे-हस्तीपे हँसनेके सिवा रोना नहीं आता॥ जोश

१११ तेरे और उसके दरमियाँ[18], तेरी खुदी ही हिजाब[19] है।
अपना निशान खोये जा, उसका निशान पाये जा॥ अख्तर

---

१. सावधान, सतर्क २ अनुभव का ३ सार, निचोड़ ४. पथ-प्रदर्शको की ५. मायाचारी, धोखेबाजी, चालो, घातो से ६. लुटेरो का ७. वर्ताव-व्यवहार ८. श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा ९. आश्चर्य १०. कदाकार, कुरूप, भद्दे ११. परिधान, वस्त्र, पहनावे १२. सत्यता १३. उपदेशक १४. यथार्थता, सच्चाई १५ कारण १६. रहस्यवेत्ता, मर्मज्ञ, भेदी १७ साहसी व्यक्तियो के सामने १८ बीच मे १९. पर्दा।

११२. न आस्मा की न अर्शे-बरी[1]की बात करो ।
जमीकी गोदके पालो ! जमीकी बात करो ॥ सागर

११३ खौफ मत खाइए अँधेरोसे, जुल्मतोमे[2] नूर होता है ।
बाज औकात[3] राहे-हस्तीमे[4], अपना सायाभी दूर होता है ॥
अदम

११४ गमे-हयात[5]से 'मख्मूर' लोग डरते है ।
इसे तो अपनी तमन्ना बना लिया मैने ॥ मख्मूर

११५ असीराने-कफस[6]की आप-बीती पूछते क्या हो ?
यहां ऐ 'अम्न' कज्जाकोसे[7] बदतर पासबा[8] निकले ॥ अम्न

११६ तबाहियोंका खयाल क्यो है, चमन की रौनक बढानेवालो !
जो बिजलियो न आजमाये, वह आशियाँ आशियाँ नही है ॥
कासिम

११७ मुझसे हरबार मसर्रत[9] ने छुड़ाया दामन !
मुझको सौ-बार दिया गमने सहारा ऐ दोस्त ! हुरमत

११८. चमनमे कौन है पुरसाने-हाल[10] शबनमका ?
गरीब रोई तो गुंचोको[11] भी हँसी आई ॥ अर्श

११९ रात जिन्होने महफिलको अन्दाज[12] सिखाये जीने के ।
खाकिस्तर[13]को देखनेवाले ! हां यह वही पर्वाने है ॥ आजाद

१२०. खुशीमे अपनी खुशबख्ती[14] कहां मालूम होती है ?
कफसमे जाके कद्रे-आशियाँ मालूम होती है ॥ मुल्ला

---

१ स्वर्ग, जन्नत की २ अन्धेरो मे ३ कभी-कभी ४ जीवन-पथ मे ५ जीवन के दुख से ६. पिंजरे के बन्दियो की ७ लुटेरो मे ८ द्वारपाल, निरीक्षक, ड्योढीवान ९. खुशी ने १० हाल पूछनेवाला ११ कलियो को १२ ढग, तरीके. १३ भस्म को, जले हुए परवानो की राख को, १४. सौभाग्य, खुशकिस्मती ।

१२१. चमनको कौन यूँ बर्बाद होते देख सकता है ?
ठहर इतना कि बन्द आँखे हम ऐ दौरे-खिजा करले ॥ नैयर

१२२. हमको इन्सानोमे गिनती नही क्यो दुनिया ?
हमतो हिन्दू भी नही, हमतो मुसलमा भी नही ॥ जमील

१२३. एक पर्दा है ग़मोका जिसे कहते है खुशी।
हम तबस्सुम[1]मे निहा[2] अश्के-रवाँ[3] देखते है ॥ अख्तर

१२४. दो घड़ी मिल बैठनेको भी गनीमत जानिए।
उम्र फानी ही सही, यह उम्रे-फानी फिर कहाँ ? अख्तर

१२५. जहामे मर्द वही है, जो यह शिआर[4] करे।
छुपाये ग़मको, मसर्रतको आश्कार[5] करे ॥ मुल्ला

१२६. आज यही दुनिया है जहन्नुम[6]।
कल यही दुनिया जन्नत[7] होगी ॥ फिराक

१२७. खबर नही कि है क्या वजहे-पारसाई-ए शेख[8]?
गुनाह[9] हो न सका या गुनाह कर न सके ॥ मुल्ला

१२८. 'अदम' न मल्लाहका करम[10] है,
न दस्ते-कुदरतकी कारसाजी[11]।
कि इक थपेड़ेने बेइरादा[12]
लगा दिया नाव को किनारे ॥ अदम

१२९. किसी मगरूर[13]के आगे हमारा सर नही झुकता।
फकीरीमे भी 'अख्तर' ग़ैरते-शाहाना[14] रखते है ॥ अख्तर

---

१. हँसी में, मुस्कान मे २ छिपे हुए ३ बहते हुए आसू ४ आचरण, स्वभाव, नियम ५ प्रकट ६ नरक ७ स्वर्ग ८ शेख के सयमी होने के कारण ९ पाप १० कृपा ११ ईश्वर के वरदहस्त की दया १२. सहसा, यो ही, विना सकल्प के १३ अहकारी, अभिमानी १४. बादशाहो जैसी शान।

१३० आँख वह है जो हर मसर्रत[1]मे, दाम[2]से होशियार रहती है।
तीतली फूलसे लिपटकर भी, मुजतरो-बेक़रार[3] रहती है॥
अदम

१३१ तुम्ही तो सैयाद हो कि अपनोका रूप भरकर चमनमे आये।
करो न अब मेरी अश्कशोई[4] उजाडकर मेरा आशियाना॥
आजाद

१३२ कहा फूलने "देख मेरा तबस्सुम[5]!
मेरी जिन्दगी किस क़दर मुख्तसर[6] है॥" आजाद

१३३ सच पूछो तो इस दुनियामे हरकत[7]से ही बरकत है।
जिसने कुछ ढूँढा होगा तो उसने कुछ पाया होगा॥ अफसर

१३४. मौत है वह राज़[8] जो आखिर खुलेगा एकदिन।
ज़िन्दगी है वह मुअम्मा[9] कोई जिसका हल नही॥ अफसर

१३५ तिश्ना-लब[10]रखा सदफ[11]को, बूँद पानी की न दी।
ऐ समन्दर! देखली हमने तेरी दरियादिली[12]॥

१३६. चलो दुश्वार[13] ही क्या है, ठिकाना चार तिनको का ?
निगाहे-बागबां देखी, मिज़ाजे-बागबां देखा॥ निहाल

१३७. उन्हे क्यो कोसता है, जो तुझे कहते है कम-हिम्मत।
बुरा क्या है, हकीकत[14]का अगर इजहार[15] हो जाए ? अर्श

१३८ तुझे न माने कोई, तुझको इससे क्या 'मजरूह'।
चल अपनी राह, भटकने दे नुक्ताचीनोको[16]॥ मजरूह

---

१ खुशी मे २ जाल से, धोखे से ३ आकुल-व्याकुल, तडपती बेचैन ४. आंसू पोछना ५ मुस्कान ६. सक्षिप्त, थोडी-सी ७ स्पन्दन से, हाथ-पैर हिलाने से ८. रहस्य ९ गुत्थी, समस्या, पहेली १० प्यासा ११ मोती को १२. उदारता १३. कठिन १४. सच्चाई का १५ प्रकटीकरण १६. छिद्रान्वेषियो को, आलोचको को।

१३६ लाख बहारे लाख खिजाएँ, बात है मौसम-मौसम की ।
फूलोका सुख पानेवाले, काटोके दुख-दर्द भी झेल ॥ क़तील

१४० देखा तो खुशीके फूल खिले, सोचा तो गमो की धूल उड़ी ।
कहते है बहारा[1] लोग जिसे, वह इक साया पतझडका है ॥
क़तील

१४१ जब्रे-कुदरत[2]ने आदमीके लिए,
कैसा दिल-आवेज[3] रोग छांटा है ।
दिलकी तस्कीन[4] ढूँढनेवाले,
जिन्दगी एक हसीन[5] काटा है ॥ अदम

१४२. कदम इन्सानका राहे-दहरमे थर्रा ही जाता है ।
चले कितना ही कोई बचके ठोकर खा ही जाता है ॥
नजर हो ख्वाह[6] कितनी ही हकाइक आश्ना[7], फिर भी—
हजूमे-कश-म-कश[8]मे आदमी घबरा ही जाता है ॥
जोश

१४३ है हुस्न[9] भी इक आफत, बागे-जहांमे ऐ गुल !
किस-किससे तू बचेगा गुलची[10] है, बाग बा[11] है ॥ मुल्ला

१४४ मेरे दिल की वसीअ[12] दुनिया मे,
दर्द अपना भी है पराया भी ।
"मैं" को जब "हम" बना दिया मैंने,
खुद को खोया भी खुद को पाया भी ॥ फ़ैज़

---

१ वसन्त ऋतु, मौसम बहार २. प्रकृति की शक्ति ने ३ सुन्दर, खूबसूरत ४ मन की शान्ति ५ सुन्दर ६ चाहे ७. सत्य को देखने-परखने वाली ८. सघर्षों में ९ सौन्दर्य, ख़ूबसूरती १०. फूल चुनने वाला ११. माली १२. विस्तृत, विशाल ।

१४५ कुछ ऐसे सोने वाले, सो रहे है पांव फैलाये।
कि अपनी कब्र को ही आखिरी मजिल समझते है॥

१४६. मरके टूटा है कही सिलसिलए-हयात[1]।
सिर्फ इतना है कि ज़ंजीर बदल जाती है॥ फानी

१४७ दरिया को अपनी मौज की तुगयानियों[2] से काम।
किश्ती किसी की पार हो, या दरमिया रहे॥ हाली

१४८ गुहर[3] को जौहरी, सर्राफ जर को देखते है।
वशर को देखने वाले बशर को देखते हैं॥ जौक

१४९. रहेगे न मल्लाह! यह दिन सदा।
कोई दिन मे गंगा उतर जाएगी॥ हाली

१५०. मजिले-हस्ती मे दुश्मन को भी अपना दोस्त कर।
रात हो जाए तो दिखलाये तुझे दुश्मन चिराग॥ आतिश

१५१ जहाँ वाले हमे सिर्फ इसलिए दीवाना कहते हैं,
कि हम जो बात भी कहते हैं बे-बाकाना कहते हैं॥

१५२ खुदा या ना खुदा अब जिसको चाहो बख्श दो इज्ज़त।
हकीकत[4] मे तो किश्ती इत्तिफाकन[5] बच गई मेरी॥
गोपाल मित्तल

१५३ खुदी का राजदा[6] होकर, ख़ुदी का दास्ता[7] हो जा।
जहाँ से क्या गरज़ तुझको, तू आप अपना जहाँ हो जा॥ अर्श

१५४. किसको दुनिया मे हुई राहत नसीब ?
कौन दुनिया मे असीरे-गम[8] नही ? अर्श

---

१ जीवन का क्रम २ बाढो से ३ मोती को ४ वास्तव मे ५ यदृच्छया, दैववशात् ६. सोऽहं का अभिप्राय समझकर ७ आत्मा से परमात्मा बनने का प्रयास कर ८ दुःख का बन्दा, दु:ख-ग्रस्त।

१५५ तरानए-गम[1] न छेड बुलबुल ! यहां कोई हमनफस[2] नही है।
यहाँ तो बेगानगी[3] है इतनी कि हर कली मुस्करा रही है॥
गोपाल

१५६. गम के ठहोके[4] कुछ हो बला से आगे जगा तो जाते है।
नीद के हम इकमाते[5] है जो जागते ही सो जाते है॥
फानी

१५७. अक्ल से ही इन्सान इन्सान है।
अक्ल न हो तो इन्सान हैवान है॥ हाली

१५८ क्या तवंगर[6] क्या गनी[7] क्या पीर[8] क्या बालका।
सब के दिल को फिक्र है दिन-रात रोटी दाल का॥

१५९. जो किसी से अदावत[9] न दगा[10] करते है।
वही आराम से दुनियाँ मे रहा करते है॥ हाली

१६० कौन हमदर्द[11] किसीका है जहाँ मे 'अकबर'।
एक उभरता है यहाँ, एक के मिट जाने से॥ अकबर

१६१. निशानी चाहिए कुछ आने वाले जाने वाले की।
यह माना है बशर फानी इधर आना उधर जाना॥

१६२. जिस क़दर दुनिया दबाये, उस कदर बेदार[12] हो।
अपनी दुनिया खुद बनाने के लिए तैयार हो॥ अख्तर

१६३. काटो की जबाने-तिश्ना[13] से, गुलशन की हकीकत को पूछो।
याराने-चमन[14] इन फूलो को तो हंसना-हंसाना आता है॥
अलम

---

१. दुःख का सगीत २ मित्र, साथी ३ परायापन ४. झोके. झटके ५. मतवाले ६. दरिद्र, कगाल ७ धनी ८ वृद्ध ९. शत्रुता, वैर-विरोध १०. छल, मायाचार ११ सगी-साथी १२ जाग्रत, सचेत १३ प्यासी जिह्वा से १४. उद्यान के मित्र।

१६४. सीरत[1] नही है जिसमे, वह सेहत फि.जूल है।
जिस गुल मे बू नही है, वह कागज का फूल है॥

१६५ मिहर[2] वह है खाक के जर्रे को करदे जरनिगार[3]।
ऊँची-ऊँची चोटियो पर नूर[4] बरसाने से क्या ? मुल्ला

१६६. मुफ़लिसो की ज़िन्दगी का जिक्र क्या ?
मुफ़लिसी की मौत भी अच्छी नही॥ रियाज़

१६७. जीस्त[5] बेअक्लो को हो जाये बसर करनी मुहाल[6]।
इतनी भी ऐ आकिलो[7]! अच्छी नही हुशयारियां॥ हाली

१६८. पन्दे-वाइज़[8] सुनते-सुनते कान अपने भर गए।
क्या इबादत को हमी है, सब फरिश्ते मर गए ? दाग़

१६९. अपनी सेहतकी जिसे पर्वाह न हो।
वह मसीहा से भी कभी अच्छा न हो॥

१७०. याद रख इस गुरको तू आठों पहर चौसठ घड़ी।
खार[9] चुभता है जिसे बस, फूल पाता है वही॥

१७१. हम नशी[10] कहता है कुछ पर्वा नही ईमा गया।
मै यह कहता हूँ कि भाई! वह गया तो सब गया॥ अकबर

१७२ हयात[11] इक मुस्तकिल[12] गमके सिवा कुछ भी नही।
खुशी भी याद आती है तो आंसू बनके आती है॥ साहिर

१७३. ले-देके अपने पास फक़त[13] इक नज़र तो है।
क्यों देखें ज़िन्दगीको किसीकी नज़रसे हम॥ साहिर

---

१ सोजन्य, चारित्र्य २. सूर्य ३ प्रकाशमान ४. प्रकाश ५. जिन्दगी ६. कठिन, दुष्कर, असम्भव ७. बुद्धिमानो ८ धर्मोपदेशकका, सदुपदेश ९.काटा १०, मित्र, साथी ११. जीवन १२. स्थायी १३. केवल, सिर्फ।

१७४. जमानेका शिकवा न कर रोनेवाले ।
जमाना नही साथ देता किसी का ॥ लतीफ

१७५. बडी मुश्किलसे आता है मुयस्सर जिन्दगी-भरमे ।
वह इक लमहा[1] जिसे इन्सा गुजारे शादमाँ[2] होकर ॥ शफक

१७६ आजकी इश्रत[3]को छोड़ूँ, कलकी इश्रतके लिए ।
मेरे मौला[4]! मुझसे यह मुमकिन नही, मुमकिन नही !
अख़्तर

१७७ इसी दुनियाकी अक्सर[5] तल्खियों[6]ने मुझको समझाया ।
कि हिम्मत हो तो फिर है जहर भी एक चीज खानेकी ॥
नैयर

१७८. कुछ ऐसा डूबनेका न होता मुझे मलाल ।
मुश्किल यह आ पडी थी कि साहिल करीब[7] था ॥ नैयर

१७९ हवा का एक-एक झोका तुझको जब चाहे बुझा डाले !
यह क्या जीना है दुनियामे, चरागे-रहगुजर[8] होकर ! अर्श

१८०. न फ़र्यादो[9]से जजीरो[10]की कडियां टूट सकती है ।
न अश्कोसे निजामे-वक्त[11]के तेवर[12] बदलते है ॥ प्रेम

१८१. ठोकर किसी पत्थरसे अगर खाई है मैंने ।
मंजिलका निशां भी उसी पत्थरसे मिला है ॥ बिस्मिल हाशमी

१८२. मैं गिर चला था बड़ी बेदिली[13]से रस्तेमे ।
बडे ख़ुलूस[14]से उम्मीदने सभाला है ॥ अदम

---

१ क्षण २ प्रसन्न ३ सुख को ४ ईश्वर, मालिक ५. प्राय. ६. कटुताओ ने ७ समीप, निकट ८. पथ-दीपक ९ आर्तनादो से, दुहाइयो से १० शृङ्खलाओ की ११. काल-व्यवस्था १२ ढङ्ग १३. खिन्नता तथा उदासी से १४ प्रेम से, निश्छलता से ।

१८३ हवादस[1]से उलझकर मुस्कराना मेरी फितरत[2] है।
मुझे दुश्वारियों[3]पर अश्क[4] बरसाना नही आता।
नजर जिसकी जमी रहती है मुस्तक़बिल[5]के चेहरे पर,
उसे माजीकी सफ्फा[6]की को दुहराना नही आता ॥
दानिश

१८४. दूर सुनहरे गुम्बद चमके, लेकिन गर्दन कौन झुकाये ?
मै तो जन्नत खोकर आजाद मनुष इन्सान रहा हूँ ॥ कतील

१८५. 'कतील' अपना मुकद्दर गमसे बेगाना[7] अगर होता।
तो फिर अपने-पराये हमसे पहचाने कहाँ जाते ? कतील

१८६ जवानीको सज़ाए-लज्ज़ते-एहसास[8] दे देना।
मैं इस हदपर खुदाको आदमी महसूस[9] करता हूँ ॥ कतील

१८७. बदसुलूकी[10]मे मज़ा[11] क्या है, मजा है इसमे।
कि हमारा हो तुम्हे पास[12], हमारा तुमको ॥ दाग़

१८८. क्या मिला आख़िर खरी कहकर कोई बतलाये तो ?
बस यही न, सुननेवालोंको हुआ जीना वबाल[13] ?

१८९ आलमे-फानी[14]मे यारो ! चाल देखी है अजब !
इस जहासे जो गया, वैसा न आया फिर कोई ॥

१९०. ऐ शमअ ! सुबह होती है, रोती है किसलिए ?
थोड़ी-सी रह गई है, इसे भी गुजार दे ॥

१९१. मुस्कराके जिनको गमका घूँटपीना आ गया।
यह हकीकत[15] है जहांमे उनको जीना आ गया ॥

---

१ मुसीबतों से २ प्रकृति, स्वभाव ३ कठिनाइयो पर ४ आँसू ५ भविष्य के ६ भूतकालीन अत्याचारो को ७ अपरिचित, रहित ८ अनुभूति के आनन्द का डर ९. अनुभव १० दुर्व्यवहार मे, बुरेवर्ताव में ११ आनन्द १२. लिहाज़ १३ विपत्ति, दुःख १४, नश्वर ससार मे १५. वास्तविकता।

१९२ तलाशे-यारमे जो ठोकरें खाया नही करते।
वह अपनी मंज़िले-मकसूद[1] को पाया नही करते॥

१९३. मंज़रे-तस्वीर[2] दर्दे-दिल मिटा सकता नही।
आईना[3] पानी तो रखता है, पिला सकता नही॥

१९४. मैं फूल चुनने आया था बागे-हयात[4]मे।
दामन को ख़ारे-जार[5] मे उलझाके रह गया॥

१९५ न मुँह छिपाके जिये, न सर झुकाके जिये;
सितमगरो[6] की नज़र-से-नज़र मिलाके जिये।
अब एक रात अगर कम जिये तो हैरत[7] क्यो?
यही क्या कम हैकि हम मशालें जलाके जिये?

१९६ बुरेको जब न हो एहसास[8] अपनी ही बुराईका।
ठिकाना फिर नही रहता कही उसकी ढिठाईका॥

१९७. दुनियामे किसका राहे-फना[9]मे दिया है साथ?
तुम भी चले चलो यूँही जब तक चली चले॥ जौक़

१९८. पहली-सी नेकियाँ सब मफक़ूद[10] हो गई हैं।
फैले हुए है चर्चे हरचारसू[11] बदी के॥

१९९. इस ऐशे-ज़ाहिरी[12] को छोड़ ऐ खुदाके बन्दे!
रग-रगमे चुभ रहे है जब लाख-लाख काटे॥

२००. तुझे देखा तो अब कुछ देखनेको जी नही चाहता।
किये हैं बन्द आँखें तेरी सूरत देखनेवाले॥ हनीफ़

---

१. लक्ष्य, बिन्दु को २ चित्र का दृश्य ३ दर्पण ४. जीवन-उद्यान में ५ कांटो में ६ अत्याचारियो की ७ आश्चर्य ८ ध्यान, अनुभव, खयाल ९. मरण-मार्ग में १० अन्तर्धान, अप्राप्य, लुप्त, गायब ११ चारो ओर १२ बाह्य अथवा भौतिक सुख को।

२०१. ऐ 'अमीर' अव्वल तो वह आश्ना मिलता नही।
मिल गया जिसको कही, उसका पता मिलता नही॥ अमीर

२०२. सब सनअते[1] जहांकी 'आज़ाद' हमको आई।
पर जिससे यार मिलता, ऐसा हुनर न आया॥ आज़ाद

२०३. दिल अगर है साफ़ कुछ मुश्किल नही दीदारे-यार[2]।
देखलो आईना[3] सूरत-आश्ना[4] क्योकर हुआ ? अमीर

२०४ ऐ हुस्नके माइल[5]! यह नसीहत मेरी सुनले।
सीरत[6]पे नजर चाहिए सूरतसे जियादा॥ अकबर

२०५. छोड़ सबकी दोस्ती, कर दोस्तदारी एककी।
एकका हो यार, निभ जाएगी यारी एककी॥ जफर

२०६. खुदी जब तक रहे इन्सानमे, उसको नही पाता।
यह पर्दा उठ गया दिलसे तो वह पर्दानशी[7] पाया॥ सादिक़

२०७ ज़िन्दगी हर मोडपर मुझको यह देती है सदा[8]।
फिक्रे-फ़र्दा[9] छोडिए, तामीरे-फर्दा[10] कीजिए॥ दानिश

२०८. इस जमीपर इक नया आलम[11] बसाया जायगा।
जिसमे हर इन्सान होगा आप अपना पासबा[12]॥ रविश

२०९ जहामे 'हाली' किसीपे अपने सिवा भरोसा न कीजिएगा।
यह भेद है अपनी जिन्दगीका बस इसका चर्चा न कीजिएगा॥

---

१. शिल्प, कला, कारीगरी २. परमात्म-दर्शन ३ दर्पण ४ प्रतिबिम्बित ५ सौन्दर्य के पुजारी, रूप पर आसक्त ६ स्वभाव-सौजन्य, चारित्र्य पर ७. परदे मे रहनेवाला ८ आवाज ९ भविष्य की चिन्ता १० भविष्य निर्माण का कार्य ११ ससार १२ रक्षक।

कहे अगर तुझसे कोई वाइज़[१] !
किं कहते कुछ और करते हो कुछ।।
जमानेकी ख़ू[२] है नुक्ताचीनी[३],
कुछ इसकी पर्वा न कीजिएगा ।। हाली

२१० लरज़[४] जाते है उस दम यह जमीनो-आस्मा 'साहिर'।
किसी बेकसके दिलका आसरा जब छूट जाता है ।।
साहिर भोपाली

२११ डूबनेका खौफ[५] हमको होतो फिर क्या खाक हो ?
हम तेरे, किश्ती तेरी, साहिल तेरा, दरिया तेरा ।।

२१२. मौतसे लडनेवाले तो बेखौफ[६] भँवरमे कूद पडे।
साहिल-माहिल चलनेवाले क्या जाने मँझधारोको ? मिसनजमा

२१३ किसे कहते है दरिया, यह खसो-खाशाक[७] क्या जानें ?
हकीकत[८] का पता शायद मिले कुछ तहनशीनो[९]से ।।
अफसर

जो नफस[१०] तेरी यादमे गुजरे।
बन्दगी[११]मे शुमार[१२] होता है।। अदम



१ धर्मोपदेशक २ स्वभाव, आदत ३ आलोचना करना, छिद्रान्वेषण करना ४ कापना ५ भय ६. निडर, बेधड़क ७ तिनके ८ वास्तविकता का ९ दरिया की तह मे जाने वालो मे १० श्वास, क्षण, पल, दम ११ उपासना, भक्ति मे १२ गिनती ।



खोकर .खुदी को पाया,
खोये हुए को हमने ।
सब-कुछ अयाँ हुआ है,
जो था निहाँ नज़र से ।।



